शाश्वतानन्ददायक-सकलमन्त्र-तन्त्राधिराजराजेश्वर-श्रीसिद्धचक्रेभ्यो नमो नमः ।

सकलसमीहितपूरक-श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथो विजयतेतमाम् ॥

॥ श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे द्वितीयविभागे प्रस्तावना ॥

दुर्लभ मानवजीवन—

अनादिअनंतकाळथी परिभ्रमण करनार जीवोने जन्म–जरा–मरण–शोक–दुःख–दरिद्रता–दौर्भाग्य–आधि–व्याधि–उपाधि आदि अनेकविध दुःखदायि भवचक्रनी परंपरामा अनुकूल साधन–सामग्री–संयोगोथी भरपूर मानवजीवन मलवुं ते अतीव दुर्लभ छे, छतां आ प्राप्त थयेल मनुष्यजीवनमां आर्यदेश–उत्तमकुल–उत्तमजाति–दीर्घआयुष्य–परिपूर्णशक्तिशालिपांचइन्द्रियो–देवगुरुधर्मनी जोगवाइ–वीतरागवाणीनुं श्रवण–शासनमान्यश्रद्धा–श्रद्धानुसारपरिणति केळवीने प्रवृत्ति–निवृत्तिमय जीवन जीववुं ए विगेरे सर्वनी प्राप्ति थवामां तथाभव्यत्व–प्रबलपुरुषार्थ–प्रकृष्टपुण्यादि विगेरे अमोघ कारणो भाग भजवे छे, ए भूलवा जेवुं नथी.

मोक्षप्राप्तिनो प्रकार—

शासनमान्य साधन–सामग्री–संयोगोथी भरपूर मानवजीवनने उजाळनाराओए समर्थ गीतार्थ ज्ञानीओना समागममां रहीने स्वयं ज्ञानी बनवुं अगर ते गीतार्थ भगवन्तोनी निश्रा स्वीकारीने हेय–उपादेय पदार्थोनो विवेक करीने अनुक्रमे निवृत्ति–प्रवृत्तिमय

जीवन जीववुं, कारण के-तेवु जीवन जीव्या वगर कोइ पण जीव मोक्षमार्गने अनुकूल कल्याण साधी शक्यो नथी, अने साधी शकशे ज नहिं. आ प्रसंगने स्पष्ट करतां शास्त्रकारोए जणाव्युं छे के "पढमो गीयत्थो बीओ गीयत्थनिस्सिओ भणिओ" आ पद्यनो भावार्थ ए छे के-मोक्षमार्गना अभिलाषिओ माटे त्रैलोक्यनाथ भगवंतोए चार घनघाती कर्म तोडीने केवलज्ञान पामवाना, अने ते पछी सकल कर्मना क्षयपूर्वक मोक्ष मेळववाना बेज मार्ग कहेला छे, त्रीजा मार्गनी अनुज्ञा ते भगवंतोए आपीज नथी. ते बे मार्ग क्या ?, प्रथम मार्ग गीतार्थनो, अने बीजो मार्ग गीतार्थनी निश्रानो छे. आथी जेओ मोक्षे गया छे, जाय छे अने जशे ते बधाओए उपरना बे मार्ग स्वीकारेला छे, स्वीकारे छे, अने स्वीकारशे ए बीना निःसंदेहपणे स्वीकार्य छे.

कल्याणकारि समागम—

जैनशासनमान्य-मोक्षतत्त्वनी परिणतिपूर्वकना 'तत्त्वसंवेदननुं आस्वादन करीने मोक्षमार्गे गयेलाओनी अने मोक्ष सन्मुख थएलाओनी परंपरानुं विवेकपूर्वक अवलोकन करीए तो उपरनी स्पष्ट वात नजर सन्मुख खडी थाय छे. इन्द्रभूतिने प्रभु महावीरनो, नयसारने मुनिसमागमनो, धनासार्थवाहने धर्मघोषसूरिजीनो, जम्बूस्वामिने श्रीसुधर्मास्वामिनो, अने पंदरसो त्रण तापसोने श्रीइन्द्रभूतिनो समागम थयो ते समागमनी साथे वीतरागनी वाणीनुं श्रवण, श्रद्धापूर्वकनी परिणति, अने वीर्योल्लासपूर्वक संयमनुं सेवन थवाथी अनुक्रमे पामवा लायकनी अमोघ चीज पामी गया छे; एमां चतुर्विधसंघनी कोइपण व्यक्तिने आ निःशंक-सत्य समझाया वगर रहेतुंज नथी. जिनेश्वरोनो, केवलिओनो, पूर्वधरोनो, अने बहुश्रुतधर-गीतार्थनो समागम थवो ए एक अलौकिक पुण्यनो प्रभाव छे, ते प्रबल पुण्यादिप्रभावनाना जोरे साधन-सामग्री-संयोग पामीने उत्तरोत्तर उत्कृष्ट कोटिना पुण्यना-संवरना-निर्जराना भागी बनीने तेओ स्वजीवनने

अने ते पछी समागममां आवनारा अनेक जीवोने कल्याणमार्गे पमाडवामां प्रबल उद्यमवन्त थाय छे. प्रभु महावीरना कल्याणकारि-समागमथी इन्द्रभूति अने सुधर्मानामना ब्राह्मणो शासनना मालीक–संचालक बन्या, प्रभु सुधर्मास्वामि गणधरना कल्याणकारि समागमथी श्रीजम्बूस्वामि नवाणुं क्रोड सोनैया–आठ स्त्रीओ छोडवानुं सामर्थ्य केळवीने शासनमां अन्तिम केवली बन्या; शासनमान्य महापुरुषोना कल्याणकारि समागमथी प्रादुर्भाव पामेल श्रुतगंगा–सरिताओ आजे पण शासनमां ठामठाम अस्खलितपणे वही रही छे, के जे सरिताना सुधासम जलनुं पान करीने पापी आत्माओ पोतानां पापो खपावता अद्यापि–पर्यंत पावन थई रह्या छे, अने भाविमां पण जरुर योग्य आत्माओ पावन थशे एमां लवलेश शंकाने स्थान ज नथी.

श्रुतगंगानुं मूळ—

वर्तमानशासनमां सघळीए श्रुतसंपदाओना पद्महृदसमान मूळ तरीके त्रैलोक्यनाथ भगवन्त श्रीवीरविभु छे, अने शासनसंचालक-पंचमगणधर श्रीसुधर्मास्वामिजी छे; कारण के अर्थथी आद्यदेशना देनारा भगवन्त श्रीमहावीर महाराजा छे, ते देशनाने अनंतर झीलनारा श्री सुधर्मास्वामिजी छे, अने ते देशनाने परंपराए झीलनारा श्री जम्बूस्वामिजी विगेरे छे. आथी ज अर्थथी–सूत्रथी आत्मागम–अनंतरागम–परंपरागमना भेद समझनारने स्पष्ट मालम पडे छे के अर्थथी आत्मागम श्रीमहावीर महाराजाने छे, अने सूत्रथी आत्मागम पंचमगणधर श्री सुधर्मास्वामिजीने छे.

आसन्नोपकारि श्रीमहावीरमहाराजाना निर्वाणसमयने २४७९ लगभग वर्षो पसार थइ गया छतां शासन स्थापनाना अवसरे अर्थथी–सूत्रथी आत्मागमादि भेदोने अनुसरीने अस्खलित प्रवाहरूपे परंपरागत ते ते सर्वज्ञभाषित–अर्थोने अने गणधरभाषितसूत्रोने

प्राप्त करवानुं सुंदरतम–सौभाग्य प्राप्त करनार होय तो वर्तमानकालीन शासनमान्य–सूत्र अर्थ अने परंपराये प्रमाणभूत श्वेताम्बर-मन्दिरमार्गीय संप्रदाय हतो, छे, अने रहेशे.

धर्मकथानुयोगनी विशिष्टता—

वर्तमानमा श्रुतसंपदाओने साचवी राखनारा अनेकविध ग्रन्थोमां अगीआर अंगोनुं प्रधानपणुं अतीव प्रसिद्ध छे. ते अंगोमां छट्ठुं अंग " श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्ग " नामे प्रसिद्ध छे, अने साथे साथे शास्त्रकारोए ठाम ठाम जणावेलुं छे के आ छट्ठुं अंग सर्वव्यापक-योगनी गरज सारे छे. शासनमां प्रवेश करनाराओ माटे, प्रवेश करेलाओना वीर्योल्लासनी वृद्धि माटे, अने शासनाभिमुख बनाववाना आशयथी अनेकानेक भव्यात्माओ माटे आ छट्ठुं अंग वधु ने वधु उपकारक थयेल छे, थाय छे अने थशे ते निःसंदेह बीना अर्थिओए स्मृतिपट पर स्थिर करवा जेवी छे. सर्वज्ञकथित सिद्धान्तोमां शुं रहस्य छे !, ते ते सिद्धान्तोनुं पालन करनाराओने केवो लाभ थयो !, तेनी विरुद्ध वर्तनाराओने केवुं नुकशान थयुं !, आपत्तिकालमां धैर्य गुमावनारनी शी हालत थई !, अने विघ्नोनो विजय करनार कई रीतिए आगल वध्यो !; विगेरे विगेरे चरणकरणानुयोगादिना अनेकविध प्रसंगोथी श्रोताना, वांचकोना, तथा अभ्यासकोना जीवनने नवपल्लवित बनावनार होय तो आ धर्मकथानुयोग स्वरूप–श्रीछट्ठुं अंग श्रीज्ञातासूत्र छे.

द्वितीयविभागनी सामग्रीओ—

आ छट्ठा अंग–' श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गनी प्रथम आवृत्ति स्व. पूज्य गुरुदेव आगमोद्धारकाचार्यनी पुनीत दृष्टिथी बहार पडेली हती, परन्तु अनेक वांचकोनी मागणीना सद्भावमां आ ग्रन्थनुं पुनः द्वितीय आवृत्तिरूपे बे विभागमां व्हेंचीने प्रकाशन करेल छे. आ अंगना

प्रथम श्रुतस्कन्धना प्रथम अध्ययनथी आठ अध्ययनो संपूर्ण साथे तेने अनुकूलनी प्रस्तावना–परिशिष्टो अने आठ अध्ययनोना सारांश–विषयानुक्रमयुक्त–श्रीसिद्धचक्रसाहित्यप्रचारकसमितिए गत वर्षमां प्रसिद्ध कर्यो छे, अने वांचको–विचारको–अभ्यासकोनी मांगणी बीजाभागनी शरू थतां आ बीजो भाग पण तेज समितिए प्रसिद्ध कर्यो छे.

आ बीजा भागमां बाकी रहेला प्रथम श्रुतस्कंधना नवमा अध्ययनथी ओगणीसमा अध्ययन सुधीना नवे अध्ययनोना मूलसूत्र–वृत्ति साथे अने धर्मकथाओथी भरपूर बीजा श्रुतस्कंध पैकी दश वर्गोना सर्व अध्ययनोना मूलसूत्रवृत्ति साथे आ द्वितीय विभाग संपूर्ण थाय छे. साथे साथे आ बीजा विभागमां आवेल अध्ययनोनो सारांश वांचकोने अनुकूल पडे ते हेतुथी आपवामां आवेल छे.

प्रथम विभाग साथेनो संबन्ध—

आ छट्ठा अंगना प्रथम विभागमां प्रथम श्रुतस्कंधना आठ अध्ययनो मूल सूत्र–वृत्ति–सारांश परिशिष्टो आपेलां छे, ते अवसरे विस्तृत प्रस्तावनानुं आलेखन करेलुं छे. आ द्वितीय विभागनी प्रस्तावनानी साथे प्रथम विभागनी ते प्रस्तावना संबंध राखे छे, माटे विवेकि–वांचकोने ते स्थले वांचवा आग्रहपूर्वकनी अत्र भलामण करवामां आवे छे; अने तेथी आ चालु प्रस्तावनामां उपयोगि प्रकरणोनुं आलेखन करीने पुनरावर्तन कर्युं नथी. प्रथम विभागनी प्रस्तावनामां आलेखन करेला मानवजीवननी महत्ता, श्रवणनी आवश्यकता, समर्थ वक्तानो योग, आद्य सदुपदेशक, आद्य संचालक–श्रीसुधर्मास्वामिजीनुं जीवन, अंतिम केवलिनी जीवनचर्या, सूत्ररचनानी मर्यादा, श्रुतसंपदाना मालीक, अंगोनो अनुस्यूत संबंध, आ ग्रन्थनुं नाम, आ ग्रन्थना वृत्तिकार, अने ग्रंथसामग्रीना प्रकारो विगेरे प्रकरणोने वांचवाथी आ ग्रन्थना रचयिता सूत्रकारनी, सूत्रोने अनंतर झीलनारा श्रीजम्बूस्वामिजीनी, अने वृत्तिकारना विशाल–आशयोनी साथे

अतीव महत्ता स्पष्ट समजाशे ते ध्यानमां राखवा जेवुं छे.

उपसंहार—

आ प्रस्तावनानी परिसमाप्ति साथे वांचकोए, विचारकोए अने अभ्यासकोए एक वात स्मृतिपट–पर स्थिर करवा जेवी छे, अने ते ए छे के स्याद्वाद–जैनदर्शने एकला ज्ञानने अपनाव्युं नथी, परंतु ज्ञानना अर्थिओ माटे ज्ञानाचारना आठे आचारोने अपनाव्या छे, अने तेनी किंमत पण एकसरखी आंकिली छे. शब्दशुद्धि, आलेखनशुद्धि, उच्चारशुद्धि, अर्थशुद्धि अने वांचनशुद्धिना नामे " काले भणवुं, अकाले नहिं भणवुं, विनय–बहुमानपूर्वक भणवुं अने एक अक्षरना देनार गुरुओनो अपलाप पण न करवो " ए विगेरे पांच आचार प्रत्ये बेदरकारी सेवनाराओ स्व–परहित साधी शक्या नथी, साधी शकशे नहिं, अने साधी शकता नथी ते निर्विवाद छे. आथी आठ आचारोना सेवन साथे आ ग्रन्थने भणशे–भणावशे ते आत्माओ उत्तरोत्तर सुन्दर साधन–सामग्री–संयोगो पामीने भाविमां कल्याण–मांगलिकमालाओ क्रमशः प्राप्त करीने अव्याबाध सुखना भोक्ता बनो, एज एक शुभेच्छा.

मावरकुण्डला (सौराष्ट्र)
सौभाग्यपंचमी वि. संवत् २००९
ता. २३-१०-५२

लि० स्व० गुरुदेव प. पू. आगमोद्धारक—
श्रीआनन्दसागरसूरीश्वर–चरणारविन्दचञ्चरीकः—
चन्द्रसागरसूरिः ।

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गद्वितीयविभागे—

प्रकाशिकानुं निवेदन.



नूतनवर्षमां प्रवेश—

प्रातःस्मरणीय—पूज्यपाद—तपागच्छगगनदिनमणि—श्रीदेवसुरसंघपरम्परासंरक्षक—श्रीसिद्धक्षेत्र—सूर्यपूरस्थितश्रीजैनागममन्दिरतीर्थ-संस्थापक, आगमोद्धारक, स्वर्गस्थ—श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजीना हार्दिक आशीर्वादथी अने तेओश्रीना परमविद्वद्विनेय, श्रीसिद्ध-चक्राराधनतीर्थ—श्रीचन्द्रप्रभासपाटणतीर्थोद्धारक, श्रीसिद्धचक्र—नवपदाराधकसमाजसंस्थापक, वैयाकरणकेशरी, श्रीआनन्दबोधिनी वृत्तिकार, श्रीवर्द्धमानतपोमाहात्म्य अने विंशतिविंशिका—पंचाशकशास्त्रसारांशादिविविधसामग्रीरूप साहित्यना आलेखनकार—पूज्यपाद—आचार्य-देवश्री—चन्द्रसागरसूरिजीनी शासनसंरक्षक प्रेरणाथी अमारी समितिना मुखपत्र श्रीसिद्धचक्र मासिकनो प्रादुर्भाव थयो, अने आराधकोनी आराधना आराध्यपदने अनुसरवानी साथे अतीव उज्वल बने ते हेतुथी शासनमान्य साहित्यना प्रकाशनार्थे साथे साथे अमारी श्रीसिद्धचकसाहित्य—प्रचारक—समितिनो पण जन्म थयो. आ समितिनी अने आ मासिकनी सुन्दर कार्यवाहीओथी चतुर्विधसंघना आशीर्वाद साथे तन—मन—धनमी अनेकविध सहायथी ते बन्ने (समिति अने मासिक) प्रफुल्ल बनीने ओगणीसमा नूतन वर्षमां प्रवेश करेल छे.

अतीव महत्त्वा स्पष्ट समजाशे ते ध्यानमां राखवा जेवुं छे.

उपसंहार—

आ प्रस्तावनानी परिसमाप्ति साथे वांचकोए, विचारकोए अने अभ्यासकोए एक वात स्मृतिपट–पर स्थिर करवा जेवी छे, अने ते ए छे के स्याद्वाद–जैनदर्शने एकला ज्ञानने अपनाव्युं नथी, परंतु ज्ञानना अर्थिओ माटे ज्ञानाचारना आठे आचारोने अपनाव्या छे, अने तेनी किंमत पण एकसरखी आंकेली छे. शब्दशुद्धि, आलेखनशुद्धि, उच्चारशुद्धि, अर्थशुद्धि अने वांचनशुद्धिना नामे " काले भणवुं, अकाले नहिं भणवुं, विनय–बहुमानपूर्वक भणवुं अने एक अक्षरना देनार गुरुओनो अपलाप पण न करवो " ए विगेरे पांच आचार प्रत्ये बेदरकारी सेवनाराओ स्व–परहित साधी शक्या नथी, साधी शकशे नहिं, अने साधी शकता नथी ते निर्विवाद छे. आथी आठ आचारोना सेवन साथे आ ग्रन्थने भणशे–भणावशे ते आत्माओ उत्तरोत्तर सुन्दर साधन–सामग्री–संयोगो पामीने भाविमां कल्याण–मांगलिकमालाओ क्रमशः प्राप्त करीने अव्याबाध सुखना भोक्ता बनो, एज एक शुभेच्छा.

सावरकुण्डला (सौराष्ट्र)
सौभाग्यपंचमी वि. संवत् २००९
ता. २३–१०–५२

लि० स्व० गुरुदेव प. पू. आगमोद्धारक—
श्रीआनन्दसागरसूरीश्वर–चरणारविन्दचञ्चरीकः—
चन्द्रसागरसूरिः ।

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गद्वितीयविभागे—

प्रकाशिकानुं निवेदन.



नूतनवर्षमां प्रवेश—

प्रातःस्मरणीय–पूज्यपाद–तपागच्छगगनदिनमणि–श्रीदेवसुरसंघपरम्परासंरक्षक–श्रीसिद्धक्षेत्र–सूर्यपूरस्थितश्रीजैनागममन्दिरतीर्थसंस्थापक, आगमोद्धारक, स्वर्गस्थ–श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजीना हार्दिक आशीर्वादथी अने तेओश्रीना परमविद्वद्विनेय, श्रीसिद्धचक्राराधनतीर्थ–श्रीचन्द्रप्रभासपाटणतीर्थोद्धारक, श्रीसिद्धचक्र–नवपदाराधकसमाजसंस्थापक, वैयाकरणकेशरी, श्रीआनन्दबोधिनी वृत्तिकार, श्रीवर्द्धमानतपोमाहात्म्य अने विंशतिर्विंशिका–पंचाशकशास्त्रसारांशादिविविधसामग्रीरूप साहित्यना आलेखनकार–पूज्यपाद–आचार्यदेवश्री–चन्द्रसागरसूरिजीनी शासनसंरक्षक प्रेरणाथी अमारी समितिना मुखपत्र श्रीसिद्धचक्र मासिकनो प्रादुर्भाव थयो, अने आराधकोनी आराधना आराध्यपदने अनुसरवानी साथे अतीव उज्वल बने ते हेतुथी शासनमान्य साहित्यना प्रकाशनार्थे साथे साथे अमारी श्रीसिद्धचक्रसाहित्य–प्रचारक–समितिनो पण जन्म थयो. आ समितिनी अने आ मासिकनी सुन्दर कार्यवाहीओथी चतुर्विधसंघना आशीर्वाद साथे तन–मन–धननी अनेकविध सहायथी ते बन्ने (समिति अने मासिक) प्रफुल्ल बनीने ओगणीसमा नूतन वर्षमां प्रवेश करेल छे.

हार्दिक सन्मान—

विशेषमां हमारी समितिना मुखपत्र श्रीसिद्धचक्रमासिकमां मुख्यत्वे स्व० आगमोद्धारकनी अमोघदेशनादि विगेरेनुं वांचन एक सरखी रीते मलवाथी अने पू० आचार्यदेवश्री-चन्द्रसागरसूरिजीनी विवेकभरी नजर नीचे शासनमान्य अनेकविध साहित्य सामग्रीओनुं साथे साथे वांचकोने सुधास्वादन थतुं रहेवाथी वांचकोनी संख्यामां दिनप्रतिदिन वृद्धि थयां ज करे छे, अने प्रकाशनोने वेगवंता बनाववा माटे आर्थिकसहायकोनी हरिफाइ थइ रही छे; तेथी बन्नेनी (समितिनी अने मासिकनी) उज्वल कार्यवाहिओनी नोंधनो अतीव आदरभर्यो सत्कार आपवा माटे शासनमान्य-चतुर्विधसंघनी व्यक्तिओने आदरपूर्वक हार्दिक सन्मानीये छीए.

ग्रन्थप्रसिद्धि अने उपसंहार—

"समितिनो अने मासिकनो जन्म, बन्नेनी प्रशंसनीय कार्यवाहि अने संचालननुं पुण्यकार्य" आ त्रणे प्रकरणो आ ग्रन्थना प्रथम विभागनी प्रस्तावनामां आपेलां छे, तेने वांचकोए पुनः पुनः विवेकपूर्वक विचारवानी जरुर छे, एम तेओने आग्रहपूर्वकनी भलामण छे. कारण के तेमां समितिना-मासिकना विशाल उद्देशो-हेतुओ स्पष्टपणे मालम पडे छे, साथे साथे पुण्यबन्ध करवाना परमनिमित्तरूप संचालनना सुन्दर कार्यनी म्हारी जवाबदारीनुं अने ते बन्ने साथेना सेवाभावना सम्बन्धनुं ज्ञान वांचकोने स्पष्टरीतिए थइ शके छे.

आ द्वितीय विभागरूपे छट्ठुं अंग श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्ग नामे प्रकाशन थतो आ ग्रन्थ द्वितीय आवृत्तिरूपे प्रसिद्ध थाय छे, अने तेथी प्रथमावृत्तिना सम्बन्धमां विस्तृत आलेखन प्रथम विभागनी प्रस्तावनामां करेल छे, तेथी अत्र ते संबन्धना आलेखननुं पुनरावर्तन करवुं उचित नथी.

आ द्वितीय विभागना प्रकाशनार्थे पू० आचार्यदेव-श्रीचन्द्रसागरसूरिजीना परमविनेय पू० उपाध्याय श्रीदेवेन्द्रसागरजी गणिवरना सदुपदेशथी अमदावाद शाहपुर-मंगल पारेखना खांचा विषे आवेल उपाश्रयना वहीवटदारोए रू० २५०) बसो ने पचास रूपीआ आपेल छे, ते सिवाय मददना अभावे पडतर किंमतना भावे अमारी समिति तरफथी आ ग्रन्थ वांचको माटे अने अभ्यासीओ माटे प्रसिद्ध कराय छे.

आ ग्रन्थने प्रकाशक करवामां संपादननुं भगीरथ कार्य पू. आचार्यदेव श्री चन्द्रसागरसूरिजीए करेल होवाथी, प्रूफादि संशोधन अने सारांशनुं कार्य करनार पू. मुनिश्री चन्दनसागरजी म. ने, नियमित अवसरे प्रकाशन करवामां श्री महोदय प्रीं. प्रेस मालीकने अने प्रेस-माणसोने अत्र याद करीने वांचको-विचारको-अभ्यासको वांचवा पहेलां शुद्धिपत्रकथी शोधीने वांचे-विचारे-अभ्यास करे एज एक शुभेच्छा.

११४ दोरामेसण स्ट्रीट,
मुंबाई नं. २.
सौभाग्यपञ्चमी. २००९

निवेदक—

पानाचन्द रूपचन्द झव्हेरी

श्रीसिद्धचक्र-मासिकना-तन्त्री अने श्रीसिद्धचक्रसाहित्यप्रचारकसमितिना प्रधान-संचालक.

हमारां प्रकाशनो ।

श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ।

॥ श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे द्वितीयविभागस्य सारांशः ॥

१–श्रीमाकन्दीदारकाध्ययन–सारांशः ।

पूर्वे आठमा अध्ययनमा मायाथी अनर्थ कही गया, हवे आ नवमा अध्ययनमां भोगोथी पाछा नहिं हठनारने थतो अनर्थ, अने भोगोथी पाछा हठनारने थतो लाभ अत्र दर्शावाय छे.

हे जम्बू ! ते काले अने ते समये चंपा नामनी नगरी हती. त्यां माकंदी नामनो सार्थवाह वसतो हतो, तेने भद्रा नामनी भार्या हती, अने तेने जिनपालित अने जिनरक्षित नामना बे पुत्रो हता. ते बन्ने पुत्रोए अन्योअन्य विचार करीने लवणसमुद्रना वाहणवटावाला धंधामाटे आपणे बारमी वखत पण जवुं तेवु नक्की कर्युं, अने मातापितानी रजा मागी. मातापिताए घणु समजाव्युं पण मान्युं नहीं, आथी अनिच्छाए मातापिताए रजा आपी; अने ते बन्ने गया. समुद्रमा घणे दूर गया पछी वावटोलीआ विगेरेनो सख्त उपद्रव थयो, अने वहाणो भांगी गया, अने घणा माणसो डूबी गया, तथा लावेला करीयाणां पण बधांए समुद्रने तळीए गया. माकन्दीना ते बन्ने पुत्रोना हाथमां एक पाटीउं आव्यु ते पाटीयानी सहायथी तरता तरता रत्नद्वीपे गया. रत्नद्वीपना पर्वतविपे थाक खाइने फलादिनी शोध करीने मेळवी–खाइने नालीयेरना पाणीथी तृप्त थया, अने नालीयेरनु तेल काढी अन्योअन्य मालीश करी वावोना पाणीथी स्नान करी स्वस्थ

थया. एक शिला पर बेसीने "चंपानगरीमां मातापितानी पासे समुद्रनी मुसाफरीनां वहेवार माटे जत्रानी मागणी करवी, मातापितानुं निषेध करवु, अने अति आग्रहथी रजा मेळववी, लवणसमुद्रमां उतरवुं, वावंटोळीयाना उपद्रवथी जानमालनी थयेली नुकशानी, तरता तरता अहिं आववुं अने खोराकमां फलादिनुं खावुं विगेरेनो" विचार करे छे—

ते समये आ रत्नद्वीपना मध्यभागमां रत्नद्वीप देवता नामे देवी वसे छे, ते अति पापीणी अने स्वभावे भयंकर छे. सदरहु देवी अवधिज्ञानथी आ माकन्दीना बन्ने पुत्रोने त्यां आवेला जोइने भयंकररूप विकुर्वीने त्यां आवीने कठोर वचनोथी ते बन्नेने कहेवा लागी के-हे बन्ने माकंदियदारको ! तमे म्हारी साथे विपुल भोगो भोगवता म्हारी पासे रहो, नहीं तो तमारुं मस्तक आ तलवारथी कापी नाखीश ! भय पामेला ते बन्ने श्रेष्ठीपुत्रोए कह्युं के तमारी आज्ञा प्रमाणे हमे रहीशुं. आ कबुलात लइ ते देवी पोताना प्रासादे लइ गइ अने ते बन्नेनी साथे विपुल एवा भोगोने भोगवे छे, अने हंमेशां ताजा मीठां फलो लावी-आपीने तृप्ति करावे छे.

एक समये शक्रेन्द्रना आदेशथी लवणाधिपति सुस्थित नामना देवे रत्नद्वीपनी ते देवीने आदेश कर्यो के "त्हारे २१ एकवीशवार लवणसमुद्रविषे फरी-फरीने घास-पादडां-लाकडां-कचरो अने अशुचि वगेरे जे कंइ दुर्गन्धवाळुं होय ते चोक्खुं करी देवु !" आवा आदेशथी ते बन्ने श्रेष्ठीपुत्रोने ते देवीए कह्यु के-हुं शक्रेन्द्रना हुकमथी समुद्रनी शुद्धि माटे जाउं छुं, तमे अत्र सुखे रहेशो. कदाच तमने न गमे तो तमे पूर्व-पश्चिम-उत्तर दिशाओनो वनखंड विषे फरवा जशो तो त्यां जुदी जुदी ऋतुओना फलो छे, तेनाथी तृप्ति करशो; अने मारी राह अत्रे जोशो. परंन्तु दक्षिण दिशामां जशोज नहिं, कारण के त्या एक भयंकर दृष्टिविषसर्प रहे छे, ते तमारा शरीरनो नाश करशे. आ प्रमाणे त्रणवार सावचेती आपी ते देवी समुद्र तरफ गइ.

बन्ने श्रेष्ठिपुत्रो त्रणे वनखंडोमां फरे छे अने आनंद करे छे. एक समय त्यां त्रण दिशाना वनखंडोमां पण नहीं आनंद पामता तेमने दक्षिण दिशामां जवा नक्की कर्युं, अने दक्षिणदिशामां केटलेक दूर गयां पछी मरेला सर्प करतां पण वधु दुर्गन्ध आवतां पोताना वस्त्रवडे नाक बंध करीने आगळ चालवा मांडयुं, आगळ चालतां अनेक हाडकांथी व्याप्त एवा वधस्थानमां शूलीवडे भेदाएलो करुणस्वरने करतो एक पुरुष जोयो. उत्पन्न थयो छे भय जेने एवा ते बन्ने श्रेष्ठीपुत्रोए हकीकत पूछतां ते शूलीस्थित पुरुषे कह्युं के– “हुं भारतवर्षनी काकंदीनो अश्ववणिक छुं. करीयाणां अने अश्वो वहाणोमां भरी लवणसमुद्र विषे धंधा अर्थे आवेलो, पण मार्गमां समुद्रना तोफानथी वहाणो डुबी गयां, अने हुं पाटीयाना आधारे अहीं आवी पहोंच्यो; अने पछी रत्नद्वीप देवता नामनी देवीना भोग-विलासमां सपडायो. घणो समय तेनी साथे भोगादिमां गयो, पण एक समये सामान्य अपराध आवतां आ अवस्था पाम्यो छुं, माटे भाविमां तमारा शरीरोनुं कोण जाणे शुं थशे !” आ सांभलीने भयभीत थयेला बन्ने भाइओए एना सकंजामांथी छूटवानो उपाय पूछयो. तेना जवाबमां ते शूळीथी भेदाएला पुरुषे कह्युं के पूर्वदिशामां शैलक नामना यक्षनुं मन्दिर छे तेमां अश्वरूपने धारण करतो यक्ष वसे छे. ते शैलक यक्ष चौदश–आठम–अमावास्या–पूर्णिमाना दिने प्राप्त थयेला समये मोटा शब्दथी एवी रीते बोले छे के–कोने तारुं !, कोनुं रक्षण करुं !; त्यां तमे जाव अने तेनी सेवा करो अने ज्यारे ते बोले त्यारे जवाबमां कहेजो के हमने तारो ! हमारुं रक्षण करो ! रत्नद्वीप देवताना हाथमांथी हमोने तारो ! आ प्रमाणे ते पुरुषथी श्रवण करी शैलकयक्षना मन्दिरमां गया अने ते पुरुषना कह्या मुजब सर्व कर्युं. शैलकयक्षे तेओनी मागणी कबुली अने कह्युं के समुद्रमध्ये थइ जतां ते देवी प्रतिकूल–अनुकूल उपसर्गो करशे, तमे जरा पण क्षोभ पामशो नहीं; तेम चलायमान पण थशो नहीं, अने थशो तो हुं म्हारी पीठ परथी नीचे नाखी दइश ! आ वातने ते

वचेए कबूल करी, एटले अश्वरूप विकुर्वीने ते यक्षे पोतानी पीठ उपर बेसाड्या अने आकाशमार्गे समुद्र पर थइ चाल्यो. हवे ते रत्नद्वीप देवता पोतानुं कार्य संपूर्ण करी ज्यां पोताना प्रासादमां आवी त्यां तेओने देख्या नहीं, अने आजुबाजु तपासतां पण तेमने देख्या नहीं, एटले अवधिज्ञानथी उपयोग मूकतां दरीया पर थइने शैलक यक्षनी साथे जता ते बन्नेने जोया, अने तलवार हाथमां लइ तेमनी पासे आवी.

कंइक कोमळ हृदयवाळा जिनरक्षितने जाणी अनेक प्रकारना अनुकूल उपसर्गो करवा लागी अने ज्यां जिनरक्षितनुं मन चलायमान थयुं एटले शैलकयक्षे तेने फेंकी दीधो. ते देवीए अनेक प्रकारे तिरस्कार करी तलवार वडे तेना टूकडे टूकडा करी नांख्या, अने चारे दिशाओने बलिदान अर्पण कर्युं.

अत्र योजना—

एवी रीते हे श्रमणो ! जे हमारी पासे संयम ग्रहण करी पाछा मनुष्य सम्बन्धि भोगोमां आस्वाद करे छे यावत् तेनी अभिलाषा करे छे, ते आ भवमां घणा एवा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकाओने निंदवा लायक थाय छे; यावत् घणो संसार रखडे छे.

रत्नद्वीप देवता नामनी देवीए तेवार पछी जिनपालितने अनुकूल-प्रतिकूल घणा उपसर्गो करवा मांड्या, पण सर्व उपसर्गो सहन करी जिनपालिते निष्फल कर्या, तेना परिणामनुं नहिं चलितपणुं थवाथी थाकीने ते देवी चाली गइ. शैलकयक्षे निर्विघ्ने जिनपालितने चंपाना उद्यानमां लावी पोतानी पीठ परथी उतार्यो अने जिनपालितनी रजा लइ पोताना स्थाने चाल्यो गयो.

जिनपालित पोताना घेर आव्यो अने मातापिताने मली जिनरक्षितना मरणनी वात करी, सर्वे कुटुम्बे लौकिक कार्यो करी शोक

दूर कर्यो. एक समये मातापिताए जिनपालितने पूछयुं के जिनरक्षितनुं मरण केवी रीते थयुं ?, त्यारे ते जिनपालिते ठेठ सुधीनी वार्ता करी.

एक समये प्रभु श्रमण भगवान् महावीर त्यां पधार्या–समवसर्या तेमनी पासे जिनपालिते धर्म श्रवण करी संयमने ग्रहण कर्युं अने अगीयार अंग भण्यो; यावत् महीनानुं अनशन करी काळधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां बे सागरोपमना आयुष्यवाळो देव थयो. हे जम्बू ! त्यांथी ते च्यवी महाविदेहक्षेत्रविषे मोक्ष पामशे.

योजना:—एवी रीते जे साधुओ मनुष्य सम्बन्धी भोगोनो त्याग करी तेनी वांच्छा आदि करता नथी ते जिनपालितनी माफक आ भवमां पण सुखी थाय छे, अने परभवमां मोक्षनां अनुपम सुखोने भोगवे छे.

इति नवम-अध्ययन सारांशः समाप्तः



१० श्री चन्द्रज्ञाताध्ययनसारांशः

पूर्वना अध्ययनमां अविरतिने वश थनारने थतो अनर्थ, अने वश न थनारने थतो लाभ वर्णव्यो, आ दशमा अध्ययनमां प्रमादीने थती गुणनी हानी अने अप्रमादीने थती गुणनी वृद्धि वर्णवाय छे.

ए प्रमाणे निश्चये करीने हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर राजगृही नगरीमां समवसर्या हता, त्यारे श्री गौतमस्वामिए तेओश्रीने पूछयुं के–हे भगवन् ! जीवो गुणनी हानि केवी रीते पामे छे, अने गुणनी वृद्धि केवी रीते पामे छे ?, आवा प्रकारना प्रश्नना जवाबमां प्रभु कहे छे के:—

हे गौतम ! पूर्णिमाना चन्द्रने छोडीने वदी पक्षनो पडवानो चन्द्र वर्ण–सौम्यता–तेज–कान्ति–द्युति–छाया–यावत् मंडले करी हीण थाय छे; तेम वदी पक्षना बीजनो चन्द्र तेथी करी पण वर्णादिए करी हीणादि थाय छे; यावत् अमावास्यानो चन्द्र संपूर्ण हीण थाय छे.

तेवी रीते जे साधुओ अथवा साध्वीओ संयम ग्रहण कर्या छतां क्षमा–मुक्ति–गुप्ति–आर्जव–मार्जव वगेरे संयमना गुणोथी हीण थाय छे, तेओ वदी पक्षना पडवाना चन्द्रथी मांडी यावत् अमावास्याना चन्द्रनी जेम सर्व गुणोथी हीण थाय छे.

हे गौतम ! जेवी रीते अमावास्याना चन्द्रने छोडीने शुक्ल पक्षना पडवानो चन्द्र–वर्णादिए करी अधिक थाय छे, यावत् पूर्णिमाए सर्वस्वरूपे संपूर्ण थाय छे; तेवी रीते जे साधु अथवा साध्वी संयम ग्रहण करी पोताना क्षान्ति आदि गुणोनी वृद्धि करे छे ते अनुक्रमे पूर्णिमाना चन्द्रनी जेम संपूर्ण गुणोने पामे छे.

अत्र निगमन–योजना टीकाकारे जणावी छे, ते नीचे प्रमाणेः—

चंदोव्वकालपक्खे परिहाई पए पए पमायपरो । तह उग्घरविग्घरनिरंगणो वि न य इच्छियं लहइ ॥ १ ॥

भावार्थः—कृष्ण पक्ष विषे जेम चन्द्र हाणी पामे छे, तेवी रीते आरंभ परिग्रहमां अनासक्त एवो पण साधु प्रमादमां तत्पर होय तो हाणी पामे छे, अने इच्छितने पामी शक्तो नथी.

जह चंदो तह साहू राहुवरोहो जहा तह पमाओ । वण्णाई गुणगणो जह तहा खमाईसमणधम्मो ॥ २ ॥

भावार्थः—जेवी रीते राहुथी ग्रसायेलो चन्द्रमा तेज रहित थाय छे, तेवी रीते साधु प्रमादथी साधु गुण रहित थाय छे. जेवी

रीते चन्द्रमानो वर्णादि गुणनो समूह घटे छे, तेवी रीते ते साधुना क्षमादि दश प्रकारना धार्मिक गुणो घटे छे.

पुण्णोवि पइदिणं जह हायंतो सवहा ससी नस्से । तह पुण्णचरित्तावि हु कुसीलसंसग्गिमाईहिं ॥ ३ ॥

भावार्थ—पूर्ण एवो पण चन्द्रमा वद पक्षमा दिने दिने घटतो सर्वथा नष्ट थाय छे, तेवी रीते पूर्ण एवा चारित्रवाळो पण कुशीलोनी सोबतथी सर्वथा नष्ट–चारित्रवान् थाय छे.

जणियपमाओ साहू हायंतो पइदिणं खमाईहिं । जायइ नट्ठचरित्तो तत्तो दुक्खाइं पावेइ ॥ ४ ॥

भावार्थ—उत्पन्न थयो छे प्रमाद जेने एवो साधु क्षमादि गुणोथी हंमेशा हीण थतो नष्ट–चारित्री थाय छे, अने दुःखोने पामे छे.

हीणगुणावि हु होऊ सुहगुरुजोगाइजणियसंवेगो । पुण्णसरूवो जायइ विवड्ढमाणो ससहरोव ॥ ५ ॥

भावार्थ—हीण गुणवाळो पण उत्तम गुरुमहाराजथी उत्पन्न थयेलो छे संवेग जेने ते वधता एवा चन्द्रनी जेम पूर्ण स्वरूपवाळो थाय छे.

इति दशमाध्ययनस्य सारांशः समाप्तः

११–श्रीदावद्रव–अध्ययन–सारांशः

आनी पूर्वना अध्ययनमा प्रमादिने गुणहानि, अने अप्रमादिने गुणनी वृद्धि जणावी छे; आ अध्ययनमां मार्गनी आराधना, अने मार्गनी विराधनाथी गुणनी हानि–वृद्धि कहे छे.

जे जम्बू ! ते काले अने समये राजगृही नगरी विषे गौतमस्वामिए प्रश्न कर्यो के–हे प्रभु ! जीवो आराधको अने विराधको केवी रीते थाय छे !,—

हे गौतम ! (१) जेवी रीते समुद्रना एक कांठे दावद्रव नामनां वृक्षो थाय छे, ते वृक्षो पत्र-पुष्पो-फलो आदिथी अत्यन्त शोभे छे. ज्यारे द्वीप सम्बन्धीना जुदी जुदी दिशाओथी हलवा अने महावायरा वाय छे, त्यारे घणा एवा ते वृक्षो फलादिथी सुशोभित थाय छे, अने तेमांना केटलाक वृक्षो सुकाइने म्लान पामे छे; तेवी रीते जे साधु अथवा साध्वी प्रवज्या अंगीकार कर्ये छते घणा एवा स्वशासनना साधु-साध्वीथी सहन करे छे. अने अन्यतिर्थीओथी तेम गृहस्थोथी सहन करवाना अवसरे सहन नथी करता ते साधु-साध्वी देशविराधक थाय छे. (२) जेवी रीते समुद्रना एक कांठे दावद्रव नामना वृक्षो थाय छे ते पत्रादिथी अतिशय शोभे छे परन्तु ज्यारे वायराथी घणा एवा जूना सुकाइ गयेला वृक्षो म्लान पामे छे, अने केटलाक वृक्षो शोभाने पामे छे तेवी रीते जे साधु अथवा साध्वी प्रवज्या अंगीकार कर्ये छते अन्यतिर्थीओथी तेम गृहस्थोथी सम्यक् प्रकारे सहन करे छे, किन्तु-साधु-साध्वीथी सहन कर्ता नथी ते देशआराधक थाय छे. (३) जेवी रीते समुद्रना किनारे सर्व दावद्रव नामना वृक्षो पत्रादि वडे शोभे छे परन्तु वायरो वाये सर्वे म्लान पामे छे, तेवी रीते जे साधु अथवा साध्वी, साधु-साध्वीओथी तेम अन्यतिर्थीओ आदिथी सहन करतो नथी ते सर्वविराधक थाय छे. (४) जेवी रीते समुद्रना किनारे सर्व दावद्रव वृक्षो पत्रादिवडे शोभे छे, अने ज्यारे वायरा वाय छे त्यारे पण शोभे छे परन्तु म्लानी पामता नथी तेवी रीते जे साधु अथवा साध्वी प्रवज्या अंगीकार कर्ये छते साधु-साध्वीथी तेम श्रावक श्राविका अने अन्यतिर्थीओथी थता परिषहो सहन करे छे ते सर्वआराधक थाय छे.

इति एकादश-अध्ययन-सारांश समाप्तः

१२–श्रीउदक–अध्ययन–सारांशः ।

पूर्वे अगीयारमा अध्ययन विषे चारित्र धर्मनुं विराधकपणुं अने आराधकपणुं कह्युं, अहीं स्वभावे करीने मलीन एवा भव्य–आत्माओनुं सद्गुरुना संस्कारथी चारित्रनुं आराधकपणुं थाय छे ते उदकना द्रष्टांतथी कहे छे.

हे जम्बू ! ते काले अने ते समये चंपानगरीना पूर्णभद्र चैत्य विषे श्रीवीरप्रभु समवसर्या, ते नगरी विषे जितशत्रू नामनो राजा राज्य करे छे, अने तेने धारिणी नामनी राणी तथा अदीनशत्रू नामनो युवराज हतो; तथा श्रमणोपासक–सुबुद्धि नामनो मुख्य प्रधान हतो. ते नगरीनी बहार इशान दिशाए एक खाळ छे ते घणी गन्धाती छे, ते जोइने गौतमस्वामीए प्रभुने प्रश्न कर्यो के–हे प्रभु ! आ आज रूपे रहे ? प्रभुए कह्युं के–ए अर्थमां समर्थता नथी, एथी अतिअनिष्टगन्धवाळी पण थाय, अने सुरभिगन्धवाळी पण थाय.

एक समये जितशत्रू राजा घणा एवा क्षत्रियो–शेठीआओ साथे सुंदर एवुं भोजन कर्या पछी ते भोजनथी आश्चर्य पामेला राजाए ते भोजनना घणा वखाण कर्या, अने घणा बीजाओए पण वखाण कर्या; त्यारे सुबुद्धि मंत्रीने मौन रहेलो जोइने बे त्रणवार राजाए पूछ्युं. ते समये सुबुद्धि मन्त्रीए कह्युं के–हे राजन् ! सारा लागता शब्दना पुद्‌गलो खराबपणे परिणमे छे, अने खराब लागता शब्दना पुद्‌गलो सारापणे परिणमे छे; सारा लागता रूपवाळा पुद्‌गलो खराब रूपपणे परिणमे छे, तेम खराब लागता रूपवाळा पुद्‌गलो सारापणे परिणमे छे, तेम सुगंधीदार पुद्‌गलो दुर्गन्धी पुद्‌गलपणे परिणमे छे, अने दुर्गन्धवाळा पुद्‌गलो सुगंधवाळा पुद्‌गलोपणे परिणमे छे; तेवी रीते रस अने स्पर्शना पुद्‌गलोमां पण थाय छे. आथी

आ आहारोमा आश्चर्य शु पामवानु छे? अर्थात् आथी मने आश्चर्य थतु नथी. सुबुद्धि मंत्रीनी आवी वाणीने राजाए मौन रहीने स्वीकारी नहीं. एक समये जितशत्रू राजा घणा परिवार साथे घोडा उपर बेसी फरवा निकळ्यो, नगरनी (खाळ) खाइ आवता तेनी दुर्गन्धथी राजाए पोतानु नाक कपडाना छेडाथी ढाकी दीधुं, अने बीजी बाजु फरी गया. साथे बधाये कहेवा लाग्या के– मरेला सर्प करतां पण वधु खराब गन्ध आनी छे, तेवी रीते तेनु रूप, स्पर्श अने रस पण निंदनीय छे आ समये पण मौन रहेला सुबुद्धि मन्त्रीने राजाए पूछ्यु त्यारे तेणे पहेलांनी जेमज जवाब आप्यो. आ वखते राजाए सुबुद्धि मंत्रीने कह्यु के–हे सुबुद्धि ! आवी जुट्ठी मिथ्याभिनिवेश वातो न कर ! सुबुद्धि मन्त्रीने विचार थयो के–अहो ! आ जितशत्रू राजा–सत्य तथ्य–अवितथ–सद्भूत एवा जिनेश्वरे प्ररूपेल भावोने जाणतो नथी, माटे ते भावो जणाववा काइक उपाय करु ! ! ! आ प्रमाणे इच्छीने विश्वासु माणसो द्वारा कुंभारनी दुकानेथी नवा घडा मगाव्या अने संध्याकाळे मनुष्यनी अवरजवर बंध थये ते खाइ(खाळ)माथी पाणी मगाव्यु, अने गळावी ते घडाओमा भर्युं. सात रात्रि सुधी तेने झरवा दीधु अने भस्म–रक्षा विगेरे चूर्ण नाखी फरी पण ते रीतिए नवा घडाओमा भर्युं, एम वारवार सात वखत करता ते पाणी स्वच्छ–स्फटिकरत्न जेवु मनोहर अने स्वादिष्ट थयु. आ पाणीने मन्त्रीए चाखी जोइ खात्री करी, अने पाणीने सुगंधी करवावाळा द्रव्योथी ते पाणीने सुगंधीवाळु कर्युं. जितशत्रू राजाना जलरक्षकने बोलावी भलामण करी के आ पाणी तु भोजनवेळाए राजाने आपजे ! जितशत्रू राजाए भोजनवेळाए आ पाणी पी ते पाणीना घणा वखाण कर्यां, अने आ पाणी क्या स्थानथी लाववांमा आव्यु छे, तेनी तपास करता जलरक्षके सुबुद्धिमन्त्रीए आ पाणी आप्यानु जाहेर कर्युं. राजाए सुबुद्धिमन्त्रीने बोलाव्यो अने कह्यु के–हे मन्त्रीश्वर ! हु तमने क्या कारणे अनिष्ट थयो छु के–तमे हमेशा भोजनवेळाए आ उदकरत्नने उपस्थित

करता नथी ? आ पाणी तमे क्याथी प्राप्त कर्यु ? आ प्रश्नना जवाबमा मन्त्रीए सर्व बीना कही. त्यारे ते वार्त पर विश्वास नहीं लावता राजाए पोताना अभ्यन्तर पुरुषने बोलावी मन्त्रीना कह्या प्रमाणे पाणी लावी कह्या प्रमाणे करवा सूचव्युं. ते प्रमाणे तेणे तैयार करेला पाणीनो आस्वाद राजाए करी मन्त्रीना वचन उपर श्रद्धा करी, अने मन्त्रीने बोलावीने आ तमे क्याथी शील्या ?, जाण्युं ? तेवुं पूछ्युं. सुबुद्धि मन्त्रीए जिनवचनथी वस्तुना स्वभावो में जाण्या छे तेवु जणाव्यु. जीतशत्रू राजाए जिनवचनो सामळवानी इच्छा दर्शावाथी सुबुद्धि मन्त्रीए चार प्रकारनो धर्म जिनकथित कह्यो, तेम महाव्रतो–अणुव्रतो पण जणाव्या. जितशत्रू राजाए जिनधर्म प्रत्ये श्रद्धा प्राप्त थवाथी मन्त्री पासे पाच अणुव्रतो अने बार प्रकारनो श्रावकधर्म स्वीकार्यो.

एक समये पधारेला स्थविर मुनि महात्मा पासे धर्म श्रवण करी सुबुद्धि मन्त्रीने संयम ग्रहण करवानी इच्छा थइ, अने ते हकीकत राजाने जणावी. बन्नेए साथे दीक्षा लेवानुं नक्की करीने ते पछी ते राजाए राज्यसुखो बार वर्ष सुधी भोगवीने अदीनकुमारने राज्याभिषेक करी मोटा महोत्सवपूर्वक राजाए मन्त्री साथे संयमने ग्रहण कर्यु यावत् अगीआर अग भण्या–घणा वर्षो संयम पाळी एक मासनी संलेखना करी बन्नेए सिद्धपद प्राप्त कर्यु, अर्थात्–मोक्षे गया.

उपसंहार–मिथ्यात्वथी मोहित मनवाळा पापकार्योमा आसक्त अने गुण रहित एवाओ पण उत्तम गुरूमहाराजना प्रसादथी–संसर्गथी दुर्गंधवाळी आ खालना पाणीनी जेम गुणवानो थाय छे.

इति द्वादश-उदकाध्ययन सारांशः



१३–श्रीदर्दुर–अध्ययन सारांशः।

पूर्वे कहेला अध्ययनमां–संसर्गविशेषथी गुणनो उत्कर्ष थाय छे ते कह्युं. आ तेरमा अध्ययनमां संसर्गविशेषना अभावथी छता गुणोनुं ओछुं थवुं जणावे छे.

हे जम्बू ! ते काल अने समये राजग्रही नगरीमा गुणशैलचैत्यविषे प्रभु महावीर समवसर्या हता, त्यारे सौधर्मकल्प नामना देवलोक विषे दर्दुरावतंसक नामना विमानमां सुधर्मा नामनी सभा विषे दर्दुर नामना सिंहासनपर दर्दुर नामनो देव हतो. ते सूर्याभ-देवनी जेम लीला करतो हतो (अत्र वर्णन रायपसेणीयमां जोवुं), तेने विपुल एवा अवधिज्ञानवडे प्रभुने जोइ समवसरणमां आवी सूर्याभदेवनी जेम नाट्यविधि देखाडीने ते देव चाल्यो गयो. आ समये गौतमस्वामिए वंदन–नमस्कार करी प्रभुने पूछ्युं के-हे प्रभु ! आ मोटी ऋद्धिवाळा दर्दुर देवनी विकुंवेली दिव्यसमृद्धि क्यां गइ ? अने क्यां समाइ गइ ? प्रभुए श्री गौतमस्वामिना प्रश्नना उत्तरमां जणाव्युं के–हे गौतम ! ते दिव्य समृद्धि तेना शरीरमां गइ अने तेना शरीरमां समाणी, ते शिखरना आकारवाळा घरना दृष्टांतथी जाणवुं.

पुन. गौतमस्वामिए प्रभुने पूछ्युं के–हे प्रभु ! दर्दुर नामना ते देवे आवी देवऋद्धि शी रीते प्राप्त करी अर्थात् क्याथी मळी ? दर्दुरदेवना पूर्वभवनुं करेलुं वर्णन.

हे गौतम ! आ जंबूद्वीप नामना द्वीप विषे भरतक्षेत्रमां राजगृहीनगरी विषे नंद नामनो मणिआर श्रेष्ठी वसतो हतो. ते काल अने ते समये हे गौतम ! हुं समवसर्यो हतो, ते अवसरे श्रेणिक राजा वगेरे जनो पर्षदामां देशना श्रवण करवा आव्या. आ वात नंदमणिआरे सांभळी अने तेने पण देशना श्रवण करी सम्यक्त्वसहित जिनधर्मनो स्वीकार कर्यो. हमे बीजे विहार करी गया पछी

साधुना नहीं देखवाथी सेवा रहित अने शिक्षामणना अभावे तथा श्रवण इच्छानो अभाव थतां सम्यग्मार्गथी खसवा लाग्यो अने मिथ्यामार्गमां वधवा लाग्यो. एक वखत उनाळामां अट्ठमना पच्चक्खाण करी पौषधशालामां रह्यो हतो, त्यां तरस अने भूखथी पराभव पाम्यो छतो चिन्तवन करवा लाग्यो के ते शेठीआओने धन्य छे के जेओए कूवा–वावडी–पुक्खरणी अने तलावो–सरोवरो कराव्या छे, अने तेमां लोको स्नान करे छे, पाणी पीए छे, हुं पण श्रेणिकमहाराजानी पासे जइ अभयकुमारनी रजा लइ पुक्खरणी करावी कल्याण करुं. सवारमां पौषध पारी मोटुं भेटणुं लइ श्रेणिक राजा पासे गयो अने भेटणुं करीने पुरुखरणी करावावानी आज्ञा मागी. श्रेणिक महाराजाए तेने आज्ञा आपी एटले तेणे पोक्खरणीने योग्य जगा जोइने ते खोदावी, (चारे खूणा सरखावाळी विशाळ वावडीने पुक्खरणी कहे छे) ते पुक्खरणी शुद्ध मिष्टजल अने कमळोथी शोभवा लागी. ते वावडीनी चारे दिशामां वनखंड कर्या, तेमां (१) पूर्वदिशाना वनखंडमां एक मोटी चित्रसभा करावी, अने लोकने बेसवा योग्य तेमां आसनो कराव्यां. "(२) दक्षिणदिशाना वनखंडमां अनेक थांभलाथी शोभती महानसशाला–रसोडा सहितनी दानशाला करावी, ते दानशालाने अनेक श्रमण–माहणो–अतिथिओ वगेरे सेवे छे. अर्थात् त्यां आहारथी तृप्ति मेळवे छे. (३) पश्चिमदिशाना वनखंडमां अनेक स्तम्भोथी शोभित तेगिच्छियशाला–मोटुं वैद्योनुं औषधालय–अर्थात् दवाखानुं कराव्युं, तेमां घणा वैद्योनो दरदीओ लाभ ले छे. (४) उत्तरदिशाना वनखण्डमां–अलंकारसभा–हजामो विगेरेनी जोगवाई करावी छे, तेमां श्रमादि दूर करवा विगेरेनो लाभ लोको ले छे; अर्थात् राजगृहीनी जनता अने परदेशनी जनता तेनो उपभोग करी आनन्द माने छे, अने नंदमणीआरनां वखाण करे छे; नंदमणीआर पोतानां वखाण सांभली पोताना आ कार्यने पुण्यकार्य मानवानो संतोष ले छे.

एक समय ते नंदमणीयारश्रेष्ठिने शरीरमां सोळ रोगो एक सामटा प्रगट थया, अनेक दवाओ करावी घणा उपायो कराव्या, पण एके रोगनुं शमन थयुं नहिं; अने आर्त्तरौद्रध्यान वश थयो थको नंदा पोक्खरणी पर मूर्छा करतो मरीने तेज वावडीमां देडकीना पेटे देडकापणे उत्पन्न थयो. जन्म पाम्या पछी यावत् मोटो थयो, ते पोक्खरणीनां अने नंदमणीयारनां वखाण त्यां आवेला जलार्थीओ करे छे, ते सांभली उहापोह करतां ते देडकाने जातिस्मरणज्ञान प्राप्त थयुं आथी पोतानो पूर्वभव याद आव्यो, अने पोतानुं जैन धर्मनुं पालवुं, तेम संसर्गना अभावथी मिथ्यात्वीओना परिणामो थवा, तेम ते पापयुक्त परिणामथी देडका तरीके जन्मवुं, विचारी घणो पश्चाताप कर्यो, अने पूर्वे स्वीकारेलां पांच अणुव्रतो अने सात शिक्षाव्रतो स्वीकारी अभिग्रह कर्यो के, ज्यांसुधी जीवुं त्यांसुधी छठ्ठना पच्चक्खाणमां रहेवुं अने पारणे फासु जल पीवुं, अने मनुष्योए उतारेला मेलवडे आजीविका निभाववी, आ रीते (देडकना भवमां) जीवन चलाववा लाग्यो.

ते काल अने ते समये हे गौतम ! हुं राजगृही नगरीना गुणशैलचैत्य विषे समोसर्यो, पर्षदा थई. आ वार्तालाप ते वावडी पर बेठेला लोको अन्योअन्य करवा लाग्या. आ वार्तालापने ते देडकाए सांभल्यो, आथी अहिं आववा ते वावडीथी वहार निकली उतावलो उतावलो आवी रह्यो हतो; तेवामां श्रेणिक राजा चतुरंगी सेना सहित म्हारी पासे आवतो हतो, तेमां तेमना घोडाना पग नीचे ते आवी गयो, आथी निर्बल बनेलो ते देडको एक बाजु खसी जई कायाने वोसरावी, आराधना करतो शुभ ध्याने काल करी सौधर्म नामना देवलोकविषे दर्दुर नामना विमानमां दर्दुर नामनो देव थयो. देव थयेला तेने अवधिज्ञानथी उपयोग मूकी अहिं आवी ऋद्धि विकुर्वी हती, त्यांथी ते च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां मोक्षने पामशे.

उपसंहार—नंदमणियारनी जेम संपूर्ण गुणवालो पण आत्मा उत्तम गुरु महाराजना संसर्गथी रहित थाय तो प्राये गुणनी हानि पामे छे माटे उत्तम गुरुना संसर्गमां सर्वदा रहेवुं.

इति १३–श्रीदर्दुर–अध्ययनस्य सारांशः समाप्तः ॥



१४–श्रीतेतलिपुत्र–अध्ययन–सारांशः ।

तेरमा अध्ययनमां सामग्रीना अभावे छता गुणोनी हानि जणावी, आ चौदमा अध्ययनमां तथा प्रकारनी सारी सामग्रीनो योग थाय तो गुणोनी वृद्धि थाय छे ते जणावशे.

हे जम्बू ! ते काल अने ते समये तेयलिपुर नामनुं नगर हतुं, त्यां प्रमद नामनुं उद्यान हतुं, त्यां कनकरथ नामनो राजा राज्य करतो हतो, तेने पद्मावती नामनी राणी हती अने तेतलिपुत्र नामनो प्रधान हतो; अने त्यां मूषिकादारक नामनो सोनी हतो. ते सोनीने भद्रा नामनी स्त्री हती अने पोट्टिला नामनी पुत्री हती. एक समये तेतलिपुत्र आमात्य केटलाक परिवार साथे फरवा निकळ्यो हतो, तेने एक मकानमां सोनाना दडाए रमती पोट्टिलाने जोई, तेना उपर आसक्ति थई. आथी स्थाने आवी तपास करी तो ते महेल जेवुं मकान सोनीनुं हतुं, अने ते बालिका सोनीनी छे तेम जाण्युं. अमात्ये पोताना विश्वासु माणसो द्वाराए मुषिकादारक सोनीने कहाव्युं के तारी पुत्री पोट्टिला साथे आमात्यने परणवा इच्छा छे. आवनार माणसोने सोनीए कह्युं के मारी पुत्रीने तेओ वरे तो तमारो उपकार मानीश. एम कही तेओनो सत्कार कर्यो; घणी धामधूमपूर्वक तेतलिपुत्र आमात्य ते पोट्टिला साथे परण्यो, अने तेनी

साथे आनन्दपूर्वक दिवसो गमन करे छे.

कनकरथ राजा राज्यपर-राष्ट्रपर-भंडारपर अने अन्तेपुरी उपर खुब आसक्तिवाळो थयो; तेथी जे कोई पोताने त्यां पुत्रादि थाय छे तेना कोइनी हाथनी आंगळीओ, तो कोइनो अंगुठो, तो कोइनी पगनी आंगळीओ, तो कोइनो पगनो अंगुठो, तो कोइनुं नाक, तो कोइना कान; एम अंगोपांग छेदावे छे, अने खराब अंग वाळा-खोडवाला करी दे छे; एटले राज्य भोगववा, माटे अयोग्य करी दे छें, तेनी पद्मावती राणीए एक वखत प्रधान तेतलिने बोलाव्यो अने राज्यने योग्य एक पुत्र रहे माटे तमे आ वखते, गुप्त रासी उछेरवानुं कबुल करो तो आ वखते जे पुत्र जन्मे ते तमने गुप्त रीते आपी दउ, प्रधाने आ वात कबुल करी. समय प्राप्त थये छते पद्मावती राणीए पुत्ररत्नने जन्म आप्यो, पुत्रना जन्मतानी साथे तेतलिपुत्र आमात्यने गुप्त रीते बोलावी अर्पण कर्यो. दैवयोगे ते समये आमात्यपत्नी पोट्टिलाने मरेली पुत्री जन्मी ते पुत्री राणीने गुप्त रीते अर्पण करी, राजाए मरेली पुत्रीनी मरणक्रिया तमाम करावी, पोट्टिलाए ते बालकने मोटो कर्यो अने कुटुम्बिजनो समक्ष कनकध्वज नाम पाडयुं.

पोट्टिलानी दीक्षा—

केटलोक समय गया पछी पोट्टिला तेतलिपुत्र आमात्यने अनिष्ट थई, आथी उद्वेग पामेली पोट्टिला घणा एवा श्रमण-माहण-भिक्षुकोने दान आपती-अपावती जीवन निभावी रही छे. एक समये घणा परिवार साथे मुख्य सुव्रता नामनी साध्वी ते नगरमां आवी छे, तेमांथी वे साध्वीओ तेतलिपुत्र प्रधानना महेले भिक्षा-गोचरी अर्थे पधारतां पोट्टिलाए उभा थइ सन्मान कर्युं, अने आहारादि वहोरावी कहेवा लागी के हे पूज्य साध्वी महाराज ! हुं पहेलां प्रधानने इष्ट हती, हमणां अनिष्ट थइ छुं, तो तमो चूर्ण-

मन्त्र-तन्त्र-वशीकरण वगेरेमांथी कंइक आपो, जेथी हुं तेमने इष्ट थउं ! आना जवाबमां साध्वीजीए जणाव्युं के हमे ब्रह्मचारिणीओ छीए ! हमोने आवी वातो श्रवण करवी पण कल्पती नथी. आम कही जिनधर्म तेने जणाव्यो-उपदेश्यो, पोट्टिलाने जिनधर्मप्रत्ये श्रद्धा थइ अने तेमनी पासेथी पञ्चअणुव्रतो आदि गृहस्थधर्म स्वीकार्यो यावत् ते श्राविका थइ.

एक वखत मध्यरात्रिए पोट्टिलाने संयम लेवाना परिणाम थया, आथी पोताना पति तेतलिपुत्रने पोताना संयमनो भाव कह्यो. तेतलिपुत्र प्रधाने तुं देवलोकमां जा, त्यारे ह्मारे मने प्रतिबोध करवो. आवी कबूलात तुं आपे तो हुं तने रजा आपुं, पोट्टिलाए आना जवाबमां स्वपतिनी आ मांगणीनो स्वीकार कर्यो. तेतलिपुत्र प्रधाने आडम्बरपूर्वक सुव्रता साध्वीजी पासे दीक्षा अपावी. सुव्रता पासे पोट्टिला अगीआर अंग भणी, घणा वर्ष संयम पाळी, महीनानुं अनशन करी, आलोचन प्रतिक्रमण करी, समाधिपूर्वक आराधना करी अने काल करी देवलोकमां देवी थइ.

कनकध्वजनो राज्याभिषेक अने तेतलिप्रधानने प्रतिबोध—

कनकरथ राजा मरण पाम्या त्यारे तेओनी मरणक्रिया कर्या पछी अन्योअन्य विचारवा लाग्या के अंगोए करी हीण राजाना पुत्रो छे माटे राज्यसिंहासन पर कोने बेसाडवो ! छेवटे तेतलिपुत्र मन्त्रीने पुछ्युं त्यारे मन्त्रीए पद्मावती राणीना एक कनकध्वज नामना पुत्रने पोते गुप्तरीते केवी रीते मोटो कर्यो विगेरेनुं आमूल वर्णन कर्युं, अने सर्व रीते योग्य एवा ते कनकध्वजकुमारनो राज्याभिषेक सर्वेए मली कर्यो. पद्मावती माताए पुत्रने तेतलिपुत्र मन्त्रीना उपकारो जणावी सर्वे भलामणो करी. कनकध्वजराजा तेतलिमन्त्रीनुं सर्व रीते विशेषे करी सन्मान करे छे.

पोट्टिलदेवी तेतलिने वारंवार जैनधर्मनो बोध करे छे, परन्तु तेतलिने प्रतिबोध थतो नथी. आथी देवीने विचार थयो के ज्यांसुधी नृपतिनो आदर छे त्यांसुधी वारंवार मारो करातो प्रतिबोध फलीभूत थतो नथी, माटे अनादर प्राप्त थाय तेम करुं तेवो विचार करी अनादर उत्पन्न कर्यो.

त्यारबाद तेतलिमन्त्री ज्यां राजसभामां गयो त्यां तो राजाए ते महामन्त्री तेतलिने जोइने पोते पराङ्मुख कर्युं, अने मौन रही मन्त्रीनो अनादर कर्यो. आथी तेतलिपुत्र महामन्त्रीने विचार थयो के अप्रीतिवाळो आ राजा मने मारी नंखावशे माटे चाल्या जवुं श्रेय छे, आम धारी मन्त्री घोडा उपर बेसी घर तरफ चाल्यो. मार्गमां आवता शेठीआ वगेरे उभा थइने जे मान आपवुं जोइए ते आपता नथी, तेम हाथ पण जोडता नथी. घरे पण बाह्यपर्षदाना माणसो पण आदर आपता नथी; तेम नोकर–चाकरो अनादर करे छे. पिता–माता वगेरे पण आदर कर्ता नथी. आ प्रकारना असह्य अनादरथी आपघात करवा माटे मुखमां तालपुट-विष नाख्युं पण ते परिणम्युं नहिं, तलवारथी पोतानी खांधे घा कर्यो तो तलवार ज बुट्ठी थइ गइ, गले फांसो खाध्यो तो दोरडुं–रसी ज त्रूटी गइ. आम मरवा माटे घणा उपायो कर्या पण तेना सर्वे उपायो निष्फल गया त्यारे जिनधर्म प्रत्ये श्रद्धा लाववा लाग्यो. पोट्टिलदेवी तेतलिपुत्रमहामन्त्रीने जिनधर्म प्रत्ये स्थिर करी हितशिक्षा आपी स्वस्थाने चाली गइ.

तेतलिपुत्रने शुभ अध्यवसायथी जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं. आथी पोताना पूर्वभवो जोया तेमां जोयुं के हुं महाविदेहक्षेत्रमां पोक्खलावतीविजयविषे पुंडरीगिणी राजधानीमां महापद्म नामनो राजा हतो. त्यां स्थविरमुनिओ पासेथी धर्म श्रवण करी दीक्षा में लीधी हती. चौदपूर्वी थयो हतो. घणा वर्षो संयम पाली मासनी संलेखनापूर्वक काल करी महाशुक्र नामना देवलोकमां देव थयो हतो. त्यांथी

च्यवीने हुं आ तेतलि प्रधानने त्यां पुत्रपणे जन्म्यो छुं. अपूर्व वैराग्यथी स्वयमेव पञ्चमहाव्रतो उच्चरी संयमग्रहण कर्युं यावत् पूर्वे अभ्यास करेला चौदे पूर्वोनुं ज्ञान पण स्वाभाविक ज थयुं. शुभ परिणामनी वधती धाराए केवलज्ञान पाम्या. आकाशमां देवदुन्दुभिओ वागवा लागी पंच वर्णना पुष्पोनी वृष्टि थइ, कनकध्वज राजा आ श्रवण करी त्यां आव्यो अने तेमनो उपदेश श्रवण करी श्रावक थयो तेम पांच अणुव्रतो, सात शिक्षाव्रतोने ग्रहण कर्या. तेतलिपुत्र केवलिपणामां घणा वर्ष केवलिपर्याय पाली यावत् मोक्षे सिधाव्या.

उपनय—ज्यांसुधी जीवो अति दुःखने के मानभ्रंशने प्राप्त करता नथी त्यांसुधी तेतलिपुत्रनी जेम प्राये भावथी धर्मग्रहण करता नथी.

इति चतुर्दश-अध्ययन-सारांशः समाप्तः ॥



॥ १५-श्रीनन्दीफल-अध्ययनसारांशः ॥

चौदमा अध्ययनमां अपमानथी विषयोनो त्याग प्रतिपादन कर्यो, आ पंदरमा अध्ययनमां जिनेश्वर प्रभुना उपदेशथी विषयोनो त्याग प्रतिपादन करशे, एटले सर्वज्ञकथित उपदेश प्रमाणे वर्ते तो अर्थनी प्राप्ति थाय अने न वर्ते तो अनर्थनी प्राप्ति थाय ते अत्र कहेवाशे.

हे जम्बू ! ते काल अने ते समये चंपा नामनी नगरी हती, त्यां पूर्णभद्रयक्षनुं चैत्य छे. अत्र जितशत्रू नामनो राजा छे, अने धनाढ्य धन नामनो सार्थवाह हतो. चंपानगरीनी पूर्वोत्तरदिशामां घणे दूर अहिछत्रा नामनी नगरी हती, त्यां कनककेतु नामनो

राजा राज्य करतो हतो.

एक समये धनसार्थवाहने करीआणां वगेरे लइ अहिछत्रा नगरीए जवाना भाव थवाथी गाडां विगेरे तैयार करावी पडहो वगडाव्यो के जेने जे सहाय जोइशे ते हुं आपीश। आवा प्रकारना साद पडावाथी शुभ मुहूर्ते घणा वेपारीओ, गृहस्थो, चरक विगेरे भिक्षुको आव्या तेओने लइने सुखे समाधे धनसार्थवाह जइ रह्या छे. अंगदेशना छेडे आवतां एक मोटुं वन आव्युं एटले धनसार्थवाहे वे वणवार साद पडावथा द्वाराए चेतवणी आपी के आ जंगलमां घणा एवा नंदीनामना वृक्षो छे. ते वृक्षोनां मूल-छाल-पत्र-पुष्प-फल कोइ खाशो नहीं, तेम तेनी छायामां पण कोइ बेसशो नहीं. जे कोइ तेनां मूळीयां विगेरे खाशे अगर तेनी छायामां बेसशे तेने आरंभमां ठीक लागशे पण अकाले ते मृत्युने पामशे !!! माटे नन्दीवृक्ष सिवायना वृक्षो सेवशो अने नन्दीवृक्ष सिवायना फलो खाशो तेनो वांधो नथी. आम जणाव्या छतां जेओए धनसार्थवाहना आ वचनो उपर विश्वास न राख्यो अने उलटा वर्त्या तेमने तेमनां अकाले जीवन गुमाव्यां अने जे धनसार्थवाहना आ वचनो उपर विश्वास धरावी तेमना वचन प्रमाणे वर्त्या ते सुखी थया. तेवी रीते जे साधु अथवा साध्वी जिनेश्वरे निषेध करेला होवा छतां पांच प्रकार विषयोमां तल्लीन रहे छे ते आ भवमां दुःखी थाय छे अने अपयशने पात्र थइ अनेक भवोमां रखडे छे. तेम जे साधु अथवा साध्वी जिनेश्वरे निषेध करेला छे तेम जाणी पांच प्रकारना विषयोने त्याग करे छे ते आ भवमां सुखी थाय छे अने यशकीर्तिने पामी शीघ्र मोक्षने साधे छे.

जे कोइ बच्या तेने धनसार्थवाह लइने अहिछत्रा नगरीए गयो, अने कनककेतुराजाने भेटणुं करी तेनी रजा पामी करीआणां वगेरे वेची, लेवा योग्य बीजी वस्तुओ लेइ, पाछा चम्पानगरीए आव्या अने सुखी थया. एक समये स्थवीर महात्माओनुं आगमन थयुं

तेमनी पासे धर्मनुं श्रवण करी धनसार्थवाहे पोताना पुत्रने कारभार सोंपी संयम ग्रहण कर्युं, अगीआर अंग भण्या, यावत् घणा वर्षो संयम पाळी, महीनाना उपवास करी, सलेखना करी देवलोकमां देव थया. त्यांथी च्यवी महाविदेहक्षेत्रमां मोक्षने पामशे.

इति १५–श्रीनन्दीफलअध्ययनसारांशः ॥



॥ १६–श्रीअपरकंका–अध्ययन सारांशः ॥

पूर्वना अध्ययनमां विषयोने विषे आसक्ति राखे छे तेने थता अनर्थ जणाव्या, आ सोलमा अध्ययनमां विषयोनी जे इच्छा राखे छे तेने पण अनर्थनी प्राप्ति थाय छे ते हकीकत कहे छे.

हे जम्बू ! ते काले ते समये चंपानामनी नगरी हती तेना ईशान भागमां सुभूमिभाग नामनुं उद्यान हतुं, ते नगरीमां चारे वेदोने जाणनार धनाढ्य–सोम, सोमदत्त अने सोमभूति नामना त्रण ब्राह्मणो हता तेमने अनुक्रमे नागश्री,–भूतश्री अने यक्षश्री नामे भार्याओ हती, एक समय त्रणे ते ब्राह्मण भाइओ भेगा मळी विचारवा लाग्या के आपणे घणा धनवाळा छीए, सात पेढी सुधी चाले तेटलुं धन छे तो आपणे त्रणे वाराफरती एक घेर सुन्दर–स्वादिष्ट भोजन करीए ते ठीक छे, आ प्रमाणे विचार करी अंगीकार करी अन्योअन्य भोजन तैयार करावी वाराफरती भोजन कर्ता रह्या छे, कोइ एक दिवसे नागश्री ब्राह्मणीने घेर भोजन करवानो वारो आव्यो त्यारे तेणीए घणुं एवुं स्वादिष्ट भोजन तैयार कर्युं, तेमां तुम्बडीनुं शाक तेल आदि घणा द्रव्योथी ते तैयार कर्युं, अने शाकनुं एक बिन्दु चाखी जोयुं तो ते खारुं, कडवुं, खावा माटे अयोग्य, अने विषवाळुं लाग्युं आथी ते नागश्री पोताने धिक्कारी पश्चाताप करवा लागी, मारी

आ वात मारी देराणीओ जो जाणशे तो मारी निन्दा करशे माटे ते न जाणे तेम ते शाकने संताडी दउं एम विचारी ते शाकने संताडी दइ नवुं मधुरतुम्बडानुं स्वादिष्ट शाक तेणीए तैयार कर्युं, ज्यारे ते त्रणे ब्राह्मणो आव्या त्यारे तेमने स्वादिष्ट शाक विगेरेथी भोजन कराव्युं तेओ त्रणे जणा भोजन करी मुखशुद्धि करी पोताना कामे लाग्या, त्यारबाद त्रणे ब्राह्मणीओए पण स्वादिष्ट शाक सहित भोजन कर्युं अने पोताना स्थाने गइ.

नागश्रीए वहोरावेलुं कडवा–तुम्बडानुं शाक.

ते समये धर्मघोष नामना स्थविरमुनि घणा परिवारयुक्त विहार कर्ता चम्पानगरीना सुभूमिभाग नामना उद्यानमां पधार्या छे, तेमने वंदन करवा माटे घणा लोको आव्या अने पर्षदा थइ. स्थविरमुनिए धर्म कह्यो ते श्रवण करी सर्वे गया.

ते वार पछी धर्मघोषस्थविरना शिष्य तेजोलेश्यानी लब्धिवाळा धर्मरुचि नामना अनगारमुनि मास मासनो तप करनारा हता ते श्रीगौतमस्वामिनी माफक पात्रपडिलेहण करी धर्मघोषस्थविरनी आज्ञा लइ भिक्षा माटे चम्पानगरीमां फरता फरता ज्यां नागश्री ब्राह्मणीनुं घर हतुं त्यां प्रवेश्या, ते नागश्री ब्राह्मणीए विषवाला कडवा तुम्बडानुं जे शाक गुप्त राखेलुं ते बधुंए खुब हर्षपूर्वक साधुना पात्रमां नाखी दीधुं. धर्मरुचि अनगार पण पोताना पुरतो आहार थइ गयो जाणी त्यांथी नीकली गुरुमहाराज पासे पाछा गया अने इर्यावही प्रतिक्रमी गुरुमहाराजने गोचरी बतावी. गुरुमहाराजे गन्धथी शंकित थया छता ते शाकना एक विन्दुने चाखी जोयुं, तो ते शाक विषवाळुं जाणी धर्मरुचि अनगारने कहेवा लाग्या के–हे महानुभाव ! आ शाक तुं जो वापरीश तो अकाले मृत्यु पामीश, माटे शुद्ध भूमि विषे परठवी दो ! अने बीजो आहार लावी आहार करो !

धर्मरुचि अनगारे करेलुं अनशन.

गुरु–आज्ञाथी शुद्ध भूमिनी तपास करी परठवतां, एक बिन्दु भूमिपर नाखतां तेनी गन्धथी हजारो कीडीओ भेगी थइ, तेमांथी जे कीडीए तेनो आहार कर्यो ते तूरतज मृत्यु पामी. आथी धर्मरुचि अनगारने अध्यवसाय थयो के–आ बिन्दु नाखतां हजारो कीडीओ मरणने पामी छे, जो आ बधुंये शाक परठवीश तो घणा जीवोनो नाश थशे, अने तेनो वध करनारो हुं थइश. माटे आ सर्वे आहारने हुं खाइ जउं ते कल्याणकारी छे, एवो निश्चय करी मुहपत्तिनुं पडिलेहण करी, आखा शरीरनुं प्रमार्जन करी बीलमां सर्प प्रवेशे तेनी जेम मुखमां आहारनो प्रवेश कराव्यो अर्थात् उदरमां नाखी दीधुं. एक अन्तर्मुहूर्तमां आखा शरीरमां विष व्यापी गयुं अने असह्य वेदना थइ, आथी मृत्यु नजदीक छे एम धारी पात्रां एक जगोए स्थापन करी, शुद्ध भूमिनुं पडिलेहण करी, दर्भनो संथारो करी, पूर्वसन्मुख मुख राखी, पल्यंक आसने बेसी, बे हाथ जोडी, मस्तके अंजलि जोडी,–अरिहंत, सिद्धने नमस्कार करी–गुरुने नमस्कार करी फरीथी करेमिभंतेनुं पच्चक्खाण उच्चरी देहने वोसराव्यो अने समाधिपूर्वक कालधर्म पाम्या.

नागश्रीनो थयेलो तिरस्कार—

धर्मघोषस्थविरे धर्मरुचि अनगारने परठवा गये घणो टाइम थयो छे तेम जाणी साधुओने चारे दिशाए तपास करवा मोकल्या, ते साधु भगवन्तो तपास करतां स्थंडिलभूमिविषे तेमने कालधर्म पामेला जोइ आ अकार्य थयुं छे, तेम करी धर्मरुचि अनगारना कालधर्मनो काउस्सग्ग कर्यो. अने तेमना पात्रां आदि लेइ गुरुमहाराज पासे जइ, इरियावही प्रतिक्रमण करी धर्मरुचि अनगारना कालधर्म पाम्याना समाचार जणाव्या.

धर्मघोषस्थविरे पूर्वमां-(चौदपूर्वमांना कोइ पूर्वमां) उपयोग मेली साधु-साध्वीओने बोलावीने कह्युं के-हे आर्यो ! मारो शिष्य धर्मरुचि नामनो साधु-स्वभावथी भद्रक, यावत् विनीत हतो तेम निरंतर मासक्षपण तप करतो हतो, ते नागश्री ब्राह्मणीने घेर पारण माटे वहोरवा गयो हतो, नागश्रीब्राह्मणीए तेना पात्रमां कडवीतुम्बडीनुं सर्व शाक नांख्युं.

धर्मरुचि अणगार पूरतो आहार आवी गयो तेम करी अत्र आव्यो यावत् घणा वर्षो साधुपणुं पाळी आलोचना, प्रतिक्रमण करी समाधिपूर्वक काळ करी तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळा सर्वार्थसिद्ध नामना विमानमां उत्कृष्टस्थितिए देवपणे उत्पन्न थयो छे त्यांथी च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमां उत्पन्न थइ मोक्षे जशे. हे आर्यो ! नागश्री ब्राह्मणीने धिक्कार छे, ते निर्भागी पुण्यहीन यावत् लींबोडीना जेवी कडवी छे, कारण के तेणीए धर्मरुचि अणगारने मासक्षपणना पारणे कडवा तुम्बडानुं शाक वहोरावी जीवित रहित कर्यो.

ते वार पछी साधु-साध्वीओए नागश्रीब्राह्मणीनुं आ पापकर्म लोकोने कह्युं, आ सांभळी लोको नागश्रीने धिक्कारवा लाग्या, लोको पासेथी ते त्रणे ब्राह्मण भाइओ सांभळीने घेर आवी नागश्रीने कहेवा लाग्या, हे नागश्री ! मरणनी प्रार्थना करनारी ! दुष्ट अने अशुभ लक्षणवाळी ! हीन कृष्ण चौदशे जन्मेली तें मासक्षपण करता साधुने आवी रीते मरण पमाड्या !! आम अनेक प्रकारे वचनथी अने चपेटा आदिथी ताडन करी-तिरस्कार करी घरमांथी काढी मूकी, काढी मेलायेली चंपानगरीमां घेर घेर भटकती लोकोए घरना आंगणे मूकेल बलीने खाती, अने अनेक रीते लोकोना तिरस्कारने पामती, भटकती एवी तेणीने-नागश्रीने सोळ रोग उत्पन्न थया.

भवोभव अनेक असह्य दुःखोने भोगवती नागश्री.

ते सोळ रोगोना एकी साथे दुःखो भोगवती आर्त-रौद्र ध्यान धरती मरण पामीने छट्ठी नारकीमां बावीससागरोपमनी उत्कृष्ट

स्थितिए नारकीपणे उत्पन्न थइ, त्यांथी नीकळीने मत्स्यपणे उत्पन्न थई. त्यां शस्त्रवडे वध पामेली सातमी नारकीमां उत्पन्न थइ, त्यांथी नीकळीने पाछी मत्स्यपणे उत्पन्न थई फरीथी पण त्यां तेवां दुःखो भोगवी छठ्ठी नारकीमां उत्पन्न थइ. एम गोशालानी जेम वारंवार साते नारकमां नारकीनां दुःखो भोगवी पक्षी; पृथ्वीकाय आदि एकेन्द्रियना भवमां उत्पन्न थइ यावत् घणां दुःखो भोगव्यां.

नागश्रीनो सुकुमालिका तरीके थयेल जन्म.

त्यांथी उद्धरीने ते नागश्री जम्बूद्वीपना भरतक्षेत्रमां चम्पानामनी नगरीमां सागरदत्त नामना सार्थवाहनी भद्रा नामनी भार्यानी कुक्षिविषे पुत्रीपणे उत्पन्न थइ अने तेनुं सुकुमालिका एवुं नाम पाडयुं. पांच धावमाताओथी लालनपालन कराती ते यावत् यौवन अवस्थाने पामेली एक समये पोताना महेलनी अगासी विषे सुवर्णना दडाने रमी रही हती, ते समये तेज चम्पानगरीनो धनाढ्य–जिनदत्त नामनो सार्थवाह केटलाक मित्रो सह सागरदत्त सार्थवाहना घर नजदीक थइ जतो हतो तेने ते रूप लावण्यभरी सुकुमालिकाने दासीओथी परिवरेली जोइ, तेनुं रूप–लावण्य–यौवन जोइ आश्चर्य पामेल जिणदत्त सार्थवाहे कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावी पूछ्युं के–आ कोनी पुत्री छे? अने तेनुं नाम शुं छे? कौटुम्बिक पुरुषोए जवाबमां जणाव्युं के–आ सागरदत्त सार्थवाहनी सुकुमालिका नामनी कन्या छे. कौटुम्बिक पुरुषो पासेथी आ प्रमाणे श्रवण करी, पोताने घेर जइ, स्नान करी, मित्र ज्ञातिजनो सहित सागरदत्त सार्थवाहने घेर गयो. जिनदत्त सार्थवाहने पोताने घेर आवता जोइ सागरदत्त सार्थवाहे आसनथी उठी जिनदत्त सार्थवाहने बेसाड्या अने आववानुं प्रयोजन पूछ्युं. जिनदत्त सार्थवाहे जणाव्युं के–तमारी सुकुमालिका पुत्रीने मारा सागरदत्त नामना पुत्रनी भार्यापणे मागणी करुं छुं. सागरदत्त सार्थवाह कहेवा लाग्या के–आ मारी सुकुमालिका पुत्री म्हारे एकज

३

पुत्री छे तेम मने बहु वहाली छे. हुं तेनो क्षणभर वियोग इच्छतो नथी माटे जो तमारो पुत्र सागर म्हारा घरजमाइ तरीके रहे तो हुं म्हारी पुत्री तेने आपुं. जिनदत्त सार्थवाह घेर गया अने पोताना सागर पुत्रने हकीकत जणावी, ते हकीकत श्रवण करी 'सागर' मौन रह्यो. आथी जिनदत्त सार्थवाहे तेनी संमति जाणी, अर्थात् कबुलात करे छे तेम निर्णय कर्यो. शुभ मुहूर्त आव्युं त्यारे स्वादिष्ट भोजन तैयार करावी ज्ञातिजनोने आमन्त्रण करी जमाडी सागरपुत्रने स्नान आदि करावीने आभूषणादिथी शणगारी शिबिकामां बेसाडी सर्वज्ञातिजनोसह आडम्बरपूर्वक सागरदत्त सार्थवाहने त्यां गया. सागरदत्त सार्थवाहे तेओनुं यथायोग्य सन्मान कर्युं, सुकुमालिकाने परणतां (हस्तमेलापना समये) सुकुमालिकाना हस्तनो स्पर्श तलवारनी जेम अने धगधगता अग्निना स्पर्शनी जेम सागर अनुभववा लाग्यो. सागर इच्छाविना परवशपणे आ स्पर्शने अनुभवतो मुहूर्तमात्र बेसी रह्यो. सागरदत्त सार्थवाहे सागरपुत्रना मातापिता विगेरेने जमाडी वस्त्रादिथी भक्ति-सन्मान करी विदाय कर्या. सागरपुत्र सुकुमालिकानी साथे शयनगृहे आव्यो. सुकुमालिकाना अंगनो अत्यन्त कष्टपूर्वक अग्निनी माफक स्पर्श अनुभवतो पराधीनपणे मुहूर्त मात्र थये सुकुमालिका निद्राधीन थइ त्यारे पोतानी जुदी शय्यामां सुइ गयो. सुकुमालिका पोताना पतिने बीजी शय्यामां सुतेला जोइ रागथी त्यां जइ सुती. ते समये पण पूर्वनी जेम सागर कष्ट सहन करवा लाग्यो, त्यां पण सुकुमालिका निद्राधीन थये छते कसाइखानामांथी जेम नाशी छूट्यो न होय तेम नाशी छूट्यो अने पोताना घेर आवतो रह्यो.

सुकुमालिका जागी पछी पोताना पतिने न जोतां सर्वत्र तपास करी तो द्वार खुल्लुं जोइ पोताना पतिने चाल्या गया तेम जाणी विचारवा लागी. सेवामां तेनी माताए पुत्री तथा जमाइ माटे मुख धोवा पाणी लइने दासीने मोकली. दासीए विचारमग्न बनेली

सुकुमालिकाने जोइ शु थयु छे तेम पूछ्युं, सुकुमालिकाए यथास्थित जे बन्युं ते कह्युं. दासीए जइ तमाम हकीकत सागरदत्त सार्थवाहने कही. आ श्रवण करी कोपायमान थयेला सागरदत्त सार्थवाह जिनदत्त सार्थवाहने घेर गया अने जिनदत्त सार्थवाहने ठपको–उपालम्भ अनेकरीते आप्यो. जिनदत्तसार्थवाहे–स्वपुत्र सागरने कह्यु के आ तें खोटु कर्युं छे, तु त्या जा । सागरपुत्रे जणाव्यु के–पिताजी. पर्वत उपरथी पडु । झाड परथी पडु । मरुदेशमा चाल्यो जउ । पाणीमा प्रवेशु । अग्निमा प्रवेश करु । विष भक्षण करु । गळे फासो खाउ । गृद्धपृष्ठमा प्रवेशु । दीक्षा लउ । चाल्यो जउ । परन्तु सागरदत्तने घेर नहि जवु. आ बधु भींतना आतरे रहेल सागरदत्त सार्थवाह श्रवण करी लज्जा पामेला पोताना स्थाने चाल्या गया अने पुत्रीने बोलावी आश्वासन आप्युं अने कह्युं के–जेने तु इष्ट–यावत् मनने गमती थइश तेने आपीश.

ते वार पछी एक समये सागरदत्त सार्थवाह अगाशीमा बेसी राजमार्गमा जुवे छे तो एक भीखारी साधेला ककडावाळु वस्त्र पहेरेलो, हाथमां सरावलु अने हाथमा पाणी माटे घडो राखेलो तेम हजारो माखीओथी विंटायेलो जोयो, सागरदत्त सार्थवाहे कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावी भलामण करी के–आ भीखारीने खोराकथी लोभावी घेर लइ जइ, स्वादिष्ट भोजन करावी, भीक्षाना साधनो दूर करावी, वस्त्र–अलकारथी विभूषित करी मारी पासे लावो । कौटुम्बिक पुरुषो तेना भीखारी वेषने ज्या दूर करवा लाग्या त्यारे ते भीखारी राडो पाडवा लाग्यो अने रडवा लाग्यो. सागरदत्त सार्थवाहनी सूचनाथी तेना भीखारी वेष आदिने विश्वास उत्पन्न थाय तेवी रीते तेनी पासे स्थापन कराव्यो अने हजामत करावी सहस्रपाक आदि तेलो वडे ते भीखारीने मालीश करावी, स्नान करावी, वस्त्र–आभूषण पहेरावी ते कौटुम्बिक पुरुषो सागरदत्त सार्थवाह पासे लइ गया. सागरदत्त सार्थवाहे ते भीखारीने पोतानी सुकुमालिका

पुत्रीने भार्या तरीके अर्पण करी, भीखारीनी स्थिति पण सागरनी माफक थतां ते पण पोताना भीक्षाना साधनो लइने सागरनी माफक नाशी छूट्यो.

आ सर्व हकीकत ज्यारे सागरदत्त सार्थवाहे जाणी त्यारे सुकुमालिकाने प्रेमसह कहेवा लाग्या के-तुं पूर्वभवमां आचरेला पापकर्मना फलने अनुभवे छे, तुं आर्तध्यान कर्या विना हवे हे पुत्री ! तुं मारा रसोडा विषे विपुल एवुं अशन-पान खादिम-स्वादिम हंमेशां तैयार थाय छे तेने "पोट्टिलानी" जेम श्रमण-साधु वगेरेने आपती छती रहे. सुकुमालिका पण ते प्रमाणे दान आदि करे छे.

सुकुमालिकाए लीधेली दीक्षा.

ते काले ते समये बहुश्रुत गोपालिका नामनी आर्या घणी आर्याओ सह समवसरी, तेमांथी बे आर्याओ भिक्षार्थे आ सुकुमालिकाने त्यां आवी. ते साध्वीओने आहार विगेरे वहोरावी, सुकुमालिका कहेवा लागी के-हे आर्याओ ! हुं सागरने अनिष्ट छुं तेम तेना मनने गमती नथी वगेरे जे बीना बनेली ते कहीने कथन करवा लागी के-तमो घणा ज्ञानवान छो, यावत् मन्त्र-तन्त्र वगेरेना आम्नायने पामेलां छो तेथी तमे मने एवो उपाय दर्शावो के जेथी हुं सागरने इष्ट थाउं.

बन्ने आर्याओए कर्मनो विपाक-बन्ध विगेरे समजावी तेम जैन धर्म-साधु धर्म जणावी तेने श्राविका बनावी यावत् सुकुमालिकाए गोपालिका आर्या पासे दीक्षा ग्रहण करी. सुकुमालिका आर्या थइ. ईर्यासमिति पाळती यावत् ब्रह्मचर्य धारण करती घणा छट्ठ-अट्ठम विगेरे तपस्या आचरती थकी विचरवा लागी. एक समय ते सुकुमालिका आर्याए-गोपालिका आर्याने वंदना नमस्कार करी चंपा नगरीनी बहार सुभूमिभाग नामना उद्याननी नजदीक छट्ठनी तपस्या वडे सूर्यनी सन्मुख आतापना लेती रहेवा माटे आज्ञा मागी.

गुरुआज्ञानो करेलो भंग, यावत् करेलुं नियाणुं.

सुकुमालिका आर्याए मागेल आज्ञाना जवाबमां गोपालिका आर्याए जणाव्युं के-हे आर्या ! आपणे साध्वीओ निर्ग्रंथ छीए, ईर्यासमितवाळी छीए यावत् गुप्त ब्रह्मचारिणी छीए तेथी आपणने गामनी बहार यावत् सन्निवेसनी बहार निरंतर छट्ठ आदि तप करी आतापना लेतां रहेवानुं कल्पतुं नथी, परन्तु वाड के वंडी सहित उपाश्रय विषे रही वस्त्रवडे काया ढांकी साध्वीओना परिवार साथे रहीने पृथ्वी पर पगना सम तलीया राखीने आतापना लेवी कल्पे छे. गोपालिका आर्या(गुरुणी)नी आ वात पर श्रद्धा-रुचि-विश्वास नहीं करती सुकुमालिका आर्या गुरुणीना ना कहेवा छतां सुभूमिभाग उद्यानथी थोडा दूर छट्ठ आदि तपस्या करती आतापना लेवा लागी.

ते चंपानगरीमां राजाथी छूट अपायेली एक ललिता नामनी टोळी रहे छे ते माता-पिता-स्वजन विगेरे कोइनी अपेक्षा राखती नथी, अविनयी अने उद्धत एवी ए टोळी वेश्याने त्यां पडी रहे छे.

ते टोळीमांथी पांच गठीआओ देवदत्ता नामनी रूपवान् वेश्यानी साथे एक समये आ उद्याननी शोभा अनुभवता आव्या अने ते देवदत्ता वेश्याने एके खोळामां बेसाडी, बीजो तेना पर छत्र धरवा लाग्यो, त्रीजो तेणीना मस्तक पर पुष्पनो मुगट रचे छे, चोथो तेणीना पगने अलताथी रंगे छे अने पांचमो पुरुष तेणीने चामर वींझवा लाग्यो यावत् तेओ मनुष्य सम्बन्धी भोगविलास भोगववा लाग्या. देवदत्ताना आ विलासो-पौद्गलिकसुखो जोइ सुकुमालिका आर्यानुं चित्त चलायमान थयुं अने देवदत्ता वेश्याना पूर्वपुण्योने अनुमोदवा लागी. जो आ मारा तप-नियम-ब्रह्मचर्यनुं कंइ पण फलविशेष होय तो आगामी भवे हुं आवा कामभोगने भोगवती यावत् विचरुं ! आम करी नियाणुं करी आतापनानी भूमिथी पाछी फरी, ते वार पछी ते सुकुमालिका आर्या शरीरबकुशा (शरीरनी शोभा करवी तेने शरीरबकुश

कहे छे) थइ वारंवार हाथ-पग-मस्तक-मुख-स्तनांतर-काख-गुह्यभागने धोवा लागी, तेम उभा रहेवाना स्थानने-सुवाना स्थानने-स्वाध्यायना स्थानने-बेसवाना स्थानने प्रथम जलवडे छांटवा लागी. आथी गोपालिका आर्याए आ साध्वीओने कल्पतुं नथी वगेरे समजाव्युं पण तेणीए गुरुना ठपकानो आदर कर्यो नहीं, आथी बीजी साध्वीओए पण सुकुमालिकानो अनादर करवा मांड्यो तेम तेनो पराभव करवा लागी. आथी सुकुमालिकाने एवो विचार आव्यो के-हुं घेर हती. संसारमां हती त्यारे स्वतन्त्र हती, हुं दीक्षा लेइने परवश थइ, आ साध्वीओ पहेलां मारो आदर करती, हवे ते आदर करती नथी माटे आवतीकाले हुं एकली जुदा उपाश्रये जइने रहुं. बीजे दिवसे ते जुदा उपाश्रये जइने रहेवा लागी अने स्वच्छंद मतिवाळी पासत्थविहारी-कुशीलविहारी आदि थइने घणा वर्ष संयम पाळी पंदर दिवसनी सलेखना करी, पोताना दोषोने आलोच्या नहिं, तेम पश्चातापरूप प्रतिक्रमण कर्या विना काल करी ईशान देवलोकमां गणिकापणे (अपरिगृहितदेवीपणे) देवी थई.

द्रौपदी तरीके थयेल जन्म—

नव पल्योपमनुं ईशान देवलोकनुं आयुष्य पूर्ण करी सुकुमालिका च्यवीने पंचालदेश विषे कांपील्यपुरना नगरमां द्रुपद राजानी चुलणी राणीनी कुक्षीविषे पुत्रीपणे जन्मी अने तेनुं द्रौपदी एवुं नाम पाड्युं. द्रौपदी बालिका पांच धावमाताओथी लालनपालन करातो वृद्धिने पामी. यावत् युवानी अवस्थाने पामी. ते वार पछी द्रौपदीने अन्तःपुरनी राणीओए स्नान करावी, विभूषित करीने द्रुपदराजाना पादने वन्दन करवा मोकली. द्रौपदी पण पिता द्रुपदराजानी पासे जइ तेमने पगे लागी. द्रुपद नृपतिए पोताना खोळामां बेसाडी, द्रौपदीना-रूप-लावण्यथी आश्चर्य पामेला द्रुपदराजाए द्रौपदीने कह्युं-हे पुत्री ! हुं पोते कोइ राजा के युवराजने परणावुं तो तुं सुखी

अथवा दुःखी थाय तेथी मने जीवनपर्यंत हृदयमां बलतरा थाय माटे हे पुत्री ! आजथी मांडीने हुं त्हारो स्वयंवर रचुं छुं. तुं तारी जाते कोइ राजा के युवराजने वरीश ते त्हारो भर्ता थशे ! एम कही आश्वासन आपी विदाय करी.

स्वयंवरमां आववा माटे दूतोनुं प्रयाण.

ते वार पछी द्रुपदराजाए दूतने बोलावी कह्युं के–हे देवानुप्रिय ! द्वारका नगरि विषे कृष्ण वासुदेव, समुद्रविजय विगेरे दस दसारो, बलदेव वगेरे पांच महान् वीरो, उग्रसेन वगेरे सोल हजार राजाओ, प्रद्युम्न विगेरे साडात्रण क्रोड कुमारो, सांब विगेरे साठ हजार उद्धत अने बलवान कुमारो, वीरसेन विगेरे एकवीश हजार वीरपुरुषो, महासेन आदि छप्पन हजार बळवानवर्ग, तेमने तथा बीजा घणा राजा, ईश्वर, तलवर, माडंबिक, कौटुंबिक, इभ्य, श्रेष्ठी. सेनापति अने सार्थवाह आदिने बे हाथ जोडी दश नखो भेगा करी मस्तक विषे फेरवी अंजली करी जय विजय शब्दोथी वधावी आ प्रमाणे कथन करजे ! हे देवानुप्रियो ! कांम्पील्यपुर नगरमां द्रुपदराजानी चुलणी राणीथी उत्पन्न थयेली, धृष्टद्युम्नकुमारनी ब्हेन द्रौपदी नामनी राजकन्यानो स्वयंवर थवानो छे तो आप जल्दी त्यां पधारो ! राजानी आ आज्ञा दूत अंगीकार करी पोताने घेर गयो, घेर जइने पोताना कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावी चार घंटा बांधेला घोडावाळा रथने तैयार करी लाववा जणाव्युं. कौटुम्बिकपुरुषोए लावेला रथ पर बेसी आयुधो अने शस्त्रोवाळा घणा पुरुषो सहित ते दूत पंचाल देशनो सीमाडो उल्लंघन करी सौराष्ट्र देश विषे द्वारका नगरीनी बहार कृष्णमहाराजा–वासुदेवनी बहारनी सभामां जइ उतारो करी पगे चालतो कृष्णवासुदेवनी पासे गयो, अने कृष्णवासुदेव विगेरेने मस्तके अंजलि जोडी स्वयंवर सम्बन्धि सर्व वृतान्त कही सर्वेने पधारवानी विनंति करी. आ श्रवण करी हर्षित थयेला कृष्णमहाराजे तेनुं सन्मान कर्युं. यावत् तेने विदाय कर्यो. कृष्ण–

वासुदेवे, समुद्रविजय विगेरे राजाओ महासेन विगेरे तेम बीजाओनी साथे हस्तीरत्न उपर बेसी कांपील्यपुर नगर तरफ प्रयाण कर्युं.

द्रुपदराजाए–बीजा दूतने हस्तिनापुर नगरे युधिष्ठिर आदि पांच पुत्रो सहित पांडुराजानी, दुर्योधन आदि सो भाइओनी, गांगेय–विदुर–द्रोण–जयद्रथ–शकुनी–कर्ण अने अश्वथामानी पासे विनंति करवा मोकल्यो, त्रीजा दूतने–चम्पानगरी विषे अंगराज कृष्णनी, सेल्लकराजानी अने नंदराजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो. चोथा दूतने शुक्तिमती नगरी विषे दमघोषना पुत्र, पांचसो भाइओथी परिवरेला शिशुपाल राजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो. पांचमा दूतने–हस्तिशीर्ष नगर विषे दमदंतराजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो. छट्ठा दूतने मथुरा नगरी विषे धर नामना राजा पासे विनंति करवा मोकल्यो. सातमा दूतने राजगृहनगर विषे जरासंधना पुत्र सहदेवराजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो. आठमा दूतने कौडिन्यनगरविषे भीष्मकना पुत्र रुप्पीराजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो. नवमा दूतने विराटनगरविषे सो भाइओसहित कीचकराजानी पासे विनंति करवा मोकल्यो. दशमा दूतने बाकीनां गाम–आकर अने नगर आदिमां विनंति करवा मोकल्यो. अने सर्वेने स्वयंवरमां पधारवानी विनंति करवा कह्युं. दरेक दूतोए द्रुपदराजानी आ आज्ञा स्वीकारी, दरेक दूतो द्रुपदराजानी आज्ञा प्रमाणे गया अने तेओए ते प्रमाणे दरेक स्थाने विनंति करी. तेवार पछी हजारो राजाओ कांपिल्यपुर आववा लाग्या.

द्रौपदीनो स्वयंवर मंडप—

द्रुपदराजाए कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावी आज्ञा करी के–तमे गंगानदीनी समीपमां एक सेंकडो थांभला अने पुतळीओथी शोभतो स्वयंवर मंडप बनावो अने वासुदेव विगेरे हजारो राजाओ माटे आवासो तैयार करो। कौटुम्बिकपुरुषोए द्रुपदराजानी आज्ञा प्रमाणे

सर्वे तैयार कर्यु. देश देशथी आवेला अनेक सुभटो सह वासुदेव विगेरे राजाओनुं योग्य सन्मान करी तेमने उतरवा आवासो अर्प्या. पोत–पोताना आवासोमां प्रवेशेला कृष्णवासुदेव आदि राजाओ विगेरे आसन पर बेठेला अने शयन पर सुतेला सुता सुता गंधर्वो पासे गायनो गवडावता तेम नटो पासे नाटको करावता आनंदपूर्वक [illegible] छे. अने द्रुपदनृपतिए कौटुम्बिक पुरुषो मारफते मोकलावेल–अशन–पान–खादिम–स्वादिम तथा चार प्रकारनी–सुरा आदिनो तेम पुष्पो, वस्त्रो, गन्ध–माला–अलंकारोनो भोगवटो करे छे.

ते बारपछी द्रुपदराजाए कौटुम्बिकपुरुषो मारफते कांपील्यपुरनगरमां द्रौपदीनो आवतीकाले प्रातःकाले स्वयंवर छे तो सर्वे पधारशो अने सहुए पोताना नामथी अंकित आसन विषे पधारी–द्रौपदीनी आववानी राह जोशो ! तेवी उद्घोषणा करावी. अने कौटुंबिक-पुरुषोने बोलावी–स्वयंवरमंडपमां पाणीनां छांटणां छंटाव्यां, संमार्जन करावी लींपणथी लींपावी सुगन्धी द्रव्योथी सुगंधित करावी, पांचवर्णोनां पुष्पो–कालागरु, श्रेष्ठकंदुक अने तुरुष्क विगेरे धूपोथी मघमघायमान स्वयंवर मंडप बनाव्या अने मांचाओ बंधाव्या.

स्वयंवरमंडपमां वासुदेव वगेरे आवी पोताना नामथी अंकित आसन विषे बेसी द्रौपदीनी राह जोवा लाग्या, अने द्रुपद-राजाए पण त्यां आवी सर्वेने जय–विजयथी वधाव्या.

श्रेष्ठ राजकन्या द्रौपदी स्नान करी गृहदेवतानुं पूजन करी मसीतिलकादि कौतुको अने दुर्वादि मंगलकार्यो करी मांगलिक वस्त्रो पहेरी घरदेरासर विषे जइ जिनपूजा करी, द्रव्यभावस्तवने स्तवी प्रभूने वंदना–नमस्कार कर्या पछी अन्तःपुरमां आवी. त्यां अंतेपुरीए भेगा मली द्रौपदीने सर्वअलंकारोथी विभूषित करी पगमां नूपर पहेराव्यां. द्रौपदी दासीओथी परिवरी ज्यां बहारनी सभा हती त्यां आवी अने चार घंटावाला अश्वथी जोडेला रथ विषे धात्रीमाता अने लेखिका दासी सह बेठी. आ समये धृष्टद्युम्न नामना तेना वडीलबन्धुए

तेनुं सारथीपणुं कर्युं. कांपील्यपुरनगरनी मध्ये थइने रथमां बेठेली द्रौपदी स्वयंवरमण्डपनी बहार रथ उभो राखी नीचे उतरीने पोताने बालपणाथी रमाडनार धावमाता तथा लेखिका-(लखनारी) दासी साथे स्वयंवरमण्डप विषे प्रवेश कर्यो. प्रवेश करतानी साथे बे हाथ जोडी, वासुदेव विगेरे हजारो राजाओने नमस्कार कर्या. त्यारबाद पाटला-मल्लिका-चंपक विगेरे पंचवर्णोना पुष्पोथी शोभतो पुष्प-मालानो सुगन्धीदार दडो द्रौपदीए ग्रहण कर्यो.

पांडवो साथे लग्न.

ते वार पछी-क्रीडा करावनारी धावमाताए डाबा हाथमां दर्पण राख्युं, अने ते दर्पण विषे प्रतिबिम्ब पडता अनुक्रमे दश दसारो विगेरे राजाओने जमणा हाथे द्रौपदीने देखाडती ते ते राजाओना मात-पिता-वंश-सत्त्व-सामर्थ्य-गोत्र-विक्रम-कान्ति-कीर्ति-ज्ञान-रूप-यौवन-गुण-लावण्य-कुळ अने शियल विगेरेनुं वर्णन धावमाता करती ते श्रवण करती द्रौपदी हजारो राजाओने पूर्वे करेला नियाणाना प्रतापे ओळंगती ज्यां पांच पांडवो छे त्यां आवीने पांचे पांडवोने द्रौपदीए पुष्पनी माळा-वरमाळावडे चोतरफथी वींटी दीधा अने द्रौपदी बोली. " आ पांच पांडवो में वर्या ! "

त्यारबाद वासुदेव विगेरे हजारो राजाओ मोटामोटा शब्दथी बोल्या. अहो ! द्रौपदी राजकन्या सारुं वरी एम कही स्वयंवर मण्डपनी बहार नीकळी पोतपोताना आवासो विषे आव्या अने धृष्टद्युम्नकुमारे पांचपांडवोने द्रौपदी राजकन्या सह रथविषे बेसाडी कांपील्यपुर नगर मध्ये स्वभुवनमां धृष्टद्युम्नकुमार लइ गया. ते वार पछी द्रुपदराजाए पांचपांडवो तथा द्रौपदीने पाटला उपर बेसाडावी, सोनाना कळशोवडे मज्जन करावी, अग्नि होमनी क्रिया करावरावी, यावत् द्रौपदीनो पांच पांडवो साथे हस्तमेळाप (लग्नक्रिया) कराव्यो,

द्रुपद राजाए कन्यादानमां आठ क्रोड हिरण्य, घणुं धन, सोनुं, तेम दासीओ विगेरे आप्युं अने वासुदेव वगेरे राजाओनुं सन्मान करी विदाय कर्या. त्यारपछी पांडुराजाए वासुदेव विगेरे हजारो राजाओने बे हाथ जोडी आप सर्वे मारा पर उपकार करी आ लग्नमहोत्सव उपर हस्तिनापुर नगरे जल्दी पधारजो !! तेवी विनंति करी. आथी सर्वे राजाओ जवा तैयार थया. ते वार पछी पांडुराजाए कौटुम्बिक पुरुषोने हस्तिनापुरे सात मजलाना पांच महेलो तैयार कराववा मोकल्या, तेओए पण जइ जल्दी पांचे महेलो तैयार कर्या. त्यारबाद पांडुराजा, पांच पाण्डवो अने द्रौपदी देवी सहित अश्व-हाथी विगेरे सैन्य सहित त्यांथी नीकळी हस्तिनापुर नगरे आव्या अने पांडुराजाए आवना पण वासुदेव विगेरे हजारो राजाओ माटे कौटुम्बिकपुरुषो पासे आवासो तैयार करावी, आवना पण वासुदेव विगेरे हजारो राजाओनुं सन्मान-सत्कार करी यथायोग्य तेमने आवासो आप्या, अने तेओने योग्य एवा आहारो-पाणी विगेरे कौटुम्बिक-पुरुषो साथे मोकल्या. पांडुराजाए पांचपांडवो अने द्रौपदी देवीने पाजोठ उपर बेसाडी कळशोवडे स्नान करावी लग्न सम्बन्धी मंगळ-क्रिया करावी लग्न पर पधारेल राजाओनुं योग्य सन्मान करी विदाय कर्या. ते वार पछी पांचे पांडवो द्रौपदी देवीनी साथे अन्तःपुरना परिवार सहित एक एक दिवसना वारा प्रमाणे भोग भोगववा विचरवा लाग्या.

नारद मुनिनुं आगमन-अपरकंका प्रति गमन.

एक समये पांच पांडवो-कौंतीदेवी-अने द्रौपदी पुत्रवधू तेम अंतःपुरना परिवार सह अन्तपुरमां पांडुराजा सिंहासन विषे बेठा हता, ते समये देखावमां अति भद्रक-विनीत लागता पण हृदय विषे मलिन, एक ब्रह्मचर्यव्रत धारण करवाने लइ मध्यस्थपणाने पामेला, देखनार भविजीवोने व्हाला लागे तेवा, रुपवान्-अखंड-उज्वल वस्त्रने पहेरेला, वक्षस्थले काळुं मृगचर्म धारण करेला, हाथमां दंड

अने कमण्डल राखेला, जटारूपी मुकुटवडे शोभता, रुद्राक्षनी माळारूपी आभरणो धारण करेला, मुंज जातिना घासनो कंदोरो पहेरेला, हाथमां कच्छपी नामनी वीणाने धारण करेला, संगीतना प्रेमी, आकाशगमन करवानी शक्ति होवाथी पृथ्वी विषे अल्प भ्रमण करनारा, अने आवरणी, अवतरणी, उत्पतनी, श्लेषणी, संक्रामणी, अभियोगिनी, प्रज्ञप्ति, गमनी अने स्तंभिनी आवी घणी विद्याधरनी विद्याओमां निपुण होवाथी जेमनी कीर्ति प्रसिद्ध हती, बलदेव, वासुदेव, तथा प्रद्युम्न आदि कुमारोने प्रिय, कलह, युद्ध अने घणा लोकोनो कोलाहल थाय ते प्रिय छे जेने एवा, मांडन बोलवानी इच्छावाळा, युद्धो जोवामां रसिक, बीजाओने कलह-करावी असमाधि करावता आवा अनेकप्रकारना गुणवाळा नारदनामना मुनि घणास्थाने फरता फरता हस्तिनापुरमां आवी अत्यंतवेगथी पंडुराजाना महेलमां उतर्या, पण्डुराजा-पांच पांडवो कुन्तादेवी सह आसनथी उभा थया, अने नारदऋषिनी सन्मुख सात आठ पगला गया, तेम वंदना-नमस्कार करी महापुरुषने योग्य आसनवडे आमन्त्र्या, नारदऋषिए भूमिविषे पाणीनां छांटणां छांटी, दर्भने ते पर पाथरी तेना विषे आसन कर्युं, अने नारदजी ते आसनपर बेठा. बेसीने पंडुराजाने तेमना तथा अन्तःपुरना कुशल समाचार पुछ्या, पण्डुराजा विगेरे ए तेमनो आदर सत्कार कर्यो.

किन्तु-असंयत, अविरति, पापकर्मनां पच्चक्खाण नहिं करेला, समकित नहीं पामेला एवा नारदने जाणी द्रौपदीदेवीए नारदजीने वन्दना-नमस्कार-आदर के सत्कार न कर्या, सन्मुख उभी पण थइ नहीं, आथी नारद मनमां विचारवा लाग्या के अहो आ द्रौपदी पोताना रूपवडे अने पांच पाण्डवो रूपी पतिवडे अभिमानी थयेली होवाथी मारो आदर करती नथी, यावत् सेवा करती नथी, माटे एनुं कंइक अप्रिय करुं आवुं चिन्तवी, जवा माटे पण्डुराजानी रजानी रजा लइ, आकाशमार्गे गमन करता लवणसमुद्रमध्ये थइ पूर्व

सन्मुख जतां धातकीखण्डनी पूर्वदिशामां आवेला दक्षिणार्ध भरतक्षेत्रविषे अपरकंका राजधानी' विषे सातसो राणीओ छे जेने एवा पद्मनाभ नामना राजाना महेलमां उतर्या, अहिं पाण्डुराजानी जेम तेमनो आदर-सत्कार पद्मनाभ राजाए कर्यो, अने पोतानी अन्तः-पुरीना रूपथी आश्चर्य पामेला पद्मनाभ राजाए पूछ्युं के-आप घणी अन्तःपुरीमां जाव छो तो मारा करतां अधिक रूपवाळी अन्तेपुरी कोइ ठेकाणे तमे जोइ छे ! नारदजी फंइक हस्ता कहेवा लाग्या के द्रौपदीना एक पगना अंगुठाना रूपना सो मा भागे पण तारी अन्तःपुरीनी स्त्रीओ नथी. तुं तो कुवाना देडका जेवो छुं ! ! आ प्रमाणे नारदजी कहीने रजा लइने चाल्या गया.

द्रौपदीनुं अपहरण—

द्रौपदी पर आसक्त थयेला पद्मनाभराजाए अट्ठमनो तप करी आराधी पूर्वसंगतिक नामना देवने बोलाव्यो, अने कह्युं के-हे देवा-नुप्रिय ! तमे द्रौपदीने मने लावी आपो ! एम हुं इच्छुं छुं. पूर्वसंगतिकदेवे पद्मनाभराजाने जणाव्युं के-एवुं थयुं नथी, थतुं नथी तेम थशे नही के-"द्रौपदी देवी पांच पाण्डवोने मूकीने बीजा कोइ साथे कामभोग भोगवती छती विचरे !" छतां तारुं प्रिय करवा माटे द्रौपदीने जल्दी अहीं लावुं छुं एम कही हस्तिनापुरे जइ ज्यां युधिष्ठिर राजा द्रौपदीदेवीनी साथे महेलनी अगाशी विषे सुता हता, त्यां गयो अने द्रौपदीने अवस्वापिनी निद्रा आपी हरण करी पद्मनाभराजाना अशोकवनविषे स्थापी, अवस्वापिनी निद्रा संहरी, पद्मनाभ-राजाने खबर आपी, पद्मनाभराजाने कह्युं के-हवे आ हकीकतमां तने जे मुश्केली थाय तेमां हुं मदद करीश नहिं ! एम कही पोताना स्थाने देव चाल्यो गयो.

थोडीवार पछी जाग्रत थयेली द्रौपदीदेवी पोताने अन्यस्थाने जोई विचारवा लागी के-कोइ देव-दानव यावत् गंधर्व कोइ

४

अन्य राजानी अशोकवाटिका विषे संहरीने मने लाव्यो छे. आम विचार करवामां ज्यां गरकाव थइ त्यां तो अलंकारोथी विभूषित थयेलो अने पोताना अंतःपुरथी परिवरेलो पद्मनामराजा आव्यो अने द्रौपदीने कहेवा लाग्यो के-तुं चिन्ता न कर ! में तारुं अपहरण कराव्युं छे ! तुं मारी साथे भोग भोगव ! द्रौपदी देवीए तेना जवाबमां जणाव्युं के-हे देवानुप्रिय ! जंबूद्वीपना भरतक्षेत्र विषे मारा पतिना भ्राता कृष्ण वासुदेव छे, ते जो छ मास सुधीमां म्हारी व्हारे नहीं आवे तो हुं तमे कहेशो तेवी आज्ञामां हुं रहीश-वर्तीश !

द्रौपदीनी आ वात अंगीकार करी पद्मनामराजाए कन्याओना अन्तःपुरमां द्रौपदीने राखी. कन्याओना अन्तःपुरमां रहेली द्रौपदीदेवी निरंतर छट्ठनो तप करे छे, अने पारणे आंबिल करती तपकर्मवडे आत्माने भावती थकी रही छे.

द्रौपदीनी शोधमां पांडवादि—

आ तरफ अंतर्मुहूर्त पछी जागेला युधिष्ठिरे पोतानी पासे द्रौपदी न जोवाथी शय्यामांथी उभा थइ चोतरफ शोधखोळ करी परन्तु द्रौपदीनी माहिति न मळवाथी पांडुराजा हता त्यां आव्या अने द्रौपदीदेवीने कोइ देव आदि हरी गयो छे माटे तेनी गवेषणा करवाने इच्छुं छुं तेम कह्युं. पांडुराजाए पण कौटुम्बिक पुरुषोने कही आघोषणा करावी मोटुं इनाम जाहेर कर्युं छतां कंइ पत्तो न मळ्यो, त्यारे पांडुराजाए कुंतीदेवीने द्वारकानगरीमां कृष्णवासुदेव पासे तपास कराववा मोकली. कुंतीदेवी हस्ति पर बेसी द्वारकानगरीना उद्यानमां आवी, हस्ति परथी उतरी कौटुम्बिकपुरुषो मारफते कृष्णवासुदेवने खबर आपी के तमारां फोइ कुंतीदेवी उद्यानमां आव्यां छे, तेओ तमारा दर्शननी इच्छा राखे छे. कृष्णवासुदेव आ समाचार श्रवण करी हस्ति उपर बेसी तूरत कुंतीफोइनी पासे गया अने कुंतीफोइने पगे लागी हाथी पर बेसाडी, बन्ने (कुंती अने कृष्ण) कृष्णवासुदेवना महेल आव्या; महेल विषे आवी भोजन आदि कर्या पछी कृष्णवासुदेवे

कुंतीफोइने अत्र आगमननुं प्रयोजन पूछ्युं, कुंतीए द्रौपदीना अपहरणथी यावत् शोध करतां नहीं प्राप्त थवानी हकीकत कही अने शोधी आपवा जणाव्युं. कृष्णवासुदेवे फइने जणाव्युं के हुं जो कोइ स्थाने तेनो पत्तो पामुं तो पाताल के भवनमां अथवा अर्धभरतमांथी म्हारा हाथे शोधी लावीश. आम कही कुंतीफइनुं सत्कार–सन्मान कर्युं, अने जवा माटे रजा आपी, कुंती पण हस्तिनापुर नगरे पाछां आवी गया, कृष्णवासुदेवे पोताना माणसो पासे तपास करावता मांडी, एवामां एक वखत नारद त्यां आव्या. तेमनो यथायोग्य सत्कार कर्यो अने ज्यारे नारदजीए कुशळता पूछी त्यारे द्रौपदीना हरणनी वात कहीने पूछ्युं के तमे घणा स्थाने फरो छो तो तमे कंइ खबर–पत्तो जाणो छो ? नारदजीए कह्युं के–घातकीखण्डना दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्र विषे अपरकंका नामनी राजधानी विषे पद्मनाभ नामना राजाना महेलमां पूर्वे में जोयेली एवी द्रौपदीदेवी हती. कृष्णवासुदेवे नारदजीने कह्युं के–आ कार्य तमारुंज जणाय छे. नारदजी तो आ श्रवण करतांज त्यांथी आकाशमार्गे चाल्या गया.

तेवार पछी कृष्णवासुदेवे हस्तिनापुरनगरे पोतानो दूत मोकली द्रौपदीनी माहिती जणावी अने चतुरंग सेना सह पांच पांडवोए पूर्व दिशाना समुद्रने कांठे आवी म्हारी राह जोता रहेवुं तेवी खबर आपी. पांडवो पूर्व समुद्रना कांठे चतुरंग सैन्य सहित जइने कृष्णवासुदेवनी राह जोवा लाग्या.

कृष्णवासुदेव पण पोतानी चतुरंगसेना सहित पूर्वसमुद्रना किनारे आव्या अने पांचपाण्डवोने मळ्या; ते पछी पोषधशालामां प्रवेशी अट्ठमनो तप करी सुस्थितदेवनी आराधना करी प्रत्यक्ष कर्यो अने द्रौपदीनी मददे जवा पांच पांडवो सह मने लवणसमुद्रमां मार्ग आपो तेवुं जणाव्युं, सुस्थितदेवे जणाव्युं के–जेवी रीते पद्मनाभराजाए पूर्वसंगतिक देवमारफते द्रौपदीनुं अपहरण कर्युं छे तेनी

रीते हुं द्रौपदीने उपाडी हस्तिनापुर विषे मूकुं ? के ते पद्मनाभराजाने तेना नगर, सैन्य अने वाहन सह लवणसमुद्रमां नाखुं ? आम ज्यारे सुस्थितदेवे पूछ्युं त्यारे कृष्णवासुदेवे जणाव्युं, हे देवानुप्रिय ! तुं तेम न कर, पण अमने छने रथ सह जवा माटे मार्ग आप ! हुं पोतेज द्रौपदीदेवीनी मददे जइश. आम कहेवाथी सुस्थितदेवे समुद्रमां जवानो मार्ग आप्यो. कृष्णवासुदेवे तथा पांच पांडवोए सैन्यने पाछुं मोकल्युं. अने छए जणा रथमां बेसी लवणसमुद्रमां थइ अपरकंका राजधानीना उद्यानमां आवी, रथने स्थापन कर्या, अने दारुक नामना पोताना सारथिने दूतपणे पद्मनाभराजा पासे मोकल्यो.

पद्मनाभसाथे युद्ध, अने विजयादि—

दारुकसारथि, दूत थइने अपरकंका राजधानीमां प्रवेश करी पद्मनाभ राजा पासे गयो अने बे हाथ जोडी जय जय शब्दथी वधावी बोल्यो के-हे राजन् ! आ मारी पोताना विनयनी क्रिया छे, हवे आ मारा स्वामिना पोताना मुखथी कहेली तमने आज्ञा छे ! एम कही जल्दी नेत्र लाल करीने क्रोध करीने पोताना डावापगे तेना पादपीठने दबावी भालाना अग्रभागवडे लेख आप्यो अने कृष्णवासुदेवे द्रौपदीनी मददे आव्यानी हकीकत जणावी. द्रौपदीने आपो !! अथवा युद्ध माटे तैयार थाव !!! तेम जणाव्युं. दारुकसारथिना आ कथनथी नेत्र लाल थयेला छे जेना, अने कपालमां भृकुटि त्रण वळीयावाळी पडी छे जेने एवा पद्मनाभराजाए कह्युं के हुं द्रौपदीने पाछी नहीं आपुं ! जा युद्ध करवा तैयार थइने नीकळुं छुं. हे दूत ! फक्त राजनीतिमां दूत अवध्य छे तेथी तने मारतो नथी एम कही पाछलाद्वारथी काढी मूक्यो, दूते जइने सर्व वीना कृष्णवासुदेवने कही, युद्धने माटे आवता पद्मनाभने जोइ कृष्णवासुदेवे पांच पांडवोने कह्युं के-हे बालको ! तमे पद्मनाभनी साथे युद्ध करशो ? के हुं युद्ध करुं अने तमे जोशो ? आना जवाबमां पांच

पांडवोए कयु के स्वामि ! अमे युद्ध करशुं, तमे दूर रहीने जुओ.

तेयारपछी पांचे पांडवो शस्त्रोथी सज्ज थइ रथमां वेसी पद्मनाभराजानी समीपे आवी युद्ध करवा लाग्या पद्मनाभराजाए पांचे पांडवोने शस्त्रथी प्रहारो कर्या अने तेमना अहंकारने तोडी नाख्यो. ध्वजा-पताकाओने तोडी नाखी नशाडी मूकया, कृष्णवासुदेव आ जोइने तेमने मळ्या अने पूछ्युं के तमे शुं वोलीने युद्ध करवा लाग्या हता ! पांडवोए जणाव्युं के हमे जणाव्युं के " आजे अमे अथवा पद्मनाभ राजा " एम कही युद्ध करतां आम वन्युं छे. कृष्णमहाराजे कयुं के तमारे " अमे राजा पद्मनाभ राजा नहीं " आम कही तमे युद्ध कर्युं होत तो आम थात नहीं. एम कही कृष्णवासुदेव पोते युद्ध करवा सज्ज थइ " हुंज राजा!!! पद्मनाभ राजा नहीं " एम प्रतिज्ञा करी रथ पर आरूढ थइने ज्यां पद्मनाभराजा हतो त्यां आव्या. आवीने पांचजन्यशंखने पोताना मुखना वायुथी वगाड्यो, ते शंखना अवाजथी पद्मनाभराजानुं त्रीजा भागनुं सैन्य हणायुं यावत् नाशी गयुं.

तेयारपछी कृष्णवासुदेवे सारंगनामनुं पोतानुं धनुष हाथमां लेइ तेनो टंकारव कर्यो, टंकारवने श्रवण थतां पद्मनाभराजानो सैन्यनो बीजो-त्रीजो भाग हणायो अने नाशी गयो. आ जोइ पद्मनाभराजा पराक्रमरहित थयो थको अपरकंका राजधानीमां पेशी गयो अने दरवाजा वन्ध करी दीधा. आथी कृष्णवासुदेव अपरकंका राजधानीए आव्यां अने दरवाजा बन्ध जोइ रथमांथी नीचे उतरी वैक्रिय-समुद्घात करी नरसिंहरूप विकुर्वीने मोटा शब्दो करता जोसपूर्वक पगनुं आस्फालन करवा लागवाथी अपरकंका राजधानीना किल्ला-दरवाजा-हरम्या-तोरणो मोटा मोटा महेल जमीनदोस्त थयां. पद्मनाभराजा आ स्थिति जोइ भयभीत बनेलो द्रौपदीदेवीना शरणे गयो. द्रौपदीदेवीए ठपको आपी जणाव्युं के-हे देवानुप्रिय ! तमे स्नान करी एक पहेरेलुं अने बीजुं ओढेलुं एम वे वस्त्रो जलवडे नीतरता

राखी पहेरेला वस्त्रथी नीचे मुख राखी अन्तःपुरनी राणीओ, प्रधान सहित श्रेष्ठ रत्ननुं भेटणुं लेइ मने आगल करी कृष्णवासुदेव पासे जाओ, उत्तमपुरुषो प्रणाम करनारा पुरुषो पर प्रसन्न थनारा होय छे. द्रौपदीदेवीना कह्या प्रमाणे सर्वे करीने कृष्णवासुदेव पासे शरणे गयो, पगे पडी पोतानी मूलनी क्षमा याची द्रौपदीदेवीने पाछी सोंपी. द्रौपदीदेवीने रथमां बेसाडी ज्यां पांडवो हता त्यां आवी कृष्ण-वासुदेवे पाच पांडवोने पोताने हाथे सोंपी. त्यारपछी पांच पांडवो सहित कृष्णवासुदेव रथमां बेसी लवणसमुद्रमध्ये थइ जम्बूद्वीपना भरतक्षेत्रे जवा माटे चाल्या.

पद्मनाभराजाने देशनिकालनी थयेली शिक्षा—

ते काळे ते समये धातकीखण्डना पूर्वदिशाना अर्धभागविषे भरतक्षेत्रनेविषे चंपा नगरी छे, त्यां पूर्णभद्र नामनुं चैत्य हतुं. त्यां मुनिसुव्रतनामना तीर्थंकरनी पर्षदामां कपिल नामना वासुदेव धर्म श्रवण करता हता, ते समये शंखनो शब्द सांभली अध्यवसाय थयो के–शुं आ भरतक्षेत्रमां बीजो कोइ वासुदेव उत्पन्न थयो छे के–जे मारासमान शंखने वगाडे छे ? ते समये मुनिसुव्रत तीर्थंकरे कपिल वासुदेवने कह्युं के तमने शंखनो शब्द श्रवण करी एवो विचार आव्यो के शुं आ क्षेत्रमां बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो छे ? ते सत्य छे. प्रभुना प्रश्नने उत्तर हा प्रभु ते सत्य छे. मुनिसुव्रत तीर्थंकरे जणाव्युं के–हे कपिल ! वासुदेव ! आ थयुं नथी, थाय नही अने थशे पण नहिं, के एक युगमां अथवा एक समयमां बे तीर्थंकर, बे चक्रवर्ती, बे बळदेव अथवा बे वासुदेव उत्पन्न थाय, परन्तु हे कपिल ! वासुदेव ! जम्बूद्वीपना भरतमांथी हस्तिनापुर नगरथी पद्मनाभराजाए पूर्वसंगतिकदेवद्वारा द्रौपदीदेवीनुं हरण कराव्युं छे, तेथी द्रौपदीनी मददे पांच पांडवो सहित कृष्णवासुदेव छट्ठा रथमां बेसीने आव्या छे, तेओ कृष्णवासुदेव पद्मनाभराजानी साथे युद्ध करे छे, तेमां थतो

आ शंखनो शब्द तारा श्रवणमां आव्यो छे. आ श्रवण करी श्रीमुनिसुव्रतप्रभुने वंदना—नमस्कार कर्या अने कह्युं के—हे प्रभु ! हुं जइने पुरुषोमां उत्तम एवा कृष्णवासुदेवनां दर्शन करुं, प्रभुए कह्युं के—हे कपिलवासुदेव ! आवुं थयुं नथी, थाय नही अने थशे पण नहीं. के एक अरिहंत बीजा अरिहंतने, एक चक्रवर्ती बीजा चक्रवर्तीने, एक बलदेव बीजा बलदेवने अने एक वासुदेव बीजा वासुदेवने जुए, तो पण हे कपिल ! वासुदेव ! लवणसमुद्रना मध्यभागे थइने जता एवा ते कृष्णवासुदेवनी श्वेत अने पीली एवी ध्वजाना अग्रभागने तमे जोशो.

ते वार पछी कापिलवासुदेव प्रभुने वन्दना—नमस्कार करी हस्ति पर बेसी समुद्रकांठे गयो अने लवणसमुद्र मध्ये थइ जता एवा कृष्णवासुदेवनी ध्वजाना अग्रभागने जोयो अने शंख वगाडयो. कृष्णवासुदेवे ते श्रवण करी पोताना पञ्चजन्य शंखने वगाडयो एम करी शंखना अवाजो द्वाराए मेलाप कर्यो.

ते वार पछी कपिलवासुदेव अपरकंका नगरीए गया अने घरो विगेरे पडी गयेला जोया, पद्मनाभ राजा तेमनी पासे आव्यो अने कृष्णवासुदेवना आगमननी बीना आमूलथी जणावी, तमने पण ए कृष्णे न गणकार्या ! कपिलवासुदेवे पद्मनाभ राजाने हदपारनी शिक्षा फरमावी अने तेना स्थाने पद्मनाभ राजाना पुत्रनो अभिषेक करावी राज्यगादीए बेसाड्यो.

पांच पांडवोने देशनिकाल.

आ बाजु कृष्णवासुदेवे लवणसमुद्रना मध्यभागे थइ गंगानदीनी पासे आव्या त्यारे पांच पांडवोने कह्युं के—तमे गंगानदी उतरो !, हुं लवणसमुद्रना अधिपति सुस्थितदेवने मळी आवुं छुं. कृष्णमहाराजानी आज्ञा पामेला पांचे पांडवो गंगानदी हती त्यां आव्या अने

एक नानी होडी शोधी काढी तेमां बेसी, नदी उतरी सामे कांठे गया. अने कृष्णवासुदेव पोताना भुजाबलथी गंगा महानदी उतरवा समर्थ छे के नहीं ते जोवा माटे पेली नावडी संताडी दीधी. कृष्णवासुदेव सुस्थितदेवने मळी गंगा महानदीए आव्या अने चोतरफ नावडीनी तपास करवा लाग्या परन्तु नावडी मळी नहिं. आथी एक हाथे सारथि घोडा सह रथने ग्रहण कर्यो अने बीजा हाथथी साडी बासठ योजन विस्तारवाळी गंगा महानदी उतरवा लाग्या. अधमार्गे आवतां परसेवो थयो अने थाकी गया. आथी विचार आव्या के–अहो पांच पांडवो महाबलवान छे, आवडी मोटी नदी उतरी गया. कोइ पण कारणे पद्मनाभराजाने तेओए हण्यो नही अने नसाडी मूक्यो पण नहीं, आ वखते गंगादेवीए कृष्णवासुदेवना परिणाम जाणी ते जग्याए स्थळभूमि करी तेना पर कृष्णवासुदेव थोडीवार थाक उतारी आगल नदी उतरी यावत् पांच पांडवोने मळ्या अने तेमना बलना वखाण कर्या त्यारे पोते जणाव्युं के–अमे होडीथी उतर्या हता परन्तु बळ जोवा नावडीने छुपावी तमारी राह जोता अहीं रह्या छीए। आ श्रवण करी क्रोध पामी कपालमां भृकुटी करी कृष्णवासुदेव कहेवा लाग्या के–अहो! ज्यारे में बे लाख योजनना विस्तारवाळा लवणसमुद्रने उतरी पद्मनाभने हण्यो यावत् नसाडी मुक्यो अने अपरकंका भांगी द्रौपदीने हाथ करी त्यारे तमे म्हारुं माहात्म्य जाण्युं नहीं, हवे तमे जाणशो। आम बोली लोहदंडथी पांचे पाण्डवोना रथने चूरी नाख्यो अने देशनिकालनी आज्ञा करी, जे स्थाने आ आज्ञा फरमावी ते स्थाने रथमर्दन नामनुं तीर्थ थयुं. कृष्णवासुदेव पोताना स्कंधावारने मळ्या अने ते स्कंधावार सहित द्वारकानगरीए आव्या.

पांडवोए पांडुमथुरा नामनी नवी वसावेली नगरी.

द्रौपदीदेवी सह पांच पांडवो हस्तिनापुर नगरे आव्या अने पांडुराजाने द्रौपदीनी प्राप्तिथी मांडी हदपारनी सजानी हकीकत जणावी,

पाडुराजाए ठपको आप्यो अने कुंतीदेवीने आ हकीकत जणावीने द्वारका नगरीए कृष्णवासुदेव पासे मोकली. कृष्णवासुदेव पासे जवा कुंतीदेवी हाथी पर बेसी गयां. पांडुराजाथी आज्ञा पामेली कुंतीदेवी द्वारकानगरीना उद्यानमां आवी, अने कौटुम्बिक पुरुषोवडे पोताना आगमननी खबर कृष्णवासुदेवने आपी. कृष्णवासुदेव पूर्वनी जेम सन्मुख जइ महेले कुंतीफोइने लाव्या अने आगमननुं कारण पूछ्युं. कुंतीफोइए आगमननुं कारण जणावतां जणाव्युं के हे पुत्र ! तमे पांच पांडवोने देशनिकालनी आज्ञा करी छे. तमे तो समग्र दक्षिणार्ध भरतना स्वामि छो तेथी तेओ क्यां जइने रहे ? कृष्णवासुदेवे कुंतीफोइने जवाब आपतां जणाव्युं के-हे फोइ ! वासुदेव, बलदेव अने चक्रवर्ती वगेरे उत्तम पुरुषोनुं वचन मिथ्या थात नही तेथी दक्षिण दिशाना समुद्रकांठे जाय अने पांडुमथुरा नामनी नवी नगरी वसावी रहे, तेम म्हारी दृष्टिमां न आवे तेम रहे, आम करी कुंतीदेवीनो सत्कार करी विदाय कर्या. हस्तिनापुर नगरे कुंतीदेवीए आवी पांडुराजाने सर्व हकीकत जणावी अने पांडुराजाए पांचे पांडवोने कृष्णवासुदेवनी आज्ञा जणावी, पांचे पांडवो ए वात कबुल करी समुद्रकाठे आवी पांडुमथुरा नामनी नगरी वसावी तेमां रहेवा लाग्या.

पांच पांडवोए द्रौपदीदेवी साथे लीधेली प्रव्रज्या.

द्रौपदीदेवीने एक पुत्र जन्म्यो तेनुं नाम पांडुसेन पाड्युं. एकसमये धर्मघोष नामना स्थविर पांडुमथुरामां पधार्या. तेमने वांदवा माटे पर्षदा नीकली तेमां पांच पांडवो गया अने धर्मश्रवण करी धर्मघोषस्थविरने विनंति करी के-अमे द्रौपदीदेवीने पूछीए, तथा युवराज पाण्डुसेन कुमारने राज्य पर स्थापन करीए, त्यारपछी आपनी पासे दीक्षा लइए, आ सांभळी गुरु बोल्या के हे देवानुप्रियो ! यथासुखम् विलंब करशो नही ! पांचे पांडवोए महेले जइ द्रौपदीदेवीने पूछ्युं त्यारे द्रौपदीदेवीए हुं पण तमारी साथे दीक्षा लइश तेम

जणाव्युं, त्यारपछी पांडुसेनने राज्याभिषेक करी राज्यगादीए स्थापन कर्या. पांडुसेन राजाए जल्दी दीक्षाभिषेकनी तैयारी करावी. एक हजार पुरुषोथी उपडाय तेवी शिबिका करावी यावत् शिबिकामां बेसाडी धामधूमपूर्वक श्रीधर्मघोषस्थविर पासे लाव्या अने पांचे पांडवो दीक्षा लइ श्रमण थया. श्रमण थइने चौदपूर्वनो अभ्यास कर्यो. घणा वर्षो सुधी छठ्ठ–अट्ठम–दशम–अर्धमासक्षमण–मासक्षमणनी तपस्याओ करी आत्माने भावता थका विचरे छे, त्यारपछी ते स्थविर भगवंत एकसमय पांडुमथुरा नगरीना सहस्राम्रवनउद्यानथी बहार नीकळी विचरवा लाग्या, ते समये श्रीनेमिनाथप्रभु विचरता विचरता सौराष्ट्रदेशमां विचरे छे तेवुं पांडवमुनिओए श्रवण करी श्रीनेमिनाथप्रभुने वांदवा माटे पोताना गुरु धर्मघोष स्थविरनी आज्ञा मागी.

पांचे पांडवो केवलज्ञान पामी मोक्षे सीधाव्या.

गुरुमहाराजनी आज्ञा पामी युधिष्ठिर आदि पांचे पांडवमुनिवरोए विहार कर्यो अने गामानुगाम विचरता हस्तिकल्प नामना नगरना सहस्राम्रवन नामना उद्यानविषे आव्या. युधिष्ठिरमुनि सिवायना चारे मुनिवरोए माससमणना पारणाने दिवसे पहेली पोरसीए सज्झायध्यान कर्युं अने बीजी पोरसीए ध्यान कर्युं ते पछी युधिष्ठिरमुनिवरनी आज्ञा पामी भिक्षा माटे फरवा लाग्या त्यां तेओए श्रवण कर्युं के श्रीनेमिनाथप्रभु उज्जयंतगिरिना(रैवताचलगिरिना) शिखर विषे जलरहित एकमासना अनशनवडे पांचसो ने छत्रीस साधुओ सहित मोक्षे पधार्या. आ श्रवण करी गोचरी फरता पाछा फरी युधिष्ठिरमुनिनी समीपमां आवी लावेला आहारपाणी आलोवी इर्यावहीयं प्रतिक्रमी गोचरी युधिष्ठिरमुनिने देखाडी कह्युं के–गोचरी अमे श्रीनेमिनाथप्रभुना मोक्षे सिधाव्याना समाचार सांभळता पहेलां वहोरेली छे, ते आपणे हवे परठवी दइ श्रीशत्रुंजयपर्वत पर धीमे धीमे चढी मरणनी अपेक्षा राख्या विना अनशन करवुं श्रेयस्कर छे.

आ प्रमाणे अन्योअन्य नकी करी विधिपूर्वक गोचरी परठवी श्रीशत्रुंजये आव्या अने श्रीशत्रुंजये चढ्या, श्रीशत्रुंजय पर चढीने बे मासनुं अनशन करी केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त करी सिद्धिपदने पाम्या.

द्रौपदीसाध्वी काळ करी पांचमा देवलोकमां उत्पन्न थइ.

द्रौपदीदेवीए सुव्रताआर्याँनी पासे दीक्षा-प्रव्रज्या लइ अगिआर अंगनो अभ्यास कर्यो अने एक मासनुं अनशन स्वीकारी आराधनापूर्वक कालधर्म पामी पांचमा देवलोकमां-ब्रह्मलोकमां दश सागरोपमना उत्कृष्ट आयुष्यवाला देवपणे उत्पन्न थइ. श्रीजम्बूस्वामिए-श्रीसुधर्मास्वामिभगवन्तने पूछ्युं के हे.प्रभु ! ते द्रुपददेव त्यांथी च्यवीने क्यां जशे ? भगवाने कह्युं के-हे जम्बू ! ते द्रुपददेव त्यांथी च्यवी महाविदेहक्षेत्रमां उत्पन्न थइ सर्वकर्मनो अंत करी मोक्षे जशे.

उपनय—तपनो क्लेश घणो कर्यो होय तो पण नियाणाना दोषथी जो तेने दूषित करवामां आवे तो ते तप मोक्षने माटे थतो नथी. तेम भक्तिरहितपणे कडवा तुम्बडानुं खराब दान पात्रने विषे आप्युं तेथी नागश्रीने घणा भव भटकवुं पड्युं. आथी नियाणा विनानो तप करवो तेम सुपात्रदानमां भक्ति सहित दान देवुं ते श्रेयस्कर छे.

इति श्रीज्ञातासूत्रना सोळमा अध्ययननो सारांश समाप्तः ॥

॥ १७–श्रीअश्वज्ञात–अध्ययन सारांशः ॥

पूर्वापर–संबंधादि.

सोलमा अध्ययनमां नियाणुं करवाथी तेम निंदनीयदान करवाथी अनर्थनी प्राप्ति थाय छे ते कह्युं. आ सत्तरमा अध्ययनमां इन्द्रियोने काबूमां न राखनारने अनर्थ प्राप्त थाय छे ते जणावे छे—

श्रीसुधर्मास्वामि गणधरभगवान् कहे छे के–हे जम्बू ! ते काळे अने ते समये हस्तिशिर्ष नामे नगर हतुं. त्यां कनककेतु नामनो राजा राज्य करतो हतो, तेम ते नगरमां घणा–घणा देशांतर जइ वेपार करनारा अने वहाणना साधनथी धंधो करनारा धनाढ्य वेपारीओ हता. एक वखत नाववणिकोए भेगा मळी विचार करी व्यापार माटे वहाणो लइने लवणसमुद्र विषे चाल्या. केटलाक गाउ गया त्यां तो घणा उत्पातो थवा लाग्या, प्रतिकूल वायुवडे नावो आमतेम डोलवा लागी, मुख्य खलासी आवा संकट समयमां मुंझायो अने पोतानुं समुद्र सम्बन्धिनुं ज्ञान पण तेने विस्मरण थयुं. आ समये घणा (पावडी चलावनारा)–हलेसां मारनारा–कूवाना रक्षक, सढना रक्षक तथा सांयात्रिको मुख्य खलासी पासे आव्या, अने विचारमग्न थयेला मुख्य खलासी–निर्यामकने पूछवा लाग्या के–तमे शुं विचार करो छो ? आ प्रश्नना जवाबमां निर्यामके जणाव्युं के–हे भाग्यशाळीओ ! मारी मति खरेखर नाश पामी छे. आ श्रवण करी सर्वे भयभीत थयेला इन्द्र–स्कंधविगेरे देवोनी मानता करवा लाग्या. एक मुहूर्त पछी निर्यामकनी बुद्धि चाली अने समुद्रशास्त्रना ज्ञानने पाम्यो अने कह्युं के–आपणे कालिकद्वीपनी समीपमां आव्या छीए तेम सामे देखातो कालिकद्वीप छे.

कालिकद्वीपे आगमन.

आ श्रवण करी सर्वे हर्षित थयेला अनुकूल वायुवडे कालिकद्वीप आव्या अने वहाणने लंगारी नानी होडीओवडे कालिकद्वीपमां उतर्या, ते कालिकद्वीपमां घणी एवी रुपानी खाणो, सोनानी खाणो, रत्ननी खाणो अने वज्रजातिना रत्नोनी खाणो जोइ तेम उत्तम लक्षणवाळा जुदा जुदा रंगवाळा घणा एवा घोडाओ पण जोया. वहाणमांथी उतरेला वेपारीओ विगेरेने जोइ तेम तेमनी गंधथी भय पामता अश्वो तो त्यांथी नाशी घणा योजन दूर गया, आथी नाववणिको परस्पर आ प्रमाणे बोल्या के आ अश्वोवडे आपणने कांइ प्रयोजन नथी. अहिं घणी एवी रुपा विगेरेनी खाणो छे तेनाथी आपणां वहाणो भरी लेवां ते कल्याणकारी छे तेम धन्यो अन्य नफो करी वहाणो भरीने दक्षिण तरफना अनुकूल वायुवडे गंभीरपोतवहनपट्टन हतुं त्यां आव्या अने गाडाओमां रुपा आदिने भरीने गाडाओवडे हस्तिशीर्षनगरना उद्यानमां आवी गाडां छोड्यां.

किंमति भेटणुं लइने कनककेतु राजा पासे गया, अने राजाने भेटणुं कर्युं. कनककेतु राजाए तेओने पूछ्युं के-तमे लवणसमुद्रमां वारंवार प्रवेश करो छो, तो तमे तेमां कोइ आश्चर्य जोयुं होय तो कहो ? नाववणिकोए कालिकद्वीपमां आश्चर्यभूत जोयेला अश्वोनुं वर्णन कर्युं. तेओए करेला अश्वोना वर्णनने श्रवण करी कनककेतु राजाए तेओने कह्युं के-तमे मारा कौटुम्बिक पुरुषो साथे त्यां जाओ अने त्यांथी घोडा लावो ! नाववणिकोए कौटुम्बिक पुरुषो साथे जवा कबुल कर्युं. एटले कनककेतु राजाए कौटुम्बिक पुरुषोने आ घोडा पकडवानी तमाम सामग्रीपूर्वक नाववणिको सह कालिकद्वीपे जइ घोडा लेइ आववा जणाव्युं.

इन्द्रियोने वश थयेला घोडाओनुं फसावबुं.

कौटुम्बिक पुरुषो गाडी गाडां तैयार करीने तेमां श्रोत्रइन्द्रियने प्रिय लागे तेवां घणां एवां वाजिंत्रो वीणाओ-वल्लकीओ-भ्रामरीओ-

कच्छपीओ अने भंभा विगेरे, तथा घणा एवा काष्ठना पाटीया विषे चितरेला चित्रो, गुंथेली माळाओ आवी बीजी घणी एवी चक्षुने व्हाली लागे तेवी वस्तुओ, घणी एवी कोष्ठपुट विगेरे घ्राण इन्द्रियने प्रिय लागे तेवी वस्तुओ, घणी एवी खांड-साकर-गोळ विगेरे जिव्हा इन्द्रियने प्रिय लागे तेवी वस्तुओ अने घणा एवा रुथी भरेलां वस्त्रो, रत्नकम्बलो, ओढवानां वस्त्रो, मसरुनी गादीओ गादलां वगेरे स्पर्शेन्द्रियने अनुकूल वस्तुओनां गाडां भर्यां, भरेलां गाडांने लेइने पोतपट्टण आव्या अने वहाणो तैयार करी बधी वस्तुओ वहाणोमां भरीने वहाणो मारफते अनुकूल वायुवडे कालिकद्वीप आव्या, द्वीपना किनारा नजीक वहाणो नांगरी होडीओ मारफते बधी वस्तुओ किनारे लाव्या, अने घोडाओना बेसवाना-स्थानोए योग्य रीते वस्तुओ स्थापन करी, वाजिन्त्रो वगाडवा लाग्या. केटलाक अश्वो आ वस्तुओ विषे मूर्छा रहित थइ भय पामता ते स्थानेथी नाशी गया, अने केटलाक अश्वो आ वस्तुओ विषे मूर्छा पाम्या तेमने कौटुम्बिक पुरुषोए कपटथी, गळामां-पगमां पाशवडे बांध्या अर्थात् पकडीने बांधी लीधा. पकडी लीधेला घोडाओने वहाणमां चढावी वहाण मारफते गंभीरपोतपट्टण बन्दरे आवी होडीओ मारफते घोडाओ अने वस्तुओ किनारे उतारी ते घोडाओने, वस्तुओने लेइने हस्तिशीर्षनगरमां कनककेतु राजा पासे आव्या अने घोडाओ अर्पण कर्या. खुश थयेला कनककेतु राजाए सर्वेनु सन्मान करी-सत्कार करी दाण माफ करी जवानी यावत् रजा आपी.

फसायेला घोडाओने पडेला दुःखो.

कनककेतु राजाए ते घोडाओने शिक्षा आपवा सारु अश्वपालने बोलावी आप्या, अश्वपाले ते घोडाओ अश्वशालामां लेइ जइ मुखबंधनवडे, कानबंधनवडे, पुंछडाना वाळ बांधवावडे, खरीओ बांधवावडे, काडां बांधवावडे बांध्या, अने खसी कर्या, चोकठा

चढावी, नेतरनी सोटीवडे अने चाबकवडे मार मारी तेमने विनीत कर्या, अने कनककेतु राजाने अर्पण कर्या. आवी रीते ते समये ते अश्वो घणा दुःखी थया यावत् आखुं जीवन बंधन पाम्या.

कथा-उपनयः—आसक्ति नहीं पामी नाशी छूटेला घोडाओ मार खावावाळा न थया यावत् बंधन पाम्या विना यथेच्छ सुख भोगववावाळा थया, तेवी रीते जे साधु अथवा साध्वी-शब्द-रस-रूप-गंध-स्पर्श पदार्थो विषे आसक्त थता नथी ते आ लोक विषे पण पूजवा योग्य थाय छे अने संसारसमुद्रने तरी जइ मोक्षनां अनन्त सुखो भोगवे छे. जेवी रीते आसक्ति पामवाथी फसाइ गयेला अने तेथी दुःखनी परंपराने पामी यावत् जीवन बंधन पामेला अश्वो थया तेवी रीते जे साधु अथवा साध्वी दीक्षा लीधा पछी शब्द-रूप-रस-गन्ध-स्पर्शना विषयोमां आसक्त थाय छे ते आ लोकमां निंदनीय थाय छे अने अनन्त संसारमां भ्रमण करी दुःखोने पामे छे.

॥ इति श्री सत्तरमा श्रीज्ञाताध्ययननो सारांशः समाप्तः ॥



॥ अढारमा श्री सुंससाज्ञात-अध्ययननो सारांशः ॥

चिलातिने काढी मूक्यो.

पूर्वना १७ मा अध्ययनना सारांश विषे इन्द्रियवशवर्ति थतो अनर्थ अने जितेन्द्रियने थतो लाभ कह्यो आ अढारमा अध्ययनमां लोभने वश नहीं थनारने थतो लाभ कहे छे.

ते काले ते समये (महावीर प्रभु ज्यारे आ हकीकत जणावी [redacted] छे ते समये) राजगृही नगरी विषे धन्य नामनो सार्थवाह

छे तेने भद्रावती नामनी भार्या छे अने धन, धनपाळ, धनदेव, धनगोप अने धनरक्षित नामे पांच पुत्रो अने सुंसमा नामनी पुत्री हती, तेम चिलात नामनो दासपुत्र हतो. आ चिलात बाळकोने रमाडवामां कुशळ हतो तेथी सुंसमा बालिकाने रमाडतो तेम बीजां घणां छोकरा-छोकरीओने, कुमार-कुमारिकाने रमाडतो हतो. केटलाक समय पछी ते चेलात दासपुत्र छोकरा विगेरेनी कोडीओ लाखना गोळा, मोय, दडा, दींगलादींगलीओ, वस्त्रो, आभरणो, अलंकार हरी लेतो अने तेमना उपर आक्रोश करतो, तेमने मारतो, तेमनी मश्करीओ करतो, आथी ते छोकराओ विगेरे रडवा लाग्या आथी तेमना मातापिताओए धन्यशेठने तेमना नोकर-चिलातना त्रासनी हकीकत कही. धन्यशेठे चेलातने ठपको आपवा छतां चेलात छोकरा विगेरेने त्रास आपतो विरम्यो नहिं आथी धन्यशेठे चेलातने काढी मूक्यो.

विजयचोरनुं मृत्यु.

धन्यशेठने त्यांथी काढी मुकायेल चिलात राजगृहीना नाना मोटा बजारो विषे अने देवकुलो, डायराओ, परबो, जुगारखाना स्थानो तेमज दारु(मदिरा)ना स्थानो विषे रखडतो-स्वच्छंदी-अंकुशविनानो थयेलो मदिरापान-चोरी अने मांस खावामां आसक्त थयो यावत् जुगार-वेश्या-परस्त्रीमां लंपट थयो अर्थात् साते व्यसनवाळो थयो.

आ समये राजगृही नगरीथी थोडे दूर अग्निखूणामां सिंहगुफा नामनी चोरपल्ली छे. ते चोरपल्लीमां पांचसो चोरोनो नायक विजय नामे सेनापति हतो, ते अति पापिष्ठ हतो. चोरी करवामां बहादूर होवाथी तेने लोको शूरवीर-दृढप्रहार करनार साहसिक अने शब्दवेधी कहेता हता. आ विजयचोर, जारपुरुषो, गठीयाओ, विश्वासघातीओ, जुगारीओ, अने गुन्हेगारोने आश्रय आपतो अर्थात्

तेओने शरणभूत थतो हतो, आ विजयचोर गामो विगेरेमां धाड पाडतो, गायो चोरतो अने लोकोने केद करतो. आम अनेक प्रकारे प्रजाजनोने कनडतो हतो. चिलात लोकोथी पराभव पामवाथी विजयचोरने शरणे आव्यो अने रह्यो तेम विजयचोरनी साथे रही धाडो विगेरे पाडवा लाग्यो. चेलातनी होंशियारी जोइ विजयचोरे चेलातने घणी चोरविद्याओ, चोरमन्त्रो, चोरनी मायाओ अने चोरना छलकपटोमां पारंगत कर्यो. एक समये विजयचोर काळधर्म पाम्यो. अर्थात् मरण पाम्यो. तेनी पांचसो चोरोए मळी वहोळी रिद्धिपूर्वक स्मशान यात्रा काढी अने तेनुं मृत्युकार्य कर्युं.

सुंसमानुं अपहरणादि.

घणी एवी विद्याओ अने वीरता चिलात पासे जोइ चोरोए भेगा थइ विजयचोरने स्थाने चिलातने स्थाप्यो. आथी चिलात पांचसो चोरोनो अधिपति थयो. अधिपति बनेला चिलाते पांचसो चोरोनुं सन्मान-सत्कार करी कह्युं के-राजगृही नगरमां धन्य नामे सार्थवाह छे ते घणो धनवान छे. धन्यसार्थवाहने पांच पुत्रो अने रूपवान सुंसुमा नामनी पुत्री छे. आपणे राजगृही नगरीमां जइ धन्य सार्थवाहनुं घर लुंटीए अने लुंटमां.—जे धन, सोनुं, वस्त्र आवे ते तमारे बधांये लेवुं अने मारे सुंसुमापुत्री ग्रहण करवी. बधाय चोरोए आ वात कबुल करी.

चोर सेनापति चिलात पांचसो चोरो सह मंगलनिमित्ते भींजायेला चर्म पर बेठो अने दिवसना छेल्ला पहोरे बख्तरो बांधी छातीए ढालो पहेरी, म्यानोमांथी तलवारो काढी, पर धनुषो विषे पणचो चढावी बाणोने मूकवा माटे भाथमांथी बाणो काढ्या, बरछी-भाला उछाळवा लाग्या, तेम जंघाए घुघरीओ लटकावी, शीघ्रपणे वाजिंत्रो वगाडवा लाग्या अने सिंहनाद करता सिंहगुफामांथी नीकळी

राजगृही नगरीथी थोडे दूरना जंगलमां संताया. मध्यरात्रिना समये ज्यारे लोको निद्रामां हता त्यारे पूर्वदिशाना दरवाजे आव्या अने चेलात सेनापतिए जलनी मसकमांथी थोडुं पाणी लइ आचमन करी ताळा उघाडवानी विद्यानुं स्मरण कर्युं, अने दरवाजाना कमाड उपरा मन्त्रेलुं पाणी छांट्युं एटले दरवाजाना कमाडो उघडी गयां, खुल्ला थयेला दरवाजाथी सर्वेए नगरीमां प्रवेश कर्यो अने बोलवा लाग्यां,—पांचसो चोरो सह चेलात सेनापती धन्यसार्थवाहने त्यां धाड पाडवा जाय छे, जेने नवी मातानुं दूध पीवुं होय ते बहार नीकळो !!! एम बोलता बोलता धन्यसार्थवाहना घरे आव्या अने घर उघाडी लुंटवा लाग्या. आ जोइ धन्यसार्थवाह पांच पुत्रो सह एक बाजु संताइ गया; चेलाते सुंसमानुं हरण कर्युं, अने पांचसो चोरे धन विगेरेनी लुंट करी, राजगृहनगरीथी नीकळी गया. धनसार्थवाहे आ जोइ नगररक्षकोनी पासे जइ कह्युं के-तमे मने सहाय करो, धन तमारुं अने छोकरी मारी, चालो! लश्करसहित धन्यसार्थवाह पांच पुत्रोयुक्त धाडपाडुओनी पाछळ पड्या अने युद्धमा हारी गयेला चोरो धन विगेरे छोडी नाशी गया. धन लइ लश्करना माणसो तो चाली गया, अने चिलात सुंसमाने उपाडी वचे गाम न आवे तेवा मार्गे भागतो जोइ धन्यसार्थवाह पांच पुत्रोयुक्त तेनी पाछळ पड्यो. थाकी गयेला चिलाते पाछळ आवता धन्यसार्थवाह आदिने जोइ सुंसमाबाळानुं पोतानी तलवारथी मस्तक कापी नाख्युं अने ते मस्तक लइने जंगलमां चेलात नाशी गयो, अने निर्जन अटवीमां तृषाथी पराभव पामेलो दिशा मार्ग भूलेलो मरी गयो.

१ श्री आवश्यकसूत्रमां तेने 'मार्गमां साधु मळ्या तेमना मुखथी उपशम-संवर-विवेक आ पदोने पामीने साधुना ठेकाणे कायोत्सर्गमां रही त्रणे पदोने भावतो कीडीओथी आखा शरीरे चालणी समान थयेलो शुभध्यानथी काळ करी देवलोकमां गयो तेम जणाव्युं छे

उपनय—

जे साधु साध्वी प्रवज्या लेइने–वमनने झरनारा, अने नाश पामवाना स्वभाववाळा, शरीरनी शोभारूप माटे आहार करे छे, अर्थात् स्वादलोलुपता अने विषयना पिपासु थाय छे ते साधु साध्वी चिलात दासपुत्र दुःखी थयो तेम दुःखी थाय छे यावत् श्रावक–श्राविकाओने हीलना करवा लायक थइ दीर्घकाल संसारमां भटके छे.

धन्यसार्थवाह पांचे पुत्रो सह चिलातनी पाछल दोडतां थाकी गया, आथी पकडवा असमर्थ थयेला पाछा फरतां सुंसुमापुत्रीनुं धड जोइ कुहाडाथी कापेला चंपकना वृक्षनी जेम भूमि पर पड्या, अने ज्यारे सावधान थया त्यारे घणा समय सुधी विलाप करवा लाग्या. थाकनी साथे तृषा लागवाथी चारे दिशाए जलनी तपास करी पण जलनी प्राप्ति न थइ. धन्यसार्थवाहे पुत्रोने कह्युं के–हे पुत्रो ! पाणी विना नगरीमां जवा अशक्त थयेला आपणे छए अहिं मृत्युं पामीशुं माटे हे पुत्रो ! तमे एम करो ! मने जीवितरहित करो अने तमे सर्वे मारा मांस–रुधिरनो आहार करी स्वस्थ थई अटवी पार पामी राजगृहीमां जजो अने अर्थ, धर्म अने पुण्यना भागी थजो !

जेष्ठपुत्र–हे पिताजी ! तमे अमारा पिता छो, गुरु छो, देवरूप छो, कष्टथी रक्षण करनारा छो तो हे तात ! अमे तमने केम जीवितथी दूर करीए ! तथा तमारा मांस–रुधिरनो आहार केम करीए ! तेथी हे पिता ! तमे मारा जीवितने दूर करो ! तथा मारा मांस–रुधिरनो आहार करी अटवी पार पामो ! त्यारे बीजा, त्रीजा, चोथा अने पांचमा पुत्रने धन्यसार्थवाहे कह्युं पण बधाय पुत्रोए जेष्ठपुत्रनी जेम जवाब आप्यो.



धन्यसार्थवाहे विचार करी पुत्रोने कह्युं के-आ पुत्री सुंसुमा जीवरहित थयेली छे तेनुं मांस आदिनो आहार करी स्वस्थ थइए, पांचे भाइओए आ वात अंगीकार करी. अरणिना काष्ठथी अग्नि उत्पन्न करी मांस पक्वी खाधुं अने रुधिरथी स्वस्थ थया छता अटवी उल्लंघी राजगृहनगरे आवी पोताना घेर आव्या. अने सुंसुमा पुत्रीनुं लौकिक कार्य कर्युं यावत् अनुक्रमे शोक रहित थया.

ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर प्रभु राजगृहनगरनी बहार गुणशीलचैत्यविषे समवसर्या हता तेमनी पासेथी धर्म श्रवण करी धन्यसार्थवाहे प्रव्रज्या लीधी अने अगियार अंगना जाणकार थया तेम एक मासनी संलेखना (अनशन) करी सौधर्म-देवलोकमां उत्पन्न थया, त्यांथी च्यवी महाविदेहक्षेत्रमां जन्म पामी संयम लइ सिद्धिपदने पामशे.

कथानो परमार्थः—

धन्यसार्थवाहे वर्ण-रूप-बल के विषयोने माटे सुंसुमापुत्रीना मांस-रुधिरनो आहार कर्यो न होतो, किन्तु राजगृह नगरने पामवा माटे आहार कर्यो हतो. तेम जे साधु अथवा साध्वी-वमन-पित्त-शुक्र अने रुधिरथी झरता यावत् अवश्य त्याग करवा लायक आ औदारिक शरीरना वर्ण-रूप-बल के विषय माटे आहार करता नथी परंतु एक सिद्धिगति पामवामां सहायभूत थवा माटे आहार करे छे, ते आ भवमां साधु-साध्वी श्रावक अने श्राविकाओथी पूजनीय थाय छे, यावत् मोक्ष पामे छे.

॥ इति अष्टादशाध्ययनस्य सारांशः समाप्तः ॥

॥ ओगणीसमा श्रीपुण्डरीक–अध्ययननो सारांश ॥

पूर्वना अध्ययन विषे संवर न करनारने अनर्थ, अने संवर करनारने लाभ दर्शाव्यो, आ अध्ययन विषे चिरकाळ संवर कर्या छतां तेनो भंग करे तो पण अनर्थ थाय छे, अने अल्पकाळ पण संवर करे तो तेने लाभ थाय छे ते कहे छे.

पूर्व महाविदेहक्षेत्र विषे सीता नामनी महानदीना उत्तर कांठे सीतामुख नामना वनखंडनी पश्चिमे एक शेलक नामना वखारा पर्वतनी पूर्व दिशाए पुष्कलावती नामना विजयमां पुंडरीकिणी नामनी नगरीमां महापद्म नामे राजा हतो तेमने पद्मावती नामे राणी अने पुंडरीक-कंडरीक नामना पुत्रो हता तेमां पुंडरीक युवराज हतो, पांचसो मुनि साथे परिवरेला धर्मघोष नामना स्थविर पासे पुण्डरीक युवराजने गादी पर बेसाडी महापद्मराजाए दीक्षा लीधी. महापद्म अनगार चौदपूर्वी थइ घणा काल संयम पाळी मोक्षसुखने पाम्या.

ते वार पछी पुंडरीकिणी राजधानी बहार नलिनीवन नामना उद्यान विषे स्थविर मुनि पधार्या तेमने वंदन करवा पुंडरीक राजा गया, कंडरीक पण लोकोना शब्दो श्रवण करी स्थविर पासे गया. पुंडरीक राजा प्रतिबोध पामी श्रावक थया अने पोताना घेर गया. त्यारपछी कंडरीक युवराज उभा थइ यावत् आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो के-हे प्रभु ! हुं पुंडरीकराजानी रजा लेइ यावत् दीक्षा ग्रहण करीश ! आ सांभळी स्थविरमुनिए पुंडरीकने कह्युं के-तने जेम सुख उपजे तेम कर, कंडरीक स्थविरमुनिने वंदन नमस्कार करी ज्यां पुंडरीक राजा हता त्यां गयो.

कंडरीक पुंडरीकराजाने विनंति करे छे, अने कंडरीक दीक्षा ले छे.

कंडरीक पुंडरीकराजाने बे हाथ जोडी कहेवा लाग्या के-हे राजन् ! में स्थविर साधु पासे धर्म श्रवण कर्यो छे, ते धर्म रुच्यो

धन्यसार्थवाहे विचार करी पुत्रोने कह्युं के-आ पुत्री सुंसुमा जीवरहित थयेली छे तेनुं मांस आदिनो आहार करी स्वस्थ थइए, पांचे भाइओए आ वात अंगीकार करी. अरणिना काष्ठथी अग्नि उत्पन्न करी मांस पकवी खाधुं अने रुधिरथी स्वस्थ थया छता अटवी उलंघी राजगृहनगरे आवी पोताना घेर आव्या. अने सुंसुमा पुत्रीनुं लौकिक कार्य कर्युं यावत् अनुक्रमे शोक रहित थया.

ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीर प्रभु राजगृहनगरनी बहार गुणशीलचैत्यविषे समवसर्या हता तेमनी पासेथी धर्म श्रवण करी धन्यसार्थवाहे प्रव्रज्या लीधी अने अगियार अंगना जाणकार थया तेम एक मासनी संलेखना (अनशन) करी सौधर्म-देवलोकमां उत्पन्न थया, त्यांथी च्यवी महाविदेहक्षेत्रमां जन्म पामी संयम लइ सिद्धिपदने पामशे.

कथानो परमार्थः—

धन्यसार्थवाहे वर्ण-रूप-बल के विषयोने माटे सुंसुमापुत्रीना मांस-रुधिरनो आहार कर्यो न होतो, किन्तु राजगृह नगरने पामवा माटे आहार कर्यो हतो. तेम जे साधु अथवा साध्वी-वमन-पित्त-शुक्र अने रुधिरथी झरता यावत् अवश्य त्याग करवा लायक आ औदारिक शरीरना वर्ण-रूप-बल के विषय माटे आहार करता नथी परंतु एक सिद्धिगति पामवामां सहायभूत थवा माटे आहार करे छे, ते आ भवमां साधु-साध्वी श्रावक अने श्राविकाओथी पूजनीय थाय छे, यावत् मोक्ष पामे छे.

॥ इति अष्टादशाध्ययनस्य सारांशः समाप्तः ॥



॥ ओगणीसमा श्रीपुण्डरीक–अध्ययननो सारांश ॥

पूर्वना अध्ययन विषे संवर न करनारने अनर्थ, अने संवर करनारने लाभ दर्शाव्यो, आ अध्ययन विषे चिरकाळ संवर कर्या छतां तेनो भंग करे तो पण अनर्थ थाय छे, अने अल्पकाळ पण संवर करे तो तेने लाभ थाय छे ते कहे छे.

पूर्व महाविदेहक्षेत्र विषे सीता नामनी महानदीना उत्तर कांठे सीतामुख नामना वनखंडनी पश्चिमे एक शैलक नामना वखारा पर्वतनी पूर्व दिशाए पुष्कलावती नामना विजयमां पुंडरीकिणी नामनी नगरीमां महापद्म नामे राजा हतो तेमने पद्मावती नामे राणी अने पुंडरीक–कंडरीक नामना पुत्रो हता तेमां पुंडरीक युवराज हतो, पांचसो मुनि साथे परिवरेला धर्मघोष नामना स्थविर पासे पुण्डरीक युवराजने गादी पर बेसाडी महापद्मराजाए दीक्षा लीधी. महापद्म अनगार चौदपूर्वी थइ घणा काल संयम पाळी मोक्षसुखने पाम्या.

ते वार पछी पुंडरीकिणी राजधानी बहार नलिनीवन नामना उद्यान विषे स्थविर मुनि पधार्या तेमने वंदन करवा पुंडरीक राजा गया, कंडरीक पण लोकोना शब्दो श्रवण करी स्थविर पासे गया. पुंडरीक राजा प्रतिबोध पामी श्रावक थया अने पोताना घेर गया. त्यारपछी कंडरीक युवराज उभा थइ यावत् आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो के–हे प्रभु ! हुं पुंडरीकराजानी रजा लेइ यावत् दीक्षा ग्रहण करीश ! आ सांभळी स्थविरमुनिए पुंडरीकने कह्युं के–तने जेम सुख उपजे तेम कर, कंडरीक स्थविरमुनिने वंदन नमस्कार करी ज्यां पुंडरीक राजा हता त्यां गयो.

कंडरीक पुंडरीकराजाने विनंति करे छे, अने कंडरीक दीक्षा ले छे.

कंडरीक पुंडरीकराजाने बे हाथ जोडी कहेवा लाग्या के–हे राजन् ! में स्थविर साधु पासे धर्म श्रवण कर्यो छे, ते धर्म रुच्यो

छे तेथी तमारी आज्ञा पाम्यो छतो प्रव्रज्या लेवा इच्छुं छुं !, पुंडरीकराजा कंडरीकयुवराजनी आ वात श्रवण करी कंडरीकयुवराजने कह्युं के–हे भाइ ! तुं अधुना दीक्षा न लइश, हुं तने मोटा–मोटा राज्याभिषेकवडे अभिषेक करवानो छुं. ते सांभळीने कंडरीके पुंडरीकनी आ वातनो आदर न कर्यो अने मौन रह्यो. पुंडरीकराजाए बे त्रणवार कह्युं किन्तु कुंडरीक मौन ज रह्यो. त्यारे पुंडरीकराजाए बीजी घणी रीते समजाव्यो छतां ज्यारे कंडरीक न समज्यो त्यारे इच्छा विना दीक्षानी संमति आपी. उद्यानमां जइ स्थविरमुनिने पुंडरीकराजाए कंडरीकनी शिष्यरूप भिक्षा आपी, कंडरीक प्रव्रज्या लइ अनगार थया यावत् अग्यार अंगना अभ्यासी थया, अने स्थविरमुनिनी साथे गामानुगाम विचरवा लाग्या.

रोगथी व्याप्त थयेला–कंडरीकमुनि.

ते वार पछी कंडरीक अनगारने लुखा–सुका आहारे करीने शेलकमुनिनी जेम दाहज्वर उत्पन्न थयो, यावत् व्याधिथी व्याप्त थयेला गामानुगाम विचरता स्थविरमुनि साथे पुंडरीकिणी नगरीना उद्यान विषे पधार्या. पुंडरीकराजा वांदवा माटे आव्या तेमने गुरुमहाराजाए धर्म श्रवण कराव्यो. पुंडरीकराजा धर्म श्रवण करी, वंदना–नमस्कार करी कंडरीकमुनि पासे वंदना–नमस्कार करवा गया. वंदना नमस्कार करी कंडरीकमुनिनुं शरीर जोतां रोगग्रस्त लाग्युं. आथी त्यांथी उठी पुंडरीकराजा स्थविरमुनिवर पासे जइने कंडरीकमुनिनी चिकित्सा कराववा माटे यानशालामां पधारवा विनंति करी, पुंडरीकराजानी विनंति स्वीकारी स्थविरमुनि सहु साधुओ साथे यानशालाए पधार्या. अहिं पुंडरीकराजाए शेलकमुनिनी मंडुकराजाए जेम चिकित्सा करावी हती तेम कंडरीकमुनिनी चिकित्सा करावी तेथी रोगरहित थया यावत् शरीर बळवाळा थया. स्थविरभगवान राजाने पूछीने विहार करी गया, किन्तु राज्यना आहार विषे

लुब्ध थयेला कंडरीकमुनिए विहार न कर्यो अने क्रमे क्रमे वधु शिथिलाचारवाला थइ गया.

आसक्तिना प्रतापे कंडरीकमुनिनुं थयेलुं पतन, पुंडरीकराजाए ग्रहण करेलुं संयम.

पुंडरीकराजा—कंडरीकमुनिनो शिथिलाचार जाणी अन्तेपुरी सह कंडरीक मुनि पासे आव्या अने वंदना—नमस्कार करी कह्युं. हे मुनिवर ! तमे धन्य छो ! कृतार्थ छो ! पुण्यवन्त छो ! तमे मनुष्यजन्म—जीवननुं फल सारुं प्राप्त कर्युं ! केमके राज्य अने अन्तःपुर त्याग करी संयम ग्रहण कर्युं छे, हुं अधन्य छुं ! पुण्यहीन छुं ! राज्य अने अंतःपुर विषे आसक्त थयेलो—मूर्च्छित थयेलो छुं ! यावत् संयम ग्रहण करवाने अशक्त थयो छु, तमे भाग्यशाली छो ! आम कह्या छतां कंडरीकमुनि राजानी आ वातनो आदर करता नथी पण मौन रहे छे. आथी बे त्रणवार पुंडरीकराजाए कह्युं त्यारे लज्जाथी मोटा भाइना गौरवने लेइ राजानी रजा लेइ स्थविरमुनिनी पासे विहार करी गया, अने उग्र विहार करता स्थविरमुनिनी साथे विचरवा लाग्या. त्यार पछी चारित्रना परिणामथी रहित थयेला कंडरीक अनगार स्थविरमुनिनी आज्ञा लीधा विना धीमे धीमे नीकली पुंडरीकिणी नगरीना अशोकवनमां आवी अशोकवृक्षनी नीचे पृथ्वीना शिलातळ विषे बेठ्या अने आर्तध्यान करवा लाग्या, तेमनी आ स्थिति अशोकवनमां आवेली धावमाताए जोइने सर्व वृत्तात पुंडरीकराजाने जणाव्यो. पुंडरीकराजा तुरत अन्तःपुरसहित त्यां आव्यो अने वंदना नमस्कार करी पूर्वनी जेम तेना वखाण कर्या पण कंडरीके तेनो आदर न कर्यो, त्यारे पुंडरीकराजाए पूछयुं के हे भगवंत ! तमारे भोगवडे अर्थ छे ? कंडरीके जणाव्युं के हा ! मारे भोग भोगववानी इच्छा छे. पुंडरीकराजाए कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावी कंडरीकनो राज्याभिषेक कराव्यो अने राज्यगादी विषे स्थापन कर्या. अने स्वयं पोते—पुंडरीकराजाए कंडरीकनो साधुवेष पहेर्यो अने स्वयं लोच करी गुरुमहाराज पासे ज्यां सुधी व्रत

(संयमप्रतिज्ञाओ) न ग्रहण करुं त्यांसुधी मारे आहार न करवो तेवी प्रतिज्ञा करी विहार करी गया.

कंडरीकनी थयेली दुर्गति.

राजा थयेला कंडरीकने रसवाळा पान भोजन करवाथी तथा अति जागरण अने अति भोजन करवाथी आहार पची शक्यो नहीं. आथी मध्यरात्रिना समये तेना शरीरमां असह्य गाढ वेदनाओ उत्पन्न थइ यावत् दाहज्वर उत्पन्न थयो, आ समये तेनी सारवार कोइए न करवाथी तेमनी उपर खुब दुर्ध्यान चिंतवतो तेम राज्य–देश अन्तःपुर विषे तन्मय थयो छतो काळ करीने सातमी नारकीमां उत्कृष्टस्थितिए नारकपणे उत्पन्न थयो.

उपनय—

जे साधु अथवा साध्वी दीक्षा ग्रहण करीने फरीथी मनुष्य संबन्धी कामभोगनी इच्छा करे छे ते कंडरीक राजानी जेम संसारमां रखडे छे.

पुंडरीक अनगारनी थयेली सद्गति.

पुंडरीक अनगार स्थविर मुनि पासे विचरता विचरता आव्या अने संयम प्रतिज्ञाओ ग्रहण करी, छट्ठना उपवासना पारणे प्रथम पोरिसीए स्वाध्याय करी यावत् भिक्षा माटे फरतां ठंडुं–लुखुं भोजन व्होरी लावी गुरुने बतावीने तेमनी आज्ञा पामी लोलुपता विना आहार कर्यो छे, ते वार पछी रसरहित सराबरसवाळा ठंडा अने लुखा पानभोजननो आहार करवाथी, मध्यरात्रिए धर्मजागरिका जागतां आहार पाचन थयो नहीं. आथी असह्य शरीर विषे वेदना उत्पन्न थइ अने शरीरमां दाहज्वर उत्पन्न थयो. बळ रहित थयेला

पुंडरीकअणगारे चारचरणी अंगीकार करी, आलोचना-प्रतिक्रमण करी काळ समये काळ पामी सर्वार्थसिद्धविमाने देवपणे उत्पन्न थया, त्यांथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धपदने पामशे, यावत् सर्व दुःखनो अंत करशे.

उपनय—

जे साधु अथवा साध्वी प्रव्रज्या ग्रहण करीने मनुष्य सम्बन्धी कामभोगमां आसक्त न थाय, यावत् तेमां रागवाळा न थाय ते, घणा एवा साधु-साध्वीओथी तथा श्रावक-श्राविकाओथी आलोकमां पूजनीय थाय छे, परलोकमां-संसारनो अन्त करी पुंडरीक अनगारनी जेम अनन्तसुखने पामे छे.

इति ओगणीसमा श्रीपुंडरीक अध्ययननो सारांश समाप्तः

॥ एवं श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे प्रथम श्रुतस्कन्धस्य सारांशः समाप्तः ॥

॥ श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गना द्वितीय श्रुतस्कन्धस्य सारांशः ॥

प्रथम श्रुतस्कंधमां आप्तपुरुषना हितशिक्षाना दृष्टान्तोथी धर्मनुं रहस्य बताव्युं, हवे द्वितीय श्रुतस्कन्ध विषे धर्मकथाओथी धर्मीनां चरित्रोनुं कथन करे छे.

ते काळे ते समये राजगृहनामनुं नगर हतुं, अने तेनी बहार ईशानखूणे गुणशैलक नामनुं चैत्य हतुं त्यां उत्तम जाति अने उत्तम

कुलवाळा-चौदपूर्वी तथा चार ज्ञानवाळा एवा श्री सुधर्मास्वामि गणधर भगवान पांचसो मुनिवरो सह ग्रामानुग्राम विचरता पधार्या, भेगी थयेली पर्षदाने तेओए धर्म श्रवण कराव्यो अने धर्म श्रवण करी पर्षदा गइ.

ते वार पछी तेमना शिष्य आर्यजम्बूस्वामि नामना अनगारे तेमने प्रश्न कर्यो के-हे भगवान् ! सिद्धिगति पामेला श्रीमहावीरस्वामिए छठ्ठा अंगना पहेला श्रुतस्कंधना द्रष्टान्तो आपे कह्या ते प्रमाणे कह्या छे, तो हे भगवान् ! बीजाश्रुतस्कंधमां तेओए धर्मकथाओनो कयो अर्थ कह्यो छे !

हे जम्बू ! जातिसम्पन्न एवा महावीरप्रभुए आ बीजा श्रुतस्कन्धविषे दशवर्गो(विभागो) नीचे प्रमाणे प्ररूप्या छे. १ चमरेन्द्रनी अग्रमहिषीओ, २ वैरोचनइन्द्र(बलीन्द्र)नी अग्रमहिषीओ ३ असुरेंद्र सिवाय दक्षिण दिशाना भवनपतिना जे नव इन्द्रो छे तेमनी अग्रमहिषीओ, ४ असुरेन्द्र विना उत्तरदिशाना नव इंद्रोनी अग्रमहिषीओ, ५ दक्षिणदिशाना वानमंतर इन्द्रोनी अग्रमहिषीओ, ६ उत्तरदिशाना वानमंतर इन्द्रोनी अग्रमहिषीओ, ७ चन्द्रनी अग्रमहिषीओ, ८ सूर्यनी अग्रमहिषीओ, ९ शक्रेन्द्रनी अग्रमहिषीओ अने १० ईशानेन्द्रनी अग्रमहिषीओ आम दश वर्गो प्ररूप्या छे (अत्र अग्रमहिषीओ एटले मुख्य देवीओ जाणवी).

प्रथमवर्ग—प्रथमवर्गमां १ काली, २ राजी, ३ रजनी ४ विद्युत् अने ५ मेघा एम पांच देवीओना पांच अध्ययनो छे. ते हवे अनुक्रमे कहे छे (आ पांचे चमरेन्द्रनी अग्रमहिषीओ—मुख्य देवीओ छे.)

कालीदेवी–१

ते काले ते समये राजगृहनगरीनी बहार गुणशील चैत्यमां श्री महावीरस्वामि समवसर्या, श्रेणिकमहाराजा प्रभु पासे आवी

प्रभुने वंदना नमस्कार करी देशना श्रवण करता हता.
ते समये चमरचंचा राजधानी विषे कालावतंसक नामना भवनमां काल नामना सिंहासन पर काली नामनी देवी बेठी हती, ते चार
हजार सामानिकदेवीओ, चार महत्तरिकादेवीओना परिवार सह त्रण पर्षदाओ (सभाओ), सात प्रकारना लश्करना अधिपतिओ,
सोल हजार आत्मरक्षकदेवो तथा बीजा ते भवनमा रहेला घणा असुरदेवो अने देवीओथी परिवरेली हती.
ते कालीदेवीए श्री महावीरस्वामि भगवानने राजगृह नगर गुणशील चैत्यमा समवसरेला अवधिज्ञानथी जोया, अने प्रभुदर्शनथी
हर्षित थयेली ते कालीदेवी सिंहासनथी उभी थई पादपीठथी उतरी मोजडीओ काढीने प्रभुसन्मुख सात–आठ डगलां चाली, डाबा
ढींचणने उंचो अने जमणा ढींचणने भूमि पर स्थापी, त्रण वार मस्तक पृथ्वीतलने अडकाडी कंइक मस्तक नमावे छे. तेम कडां
अने बाजुबन्ध विगेरे अलंकारोथी अलंकृत भुजाओवाळी, बे हाथ जोडी 'नमुत्थुणं' कही वंदना–नमस्कार करी पूर्वसन्मुख
सिंहासन पर बेठी.

कालीदेवीनुं प्रभु पासे आगमन.

ते वार पछी ते कालीदेवीने प्रभुमहावीरस्वामिने वंदना नमस्कार करी सेवानो लाभ लेवा विचार थयो, अध्यवसाय थयो, आथी
सूर्याभदेवनी जेम आभियोगिक देवो पासे तेणीए दिव्यविमान तैयार कराव्युं. एक हजार योजनना विस्तारवाळा ते विमानमां बेसी
प्रभु पासे आवी पोतानां नाम गोत्र कहेवापूर्वक नाट्यविधि देखाडीने गइ अर्थात् नाटक करीने जेवी रीते आवी हती तेवी रीते पाछी गइ.
कालिदेवी–संबन्धि श्री गौतमस्वामिनी पृच्छा.

ते वार पछी श्री गौतमस्वामिए श्री महावीर प्रभुने वंदना–नमस्कार करी पूछ्युं के–हे भगवन् ! आ कालीदेवी क्यां गइ ? अने तेनी आवी मनोहर ऋद्धि क्यां गइ ?

श्री महावीर प्रभुए उत्तरमां कूटाकारशाळानुं दृष्टान्त पूर्वे कहेला प्रमाणे कह्युं.

ते वार पछी श्री गौतमस्वामिए श्री महावीर भगवानने पूछ्युं के–हे भगवान् ! ऋद्धिवाळी कालीदेवीने ते दिव्यऋद्धि शुं करवाथी मळी ? देवभवमां ते ऋद्धि शी रीते प्राप्त थइ ? तेना उपभोगमां ते ऋद्धि शी रीते तेनी पासे आवी ?

कालीदेवीनो पूर्वभव.

प्रभु महावीरस्वामिए उत्तरमां जणाव्युं के–हे गौतम ! ते काळे ते समये जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे आमलकल्पा नामनी नगरी हती. ते नगरीनी बहार ईशान खूणे आम्रशाळ वन हतुं, अने ते नगरीमां जितशत्रु नामनो राजा हतो. तथा ते नगरी विषे काळ नामनो गाथापति हतो तेने कालश्री नामनी भार्या हती. ते कालश्रीने काली नामनी पुत्री हती. ते काली वयवडे मोटी होवा छतां कुमारी हती, तेना स्तन नितंब सुधी लटकता होवाथी पति थवाने योग्य पुरुषो तेने जोइने वैराग्य पामता अर्थात् तेने इच्छता नहीं होवाथी ते पति वगरनी रहेली हती.

ते काळे ते समये पुरुषादानीय श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत सोळ हजार साधुओ अने आडत्रीश हजार साध्वीओथी परिवरेला आमलकल्पा नगरीना ईशानखूणामां आवेला आम्रशाळ वन नामना उद्यान विषे समवसर्या, ते कालीए प्रभु पधार्यानुं श्रवण करी मातापितानी आज्ञा पामी प्रभुनी देशना श्रवण करी आनंद पामीने प्रभुने वंदना–नमस्कार करी कह्युं के हे प्रभो ! हुं मारा पितानी रजा लेइने

पछी हुं आपनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करुं, त्यारे श्रीपार्श्वनाथ प्रभुए कह्युं के-हे देवानुप्रिया ! तने सुख उपजे तेम कर. ते वार पछी ते कालीकुमारिका हर्ष पामी प्रभुने वंदना-नमस्कार करी आमलकल्पा नगरी विषे ज्यां पोताना मातापिता हता त्यां आवी.

कालीए लीधेली दीक्षा.

काली कुमारिका-मातापिताने विनंति करवा लागी के-हे मातापिता ! हुं पार्श्वनाथ अरिहंतनी पासे धर्म सांभळी संसारना भयथी उद्वेग पामी छुं, तेम जन्म, जरा अने मरणथी भय पामी छुं तेथी तमारी अनुज्ञा पामीने हुं पार्श्वनाथ प्रभु पासे प्रव्रज्या लेवा इच्छुं छुं. ते सांभळी मातापिताए कह्युं-हे देवानुप्रिया ! जेम तने सुख उपजे तेम कर, धर्मकार्यमां विलंब न कर.

त्यारपछी काल गाथापतिए विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम भोजन तैयार कराव्यां अने-मित्र-ज्ञाति-स्वजन-संबन्धी अने परिजनने आमन्त्र्या, आमन्त्रेला महेमानोनो सत्कार करी, सम्बन्धी अने परिजननी पासे कालीदारिकाने कलशोवडे स्नान कराव्युं तेम सर्व आभूषणादिथी अलंकृत करी, एक हजार पुरुषोथी वहन करवा योग्य शिबिका विषे कालीपुत्रीने बेसाडी सर्व परिवार साथे सर्व ऋद्धिपूर्वक वाजिंत्रोना नादोसहित कालीने आम्रशालवने विषे श्री पार्श्वनाथप्रभु समीपे लाव्या.

काल गाथापति विगेरेए श्री पार्श्वनाथप्रभुने विनंति करी के-हे प्रभो ! आ अमारी कालीपुत्री अमने वहाली छे, ते संसारना भयथी उद्वेग पामेली छे, आथी आपनी पासे दीक्षा ग्रहण करवा इच्छे छे. तेथी अमे आपने आ अमारी कालीपुत्रीने शिष्यारूप भिक्षा आपीए छीए ते आप ग्रहण करो ! भगवाने कह्युं के-हे देवानुप्रियो ! जेम तमने सुख उपजे तेम करो.

तेवारपछी कालीकुमारी प्रभुने वंदना-नमस्कार करीने ईशानदिशामां जइने पोतानी मेळे ज आभूषण आदि उतारी लोच कर्यो,

अने प्रभु पासे आवी विनंति करी के–हे विभो ! मने दीक्षा आपो एम हुं इच्छुं छुं !

तेवारपछी प्रभुए पोतेज कालीसाध्वीने दीक्षा आपी अने पुष्पचूला आर्याने शिष्या तरीके सुपरत करी. पुष्पचूला आर्याए तेणीने शिष्या करी, काली आर्या पुष्पचूला आर्यानी साथे विचरती अगीआर अंग भणी, छट्ठ–अट्ठम आदि तपस्या करती यावत् इर्यासमितिवाळी गुप्त ब्रह्मचारिणी थइ.

काली आर्यानी जीवनचर्या.

एकदा काली आर्या शरीरबकुसिका–एटले स्नानादिकवडे शरीरनी शुश्रूषा करवाथी ते शबलचारित्री थइ, तेथी ते वारंवार हाथ–पग–मस्तक–मुख–स्तनना आंतरा–काखना आंतरा अने गुह्यस्थानना आंतरा धोवा लागी. तेम ज्यां ज्यां ते कायोत्सर्ग–शय्या अने स्वाध्याय करती त्यां त्यां प्रथम जळनां छांटनां नाखी पछी वेसती, सूती अने स्वाध्याय विगेरे करती हती. गुरुणी पुष्पचूला आर्याए कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! साध्वीओने शरीरबाकुशिका थवुं कल्पतुं नथी, तुं जे वारंवार हाथ–पग विगेरे धोवे छे, पाणी छांटीने वेसवा विगेरे करे छे तेनी तुं आलोचना कर ! यावत् प्रायश्चित् अंगीकार कर ! " आम हितशिक्षा आपी पण काली साध्वीए तेनो आदर न कर्यो. आथी वारंवार आ पापथी रोकवा टकोर करी, साध्वीओए पण तेने हेलना करी वारंवार निवारवा लागी. त्यारे काली साध्वीए जुदा उपाश्रये रहेवानो विचार कर्यो अने जइने जुदा उपाश्रये रही. हवे अहिं एणीने कोइ टकोर करनार न होवाथी वारंवार हाथ, पग आदि धोवा विगेरे करवा लागी यावत् पासत्था–पासत्थविहारी–शुद्ध क्रियामां आळसु–विहार करवामां आळसु–कुशीला–कुशीलविहारी अने इच्छा प्रमाणे वर्तन करनारी इत्यादि दोषोने अनुसरनारी थइ. आवी रीते घणा वर्षो सुधी संयम पाळीने अर्धामासना

अनशनवडे शरीरने क्षीण कर्युं, आलोचना प्रतिक्रमण कर्या विना काळधर्म पामी चमरचंचाराजधानी विषे काली नामनी देवीपणे उत्पन्न थइ. हमणा उत्पन्न थयेली कालावतंसक भवनमा रहेनारा असुरकुमार देव-देवीओनु अधिपतिपणुं पामी छे ते कालीदेवीनुं आयुष्य अढीपल्योपम छे, ते त्याथी च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमा उत्पन्न थइ सिद्धिपदने पामशे.

॥ इति प्रथमवर्गना प्रथम अध्ययननो सारांशः ॥



प्रथमवर्गना द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ अने पंचमा अध्ययननो सारांशः

राजी-२

हे जम्बू! ते काले अने समये राजगृह नामनुं नगर हतुं ते नगरनी बहार गुणशील नामना चैत्यविषे श्री महावीरस्वामि समवसर्या, ते समये पूर्वना अध्ययनमा कही गया तेम चमरचंचाथी राजी नामनी देवी आवी. अने कालीनी माफक नाटक देखाडीने गइ. त्यार बाद श्री गौतमस्वामिए ते राजीदेवीनी पूर्वभवनी पृच्छा करी. प्रभुए कह्यु के-हे गौतम! ते काले ते समये आमलकप्पा नगरी हती, त्या अम्बशालवन हतु, जितशत्रुराजा हतो, राजी नामनो गाथापति हतो, तेने राजश्री नामनी भार्या अने राजी नामनी पुत्री हती. अत्र पार्श्वनाथप्रभुनु समवसरण, राजीनी दीक्षा, यावत् कालीनी जेम शरीरबाकुशिका थइ, यावत् कालीनी जेम काल करी ते देवगतिमा उत्पन्न थइ छे, त्याथी च्यवी महाविदेहक्षेत्रमा उत्पन्न थइ सिद्धिपदे जशे. त्रीजा अध्ययन विषे-आमलकप्पा नगरी,

रजनी गाथापति, रजनश्री भार्या अने रजनी पुत्री यावत् राजीनी जेम बधो सम्बन्ध अहिं कहेवो. चोथा अध्ययन विषे एज नगरी, विद्युत गाथापति, विद्युतश्री भार्या अने विद्युत नामनी पुत्री शेष अधिकार राजीनी जेम कहेवो. पांचमा अध्ययन विषे एज नगरी, मेघनामनो गाथापति, मेघश्री नामनी भार्या, मेघा नामनी पुत्री शेष अधिकार तेज प्रमाणे जाणवो.

इति बीजा, त्रीजा, चोथा, पांचमा अध्ययननो प्रथमवर्गनो भारांश समाप्तः ।

बीजो वर्ग—हे जम्बू ! बीजा वर्गनां पांच अध्ययनो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे-१ शुंभा, २ निशुंभा, ३ रंभा, ४ निरंभा अने ५ मदना आ प्रमाणे पाच अध्ययनो कह्यां छे. बलिचंचा नामनी राजधानी विषे शुंभावतंसक नामना भवनमां शुंभ नामना सिंहासन विषे बेठेली शुंभा नामनी देवी हती इत्यादि, कालीनी जेम नाट्यविधि विगेरे देखाडीने गइ, अहिं प्रभु श्रीगौतमस्वामिना प्रश्नोत्तर पूर्वनी जेम समजवा. श्रावस्तिनगरी, कोष्टक चैत्य, जितशत्रुराजा, शुंभनामे गाथापति, शुंभश्री भार्या अने शुंभा नामनी पुत्री हती, शेष अधिकार कालीदेवीनी जेवो जाणवो. विशेष शुंभादेवीनी स्थिति साडा त्रण पल्योपमनी जाणवी, बाकीना चार अध्ययन विषे श्रावस्ति नगरीना जाणवा विशेष एके-पुत्रीनां नाम सरखां मातापितानां नाम जाणवां.

त्रीजो वर्ग—हे जम्बू ! त्रीजा वर्गमां चोपन अध्ययनो कह्यां छे, ते काले ते समये महावीरप्रभु राजगृह नगरी बहार गुणशील चैत्य हतुं त्यां समवसर्या. ते समये इला नामनी देवी धरणी नामनी राजधानीमां इलावतंसक नामना भवनविषे इला नामना सिंहासन विषे बेठेली हती विगेरे हकीकत कालीदेवी समान यावत् नाट्यविधि देखाडीने पाछी गइ. गौतमस्वामिना पूछवाथी तेनो पूर्वभव थी महावीरप्रभुए कह्यो के-हे गौतम ! वाणारसीनगरी बहार काम नामनुं महावन हतुं इल नामनो गाथापति, इलश्री नामनी तेने

भार्या अने इला नामनी पुत्री हती, शेष हकीकत काली समान जाणवी, विशेष धरणेन्द्रनी अग्रमहिषीपणे उत्पन्न थइ छे. तेनी स्थिति अर्धपल्योपमथी कंइक अधिक छे, बाकीनी हकीकत कालीदेवी प्रमाणे जाणवी. एज प्रमाणे अनुक्रमे २, सतेरा ३, सौदामिनी ४ इन्द्रा, ५ घना अने ६ विद्युता आ पांच देवीओनां पांच अध्ययन जाणवां. आ सर्वे धरणेन्द्रनी अग्रमहिषीओ छे. ए प्रमाणे छ अध्ययनो वेणुदेवनी छ अग्रदेवीओनां, यावत् घोषेन्द्रनी अग्रदेवीओनां छ अध्ययनो कंइ पण फेरफार विना कहेवां, आ प्रमाणे दक्षिण दिशाना नव इन्द्रोनां चोपन अध्ययनो थाय छे. आ सर्वे अधिकार पण वाणारसी नगरीना काम महावनना चैत्य विषे जाणवां.

चोथो वर्ग—हे जम्बू ! चोथा वर्गमां चोपन अध्ययनो कह्यां छे. ते काले ते समये महावीरस्वामी प्रभु राजगृह नगरीनी बहार गुणशील चैत्य विषे समवसर्या हता, ते काले ते समये १ रुचा नामनी देवी रुचानामनी राजधानी विषे रुचक नामना सिंहासन पर बेठी हती. विगेरे सर्व कालीदेवीनी जेम जाणवुं, विशेष ए के-पूर्वभवमां चंपानामनी नगरी, पूर्णभद्र नामे चैत्य, रुचक नामनो गाथापति हतो तेने रुचकश्री नामनी भार्या अने रुचा नामनी पुत्री हती. शेष अधिकार पूर्वनी जेम जाणवो. विशेष ए के-भूतानन्द नामना इन्द्रनी अग्रमहिषीपणे उत्पन्न थइ छे, स्थिति एक पल्योपमनी छे. आ प्रमाणे चोथा वर्गनो-पहेला अध्ययननो निक्षेप कह्यो, ए ज प्रमाणे अनुक्रमे २ सुरुचा, ३ रुचांशा, ४ रुचकावती, ५ रुचकांता अने ६ रुचप्रभा आ नामनी पांच देवीओनां पांच अध्ययन कहेवां, एज प्रमाणे कुल छ छ देवीओ यावत् नवमा महाघोष सुधी उत्तरदिशाना इन्द्रोनी कहेतां चोपन अध्ययनो थाय छे.

पांचमो वर्ग—हे जम्बू ! पांचमा वर्गनां बत्रीस अध्ययनो जणाव्यां छे, ते आ प्रमाणे–१ कमलादेवी–२ कमलप्रभा–३ उत्पला–४ सुदर्शना–५ रूपवती–६ बहुरूपा–७ सुरूपा–८ सुभगा–९ पूर्णा–१० बहुपुत्रिका–११ उत्तमा–१२ भारिका–१३ पद्मा–१४

वसुमती-१५ कनका-१६ कनकप्रभा-१७ अवतंसा-१८ केतुमती-१९ वज्रसेना-२० रतिप्रभा-२१ रोहिणी-२२ नवमिका-२३ ह्री-२४ पुष्पवती-२५ भुजगा-२६ भुजगवती-२७ महाकच्छा-२८ अपराजिता-२९ सुघोषा-३० विमला-३१ सुस्वरा अने ३२ सरस्वती. आ बत्रीस देवीओनां बत्रीश अध्ययन जाणवां.

पांचमा वर्ग विषे प्रथम अध्ययन-यावत् बत्रीश अध्ययन—

ते काले ते समये राजगृह नगरी विषे महावीरस्वामि समवसर्या त्यारे कमला नामनी देवी कमला नामनी राजधानीमां कमलावतंसक नामना भवन विषे कमल नामना सिंहासण पर बेठी हती. शेष अधिकार कालीदेवीनी समान कहेवो. विशेष ए के-पूर्वभवने विषे नागपुर नामनुं नगर हतुं तेनी बहार सहस्राम्रवन नामनुं उद्यान हतुं अने कमल नामनो गाथापति हतो तेने कमलश्री नामनी भार्या अने कमला नामनी पुत्री हती. तेणे पार्श्वनाथ प्रभु पासे दीक्षा लीधी विगेरे सर्व पूर्वनी जेम जाणवुं. एज प्रमाणे बाकीना एकत्रीस अध्ययनो दक्षिण दिशाना वानमंतरना आठ इन्द्रोनां कहेवां, कमलप्रभा विगेरे ३१ कन्याओए नागपुरमां सहस्राम्रवनना उद्यानमां दीक्षा लीधी, मातापितानां नाम पुत्री सरखा जाणवा अने अर्धपल्योपमनी स्थिति जाणवी.

छट्ठो वर्ग—छट्ठो वर्ग पण पांचमा वर्ग समान छे. विशेषता ए छे के-ते सर्व कन्याओ महाकालेन्द्र विगेरे उत्तरदिशाना आठ इन्द्रोनी ३२ अग्रमहिषीओ थइ, पूर्वभवमां साकेत नगर विषे उत्पन्न थइ हती, उत्तरकुरु उद्यान विषे तेणीओए दीक्षा ग्रहण करेली, तेमनां मातापितानां नाम तेमना समान जाणवां, शेष हकीकत पूर्ववत् जाणवी.

सातमो वर्ग—हे जम्बू ! श्री महावीरस्वामिए सातमा वर्गना १ सूरप्रभा–२ आतपा–३ अर्चिमाली अने ४ प्रभंकरा एम चार अध्ययनो कह्यां छे. तेमां प्रथम अध्ययनमां सूरप्रभा नामनी देवी सूरनामना विमान विषे सूरप्रभ नामना सिंहासन विषे बेठी हती विगेरे. बाकी सर्व वृतान्त कालीदेवी जेवो जाणवो. विशेष ए छे के–पूर्वभवमां अरक्खुरी नगरीमां सूरप्रभा नामनी पुत्री हती ते सूर्य नामना इन्द्रनी अग्रमहिषी थइ, तेनी अर्ध पल्योपम उपर पांचसो वर्ष अधिक स्थिति कहेली छे, बाकी सर्व अधिकार कालीदेवी समान जाणवो. एज प्रमाणे सूर्य इन्द्रनी ३ देवीओनो अधिकार जाणवो त्रणे देवीओ अखुपुरी नगरीमां पूर्वभवमां उत्पन्न थयेली.

आठमो वर्ग—हे जम्बू ! आठमा वर्गना चार अध्ययनो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—१ चन्द्रप्रभा–२ दोपीनामा–३ अर्चिमाली अने ४ प्रभंकरा. प्रथम अध्ययनमां चन्द्रप्रभादेवी चन्द्रप्रभनामना विमानमां चंद्रप्रभ नामना सिंहासन उपर बेठी हती शेष अधिकार कालीदेवी समान जाणवो. विशेष ए के–पूर्वभवमां मथुरानामनी नगरी हती तेनी बहार चन्द्रावतंसक उद्यान हतुं ते नगरीमां चन्द्रप्रभ नामे गाथापति हतो तेने चन्द्रश्री भार्या हती अने चन्द्रप्रभा नामनी पुत्री हती ते यावत् चन्द्रदेवेन्द्रनी अग्रमहिषी थइ तेनी स्थिति अर्धपल्योपम उपर पचास हजार वर्षनी कही छे, शेष अधिकार कालीदेवीनी सरखो जाणवो.

एवी रीते बाकीनी त्रण देवीओ पण पूर्वभवमां मथुरा नगरी विषे उत्पन्न थयेली माता पिताओनां नाम पण पुत्रीओने अनुसरतां जाणवां अने वर्तमानभवमां चन्द्रेन्द्रनी अग्रमहिषीओ जाणवी, शेष कालीदेवी समान जाणवुं.

नवमो वर्ग—हे जम्बू ! नवमा वर्गना आठ अध्ययनो श्री महावीरस्वामिए कह्यां छे ते आ प्रमाणे—१ पद्मा २ शिवा ३ सती

४ अंबू ५ रोहिणी ६ नवमिका ७ अचला अने ८ अपसरा. **नवमावर्गना प्रथम अध्ययनथी यावत् अठमा अध्ययननो सारांश—**

ते काले ते समये हे जम्बू ! पद्मादेवी–सोधर्मकल्प नामना प्रथम देवलोकमां पद्मावतंसक नामना विमानमां सुधर्मा नामनी सभा विषे पद्मनामना सिंहासन पर बेठी हती, शेष अधिकार कालीदेवी सरखो जाणवो. एवी रीते आठे अध्ययनो कालीदेवी सरखां जाणवां. विशेष ए के–पूर्वभव विषे बे श्रावस्तिनगरी विषे, बे हस्तिनापुर विषे, बे कांपिल्यपुर विषे अने बे साकेतनगर विषे उत्पन्न थयेली, आ बधीयेनी माताओनुं नाम विजया अने पिताओनुं नाम पद्म हतुं, सर्वेए श्री पार्श्वनाथप्रभुनी पासे दीक्षा लीधी हती. यावत् शक्रेन्द्रनी अग्रमहिषीओ थइ छे, तेमनी स्थिति नव पल्योपमनी कहेली छे ते सर्वे च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमां उत्पन्न थइ मोक्षे जशे.

दशमो वर्ग—हे जम्बू ! दशमा वर्गना आठ अध्ययनो श्रीमहावीरस्वामिए कह्यां छे, ते आ प्रमाणे–१ कृष्णा २ कृष्णराजी ३ रामा ४ रामरक्षिता ५ वसु ६ वसुगुप्ता ७ वसुमित्रा अने ८ वसुंधरा. **दशमावर्गना प्रथम अध्ययनथी यावत् अष्टम अध्ययननो सारांश—**

ते काले ते समये हे जम्बू ! राजगृहनगरमां श्रीमहावीरस्वामि समवसर्या त्यारे कृष्णा नामनी देवी ईशानकल्प नामना बीजा देवलोकमां कृष्णावतंसकनामना विमानमां सुधर्मानामनी सभा विषे कृष्ण नामना सिंहासन उपर बेठी हती, शेष अधिकार कालीदेवी सरखो कहेवो, ए ज प्रमाणे आठे अध्ययनो जाणवा. विशेष ए के–पूर्वभवमां बे वाणारसी नगरी विषे, बे राजगृहनगरी विषे, अने बे कौशंबीनगरी विषे उत्पन्न थइ हती, ते सर्वना पिताओनुं नाम राम हतुं, माताओनुं नाम धर्मा हतुं, ते आठेए पार्श्वनाथप्रभुनी पासे प्रव्रज्या लीधी हती अने प्रभुए पुष्पचूला आर्याने शिष्या तरीके अर्पण करेली तेमनी स्थिति नव पल्योपमनी कही छे, तेओ त्यांथी च्यवी

महाविदेहक्षेत्रमां उत्पन्न थइ दीक्षा लइ सिद्धिगतिने पामशे.

आ प्रमाणे निश्चे हे जम्बू! श्रमण भगवानमहावीरस्वामि के जे धर्मनी आदि करनारा–तीर्थने करनारा यावत् सिद्धिपदने पामेला छे तेमणे कहेलुं छे.

इति श्री द्वितीय श्रुतस्कंध सारांश समाप्तः।

एवं श्री सौराष्ट्रदेशे कुंडलानगरे प० पू० आचार्यदेव श्रीमच्चन्द्रसागरसूरीश्वरजीनी पवित्र निश्राए विक्रम संवत्सर २००८ वर्षे चातुर्मासस्थितः मुनिश्रीचन्द्रसागरे वि. सं. २००८ वर्षे आषाढकृष्णअमावास्यासोमवासरे श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गना प्रथम श्रुतस्कंधना आठमा अध्ययनथी यावत् द्वितीय श्रुतस्कंधसमाप्ति पर्यन्तनो सारांश तारवीने लख्यो. शुभं भवतु।



श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे द्वितीयविभागस्य अनुक्रमणिका—

शुद्धिपत्रकम्.

पृष्ठ० पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ० पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
१७०–१६	पणियमंड०	पणियमंड	१९०–१६	'पक०	'पक
१८०–२७	करेइ	करेह	१९६–१९	वद्वेति	वढ्ढेति
१७४–८	विरुव०	विरूव०	१९६–२०	इत्यर्थः	इत्यर्थः
१७४–१०	स्वरुपे	स्वरूपे	१९७–२४	मुयति, तत्थवि	मुयति, तत्थवि से थाहे जावे, ततेणं से तेतलि० सुकंसि तणकुडंसि अगणिकायं पक्खिवंति २, अप्पाणं मुयति, तत्थवि
१७४–१६	रुपक०	रूपक०			
१७४–२४	रुपकार्थं	रूपकार्थं			
१७८–२७	महावाया, मंदावाया	मंदावाया, महावाया			
१८७–१०	'दिघाइ'	'दिघाइं'			
१८७–१०	'वर्द्दहिं	'वईहिं	२००–१२	घण्णे	घण्णे
१८९–४	अगणे०	अणेग०	२००–१६	कंडियं	कुंडियं

पृष्ठ० पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
२०१–१३	तय० फल०	तय० पच० फल०
२०४–२८	एगं ते	एगंते
२०५–२५	चेवे	चेव
२०७–१५	गोल	गोलं
२०९–२६	निसामति	निसामेति
२१२–१०	'पुरा पोराणाण'मित्यत्र यावत्	XXXXX
	करणादेवं द्रष्टव्यं 'दुचिण्णाणं	XXXXX
	दुप्परकंताणं कडाणं पावाणं	XXXXX
	कम्माणं परवगं फलवित्ति	XXXXX
	विसेस'ति अयमर्थः पुरा–	XX पुरा–
२१७–१७	पमाणं	पणामं
२२२–१०	हव्मा०	हवमा०
२२७–८	'छुला०	'छुल्ल०
२२८–१६	कर्म०	कर्म०
२२८–२७	'कडु'	'कड्डु'
२३३–७	'जाण०	'जण०
२३५–५	भ्यहं०	महं
२३७–११	से तेसिं	से कणगकेऊ तेसिं
२३७–२८	सालोवत्था	सालीवत्था

॥ ९-श्रीमाकन्दीदारकाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ नवमं विव्रियते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः, पूर्वत्र मायावतोऽनर्थ उक्तः; इह तु भोगेष्वविरतिमतोनर्थो विरतिमतश्चार्थोऽभिधीयते इत्येवं सम्बद्धं—

जइ णं भंते !, समणेणं जाव संपत्तेणं अट्ठमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते; नवमस्स णं भंते !, नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं२, चंपा नामं नयरी, पुण्णभद्दे, तत्थ णं माकंदी नामं सत्थवाहे परिवसति, अड्ढे०; तस्स णं भद्दा नामं भारिया, तीसे णं भद्दाए अत्तया दुवे, सत्थवाहदारया होत्था; तं०-जिणपालिए य, जिणरक्खिए य; तते णं तेसिं मागंदियदारगाणं, अण्णया कयाई एगयओ इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारस वारा ओगाढा, सव्वत्थविय णं लद्धट्ठा, कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया; तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया !, दुवालसमंपि लवणसमुद्दं पोतवहणेणं ओगाहित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्सेतमट्ठं पडिसुणेंति२ त्ता, जेणेव अम्मापियरो, तेणेव उवा०; एवं वदासी-एव खलु अम्हे अम्मयाओ !, एक्कारस वारा तं चेव जाव नियगं घरं हव्वमागया, तं इच्छामो णं अम्मयाओ !, तुम्हेहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए, तते णं ते मागंदियदारए अम्मापियरो एवं वदासी-इमे ते जाया !, अज्जग जाव परिभाएत्तए तं अणुहोह ताव

जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए, किं भे सपच्चवाएणं निरालंबणेणं लवणसमुद्दोत्तारेणं ?, एवं खलु पुत्ता !, दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवति, तं मा णं तुब्भे दुवे पुत्ता !, दुवालसमंपि लवण० जाव ओगाहेह, मा हु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सति; तते णं मागंदियदारगा अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-एवं खलु अम्हे अम्मयाओ !, एक्कारस वारा लवणं ओगाहित्तए, तते णं ते मागंदीदारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहिं, पण्णवणाहि य, आघवित्तए वा, पन्नवित्तए वा, ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुजाणित्था; तते णं ते मागंदियदारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च, धरिमं च, मेज्जं च, पारिच्छेज्जं च, जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्दं बहूइं जोअणसयाइं ओगाढा ॥ सूत्रम्-८५ ॥ तते णं तेसिं मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणसयाइं, ओगाढाणं समाणाणं अणेगाइं उप्पाइयसंयातिं पाउब्भूयातिं; तंजहा-अकाले गज्जियं जाव थणियसद्दे कालियवाते तत्थ समुट्ठिए, तते णं सा णावा तेणं कालियवातेणं आहुणिज्जमाणी२, संचालिज्जमाणी२, संखोभिज्जमाणी२, सलिलतिक्खवेगेहिं आयट्टिज्जमाणी२, कोट्टिमंसि करतलाहते विव तेंदूसए तत्थेव२; ओवयमाणी य, उप्पयमाणी य; उप्पयमाणीविव धरणीयलाओ, सिद्धविज्जाहरकन्नगा ओवयमाणीविव गगणतलाओ, *भट्ठविज्जा विज्जाहरकन्नगाविव, पलायमाणीविव महागरुलवेगवित्तासिया, भुयगवरकन्नगा धावमाणी-

*एतदन्तर्गत पाठ. अ प्रतौ नास्ति ।

विव, महाजणरसियमद्दवित्तत्था, ठाणभट्ठा आसकिसोरी णिगुंजमाणीविव, गुरुजणदिट्ठावराहा सुयण-कुलकन्नगा घुम्ममाणीविव, वीचीपहारसततालिया गलियलंबणाविव, गगणतलाओ, रोयमाणीविव# सलिलगंठिविप्पइरमाणघोरंसुवाएहिं णववहू, उवरतभत्तुया विलवमाणीविव, परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिदुया महापुरवरी झायमाणीविव, कवडच्छोमप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया णिसास-माणीविव, महाकंतारविणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया सोयमाणीविव; तवचरणखीणपरिभोगा चयणकाले देववरवहू संचुण्णियकट्ठकूवरा, भग्गमेढिमोडियसहस्समाला, सूलाइयवंकपरिमासा, फलहंतरतडतडेंतफुट्टंतसंधिवियलंतलोहकीलिया, सव्वंगवियंभिया, परिसडियरज्जुविसरंतसव्वगत्ता, आमग-मल्लगभूया अकयपुण्णजणमणोरहोविव; चिंतिज्जमाणगुरुई हाहाकयकण्णधारणावियवाणियगजणकम्म-गारविलविया णाणाविहरयणपणियसंपुण्णा बहूहिं पुरिससएहिं रोयमाणेहिं, कंद०, सोय०, तिप्प०, विलवमाणेहिं; एगं महं अंतो जलगयं गिरिसिहरमासायइत्ता संभग्गकूवतोरणा, मोडियझयदंडा, वलय-सयखंडिया, करकरस्स तत्थेव विद्दवं उवगया; तते णं तीए णावाए भिज्जमाणीए बहवे पुरिसा विपुलप-डियं भंडमायाए अंतो जलंमि णिमज्जावि यावि होत्था ॥ सूत्रम्-८६ ॥ तते णं ते मागंदियदारगा छेया, दक्खा, पत्तट्ठा, कुसला, मेहावी, णिउणसिप्पोवगया, बहुसुं पोतवहणसंपराएसु कयकरणलद्धविजया,

अमूढा, अमूढहत्था, एगं महं फलगखंडं आसादेंति; जंसिं च णं पदेसंसि से पोयवहणे विवन्ने, तंसिं च णं पदेसंसि एगे महं रयणद्दीवे णामं दीवे होत्था, अणेगाइं जोअणाति आयामविक्खंभेणं, अणेगाइं जोअणाइं परिक्खेवेणं णाणादुमसंडमंडिउद्देसे सस्सिरीए पासातीए ४, तस्स णं बहुमज्झदेसभाए, तत्थ णं महं एगे पासायवडेंसए होत्था, अब्भुग्गयमूसियए जाव सस्सिरीभूयरूवे पासातीए ४, तत्थ णं पासायवडेंसए रयणद्दीवदेवया नामं देवया परिवसति, पावा चंडा रुद्दा साहसिया; तस्स णं पासायवडिंसयस्स चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा किण्हा किण्होभासा; तते णं ते मागंदियदारगा तेणं फलयखंडेणं उवुज्झमाणा२, रयणदीवंतेणं संवुढा यावि होत्था, तते णं ते मागंदियदारगा थाहं लभंति२ मुहुत्ततरं आससंति२, फलगखंडं विसज्जेंति२, रयणद्दीवं उत्तरंति२, फलाणं मग्गणगवेसणं करेंति२, फलाति गिण्हंति२, आहारेंति२, णालिएराणं मग्गणगवेसणं करेंति२, नालिएराइं फोडेंति नालिएरतेल्लेणं अण्णमण्णस्स गत्ताइं अब्भंगेंति २, पोक्खरणीतो ओगाहिंति २, जलमज्जणं करेंति २, जाव पच्चुत्तरंति २, पुढविसिलापट्टयंसि निसीयंति२ः आसत्था, वीसत्था, सुहासणवरगया चंपानयरिं अम्मापिउआपुच्छणं च लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमुत्थणं च पोतवहणविवत्तिं च फलयखंडस्स आसायणं च रयणद्दीवुत्तारं च अणुचिंतेमाणा २, ओहतमणसंकप्पा जाव झियायेन्ति; तते णं सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए ओहिणा आभोएति,

१ जसिं अ

असिफलगवग्गहत्था सत्तट्ठतलप्पमाणं उड्ढं वेहासं उप्पयति २, ताते उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी २, जेणेव मागंदियदारए तेणेव आगच्छति २, आसुरुत्ता मागंदियदारए खरफरुसनिट्ठुरवयणेहिं एवं वदासी-हं भो मागंदियदारया !, अप्पत्थियपत्थिया जति णं तुब्भे मए सद्धिं विउलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह, तो भे अत्थि जीविअं, अहण्णं तुब्भे मए सद्धिं विउलातिं नो विहरह, तो भे इमेणं नीलुप्पलगवलगुलिय जाव खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउयाहिं उवसोहियाइं तालफलाणीव सीसाइं एगंते एडेमि; तते णं ते मागंदियदारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए सो० भीया, करयल० एवं जण्णं देवाणुप्पिया ! वतिस्ससि. तस्स आणाउववायवयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तते णं सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए गेण्हति २, जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छइ २, असुभपोग्गलावहारं करेति २, सुभपोग्गलपक्खेवं करेति २ त्ता, पच्छा तेहिं सद्धिं विउलातिं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति, कल्लाकल्लिं च अमयफलातिं उवणेति ॥ सूत्रम्-८७ ॥

सर्वं सुगमं, नवरं-'निरालंबणेणं'-निष्कारणेन अत्यपायसम्भवे वा त्राणायाऽऽलम्बनीयवस्तुवर्जितेन, 'कालियावाए तत्थ'-त्ति-कालिकावातः-प्रतिकूलवायुः, 'आहुणिज्जमाणी'त्यादि, आधूयमाना कम्पमाना विद्रवमुपगतेति सम्बन्धः, सञ्चाल्यमाना-स्थानात् स्थानान्तरनयनेन सङ्क्षोभ्यमाना-अधो निमज्जनतः तद्गतलोकक्षोभोत्पादाद्वा सलिलातीक्ष्णवेगैरतिवर्त्यमाना-आक्रम्यमाणा कुट्टिमे करतलेनाहतो यः स तथा स इव, 'तंदूसए'-त्ति-कन्दुकः, तत्रैव प्रदेशेऽधः पतन्ती

वा-अधो गच्छन्ती उत्पतन्ती वा-ऊर्ध्वं यान्ती तथोत्पतन्तीव धरणीतलात्, सिद्धविद्या विद्याधरकन्यका तथाऽधः पतन्तीव, गगनतलाद् भ्रष्टविद्या विद्याधरकन्यका, तथा-विपलायमानेव-भयाद्धावन्तीव महागरुडवेगवित्रासिता भुजगकन्यका धावन्तीव, महाजनस्य रसितशब्देन वित्रस्ता स्थानभ्रष्टाऽश्वकिशोरी, तथा-विगुञ्जन्तीव-अव्यक्तशब्दं कुर्वन्तीव अवनमन्तीव वा, गुरुजनदृष्टापराधा-पित्राद्युपलब्धव्यलीका सुजनकुलकन्यका कुलीनेति भावः, तथा-घूर्णन्तीव-वेदनया थरथरायमाणेव वीचिप्रहारशतताडिता हि स्त्री वेदनया घूर्णतीति वेदनयेव घूर्णयन्तीत्येवमुपमानं द्रष्टव्यं, गलितलम्बनेव-आलम्बनाद् भ्रष्टेव गगनतलाद्-आकाशात् पतितेति गम्यते, यथा क्षीणबन्धनं फलाद्याकाशात् पतति एवं साऽपीति, क्वचित्तु-गलितलम्बना. इत्येवादेव दृश्यते, तत्र लम्ब्यन्ते इति लम्बनाः-नङ्गरास्ते गलिता यस्याः सा तथा, तथा रुदन्तीव, कैः केत्याह-सलिलभिन्ना ये ग्रन्थयस्ते सलिलग्रन्थयः ते च ते, 'विप्पइरमाण'त्ति-विप्रकिरन्तश्च सलिलं क्षरन्त इति समासः त एव स्थूरा अश्रुपातास्तैर्नववधूरुपरतभर्तृका, तथा विलपन्तीव, कीदृशी केत्याह-परचक्रराजेन-अपरसैन्यनृपतिनाऽभिरोहिता-सर्वतः कृतनिरोधा या सा तथा, परममहाभयाभिद्रुता महापुरवरी, तथा क्षणिकस्थिरत्वसाधर्म्यात् ध्यायन्तीव कीदृशी केत्याह-कपटेन-वेषाद्यन्यथात्वेन यच्छन्न तेन प्रयोगः-परप्रतारणव्यापारः तेन युक्ता या सा, तथा, योगपरिव्राजिका-समाधिप्रधानव्रतिनीविशेषः, तथा निःश्वसन्तीव अधोगमनसाधर्म्यात् तद्गतजननिःश्वाससाधर्म्याद्वा निःश्वसन्तीव कीदृशी केत्याह-महाकान्तारविनिर्गता परिश्रान्ता च या सा तथा परिणतवया-विगतयौवना, 'अम्मय'त्ति-अम्बा पुत्रजन्मवती, एवंभूता हि स्त्री श्रमप्रचुरा भवति, ततश्चात्यर्थं निःश्वसितीत्येवं सा विशेषितेति, तथा तद्गतजनविषादयोगात् शोचन्तीव, कीदृशी केत्याह-

तपश्चरणं–ब्रह्मचर्यादि तत्फलमपि उपचारात् तपश्चरणं–स्वर्गसम्भवभोगजातं तस्य क्षीणः परिभोगो यस्याः सा तथा, च्यवनकाले देववरवधूः, अथवा–'उप्पयमाणीविवे'त्यादाविवशब्दस्यान्यत्र योगादुत्पतन्ती नौः, केव ?–सिद्धविद्या-विद्याधरकन्यकेवेत्यादि व्याख्येयमिति, तथा मञ्चूर्णितानि काष्ठानि कूबरं च–तुण्डं यस्याः सा तथा, तथा भग्ना मेढी–सकलफलकाधारभूतकाष्ठरूपा यस्याः सा तथा, मोटितो–भग्नः सहसा–अकस्मात् सहस्रसङ्ख्यजनाश्रयभूतो वा मालो–मालकः उपरितनभागो जनाधारो यस्याः सा तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, तथा शूलाचितेव–शूलाप्रोतेव गिरिशृङ्गा-रोहणेन निरालम्बनतां गतत्वाच्छूलाचिता वङ्को–वक्रः परिमर्शो–जलधिजलस्पर्शो–यस्याः सा तथा, ततः कर्मधारयः, अथवा–शूलायितः–आचरितशूलारूपः स्कन्दितपरिकरत्वात् ; 'सूलाइय'त्ति–पाठे तु शूलायमानो वङ्कश्च–वक्रः 'परिमासो' त्ति–नौगतकाष्ठविशेषो नाविकप्रसिद्धो यस्यां सा तथा, फलकान्तरेषु–मङ्कटित–फलकविवरेषु तटतटायमानाः–तथाविधध्वनिं विदधानाः स्फुटन्तो–विघटमानाः सन्धयो–मीलनानि यस्यां सा तथा, विगलन्त्यो लोहकीलिका यस्यां सा तथा, ततः कर्मधारयः, तथा सर्वाङ्गैः–सर्वावयवैर्विजृम्भिता–विवृततां गता या सा तथा, परिशटिता रज्जवः–फलकसङ्घातनद्धरिका यस्याः सा तथा, अत एव 'विसरंत'त्ति–विशीर्यमाणानि सर्वाणि गात्राणि यस्याः सा तथा, ततः कर्म्मधारयः; आमकमल्लकभूता–अपक्वशरावकल्पा, जलसम्पर्के क्षणेन विलयनात्, तथा अकृतपुण्यजनमनोरथ इव चिन्त्यमाना–कथमि-मामेवामापदं निस्तरिष्यतीत्येवं विकल्प्यमाना गुर्वी–गुरुका, आपदः सकाशात् दुःसमुद्धरणीयत्वात्, निष्पुण्यजनेनापि

१ °व्घट्टि० अ ।

स्यो मनोरथः कथमयं पूरयिष्यत इत्येवं चिन्त्यमानो दुर्निर्वहत्वाद् गुरुरेव भवन्तीति तेनोपमेति, तथा हाहाकृतेन-हाहाकारेण कर्णधाराणां-निर्यामकाणां नाविकानां-कैवर्त्तानां वाणिजकजनानां कर्म्मकराणां च प्रतीतानां विलपितं-विलापो यस्यां सा तथा, नानाविधै रत्नैः पण्यैश्च-भाण्डैः सम्पूर्णा या सा तथा, 'रोयमाणेहिं'ति सशब्दमश्रूणि विमुञ्चत्सु, 'कंदमाणेहिं'ति-शोकात् महाध्वनिं मुञ्चत्सु, 'सोयमाणेहिं'-शोचत्सु मनसा खिद्यमानेषु, 'तिप्पमाणेहिं'ति-भयात् प्रस्वेदलालादि तर्पत्सु, 'विलपत्सु'-आर्त्त जल्पत्सु एकं महत्, 'अंतो जलगयं'ति-जलान्तर्गतं गिरिशिखरमासाद्य मम्भग्नः कूपकः-कूपकस्तम्भो यत्र यत्र सितपटो निबध्यते तोरणानि च यस्यां सा तथा, तथा मोटिता ध्वजदण्डा यस्यां सा तथा, वलकानां-दीर्घदारुरूपाणां शतानि खण्डानि यस्यां सा तथा, अथवा वलयशतैः-वलयाकारखण्डशतैः खण्डिता या सा तथा, 'करकर'त्ति-करकरेतिशब्दं विदधाना तत्रैव जलधौ विद्रवं-विलयमुपगतेति, 'पोयवहणसंपराएसु'ति सम्परायः-सङ्ग्रामः तद्वद्यानि भीषणानि पोतवहनकार्याणि तानि तथोच्यन्ते तेषु, देवताविशेषणानि विजयचोरविशेषणवद् गमनीयानि; 'असिखेडगवग्गहत्थ'त्ति-खड्गफलकाभ्यां व्यग्रौ हस्तौ यस्याः सा तथा, 'रत्तगंडमंसुयाइं'ति-रक्तौ-रञ्जितौ गण्डौ यैस्तानि रक्तगण्डानि तानि श्मश्रूणि-कूर्चकेशाः ययोस्ते रक्तगण्डश्मश्रुके, 'माउयाहिं उवसोहि-याइं'ति-इह माउयाउ उत्तरौष्ठरोमाणि सम्भाव्यन्ते, अथवा-'माउया'-सख्यो मातरो वा ताभिः उपशोभिते-समारचित-केशत्वादिना जनितशोभे उपेशोभिते वा-निर्मलीकृते शिरसी-मस्तके छिन्द्वेति वाक्यशेषः, 'जण्णं देवाणुप्पिए'त्यादि, यं

१ °शोपिते, भ ।

कश्चन प्रेष्याणामपि प्रेष्यं देवानुप्रिया वदिष्यति-उपदेक्ष्यति यदुतायमाराध्यः, 'तस्स'त्ति-तस्यापि आस्तां भवत्याः आज्ञा अवश्यं विधेयतया आदेशः उपपातः-सेवावचनं-अनियमपूर्वक आदेश एव निर्देशः-कार्याणि प्रति प्रश्ने कृते यन्नियतार्थ-मुत्तरमेतेषां समाहारद्वन्द्वः तत्र, अथवा-यद्देवानां प्रिया वदिष्यति, 'तस्स'त्ति-तत्र आज्ञादिरूपे स्थास्यामः-वर्त्तिष्याम इति, 'अमयफलाइं'ति-अमृतोपमफलानि ।

तते णं मा रयणदीवदेवया, सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टियव्वेत्ति, जं किंचि तत्थ तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, कयवरं वा, असुइं पूतियं दुरभिगंधमचोक्खं तं सव्वं आहुणिय२, तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वं तिकट्टु णिउत्ता; तते णं सा रयणदीवदेवया, ते मागंदियदारए; एवं वदासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया !, सक्क० सुट्ठिय० तं चेव जाव णिउत्ता; तं जाव अहं देवा० !, लवणसमुद्दे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिंसए सुहंसुहेणं अभिरममाणा चिट्ठह, जति णं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा, उस्सुया वा, उप्पुया वा, भवेज्जाह; तो णं तुब्भे पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं०-पाउसे य वासारत्ते य,-" तत्थ उ कंदलसिलिंधदंतो णिउरवरपुप्फपीवरकरो । कुडयज्जुणणीवसुरभिदाणो पाउसउऊगयवरो साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य-सुरगोवमणिविचित्तो दद्दुरकुलरसियउज्झररवो । वरहिणविंदपरिणद्धसिहरो वासारत्तो उऊपव्वतो साहीणो ॥ २ ॥" तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया !, बहुसु वावीसु य, जाव सरसरपंतियासु बहूसु

आलीघरएसु य, मालीघरएसु य, जाव कुसुमघरएसु य, सुहंसुहेणं अभिरममाणा विहरेज्जाह; जति णं तुब्भे एत्थवि उव्विग्गा वा, उस्सुया वा, उप्पुया वा, भवेज्जाह; तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं दो ऊऊ सया साहीणा तं०–सरदो य हेमंतो य,–“ तत्थ उ सणसत्तवण्णकउओ नीलुप्पलपउमनलिणसिंगो । सारसचक्कवायरवितघोसो सरयऊऊगोवती साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य सियकुंदधवलजोण्हो कुसुमितलोद्धवणसंडमंडलतलो । तुसारदगधारपीवरकरो हेमंतऊऊससी सया साहीणो ॥ २ ॥ ” तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया !, वावीसु य जाव विहरेज्जाह, जति णं तुब्भे तत्थवि. उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह, तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह; तत्थ णं दो ऊऊ साहीणा, तं०–“ वसंते य गिम्हे य, तत्थ उ सहकारचारुहारो किंसुयकण्णियारासोगमउडो । ऊसिततिलगबउलायवत्तो वसंतऊऊणरवती साहीणो ॥ १ ॥ तत्थ य पाडलसिरीससलिलो मलियावासंतियधवलवेलो । सीयलसुरभिअनिलमगरचरिओ गिम्हऊऊसागरो साहीणो ॥ २ ॥ ” तत्थ णं बहुसु जाव विहरेज्जाह, जति णं तुब्भे देवा० ! तत्थवि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह, तओ तुब्भे जेणेव पासायवडिंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, ममं पडिवालेमाणा २ चिट्ठेज्जाह, मा णं तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह, तत्थ णं महं एगे, उग्गविसे, चंडविसे, घोरविसे, महाविसे, अइकायमहाकाए, जहा तेयनिसग्गे, मसिमहिसामूसाकालए, नयणविसरोसपुण्णे, अंजणपुंजनियरप्पगासे, रत्तच्छे, जमलजुयलचंचलचलंतजीहे धरणियलवेणिभूए, उक्कडफुडकुडि-

लजडिलकक्खडविघडफडाडोवकरणदच्छे, लोगाहारधम्ममाणधमधमेंतघोसे, अणागलियचंडतिव्वरोसे, समुहिं तुरियं, चवलं धमधमंतदिट्ठीविसे सप्पे य परिवसति; मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ; ते मागंदियदारए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदति२, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति२, ताए उक्किट्ठाए लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेउं पयत्ता यावि होत्था ॥ सूत्रम्–८८ ॥

'सक्कवयणसंदेसेणं'ति–शक्रवचनं चासौ सन्देशश्च–भापकान्तरेण देशान्तरस्थस्य भणनं शक्रवचनसन्देशः तेन, अशुचिकं–अपवित्रं, समुद्रस्याशुद्धिमात्रकारकं पत्रादीति प्रक्रमः पूतिकं–जीर्णतया कुथितप्रायं, दुरभिगन्धं–दुष्टगन्धं किमुक्तं भवति ? अचोक्षं अशुद्धं; 'तिसत्तखुत्तो'त्ति–त्रिभिर्गुणिताः सप्त त्रिसप्त त्रिसप्त वाराः त्रिसप्तकृत्वः, एकविंशतिवारानित्यर्थः; 'एयंसि अंतरंसि'त्ति–एतस्मिन्नवसरे विरहे वा, 'उव्विग्ग'त्ति–उद्विग्नौ उद्वेगवन्तौ, 'उप्पिच्छ'त्ति–भीतौ, पाठान्तरेण–उत्प्लुतौ–भीताविव; 'उस्सुय'त्ति उत्सुकौ अस्मत्समागमनं प्रति, 'तत्थ णं दो उदू'इत्यादि, तत्र–पौरस्त्ये वनखण्डे द्वौ ऋतू–कालविशेषौ सदा स्वाधीनौ–अस्तित्वेन स्वायत्तौ, तज्जन्यानां वनस्पतिविशेषपुष्पादीनां सद्भावात्, तद्यथा–प्रावृट्–वर्षारात्रश्च, आषाढश्रावणौ भाद्रपदाश्वयुजौ चेत्यर्थः, अनयोरेव रूपकालङ्कारेण वर्णनाय गीतिकाद्वयम्, 'तत्थ उ'इत्यादि, तत्रैव पूर्ववनखण्डे नान्यत्रौदीच्ये पश्चिमे वेत्यर्थः, कन्दलानि च–प्रत्यग्रलताः सिलिन्ध्राश्च–भूमिस्फोटाः, अन्ये त्वाहुः–कन्दलप्रधानाः सिलिन्ध्रा–वृक्षविशेषा ये प्रावृषि पुष्यन्ति, सितकुसुमाश्च भवन्ति त एव कुसुमिताः सन्तो दन्ता यस्य धवलत्वसाधर्म्यात् सः कन्दलसिलीन्ध्रदन्तः, इह च सिलीन्ध्राणां कुसुमितत्वविशेषणं सामर्थ्याद् व्याख्यातं,

कुसुमाभावे तेषां प्रावृषोऽन्यत्रापि कालान्तरे सम्भवादिति, तथा 'निउरो'त्ति-वृक्षविशेषः, तस्य यानि वरपुष्पाणि तान्येव पीवरः-स्थूरः करो यस्य स तथा, कुटजार्जुननीपा-वृक्षविशेषास्तत् पुष्पाणि कुटजार्जुननीपानि तान्येव सुरभिदानं-सुगन्धिमदजलं यस्य स तथा, प्रावृट् ऋतुरेव गजवरः प्रावृड्ऋतुगजवरः स्वाधीनः, इह सिलिन्ध्रादिवनस्पतीनां कालान्तराकृतकुसुमानां सदाकुसुमितानां भावादात्मवशोऽस्तीति भावः ॥ १ ॥ तथा तत्रैव वनखण्डे सुरगोपा-इन्द्रगोपकाभिधाना रक्तवर्णाः कीटास्त एव मणयः पद्मरागादयः तैर्विचित्रः-कर्बुरो यः स तथा, तथा दर्दुरकुलरसितं-मण्डूकसमूहरटितं तदेव उज्झररवो-निर्झरशब्दो यत्र स तथा, बर्हिणवृन्देन-शिखण्डिसमूहेन परिणद्धानि परिगतानि शिखराणि ऋतुपक्षे वृक्षसम्बन्धीनि पर्वतपक्षे कूटानि यत्र स तथा वर्षारात्रऋतुरेव पर्वत इति विग्रहः, स्वाधीनः-स्वायत्तस्तद्धर्माणां सर्वदा तत्र भावादिति ॥ २ ॥ 'वावीसु'इत्यादि प्रथमाध्ययनवत्, 'सरओ हेमंतो य'त्ति-कार्त्तिकमार्गशीर्षौ पौषमाघौ चेत्यर्थः इहापि गीतिकाद्वयं-'तत्थ उ'इत्यादि, तत्रैव सनो-वल्कप्रधानो वनस्पतिविशेषः सप्तपर्णः-सप्तच्छदस्तयोः पुष्पाणि सनसप्तपर्णानि तान्येव ककुदं-स्कन्धदेशविशेषो यस्य स तथा, नीलोत्पलपद्मनलिनानि-जलजकुसुमविशेषास्तान्येव शृङ्गे यस्य स तथा, सारसाश्चक्रवाकाश्च-पक्षिविशेषास्तेषां 'रचियं'ति-रुतं तदेव घोषो-नर्दितं यस्य स तथा शरदृतुरेव गोपतिः-गवेन्द्रःशरदृतुगोपतिः स्वाधीनः ॥ १ ॥ तथैव तत्र वनखण्डे सितानि यानि कुन्दानि-कुन्दाभिधानवनस्पतिकुसुमानि तान्येव धवला ज्योत्स्ना-चन्द्रिका यस्य स तथा, पाठान्तरेण-सितकुंदविमलजोण्हो'त्ति स्पष्टं, कुसुमितो यो लोध्रवनखण्डः स एव मण्डलतलं-बिम्बं यस्य स तथा, तुषारं-हिमं तत्प्रधानाः या उदकधारा-उदकबिन्दुप्रवाहास्ता एव पीवराः-

स्थूलाः कराः–किरणा यस्य स तथा, हेमन्तऋतुरेव शशी–चन्द्र इति विग्रहः स्वाधीनः ॥ २ ॥ तथैव 'वसंते गिम्हे य'त्ति– फाल्गुनचैत्रौ वैशाखज्येष्ठौ चेत्यर्थः, 'तत्थ उ' इत्यादि, गीतिकाद्वयं, तत्र च सहकाराणि–चूतपुष्पाणि तान्येव चारुहारो यस्य स तथा, किंशुकानि–पलाशस्य कुसुमानि कर्णिकाराणि–कर्णिकारस्य अशोकानि चाशोकस्य तान्येव मुकुटं–किरीटं यस्य स तथा,–उच्छ्रितं–उन्नतं तिलकबकुलानि–तिलकबकुलकुसुमानि तान्येवातपत्रं–छत्रं यस्य स तथा, वसन्तऋतुर्नरपतिः स्वाधीनः प्रतीतम् ॥ १ ॥ तत्र च पाटलाशिरीषाणि–पाटलाशिरीषकुसुमानि तान्येव सलिलं यत्र स तथा मल्लिका-विचकिलो वासन्तिका–लताविशेषः तत्कुसुमानि मल्लिकावासन्तिकानि तान्येव धवला–सिता वेला–जलवृद्धिर्यस्य स तथा, शीतलः सुरभिश्च योऽनिलो–वायुः स एव मकरचरितं यत्र स तथा, इह चानिलशब्दस्य अकारलोपः प्राकृतत्वात् 'अरण्णं रण्णं अलायं लाउय' मित्यादिवत्, ग्रीष्मऋतुसागरः स्वाधीन इति । 'उग्गविसे' इत्यादि उग्रं दुर्जरत्वाद्विषं यस्य स उग्रविषः, एवं सर्वत्र, नवरं चण्डं झगिति व्यापकत्वात्, पाठान्तरे तु–' भोगविसे' इति तत्र भोगः शरीरं स एव विषं यस्येति, घोरं परम्परया पुरुषसहस्रस्यापि घातकत्वात्, महत् जम्बूद्वीपप्रमाणशरीरस्यापि विषतयाऽऽभवनात्, कायान्–शरीराणि शेषाहीनामतिक्रान्तोऽतिकायः, अत एव महाकायः, 'जहा तेयनिसग्गे'त्ति–शेषविशेषणानि यथा गोशालकचरिते तथेहाध्येतव्यानीत्यर्थः, तानि चैतानि 'मसिमहिसमूसाकालगे' मषी च महिषश्च मूषा च–स्वर्णादितापन-भाजनविशेष इति द्वन्द्वः एता इव कालको यः स तथा, 'नयणविसरोसपुण्णे' नयनविषेण–दृष्टिविषेण रोषेण च पूर्ण इत्यर्थः, 'अंजणपुंजनिगरप्पगासे' कज्जलपुञ्जानां निकर इव प्रकाशते यः स तथा, 'रत्तच्छे जमलजुयलचंचलचलं-

तजीहे' यमलं-सहवर्त्ति युगलं-द्वयं चञ्चलं च यथा भवत्येवं चलन्त्योः-अतिचपलयोर्जिह्वयोर्यस्य स तथा, 'धरणितलवेणिभूए' धरणीतलस्य वेणीभूतो-वनिताशिरसः केशबन्धविशेष इव यः कृष्णत्वदीर्घत्वश्लक्ष्णत्वपश्चाद्भागत्वादिसाधर्म्यात् स तथा, 'उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्खडविगडफडाडोवकरणदच्छे' उत्कटो बलवताऽन्येनाध्वंसनीयत्वात् स्फुटो-व्यक्तः प्रयत्नविहितत्वात् कुटिलः-तत्स्वरूपत्वात् जटिलः-स्कन्धदेशे केसरिणामिवाहीनां केसरसद्भावात् कर्कशो-निष्ठुरो बलवत्त्वात् विकटश्च-विस्तीर्णो यः स्फटाटोपः-फणासंरम्भः तत्करणे दक्षो यः स तथा, 'लोहागरधम्ममाणधमधमेंतघोसे'-लोहाकरे ध्मायमानं-अग्निना ताप्यमानं लोहमिति गम्यते, तस्येव धमधमायमानो-धमधमेतिवर्णव्यक्तिमिवोत्पादयन् घोषः-शब्दो यस्य स तथा, 'अणागलियचंडतिव्वरोसे'-अनर्गलितः-अनिवारितोऽनाकलितो वा-अप्रमेयश्चण्डतीव्रः-अत्यर्थतीव्रो रोषो यस्य स तथेति, 'समुहिं तुरियं चवलं धमंतं'ति शुनो मुखं श्वमुखं तस्येवाचरणं श्वमुखि-कौलेयकस्येव भषणतां त्वरितचपलं-अतिचटुलतया धमन्-शब्दं कुर्वन्नित्यर्थः ।

तए णं ते मागंदियदारया तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडिंसए सइं वा, रतिं वा, धितिं वा, अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वदासी-एवं खलु देवा० !, रयणदीवदेवया अम्हे एवं वदासी-एवं खलु अहं सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया !, पुरच्छिमिल्लं वणसंडं गमित्तए, अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंतिर, जेणेव पुरच्छिमिल्ले, वणसंडे, तेणेव उवागच्छंतिर, तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति; तते णं ते माग-

दियदारया तत्थवि सइं वा जाव अलभमाणा, जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे, तेणेव उवा०२, तत्थ णं वावीसु य जाव जालीघरएसु य विहरंति; तते णं ते मागंदियदारया तत्थवि सतिं वा जाव अलभ० जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे, तेणेव उवा० २ जाव विहरंति; तते णं ते मागंदिय० तत्थवि सतिं वा जाव अलभ० अण्णमण्णं, एवं वदासी–एवं खलु देवा० !, अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया !, सक्कस्स वयणसंदेसेणं सुट्ठिएण लवणाहिवइणा जाव मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सति, तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति२, जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए; तते णं गंधे निद्धाति से जहा नामए अहिमडेति वा जाव अणिट्ठतराए चेव, तते णं ते मागंदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं२ उत्तरिज्जेहिं आसातिं पिहेंति२, जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया, तत्थ णं महं एगं आघातणं[1] पासंति२; अट्ठियरासिसतसंकुलं, भीमदरिसणिज्जं, एगं च तत्थ सूलाइतयं, पुरिसं, कलुणातिं विस्सरातिं कट्ठातिं कुव्वमाणं पासंति; भीता जाव संजातभया जेणेव से सूलातियपुरिसे तेणेव उवागच्छंति२, तं सूलाइयं एवं वदासी–एस णं दे० ! कस्साघयणे तुमं च णं के कओ वा, इहं हव्वमागए केण वा इमेयारूवं आवतिं पाविए !; तते णं से सूलातियए पुरिसे मागंदियदारए

१ आयतणं, अ ।

एवं वदासी–एस णं देवाणु० ! रयणदीवदेवयाए आघयणे अहण्णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ, भारहाओ वासाओ, कागंदीए आसवाणियए, विपुलं पणियमंडमायाए पोतवहणेणं लवणसमुद्दं ओयाए, तते णं अहं पोयवहणविवत्तीए निव्वुड्डभंडसारे एगं फलगखंडं आसाएमि; तते णं अहं उवुज्झमाणे२; रयणदीवंतेणं संवूढे, तते णं सा रयणदीवदेवया ममं ओहिणा पासइ२, ममं गेण्हइ २, मए सद्धिं विपुलातिं भोगभोगातिं भुंजमाणी विहरति; तते णं सा रयणदीवदेवया अण्णदा कयाई अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एतारूवं आवतिं पावेइ, तं ण णज्जति णं देवा० !, तुम्हंपि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवती भविस्सइ ?, तते णं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, णिसम्म, बलियतरं भीया जाव संजायभया सूलाइतयं पुरिसं एवं व०–कहण्णं देवाणु० !, अम्हे रतणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थरिज्जामो ?, तते णं से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदिय० एवं वदासी–एस णं देवाणु० !, पुरच्छिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खायतणे सेलए नामं आसरूवधारी जक्खे परिवसति, तए णं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमये महया २ सद्देणं एवं वदति–कं तारयामि ?, कं पालयामि ?; तं गच्छह, णं तुब्भे देवा० !, पुरच्छिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह२, जण्णुपायवडिया पंजलिउडा विणएणं पज्जुवासमाणा चिट्ठह, जाहे णं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदेज्जा–कं तारयामि ?, कं पाल-

यामि ?; ताहे तुब्भे वदह-अम्हे तारयाहि, अम्हे पालयाहि; सेलए भे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं णित्थारेज्जा, अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ?

॥ सूत्रम् ८९ ॥ तते णं ते मागंदिय० तस्स सूलाइयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म; सिग्घं, चंडं, चवलं, तुरियं, चेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे, जेणेव पोक्खरिणी, तेणेव उवा०, पोक्खरिणिं गाहंति२, जलमज्जणं करेन्ति२, जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति२, जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे, तेणेव उ०२, आलोए पणामं करेंति२, महरिहं पुप्फच्चणियं करेंति२, जण्णुपायवडिया, सुस्सूसमाणा, णमंसमाणा पज्जुवासंति; तते णं से सेलए जक्खे आगतसमए पत्तसमए एवं वदासी-कं तारयामि ?, कं पालयामि ?; तते णं ते मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति, करयल० एवं व०-अम्हे तारयाहि, अम्हे पालयाहि; तए णं से सेलए जक्खे ते मागंदिय०, एवं वया०-एवं खलु देवाणुप्पिया !, तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्देणं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणेणं सा रयणदीवदेवया पावा, चंडा, रुद्दा, खुद्दा, साहसिया बहूहिं खरएहि य, मउएहि य, अणुलोमेहि य, पडिलोमेहि य, सिंगारेहि य, कलुणेहि य, उवसग्गेहि य, उवसग्गं करेहिति; तं जति णं तुब्भे देवा० ! रयणदीवदेवयाए एतमट्ठं आढाह वा, परियाणह वा, अवयेक्खह वा, तो भे अहं पिट्ठातो विधुणामि, अह णं तुब्भे रयणदीवदेवयाए एतमट्ठं णो आढाह, णो परियाणह, णो अवेक्खह, तो भे रयणदीवदेवयाहत्थातो साहत्थिं णित्थारेमि; तए णं ते मागंदियदारया सेलगं जक्खं,

एवं वदासी-जण्णं देवाणु० ! वइस्संति तस्स णं उववायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामो, तते णं से सेलए जक्खे उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति२, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति२, संखेज्जातिं जोयणाइं दंडं निस्सरइ, दोच्चंपि तच्चंपि वेउव्वियसमु० २, एगं महं आसरूवं विउव्वइ२, ते मागंदियदारए एवं वदासी-हं भो मागंदिया !, आरुह णं देवाणुप्पिया !, मम पिट्ठंसि, तते णं ते मागंदिय०, हट्ठ०, सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति२, सेलगस्स पिट्ठिं दुरूढा; तते णं से सेलए ते मागंदिय०, दुरूढे जाणित्ता, सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्तातिं उड्ढं वेहासं उप्पयति, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए, तुरियाए, देवयाए, लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं, जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे, जेणेव चंपा नयरी, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सूत्रम् ९० ॥ तते णं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टति, जं तत्थ तणं वा जाव एडेति, जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छति२, ते मागंदिया पासायवडिंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेति२, तेसिं मागंदियदारगाणं कत्थइ सुतिं वा ३, अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले एवं चेव पच्चत्थिमिल्लेवि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजति; ते मागंदियदारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे२, पासति२, आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हति२, सत्तट्ठ जाव उप्पयति२, ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदिय० तेणेव उवा०२, एवं व०-हं भो मागं-

१ ०ति २ ता ते अ।

दिय० अप्पतिथयपतिथया किण्णं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं, वीतीवयमाणा ?; तं एवमवि गए जइ णं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं, अहण्णं णावयक्खह तो भे इमेणं नीलुप्पलगवल जाव एडेमि, तते णं ते मागंदियदारया रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सो०, णिस०; अभीया, अतत्था, अणुव्विग्गा, अक्खुभिया, असंभंता, रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढंति, नो परि०, णो अवयक्खंति; अणाढायमाणा अपरि०, अणवयक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयंति; तते णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिया जाहे नो संचाएति, बहूहिं पडिलोमेहि य, उवसग्गेहि य, चालित्तए वा, खोभित्तए वा, विपरिणामित्तए वा, लोभित्तए वा, ताहे महुरेहि सिंगारेहि य, कलुणेहि य, उवसग्गेहि य, उवसग्गेउं पयत्ता यावि होत्था; हं भो मागंदियदारगा !, जति णं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया !, मए सद्धिं हसियाणि य, रमियाणि य, ललियाणि य, कीलियाणि य, हिंडियाणि य, मोहियाणि य; ताहे णं तुब्भे सव्वातिं अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयह; तते णं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभोएति आभोएत्ता एवं वदासी–णिचंऽपिय णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा ५ निचं मम जिणपालिए अणिट्ठे ५ निचंपिय णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा ५ निचंपिय णं ममं जिणरक्खिए इट्ठे ५, जति णं ममं जिणपालिए रोयमाणीं, कंदमाणीं, सोयमाणीं, तिप्पमाणीं, विलवमाणीं, णावयक्खति

किण्णं तुमं जिणरक्खिया !, ममं रोयमाणिं जाव णावयक्खसि ?; तते णं—"सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खियस्स मणं । नाऊण वधनिमित्तं उवरि मागंदियदारगाणं दोण्हंपि ॥ १ ॥." दोसकलिया सललियं णाणाविहचुण्णवासमीसं (सियं) दिव्वं । घाणमणनिव्वुइकरं सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणी ॥ २ ॥ णाणामणिकणगरयणघंटियखिंखिणिणेउरमेहलभूसणरवेणं । दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं वेति सा सकलुसा ॥ ३ ॥ होल वसुल गोल णाह दइत पिय रमण कंत सामिय णिग्घिण णित्थक्क । छिण्ण णिक्किव अकयण्णुय सिढिलभाव निल्लज्ज लुक्ख अकलुण जिणरक्खिय मज्झं हिययरक्खगा ! ॥ ४ ॥ णहु जुज्जसि एक्कियं अणाहं अबंधवं तुज्झ चलणओवायकारियं उज्झिउं महण्णं ! गुणसंकर ! अहं तुमे विहूणा ण समत्थावि जीविउं खणंपि ॥ ५ ॥ इमस्स उ अणेगझसमगरविविधसावयसयाउलघरस्स । रयणागरस्स मज्झे अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओ एहि णियत्ताहि जइसि कुविओ खमाहि एक्कावराहं मे ॥ ६ ॥ तुज्झ य विगयघणविमलससिमंडलगारसस्सिरीयं सारयनवकमलकुमुदकुवलयविमलदलनिकरसरिसनिभं । नयणं वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे अवलोएहि ता इओ ममं णाह जा ते पेच्छामि वयणकमलं ॥ ७ ॥ एवं सप्पणयसरलमहुराइं पुणो २ कलुणाइं वयणाति जंपमाणी सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥ ८ ॥" तते णं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणोहरेणं तेहि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं संजायविउणराए रयणदी-

वस्स देवयाए तीसे सुंदरथणजहणवयणकरचरणनयणलावन्नरूवजोव्वणसिरिं च दिव्वं सरभसउवगूहियाइं जाति विब्बोयविलसियाणि य विहसियसकडक्खदिट्ठिनिस्ससियमलियउवललियठियगमणपणयखिज्जियपासादियाणि य सरमाणे रागमोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खति मग्गतो सविलियं, तते णं जिणरक्खियं समुप्पन्नकलुणभावं मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं अवयक्खंतं तहेव जक्खे य सेलए जाणिऊण सणियं२ उव्विहति नियगपिट्ठाहि विगयसत्थं, तते णं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि उवयंतं दास ! मओसित्ति जंपमाणी अप्पत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बाहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहति, अंबरतले ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पलगवलअयसिप्पगासेण असिवरेणं खंडाखंडिं करेति २ तत्थ विलवमाणं तस्स य सरसवहियस्स घेत्तूण अंगमंगातिं सरुहिराइं उक्खित्तबलिं चउद्दिसिं करेति सा पंजली पहिट्ठा ॥ सूत्रम् ९१ ॥ एवामेव समणाउसो !, जो अम्हं निग्गंथाण वा २, अंतिए पव्वतिए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायति, पत्थयति, पीहेति, अभिलसति; से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४, जाव संसारं अणुपरियट्टिस्सति; जहा वा से जिणरक्खिए–" छलओ अवयक्खंतो निरावयक्खो गओ अविग्घेणं । तम्हा पवयणसारे निरावयक्खेण भवियव्वं ॥ १ ॥ भोगे अवयक्खंता पडंति संसारसायरे घोरे । भोगेहिं निरवयक्खा तरंति संसारकंतारं ॥ २ ॥ (सूत्रम् ९२) तते णं सा रयणद्दीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवा० बहूहिं अणुलो·

मेहि य, पडिलोमेहि य, खरमहुरसिंगारेहिं कलुणेहि य, उवसग्गेहि य, जाहे नो संचाएइ, चालित्तए वा, खोभि०, विप्प०, ताहे संता, तंता, परितंता, निव्विण्णा, समाणा जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसं पडिगया, तते णं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुदं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति२, जेणेव चंपानगरी, तेणेव उवागच्छति २, चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पट्ठातो ओयारेति२, एवं व०-एस णं देवा० !, चंपानयरी दीसति त्तिकट्टु जिणपालियं आपुच्छति २, जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए ॥ सूत्रम् ९३ ॥ तते णं जिणपालिए चंपं अणुपविसति २, जेणेव सए गिहे, जेणेव अम्मापियरो, तेणेव उवागच्छइ२, अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्तिं निवेदेति, तते णं जिणपालिए अम्मापियरो मित्तणाति जाव परियणेणं सद्धिं रोयमाणाति बहूइं लोइयाइं मयकिचाइं करेति२, कालेणं विगतसोया जाया; तते णं जिणपालियं अन्नया कयाइ सुहासणवरगतं अम्मापियरो एवं वयासी-कहण्णं पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ?, तते णं से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवायसमुत्थणं पोतवहणविवत्तिं च फलहखंडआसातणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवयागिहं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवया अप्पाहणं च सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवयाउवसग्गं च जिणरक्खियविवत्तिं च लवणसमुद्दउत्तरणं च चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेति, तते णं जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विपुलाति

भोगभोगाइं भुजमाणे विहरति ॥ सूत्रम् ९४ ॥ तेणं कालेणं २, समणे०, समोसढे, धम्मं सोचा, पव्व-
तिए, एक्कारसंगवी, मासिएणं, सोहम्मे कप्पे, दो सागरोवमे: महाविदेहे सिज्झिहिति । एवामेव समणा-
उसो !, जाव माणुस्सए कामभोए णो पुणरवि आसाति, से णं जाव वीतिवतिस्सति, जहा वा से जिण-
पालिए । एवं खलु जंबू !, समणेणं भगवया नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्
॥ ९५ ॥ नवमं अज्झयणं समत्तं ॥ 'सइं व'त्ति–सुखलक्षणफलबहुलतां स्मृतिं वा स्मरणं अतिव्याकुलचित्ततया न
लभते स्म, रतिं–चित्तरमणं, 'धिइं व'त्ति–धृतिं चित्तस्वास्थ्यमिति, 'आसयाइं'ति–आस्ये–मुखे, 'पिहिंति'त्ति–पिधन्तः–
स्थगयन्तः, 'आघयणं'ति–वधस्थानं, 'सूलाइयगं'ति–शूलिकाभिन्नं, 'कलुणाइं'ति–करुणाजनकत्वात्, 'कट्ठाइं'ति–
कष्टं–दुःखं तत्प्रभवत्वात्, 'विस्सराइं'ति–विरूपशब्दस्वरूपत्वात् वचनानीति गम्यते, 'कूजन्तं'–अव्यक्तं शब्दायमानं,
'कागंदीए'त्ति–काकन्दीनगरी तद्गतः, 'ओयाए'त्ति–उपायातः–उपागतः, 'अहालहुस्सगंसि'त्ति–यथाप्रकारे लघु-
स्वरूपे 'उद्दिट्ठ'त्ति–अमावास्या, 'आगयसमए'त्ति आसन्नीभूतोऽवसरो–यस्य स इत्यर्थः, प्राप्तस्तु साक्षादेव, 'हत्थाओ'त्ति–
हस्ताद् ग्रहणप्रवृत्तात्, 'साहत्थि'त्ति–स्वहस्तेन, 'सिंगारेहिं'त्ति–शृङ्गाररसोपेतैः कामोत्कोचकैः करुणैस्तथैव, उपसर्गैः–
उपद्रवैर्वञ्चनचेष्टाविशेषरूपैः, 'अवयक्खह'–अपेक्षध्वं, 'मए सद्धिं हसियाणि' इत्यादि: इह क्तप्रत्ययो भावे तस्य
चोपाधिभेदेन भेदस्य विवक्षणाद् बहुवचनं, अन्यथा युष्माभ्या मया सार्द्धं हसितं चेत्यादि वाच्यं स्यात्, तथा रतानि च
अक्षादिभिः ललितानि च ईप्सितानि लीला वा, 'कीलियाणि य'त्ति–जलान्दोलनकक्रीडादिभिः हिण्डितानि च वनादिषु

निहृतानि मोहितानि च-निधुवनानि, एतच्च वाक्यं काकाऽध्येयं, तत उपालम्भः प्रतीयते; 'तए णं सा रयणदीवे'त्यादि सूत्रं वाचनान्तरे-रूपकविशेषद्वयभ्रान्तिं करोति, तथाहि-'सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिणरक्खिअस्स नाऊण वहनिमित्तं उवरिं माइंदिदारगाण दोण्हंपि' इत्येकं, 'दोसकलिया सलीलयं नाणाविहचुण्णवास-मीसियं दिव्वं घाणमणनिव्वुइकरं सव्वोउयसुरहिकुसुमवुट्ठिकरं पमुंचमाणी' इति द्वितीयं; एवमन्यान्यपि परिभावनीयानि पद्यानि, पद्यबन्धं हि विना तुकारादिनिपातानां पादपूरणार्थानां निर्देशो न घटते, अपरिमितानि च छन्दः-शास्त्राणीति, अर्थस्त्वेवम्-सा देवता जिनरक्षितस्य ज्ञात्वा भावमिति शेषो वधनिमित्तं तस्यैव, वचनमिदं ब्रवीति स्मेति सम्बन्धः; 'दोसकलिय'त्ति-द्वेषयुक्ता 'सलीलयं'ति-सलीलं यथा भवतीत्यर्थः, 'चुण्णवास'त्ति-चूर्णलक्षणा वासाः चूर्ण-वासाः तैर्मिश्रा या सा तथा तां दिव्यां घ्राणमनोनिर्वृत्तिकरीं सर्वर्तुकानां सुरभीणां च कुसुमानां या वृष्टिः सा तथा तां प्रमु-ञ्चन्ती । तथा नानामणिकनकरत्नानां सम्बन्धीनि घण्टिकाश्च किङ्किण्यश्च-क्षुद्रघण्टिका नुपूरौ च प्रतीतौ मेखला च-रसना एतल्लक्षणानि यानि भूषणानि तेषां यो रवस्तेन इति रूपकार्धं, 'दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेइ य'त्ति दिशो विदिशश्च पूरयन्ती वचनमिदं वक्ष्यमाणं ब्रवीति सा देवता, 'सकलुस'त्ति-सह कलुषेण पापेन वर्त्तते या सा तथेति तृतीयं । हे हो (हा)ल हे वसुल हे गोल एतानि च पदानि नानादेशापेक्षया पुरुषाद्यामन्त्रणवचनानि गौरवकुत्सादिगर्भाणि वर्त्तन्ते, हो (हा)ल इति दशवैकालिके होल इति दृश्यते, तथा नाथ !-योगक्षेमकरिन् !, दयित !-वल्लभ !, रक्षित ! इति वा; प्रिय !-प्रेमकर्त्तः !, रमण-भर्त्तः !, कान्त !-कमनीय ! स्वामिक !-अधिपते !, निर्घृण !-निर्दय !, सस्नेहाया वियोग-

दुःस्थाया मम परित्यागात्, 'नित्थक्क'त्ति–अनवसरज्ञ अनुरक्ताया ममाकाण्डे एव त्यागादित्यर्द्धं, 'ञिण्ण 'त्ति–स्त्यान !, कठिन मदीयात्यन्तानुकूलचरितादद्रवीकृतहृदयत्वात् निष्कृप !, मम दुःखिताया अप्रतीकारात्, अकृतज्ञ !, मदीयोपकारस्यानपेक्षणात् शिथिलभाव !, अकस्माद् मम मोचनात् निर्लज्ज ! प्रतिपन्नत्यागात्; रुक्ष !, स्नेहकार्याकरणात्; अकरुण !, हे जिनरक्षित मम हृदयरक्षक !–वियोगदुःखेन शतधास्फुटतो हृदयस्य त्रायक पुनर्मम स्वीकरणत इत्यर्थः इति चतुर्थं, 'नहु'–नैव युज्यसे–अर्हसि एककामनाथामबान्धवा तव चलनोपपातकारिका–पादसेवाविधायिनीमुज्झितुमधन्यामिति, इह च समानार्थानेकशब्दोपादानेऽपि न पुनरुक्तदोषः सम्भ्रमाभिहितत्वात्, यदाह–"वक्ता हर्षभयादिभिराक्षिप्तमनाः स्तुवंस्तथा निन्दन्। यत्पदमसकृद् ब्रूयात् तत्पुनरुक्त न दोषाय ॥ १ ॥" इति अर्धं, हे गुणसंकर !–गुणसमुदायरूप !, हं इति अकारलोपदर्शनादहमिति त्वया विहीना न समर्था जीवितुं क्षणमपीति पञ्चमं। तथा 'इमस्स उ'त्ति–अस्य पुनः अनेके ये झषा–मत्स्या, मकराश्च ग्राहाः, विविधश्वापदाश्च–जलचरक्षुद्रसत्त्वरूपास्तेषां यानि शतानि तेषामाकुलगृह आकीर्णगेहं झषादीनां वा सदा–नित्यं कुलगृहमिव कुलगृह यः स तथा तस्येत्यर्द्धं, रत्नाकरस्य–समुद्रस्य मध्ये आत्मानं, 'वहेमि'त्ति–हन्मि तव–भवतः पुरतः–अग्रतः तथा एहि निवर्त्तस्व, 'जइसि'त्ति–यदि भवसि कुपितः क्षमस्वैकापराधं त्वं मे इति षष्ठं। 'तुज्झ य'त्ति–तव च विगतघन विमल च यच्छशिमण्डलं तस्येवाकारो यस्य श्रिया च सह यद्वर्त्तते तत्तथा, पाठान्तरेण–विगतघनविमलशशिमण्डलेनोपमा यस्य सश्रीकं च यत्तत्तथा; शारदं–शरत्कालसम्भवं यन्नव–प्रत्यग्रं कमलं च–सूर्यबोध्यं कुमुदं च–चन्द्रबोध्यं कुवलयं च–नीलोत्पलं तेषां यो दलनिकरः–दलवृन्दं तत्सदृशे नितरा भात इति–निभे च नयने यत्र तत्तथा, पाठान्तरेण–शारदनव-

कमलकुमुदे च ते विमुकुले च ते विकसिते शेषं तथैव, वदनं-मुखं प्रतीति वाक्यशेषः, पिपासागतायाः-मुखदर्शनजलपानेच्छया आयातायाः तां वा गतायाः-प्राप्तायाः कस्याः ?-मे-मम श्रद्धा-अभिलाषः किं कर्तुं ?-प्रेक्षितुं-अवलोकयितुं जे इति पादपूरणे निपातः, अवलोकय वा इति-ततस्तावदिति वा इतः-अस्यां दिशि मां नाथ जा इति-येन यावदिति वा ते-तव प्रेक्षे वदनकमलमिति रूपकं ॥ ७ ॥ एवं सप्रणयानि-सस्नेहानीव सरलानि-सुखावगम्याभिधेयानि मधुराणि च-मायया कोमलानि यानि तानि तथा; तथा करुणानि-करुणोत्पादकत्वात् वचनानि जल्पन्ती या पापा क्रियया मार्गतः-पृष्ठतः, समन्वेति-समनुगच्छति पापहृदयेति ॥ ८ ॥ ततोऽसौ जिनरक्षितश्चलमनाः-अभ्युपगमाच्चलितचेताः 'अवयक्खइ'त्ति-सम्बन्धः, किंभूतः ?-सञ्जातद्विगुणरागः पूर्वकालापेक्षया, कस्यां ?-रत्नद्वीपदेवतायां, केन कैश्चेत्याह-तेन च-पूर्वोक्तेन भूषणरवेण कर्णसुखो मनोहरश्च यस्तेन तैश्च पूर्ववर्णितैः सप्रणयसरलमधुरभणितैः, तथा तस्या देवतायाः सुन्दरं यत्स्तनजघनवदनकरचरणनयनानां लावण्यं-स्पृहणीयत्वं तच्च रूपं च-शरीरसुन्दरत्वं च यौवनं च-तारुण्यं तेषां या श्रीः-सम्पत् सा तथा तां च दिव्यां-देवसम्बन्धिनीं स्मरन्निति सम्बन्धः, तथा सरभसानि-सहर्षाणि यान्युपगूहितानि-आलिङ्गितानि तानि तथा 'विब्बोयका:' स्त्रीचेष्टाविशेषाः, विलसितानि च-नेत्रविकारलक्षणानि च-तानि तथा, विहसितानि च-अर्द्धहसितादीनि, सकटाक्षाः-साभाइदर्शनाः, दृष्टयो-विलोकितानि निःश्वसितानि च-कामक्रीडायाः समुद्भवानि मलितानि च-पुरुषाभिलषणीययोपिदङ्गमर्दनानि च पाठान्तरेण-भणितानि च-रतकूजितानि उपललितानि च-क्रीडितविशेषरूपाणि, पाठान्तरेण-ललितानि-ईप्सितानि क्रीडितानि वा स्थितानि च-स्वभवनेषु उत्सङ्गासनादिषु वा अवस्थानानि गमनानि च-हंसगत्या चङ्क्रमणानि प्रण-

यवेदितानि च-प्रणयरोपणानि प्रसादितानि च-कोपप्रसादनानीति द्वन्द्वस्तानि च स्मरन्-चिन्तयन् रागमोहितमतिः अवश आत्मन इति गम्यते, कर्म्मवसं-कर्मणः पारतन्त्र्यं गतो यः स तथा, पाठान्तरे-कर्म्मवशात् वेगेन मोहस्य नडितो-विडम्बितो यः स कर्म्मवशवेगनडितः, 'अवइक्खइ'त्ति-अवेक्षते-निरीक्षते स्म मार्गतः-पृष्ठतोऽवलोकयति तामागच्छन्तीमित्यर्थः, 'सविलियं'ति-सव्रीडं, सलज्जमित्यर्थः। 'मच्चुगलत्थल्लणोल्लियमइं'ति-मृत्युना-यमराक्षसेन 'गलत्थल्ला' हस्तेन गलग्रहणरूपा तया नोदिता-स्वदेशगमनवैमुख्येन यमपुरीगमनाभिमुखीकृता मतिर्यस्य स तथा, तं अवेक्खमाणं तथैव यक्षस्तु शैलको ज्ञात्वा शनैः२ 'उव्विहइ'त्ति-उद्विजहाति-ऊर्द्ध्वं क्षिपति, 'तहेव सणियं'-इत्येतत् पदद्वयं वाचनान्तरे-नोपलभ्यते निजपृष्ठात् शरीरावयवविशेषात्, 'विगयसत्थं'ति-विगतस्वास्थ्यं पाठान्तरे-विगतश्रद्धो यक्षः शैलक इति, 'ओवयंतं'ति-अवपतन्तं, 'सरसवहियस्स'त्ति-सरसं-अभिमानरसोपेतं वधितो-हतो यः स तथा तस्य, अंगमंगाइं'ति-शरीरावयवान्, 'उक्खित्तबलिं'ति-उत्क्षिप्तः-ऊर्द्ध्वं आकाशे क्षिप्तो न भूमिपट्टादिषु निवेशितो यो बलिः-देवतानामुपहारः स तथा तं चतुर्दिशं करोति, सा देवता 'पंजलि'त्ति-प्रकृताञ्जलिः प्रहृष्टोपवती, 'एवमेवे'त्यादि, निगमनं; 'आसाय'त्ति-प्राप्ताआश्रयति भजते-अप्राप्तान् प्रार्थयते, ऋद्धिमन्तं याचते, स्पृहयति-अप्रार्थित एव यद्ययं श्रीमान् भोगान् मे ददाति तदा साधु भवति इत्येवंरूपां स्पृहां करोति, अभिलषति-दृष्टादृष्टेषु शब्दादिषु भोगेच्छां करोतीत्यर्थः, अत्रार्थे-'छलिउं' गाहा-छलितो-व्यंसितोऽनर्थं प्राप्तः 'अवयक्खन्'-पश्चाद्भागमवलोकयन् जिनरक्षित इति प्रस्तुतमेव 'निरवयक्खो'-निरवकाङ्क्षः पश्चाद्भागमनवेक्षमाणस्तन्निःस्पृह इत्यर्थो गतः-स्वस्थानं प्राप्तोऽविघ्नेन-अन्तरायाभावेन जिनपालित इति वक्ष्यमाणं; एष दृष्टान्ता-

नुवादो, दार्ष्टान्तिकस्त्वेवं—यस्मादेवं तस्मात् 'प्रवचनसारे'—चारित्रे लब्धे सतीति गम्यते, 'निरवकाङ्क्षेण'—परित्यक्तभोगान् प्रति निरपेक्षेण—अनभिलाषवता भवितव्यमिति, 'भोगे' गाहा चारित्रं प्रतिपद्यापि भोगानवकाङ्क्षन्तः पतन्ति संसारसागरे घोरे जिनरक्षितवत्, इतरे तु तरन्ति जिनपालितवत् समुद्रमिति ॥ २ ॥ शेषं सूत्रसिद्धं ॥ इह निक्षेपोपनयमेवं वर्णयन्ति व्याख्यातारः—"जह रयणदीवदेवी तह एत्थं अविरई महापावा। जह लाहत्थी वणिया तह सुहकामा इहं जीवा ॥ १ ॥ जह तेहिं भीएहिं दिट्ठो आघायमंडले पुरिसो। संसारदुक्खभीया पासंति तहेव धम्मकहं ॥ २ ॥ जह तेण तेसि कहिया देवी दुक्खाण कारणं घोरं। तत्तो च्चिय नित्थारो सेलगजक्खाओ नन्नत्तो ॥ ३ ॥ तह धम्मकही भव्वाण साहए दिट्ठअविरइसहावो। सयलदुहहेउभूओ विसया विरयंति जीवाणं ॥ ४ ॥ सत्ताणं दुहत्ताणं सरणं चरणं जिणिंदपन्नत्तं। आणंदरूवनिव्वाणसाहणं तहय देसेइ ॥ ५ ॥ जह तेसिं तरियव्वो रुद्दसमुद्दो तहेव संसारो। जह तेसि सगिहगमणं निव्वाणगमो तहा एत्थं ॥ ६ ॥ जह सेलगपिट्ठाओ भट्ठो देवीइ मोहियमईओ। सावयसहस्सपउरंमि सायरे पाविओ निहणं ॥ ७ ॥ तह अविरईइ नडिओ

सा० १ यथा रत्नद्वीपदेवी तथात्राविरतिर्महापापा। यथा लाभार्थिनौ वणिजौ तथा सुखकामा इह जीवा ॥ १ ॥ यथा ताभ्यां भीताभ्यां दृष्ट आघातमण्डले पुरुषः। संसारदुःखभीताः पश्यन्ति तथैव धर्मकथकं ॥ २ ॥ यथा तेन ताभ्यां कथिता दुःखानां घोरं कारणं देवी। तत एव शैलकयक्षात् निस्तारो नान्यस्मात् ॥ ३ ॥ तथा धर्मकथको भव्येभ्यः कथयेत् दृष्टमविरतिस्वभावम्। सकलदुःखहेतुभूतं विषयेभ्यो विरमयन्ति जीवान् ॥ ४ ॥ सत्त्वानां दुःखार्त्तानां शरणं चरणं जिनेन्द्रप्रज्ञप्तं। आनन्दरूपनिर्वाणसाधनं तथैव दर्शयति ॥ ५ ॥ यथा ताभ्यां तरणीयो रुद्रः समुद्रस्तथैव संसारः। यथा तयोः स्वगृहगमनं निर्वाणगमनं तथाऽत्र ॥ ६ ॥ यथा शैलकपृष्ठात् भ्रष्टो देवीमोहितमतिकः। श्वापदसहस्रप्रचुरे सागरे प्राप्तो निधनम् ॥ ७ ॥

चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णे । निवडइ अपारसमारसायरे दारुणसरूवे ॥ ८ ॥ जह देवीए अक्खोहो पत्तो सट्ठाण जीविय-
सुहाइ । तह चरणट्ठिओ साहू अक्खोहो जाइ निव्वाणं ॥ ९ ॥ समाप्तमिदं नवमज्ञाताध्ययनविवरणम् ॥

॥ १०–श्रीचन्द्राख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ दशमं विव्रियते, अस्य चायं पूर्वेण सह सम्बन्धः–अनन्तराध्ययनेऽविरतिविशवर्त्त्यवशवर्त्तिनोरनर्थेतरावुक्तौ, इह तु गुणहानिवृद्धिलक्षणावनर्थार्थौ प्रमाद्यप्रमादिनोरभिधीयेते इत्येवं सम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते !, समणेणं० णवमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स के अट्ठे० ?; एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं २, रायगिहे नगरे सामी समोसढे, गोयमसामी एवं वदासी–कहण्णं भंते !, जीवा वड्ढंति वा हायन्ति वा ?, गो० !, से जहा नामए बहुलपक्खस्स पाडिवयाचंदे पुण्णिमाचंदं पणिहाय हीणे; वण्णेणं हीणे, सोम्मयाए हीणे, निद्धयाए हीणे, कंतीए; एवं दित्तीए, जुत्तीए, छायाए, पभाए, ओयाए, लेस्साए, मंडलेणं; तयाणंतर च णं बीयाचंदे पाडिवयं चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, तयाणंतरं च

सा० १ तथाऽविरत्या नर्दितश्चरणच्युतो दुःखश्वापदाकीर्णे । निपतत्यपारससारसागरे दारुणस्वरूपे ॥ ८ ॥ यथा देव्याऽक्षोभ प्राप्त स्वस्थान जीवितसुखानि च । तथा चरणस्थित साधुरक्षोभो याति निर्वाणम् ॥ ९ ॥

णं ततिआचंदे बितियाचंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मंडलेणं, एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे २, जाव अमावस्साचंदे चाउद्दसिचंदं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं; एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा, निग्गंथी [redacted] जाव पव्वइए समाणे हीणे खंतीए, एवं मुत्तीए, गुत्तीए, अज्जवेणं, मद्दवेणं, लाघवेणं, सच्चेणं, तवेणं, चियाए, अकिंचणयाए, बंभचेरवासेणं, तयाणंतरं च णं हीणे हीणतराए, खंती जाव हीणतराए बंभचेरवासेणं; एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे २, णट्ठे खंतीए जाव णट्ठे बंभचेरवासेणं, से जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचंदे अमावासाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं जाव अहिए मंडलेणं, तयाणंतरं च णं बिइयाचंदे पडिवयाचंदं पणिहाय अहियतराए वण्णेणं जाव अहियतराए मंडलेणं; एवं खलु एएणं कमेणं परिवुड्ढेमाणे २, जाव पुण्णिमाचंदे चाउद्दसिं चंदं पणिहाय पडिपुण्णं वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं; एवामेव समणाउसो !, जाव पव्वतिए समाणे अहिए, खंतीए, जाव बंभचेरवासेणं, तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे २, जाव पडिपुन्ने बंभचेरवासेणं; एवं खलु जीवा वड्ढंति वा, हायंति [redacted] एवं खलु जंबू !, समणेणं भगवता महावीरेणं दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि ॥ सूत्रम्-९६ ॥ दसमं णायज्झयणं समत्तं ॥१०॥

सर्वं सुगमम्, नवरं जीवानां द्रव्यतोऽनन्तत्वेन प्रदेशतश्च प्रत्येकमसङ्ख्यातप्रदेशत्वेनावस्थितपरिमाणत्वात् वर्द्धन्ते गुणैः हीयन्ते च तैरेव । अनन्तरनिर्देशत्वेन हानिमेव तावदाह-'से जहे'त्यादि, 'पणिहाए'त्ति-प्रणिधायापेक्ष्य, 'वर्णेन'-

शुक्लतालक्षणेन, 'सौम्यतया'–सुखदर्शनीयतया, 'स्निग्धतया'–अरूक्षतया, 'कान्त्या'–कमनीयतया, 'दीप्त्या'–दीपनेन, वस्तुप्रकाशनेनेत्यर्थः; 'जुत्तीय'त्ति–युक्त्या आकाशसंयोगेन, खण्डेन हि मण्डलेनाल्पतरमाकाशं युज्यते न पुनर्यावत्स-म्पूर्णेन, 'छायया'–जलादौ प्रतिबिम्बलक्षणया शोभया वा, 'प्रभया'–उद्गमनसमये यद् द्युतिस्फुरणं तया, 'ओयाए'त्ति–ओजसा दाहापनयनादिस्वकार्यकरणशक्त्या, 'लेश्यया'–किरणरूपतया, 'मण्डलेन'–वृत्ततया; क्षान्त्यादिगुणहानिश्च कुशील-संसर्गात्, सद्गुरूणामपर्युपासनात्, प्रतिदिनं प्रमादपदासेवनात्, तथाविधचारित्रावरणकर्मोदयाच्च भवतीति; गुणवृद्धिस्त्वेतद्वि-पर्ययादिति, एवं च हीयमानानां जीवानां न वाञ्छितस्य निर्वाणसुखस्यावाप्तिरित्येनर्थः; आह च–"चंदोव्व कालपक्खे परिहाई पए पए पमायपरो। तह उग्घरविग्घरनिरंगणोवि न य इच्छियं लहइ ॥ १ ॥" त्ति गुणैर्वर्द्धमानानां तु वाञ्छिता-र्थावाप्तेरर्थ इति, विशेषयोजना पुनरेवम्–" जह चंदो तह साहू राहुवरोहो जहा [illegible] पमाओ। वण्णाई गुणगणो जह तहा खमाई समणधम्मो ॥ २ ॥ पुण्णोवि पइदिणं जह हायंतो सव्वहा ससी नस्से। तह पुण्णचरित्तोऽविहु कुसीलसंसग्गिमाईहिं ॥ ३ ॥ जँणियपमाओ साहू हायंतो पइदिणं खमाईहिं। जायइ नट्ठचरित्तो तत्तो दुक्खाइं पावेइ ॥ ४ ॥ तथा–'हीणगुणो-

---

त्यर्थः अ। सा० १ चन्द्र इव कृष्णपक्षे परिहीयते पदे पदे प्रमादपरः। तथा उद्ग्रहविग्रहनिरञ्जनोऽपि द्रव्यतो नेप्सितं लभते ॥ १॥ यथा चन्द्रस्तथा साधुः राहूपरोधो यथा तथा प्रमादः। वर्णादिर्गुणगणो यथा तथा क्षमादिः श्रमणधर्मः॥ २ ॥ पूर्णोऽपि प्रतिदिनं यथा हीयमानः सर्वथा नश्यति शशी। तथा पूर्णचारित्रोऽपि कुशीलसंसर्गादिभिः ॥ ३ ॥ जातप्रमादः साधुः प्रतिदिनं हीयमानः क्षमादिभिः। जायते नष्टचारित्रः ततो दुःखानि प्राप्नोति ॥ ४ ॥

विडुं होउं सुहगुरुजोगाइजणियसंवेगो । पुण्णसरूवो जायइ विवड्ढमाणो ससहरोव ॥ ५ ॥ समाप्तमिदं दशमश्रीचन्द्राख्यज्ञाता- ध्ययनं विवरणम् ॥ ५ ॥

॥ ११-श्रीदावद्रवाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अथैकादशमं विव्रियते-अस्य पूर्वेण सहायं सम्बन्धः-पूर्वत्र च प्रमादाप्रमादिनोर्गुणहानिवृद्धिलक्षणावनर्थार्थावुक्तौ, इह तु मार्गाराधनविराधनाभ्यां तावुच्येते इतिसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते !, दसमस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे एक्कारसमस्स के अट्ठे० ?, एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं २, रायगिहे गोयमे एवं वदासी-कह णं भंते !, जीवा आराहगा वा, विराहगा वा भवंति ?; गो० !, से जहा णामए एगंसि समुद्दकूलंसि दावद्दवा नामं रुक्खा पण्णत्ता, किण्हा जाव निउरंबभूया पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अतीव उवसोभेमाणा २, चिट्ठंति; जया णं दीविचगा ईसिं पुरेवाया, पच्छावाया, महावाया, मंदावाया वायंति, तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया

सा० १ हीनगुणोऽपि भूत्वा शुभगुरुयोगादिजनितसंवेग । पूर्णस्वरूपो जायते विवर्धमान- शशधर इव ॥ ५ ॥

जाव चिट्ठंति, अप्पेगतिया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडियपंडुपत्तपुप्फफला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा २, चिट्ठंति; एवामेव समणाउसो !, जे अम्हं निग्गंथो वा, निग्गंथी वा जाव पव्वतिते समाणे बहूणं समणाणं ४, सम्मं सहति जाव अहियासेति; बहूणं अण्णउत्थियाणं, बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहति, जाव नो अहियासेति एस णं मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते समणाउसो !। जया णं सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया, मंदावाया महावाता वायंति, तदा णं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा २, चिट्ठंति, अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा २, चिट्ठंति; एवामेव समणाउसो !, जो अम्हं निग्गंथो वा, निग्गंथी वा पव्वतिए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहति, बहूणं समणाणं ४, नो सम्मं सहति; एस णं मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते समणाउसो !। जया णं नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया तते णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा० एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वतिए समाणे बहूणं समणाणं २ बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं नो सम्मं सहति, एस णं मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते समणाउसो !, जया णं दीविच्चगावि सामुद्दगावि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति तदा णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति; एवामेव समणाउसो !, जे अम्हं पव्वतिए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं अन्नउत्थियगिहत्थाणं सम्मं सहति, एस णं मए पुरिसे सव्वाराहए पं० !, एवं खलु गो० !, जीवा आराहगा ।

वा विराहगा वा भवंति; एवं खलु जंबू !, समणेणं भगवया एक्कारसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्–९७ ॥ एक्कारसमं नायज्झयणं समत्तं ॥

सर्वं सुगमं, नवरं आराधका ज्ञानादिमोक्षमार्गस्य विराधका अपि तस्यैव 'जया ण'मित्यादि; 'दीविच्चगा'–द्वैप्या द्वीपसम्भवा ईषत् पुरोवाताः–मनाक्–सस्नेहवाता इत्यर्थः, पूर्वदिक्सम्बन्धिनो वा, पथ्या वाता–वनस्पतीनां सामान्येन हिता वायवः पश्चाद्वाता वा मन्दाः–शनैः सञ्चारिणः महावाताः–उद्दंडवाता वान्ति, तदा 'अप्पेगइय'त्ति–अप्येके केचनापि स्तोका इत्यर्थः, 'जुण्ण'त्ति–जीर्णा इव जीर्णाः, झोडः–पत्रादिशाटनं, तद्योगात्तेऽपि झोडाः, अत एव परिशटितानि कानिचिच्च पाण्डूनि पत्राणि पुष्पफलानि च येषां ते तथा शुष्कवृक्षक इव म्लायन्तस्तिष्ठन्ति इत्येष दृष्टान्तो, योजना त्वस्यैवं 'एवामेवे'त्यादि, 'अण्णउत्थियाणं'ति–अन्ययूथिकानां–तीर्थान्तरीयाणां, कापिलादीनामित्यर्थः; दुर्वचनादीनुपसर्गान् नो सम्यक् सहते इति, 'एस णं'ति–य एवंभूतः एष पुरुषो देशविराधको ज्ञानादिमोक्षमार्गस्य, इयमत्र विकल्पचतुष्टयेऽपि भावना–यथा दावद्रव्यवृक्षसमूहः स्वभावतो द्वीपवायुभिः बहुतरदेशैः स्वसम्पदः समृद्धिमनुभवति देशेन चासमृद्धिं १, समुद्रवायुभिश्च देशैरसमृद्धिं देशेन च समृद्धिम् २, उभयेषां च वायूनामभावे समृद्ध्यभावम् ३, उभयसद्भावे च सर्वतः समृद्धिम् ४; एवं क्रमेण साधुः कुतीर्थिकगृहस्थानां दुर्वचनादीन्यसहमानः क्षान्तिप्रधानस्य ज्ञानादिमोक्षमार्गस्य देशतो विराधनां करोति, श्रमणादीनां बहुमानविषयाणां दुर्वचनादिक्षमणेन बहुतरदेशानामाराधनात् १, श्रमणादिदुर्वचनानां त्वसहने कुती-

१ ° या महावीरेण अ। २ शनैःस० अ।

॥ १२-श्रीउदकाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अधुना द्वादशं विव्रियते, अस्य चैवं सम्बन्धः-अनन्तरज्ञाते चारित्रधर्म्मस्य विराधकत्वमाराधकत्वं चोक्तमिह तु चारित्राराधकत्वं प्रकृतिमलीमसानामपि भव्यानां सद्गुरुपरिकर्म्मणातो भवतीत्युदकोदाहरणेनाभिधीयते,इत्येवं सम्बद्धमिदम्-

जति णं भंते!, समणेणं जाव संपत्तेणं एकारसमस्स नायज्झयणस्स, अयम० बारसमस्स णं नायज्झयणस्स के अट्ठे पं० ?; एवं खलु जंबू!, तेणं कालेणं २, चंपा नाम नयरी, पुण्णभद्दे, जितसत्तू राया, धारिणी देवी, अदीणसत्तू नामं कुमारे जुवराया यावि होत्था, सुबुद्धी अमचे जाव रज्जधुराचिंतए समणोवासए; तीसे णं चंपाए णयरीए, बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे परिहोदए यावि होत्था, मेयवसामंसरुहिरपूयपडलपोच्चडे, मयगकलेवरसंछण्णे, अमणुण्णे वण्णेणं जाव फासेणं; से जहा नामए अहिमडेति वा, गोमडेति वा जाव मयकुहियविणट्ठकिमिणवावण्णदुरभिगंधे किमिजालाउले संसत्ते असुइविगयबीभत्थदरिसणिज्जे, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं पण्णत्ते ॥सूत्रम्-९८॥ तते णं से जितसत्तू राया, अण्णदा कदाइ ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभितिहिं सद्धिं भोयणवेलाए सुहासणवरगए विपुलं असणं ४ जाव विहरति,

१२-श्री- उदकाख्य- ज्ञाताध्य० पूर्वापराध्ययनसम्बन्धवर्णनसूत्रम् ।

जिमितभुत्तुत्तरायए जाव सुइभूते तंसि विपुलंसि असण ४, जाव जायविम्हए, ते बहवे ईसर जाव पभितीए एवं वयासी-अहो णं देवा० !, इमे मणुण्णे असण ४, वण्णेणं उववेए जाव फासेणं उववेते अस्सायणिज्जे, विस्सायणिज्जे, पीणणिज्जे, दीवणिज्जे, दप्पणिज्जे, मयणिज्जे, बिंहणिज्जे, सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे; तते णं ते बहवे ईसर जाव पभियओ जितसत्तुं एवं व०-तहेव णं सामी !, जण्णं तुब्भे वदह ! अहो णं इमे मणुण्णे असणं ४, वण्णेणं उववेए जाव पल्हायणिज्जे; तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं व०-अहो णं सुबुद्धी !, इमे मणुण्णे असणं ४, जाव पल्हायणिज्जे; तए णं सुबुद्धी जितसत्तुस्सेयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं जितसत्तुणा सुबुद्धी दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे जितसत्तुं रायं एवं वदासी-नो खलु सामी !, अहं एयंसि मणुण्णंसि असण ४ केइ विम्हए, एवं खलु सामी !, सुब्भिसद्दावि पुग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दावि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति; सुरूवावि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति, दुरूवावि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति; सुब्भिगंधावि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, दुब्भिगंधावि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति; सुरसावि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसावि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति; सुहफासावि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासावि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति; पओगवीससापरिणयावि य णं सामी !, पोग्गला पण्णत्ता; तते णं से जितसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमातिक्खमाणस्स ४, एयमट्ठं नो आढाति, नो

परियाणई, तुसिणीए, संचिट्ठइ; तए णं से जितसत्तू अण्णदा कदाई ण्हाइ आसखंधवरगते महया भड-चडगरहआसवाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयइ। तते णं जितसत्तू तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूते समाणे सएणं उत्तरिज्जगेणं आसगं पिहेइ, एगंतं अवकमति, ते बहवे ईसर जाव पभितिओ एवं वदासी–अहो णं देवाणुप्पिया इमे फरिहोदए! अमणुण्णे वण्णेणं ४, से जहा नामए अहिमडेति वा जाव अमणामतराए चेव; तए णं ते बहवे राईसरपभिइ जाव एवं व०–तहेव णं तं सामी!, जं णं तुब्भे एवं वयह, अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं ४, से जहा णामए अहिमडे इ वा जाव अमणामतराए चेव, तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वदासी–अहो णं सुबुद्धी! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं, से जहा नामए अहिमडेइ वा जाव अमणामतराए चेव, तए णं सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए, संचिट्ठइ; तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं व०–अहो णं तं चेव, तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रन्ना दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं व०–नो खलु सामी!, अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए, एवं खलु सामी! सुब्भिसद्दावि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, तं चेव जाव पओगवीससापरिणयावि य णं सामी!, पोग्गला पण्णत्ता, तते णं जितसत्तु सुबुद्धिं एवं चेव, मा णं तुमं देवाणु०!, अप्पाणं च परं च तदुभयं वा बहूहि य असब्भावुब्भावणाहिं

१ ०ति २ त्ता ते० अ।

१२–श्री-उदकाख्य-ज्ञाताध्य० जितशत्रुणा सह वार्तालापादिवर्णन-सूत्रम्।

मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि, तते णं सुवुद्धिस्स इमेयारूवे अ०भत्थिए ५, समुप्पज्जित्था–अहो णं जितसत्तू संते तच्चे तहिए अवितहे स०भूते जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभति, तं सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं स०भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए, एवं संपेहेति २, पच्चतिएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडयपडए पगेण्हति २, संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्संसि णिसंतपडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागए २, तं फरिहोदगं गेण्हावेति २, नवएसु घडएसु गालावेति २, नवएसु घडएसु पक्खिवावेति २, लंछियमुद्दिते करावेति २, सत्तरत्तं परिवसावेति २, दोच्चंपि नवएसु घडएसु गालावेति, नयएसु घडएसु पक्खिवावेति २, सज्जक्खारं पक्खिवावेइ× लंछियमुद्दिते कारवेति २, सत्तरत्तं परिवसावेति २, तच्चंपि णवएसु घडएसु जाव संवसावेति, एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गलावेमाणे अंतरा पक्खिवाधेमाणे अंतराय विपरिवसावेमाणे २, सत्त २, रातिंदिया विपरिवसावेति; तते णं से फरिहोदए सत्तमसत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्था, अच्छे, पत्थे, जच्चे, तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेणं उववेते ४, आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे; तते णं सुवुद्धी अमच्चे जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवा० २, करयलंसि× आसादेति २, तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं ४, आसा-

१ ०इ २ [illegible] अ। ×× एतदन्तर्गतः पाठः [illegible] प्रतौ नास्ति।

गणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता, हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहिं संभारेति २, जितसत्तुस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेति २; एवं व०-तुमं च णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं गेण्हाहि जितसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेज्जासि; तते णं से पाणियघरिए सुबुद्धियस्स एतमट्ठं पडिसुणेति २, तं उदगरयणं गिण्हाति २, जितसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेति; तते णं से जितसत्तू राया तं विपुलं असण ४, आसाएमाणे जाव विहरइ; जिमियभुत्तुत्तरायएवि य णं जाव परमसुइभूए तंसि उदगरयणे जायविम्हए, ते बहवे राईसर जाव एवं व०-अहो णं देवाणु० !, इमं उदगरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे, तते णं बहवे राईसर जाव एवं व०-तहेव णं सामी !, जण्णं तुब्भे वदह जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे, तते णं जितसत्तू राया पाणियघरियं सद्दावेति २, एवं व०-एस णं तुब्भे देवा० ! उदगरयणे कओ आसादिते ?, तते णं से पाणियघरिए जितसत्तुं एवं वदासी-एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसादिते, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेति २, एवं व०-अहो णं सुबुद्धी केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे ५, जेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ?, तए णं तुमे देवा० ! उदगरयणे कओ उवलद्धे ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं व०-एस णं सामी !, से फरिहोदए, तते णं से जितसत्तू सुबुद्धिं एवं व०-केणं कारणेणं सुबुद्धी !, एस से फरिहोदए ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं

१ °मे वीसाएमाणे आ° ख ।

एवं व०-एवं खलु सामी !, तुम्हे तया मम एवमातिक्खमाणस्स ४, एतमट्ठं नो सद्दहह, तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिते ६, अहो णं जितसत्तू संते जाव भावे नो सद्दहति, नो पत्तियति, नो रोएति, तं सेयं खलु ममं जियसत्तुस्स रन्नो संताणं जाव सब्भूताणं जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एतमट्ठं उवाइणावेत्तए, एवं संपेहेमि २, तं चेव जाव पाणियघरियं सद्दावेमि २, एवं वदामि-तुमं णं देवाणु० !, उदगरतणं जितसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेहि, तं एएणं कारणेणं सामी !, एस से फरिहोदए। तते णं जितसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमातिक्खमाणस्स ४, एतमट्ठं नो सद्दहति ३, असद्दहमाणे ३, अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेति २, एवं वदासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया !, अंतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदगसंहारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह, तेऽवि तहेव संभारेंति २, जितसत्तुस्स उवणेंति; तते णं जितसत्तू राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएति, आसातणिज्जं जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेति २, एवं व०-सुबुद्धी !, एए णं तुमे संता तच्चा जाव सब्भूया भावा कतो उवलद्धा ?, तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं वदासी-एए णं सामी ! मए संता जाव भावा जिणवयणातो उवलद्धा, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं एवं व०-तं इच्छामि णं देवाणु० !, तव अंतिए जिणवयणं निसामेत्तए, तते णं सुबुद्धी जितसत्तूस्स विचित्तं केवलिपन्नत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तमाइक्खति जहा जीवा बज्झंति जाव पंच अणुव्वयातिं, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोचा णिसम्म हट्ठ० सुबुद्धिं

अमचं एवं व०-सद्दहामि णं देवाणुप्पिया !, निग्गंथं पावयणं ३, जाव से जहेयं तुब्भे वयह; तं इच्छामि णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवा० ! मा पडिबंधं०, तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमचस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ, तते णं जितसत्तू समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति। तेणं कालेणं २, थेरागमणं, जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छति; सुबुद्धी धम्मं सोचा जं णवरं जियसत्तुं आपुच्छामि जाव पव्वयामि, अहासुहं देवा० !, तते णं सुबुद्धी जेणेव जितसत्तू तेणेव उवा० २ एवं व०-एवं खलु सामी !, मए थेराणं अंतिए धम्मे निसन्ते सेऽवि य धम्मे इच्छियपडिच्छिए ३; तए णं अहं सामी !, संसारभउव्विग्गे भीए जाव इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए स० जाव पव्वइत्तए, तते णं जितसत्तू सुबुद्धिं एवं व०-अच्छासु ताव देवाणु० ! कतिवयाति वासाइं उरालाति जाव भुंजमाणा ततो पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो, तते णं सुबुद्धी जितसत्तूस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं तस्स जितसत्तुस्स सुबुद्धीणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्स० पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालस वासाइं वीतिक्कंताइं तेणं कालेणं २, थेरागमणं, तते णं जितसत्तू धम्मं सोचा एवं जं नवरं देवा० !, सुबुद्धिं आमंतेमि जेट्ठपुत्तं रज्जे ठवेमि; तए णं तुब्भं जाव पव्वयामि, अहासुहं, तते णं जितसत्तू जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २, सुबुद्धिं सद्दावेति २, एवं वयासी-एवं खलु मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुमं णं किं करेसि ?,

तते णं सुबुद्धी जितसत्तुं एवं व०-जाव के० अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि, तं जति णं देवा० जाव पव्वयह गच्छह णं देवाणु० ! जेट्ठपुत्तं च कुडुंबे ठावेहि २, सीयं दुरुहित्ताणं ममं अंतिए सीया जाव पाउब्भवेति; तते णं सुबुद्धीए सीया जाव पाउब्भवइ, तते णं जितसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा० !, अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव अभिसिंचंति जाव पव्वतिए। तते णं जितसत्तू एक्कारस अंगाइं अहिज्जति, बहूणि वासाणि परियाओ मासियाए सिद्धे; तते णं सुबुद्धी एक्कारस अंगाइं अ० बहूणि वासाणि जाव सिद्धे। एवं खलु जंबू !, समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्—९९ ॥ बारसमं नाअज्झयणं समत्तं ॥

सर्वं सुगमं नवरं, 'फरिहोदए'त्ति-परिखायाः-खातवलयस्योदकं परिखोदकं, चापीति समुच्चये, ततश्चंपादिकोऽर्थोऽभूद् एवं परिखोदकं चाभूदित्येवं, चः समुच्चये इति, 'मेये'त्यादि, अत्र मेदःप्रभृतीनां पटलेन-समूहेन, 'पोच्चडं'—विलीनं मृतकानां यथा वा द्विपदादीनां कडेवरैः संछन्नं यत्तत्तथा, अद्यादिकडेवरविशेषणायाह-मृतं-जीवविमुक्तमात्रं सद्यत् कुथितं-ईषत्दुर्गन्धमित्यर्थः, तथा विनष्टं-उच्छूनत्वादिविकारवत्; 'किमिणं'ति-कतिपयकृमिवत् व्यापन्नं च-शकुन्यादिभक्षणाद्बीभत्सतां गतं सद्यद्दुरभिगन्धं-तीव्रतरदुष्टगन्धं तत्तथा, 'सुब्भिसद्दावि'त्ति-शुभशब्दा अपि, 'दुब्भिसद्दत्ताए'त्ति-दुष्टशब्दतया, 'पओगवीससापरिणय'त्ति-प्रयोगेण-जीवव्यापारेण, विश्रसया च-स्वभावेन परिणताः-अवस्थान्तरमापन्ना ये ते तथा, 'आसखंधवरगए'त्ति अश्व एव स्कन्धः-पुद्गलप्रचयरूपो वरः-प्रधानोऽश्वस्कन्धवरोऽथवा स्कन्धप्रदेशप्रत्यासत्तेः पृष्ठमपि

स्कन्ध इति व्यपदिष्टमिति, 'असब्भावुब्भावणाहिं'ति–असतां भावानां–वस्तूनां वस्तुधर्माणां वा या उद्भावना–उत्क्षेपणानि तास्तया ताभिर्मिथ्यात्वाभिनिवेशेन च–विपर्यासाभिमानेन व्युद्ग्राहयन्–विविधत्वेनाधिक्येन च ग्राहयन् व्युत्पादयन्–अव्युत्पन्नमति व्युत्पन्नं कुर्वन् 'संते' इत्यादि, सतो–विद्यमानान्, 'तच्चे'ति–तत्त्वरूपानैदंपर्यसमन्वितानित्यर्थः; अत एव तथ्यान्–सत्यान्, एतदेव व्यतिरेकेणोच्यते–अवितथान् न वितथानित्यर्थः, किमुक्तं भवति ?–सद्भूतान् सता प्रकारेण भूतान्–यातान् सद्भूतान् एकार्था वैते शब्दाः; 'अभिगमणट्ठयाए'–अवगमलक्षणाय अर्थायेत्यर्थः, 'एतमट्ठं'ति–एवं (तं)–पुद्गलानामपरापरपरिणामलक्षणमर्थं 'उवाइणावित्तए'त्ति–उपादापयितुं ग्राहयितुमित्यर्थः; 'अंतरावणाउ'त्ति–परिखोदकमार्गान्तरालवर्त्तिनो हट्टात् कुम्भकारसम्बन्धिन इत्यर्थः, 'सज्जखारं'ति–सद्यो भस्म; 'अच्छे'त्यादि, अच्छं–निर्मलं, पथ्यं–आरोग्यकरं जात्यं–प्रधानमिति भावः, तनुकं–लघु सुजरमिति हृदयं, 'उदगसंभारणिज्जेहिं'ति–उदकनामकैः–वालकमुस्तादिभिः संभारयति–संभृतं करोति। इहाध्ययने यद्यपि सूत्रेणोपनयो न दर्शितः तथाऽप्येवं द्रष्टव्यः–"मिच्छत्तमोहियमणा पावपसत्तावि पाणिणो विगुणा। फरिहोदगंव गुणिणो हवंति वरगुरुपसायाओ ॥ १ ॥"त्ति समाप्तमिदं द्वादशज्ञाताध्ययनविवरणम् ॥



गा०—१ मिथ्यात्वमोहितमनसः पापप्रसक्ता अपि प्राणिनो विगुणाः। परिखोदकमिव गुणिनो भवन्ति वरगुरुप्रसादात् ॥ १ ॥

॥ १३-श्री दर्दुराख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ त्रयोदशं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः,-अनन्तराध्ययने संसर्गविशेषाद् गुणोत्कर्ष उक्तः; इह तु संसर्गविशेषाभावाद् गुणापकर्ष उच्यते, इत्येवं सम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते !, समणेणं० बारसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स णं भंते !, नाय० के० अट्ठे पन्नत्ते ?; एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं २, रायगिहे, गुणसिलए चेतिए, समोसरणं, परिसा निग्गया; तेणं कालेणं २, सोहम्मे कप्पे, दद्दुरवडिंसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, दद्दुरंसि सीहासणंसि, दद्दुरे देवे, चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिसाहिं, एवं जहा सुरियाभो जाव दिव्वातिं भोगभोगाइं भुंजमाणो विहरइ; इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं २, विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे २, जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगते जहा सुरियाभे । भंतेति भगवं गोयमे, समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसति २; एवं व०-अहो णं भंते !, दद्दुरे देवे महिड्ढिए २, दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी ३, कहिं गया० ?; गो० ! सरीरं गया सरीरं अणुपविट्ठा कूडागारदिट्ठंतो, दद्दुरेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी ३ किण्णा लद्धा जाव अभिसमन्नागया !, एवं खलु गो० ! इहेव जंबुद्दीवे २, भारहे वासे, रायगिहे, गुण-

सिलए चेतिए, सेणिए राया; तत्थ णं रायगिहे णंदे णामं मणियारसेट्ठी, अड्ढे दित्ते; तेणं कालेणं २, अहं गोयमा !, समोसढे, परिसा णिग्गया; सेणिए राया निग्गए, तते णं से नंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए पायचारेणं जाव पज्जुवासति, णंदे धम्मं सोचा समणोवासए जाते; तते णं अहं रायगिहाओ पडिनिक्खन्ते, बहिया जणवयविहारं विहरामि; तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी अन्नया कदाइ असाहुदंसणेण, य, अपज्जुवासणाए य, अणणुसासणाए य, असुस्सूसणाए य, सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं २, मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २, मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था; तते णं नंदे मणियारसेट्ठी अन्नता गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हति २, पोसहसालाए जाव विहरति; तते णं णंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए, छुहाए य अभिभूतस्स समाणस्स इमेयारूवे अब्भत्थिते ५-धन्ना णं ते जाव ईसरपभितओ जेसिं णं रायगिहस्स बहिया, बहूओ वावीतो, पोक्खरणीओ जाव सरसरपंतियाओ, जत्थ णं बहुजणो ण्हाति य, पियति य, पाणियं च संवहति; तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउ० सेणियं आपुच्छित्ता, रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए, वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते, वत्थुपाढगरोइतंसि भूमिभागंसि जाव णंदं पोक्खरणिं खणावेत्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेति २, कल्लं पा० जाव पोसहं पारेति २, ण्हाते कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव संपरिवुडे महत्थ जाव पाहुडं रायारिहं गेण्हति २, जेणेव सेणिए राया तेणेव उवा० २, जाव पाहुडं उवट्ठवेति २, एवं व०-इच्छामि णं सामी ! तुब्भेहिं अ-

१३-श्री-
दर्दु०
ज्ञाताध्य०
नन्दश्रेष्ठि-
वर्णन-
सूत्रम् ।

ऽभणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया!; तते णं णंदे सेणिएणं रन्ना अब्भणुण्णाते समाणे हट्ठ० रायगिहं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २, वत्थुपाढयरोइयंसि भूमिभागंसि णंदं पोक्खरणिं खणाविउं पयत्ते यावि होत्था, तते णं सा णंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खणमाणा २, पोक्खरणी जाया यावि होत्था; चाउक्कोणा समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्पसीयलजला, संछण्णपत्तबिसमुणाला, बहुप्पलपउमकुमुदनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तपफुल्लकेसरोववेया परिहत्थभमंतमच्छछप्पयअणेगसउणगणमिहुणवियरियसद्दुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया ४। तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी णंदाए पोक्खरणीए चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडे रोवावेति। तए णं ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा य संवड्ढियमाणा य से वणसंडा जाया किण्हा जाव निकुरुंबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभमाणा २, चिट्ठंति। तते णं णंदे पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं करावेति, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं पा०, तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि य, कट्ठकम्माणि य, पोत्थकम्माणि चित्त० लिप्प० गंथिमवेढिमपूरिमसंघातिम० उवदंसिज्जमाणाइं २, चिट्ठंति; तत्थ णं बहूणि आसणाणि य, सयणाणि य अत्थुयपच्चत्थुयाइं चिट्ठंति; तत्थ णं बहवे णडा य णट्टा य जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायरकम्मं करेमाणा विहरंति, रायगिहविणिग्गओ य जत्थ बहू जणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु संनिसन्नो य, संतुयट्टो य, सुणमाणो य, पेच्छमाणो य, सोहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ;

तते णं णंदे दाहिणिल्ले वणसंडे एगं महं महाणससालं करावेति 'अणेगखंभ० जाव रूवं तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा विपुलं असण ४ उवक्खडेंति बहूणं समणमाहणअतिहीकिवणवणीमगाणं परिभाएमाणा २, विहरंति, तते णं णंदे मणियारसेट्ठी पचत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेगिच्छियसालं करेति, अणेगखंभसय० जाव रूवं, तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइभत्तवेयणा बहूणं वाहियाणं गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छं करेमाणा विहरंति, अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्न तेसिं बहूणं वाहियाण य रोगि० गिला० दुब्बला० ओसहभेसज्जभत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा विहरंति तते णं णंदे उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं करेति, अणेगखंभसत० जावपडिरूवं, तत्थं णं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइभत्त० बहूणं समणाण य अणाहाण य गिलाणाण य रोगि० दुब्ब० अलंकारियकम्मं करेमाणा २, विहरंति। तते णं तीए णंदाए पोक्खरणीए बहवे सणाहा य, अणाहा य, पंथिया य, पहिया य, करोडिया, कारिया०, तणहार०, पत्त० कट्ठ०; अप्पेगतिया ण्हायंति, अप्पेगतिया पाणियं पियंति, अप्पेगतिया पाणियं संवहंति, अप्पे० विसज्जितसेय जल्लमलपरिस्समनिद्दखुप्पिवासा सुहंसुहेणं विहरंति। रायगिहविणिग्गओवि जत्थ बहुजणो किं ते जलरमणविविहमज्जणकयलिलयाघरयकुसुमसत्थरयअणेगसउणगणरुयरिभितसंकुलेसु सुहंसुहेणं अभिरममाणो २ विहरति। तते णं णंदाए पोक्खरिणीए

वहुजणो ण्हायमाणो पाणियं च संवहमाणो य अन्नमन्नं एवं वदासी–धण्णे णं देवा० !, णंदे मणियार-सेट्ठी कयत्थे जाव जम्मजीवियफले जस्स णं इमेयारूवा णंदा पोक्खरणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव सव्वं चउसुवि वणसंडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ वहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरति, तं धन्ने कयत्थे कयपुन्ने कयाणं० लोया ! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स, तते णं रायगिहे संघाडग जाव वहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खति ४, धन्ने णं देवाणुप्पिया !, णंदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरति। तते णं से णंदे मणियारे वहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा०, हट्ठ २ धाराहयकलंबगंपिव समूससियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरति ॥ सूत्रम्–१०० ॥

सर्वं सुगमं, नवरं 'एवं सुरियाभे'त्ति–यथा राजप्रश्नकृते सूरिकाभो देवो वर्णितः, एवं अयमपि वर्णनीयः; कियता वर्णकेनेत्याह–'जावदिव्वाइ'इत्यादि, स चायं वर्णकः–"तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहवईहिं" इत्यादि; 'इमं च णं केवलकप्पं'ति इमं च केवलः–परिपूर्णः, स चासौ कल्पश्च–स्वकार्यकरणसमर्थ इति केवलकल्पः, केवल एव वा केवलकल्पः, तं 'आभोएमाणे'–इह यावत्करणादिदं दृश्यं,–'पासइ समणं भगवं महावीर'मित्यादि; 'कूडागारदिट्ठंते'त्ति एवं चासौ 'से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुचइ सरीरगं अणुपविट्ठा ?, गोयमा ! से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ वहिरन्तश्च गुत्ता लित्ता' सावरणत्वेन गोमयाद्युपलेपनेन च उभयतो गुप्तत्वमेवाह–गुप्ता–वहिः प्राकारावृता गुप्तद्-

वारा-अन्तर्गुप्तेत्यर्थः, अथवा-गुप्ता गुप्तद्वारा द्वाराणां केषांचित् स्थगितत्वात् केषांचिचास्थगितत्वादिति; 'निवाया'-वायोरप्रवेशात्, 'निवायगंभीरा'-किल महद् गृहं निवातं प्रायो न भवतीत्यत आह-निवातगम्भीरा निवातविशालेत्यर्थः; 'तीसे णं कूडागारसालाए अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे जणसमूहे चिट्ठइ, तए णं से जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलयं वा, वासवद्दलयं वा, महावायं वा एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुपविसित्ताणं चिट्ठइ; से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ सरीरगं गया सरीरगं अणुपविट्ठ'त्ति, 'असाधुदर्शनेने'ति-साधूनामदर्शनेनात एव, 'अपर्युपासनया'-असेवनया, 'अननुशासनया'-शिक्षाया अभावेन, 'अशुश्रूषणया'-श्रवणेच्छाया अभावेन, 'सम्यक्त्वपर्यवैः'-सम्यक्त्वरूपपरिणामविशेषैरेवं, मिथ्यात्वपर्यवैरपि मिथ्यात्वं विशेषेण प्रतिपन्नो विप्रतिपन्नः, काष्ठकर्माणि-दारुमयपुत्रिकादिनिर्मापणानि एवं सर्वत्र, नवरं; पुस्तं-वस्त्रं, चित्रं लेप्यं च प्रसिद्धं, ग्रन्थिमानि-यानि सूत्रेण ग्रथ्यन्ते मालावत्, वेष्टिमानि-यानि वेष्टनतो निष्पाद्यन्ते, पुष्पमालालम्बूसकवत्, पूरिमाणि-यानि पूरणतो भवन्ति, कनकादिप्रतिमावत्; सङ्घातिमानि-सङ्घातनिष्पाद्यानि रथादिवत्, उपदर्श्यमानानि लोकैरन्योऽन्यमित्यर्थः; 'तालायरकम्मं'ति-प्रेक्षणककर्मविशेषः, 'तेगिच्छियसालं'-ति-चिकित्साशालं अरोगशालां, वैद्याः-भिषग्वराः, आयुर्वेदपाठकाः, वैद्यपुत्राः-तत्पुत्रा एव; 'जाणुय'त्ति-ज्ञायकाः शास्त्रानध्यायिनोऽपि शास्त्रज्ञप्रवृत्तिदर्शनेन रोगस्वरूपतः चिकित्सावेदिनः, कुशलाः-स्ववितर्काचिकित्सादिप्रवीणाः; 'वाहियाणं'ति-व्याधितानां विशिष्टचित्तपीडावतां शोकादिविप्लुतचित्तानामित्यर्थः अथवा-विशिष्टा आधिर्यस्मात् स व्याधिः-स्थिररोगः कुष्ठादिस्तद्वतां ग्लानानां-क्षीणहर्षाणामशक्तानामित्यर्थः, रोगितानां-सञ्जातज्वरकुष्ठादिरोगाणामाशुघातिरोगाणां

वा, 'ओसह'मित्यादि, औषधं-एकद्रव्यरूपं, भैषजं-द्रव्यसंयोगरूपं; अथवा-औषधं-एकानेकद्रव्यरूपं भैषजं तु-पथ्यं, मक्तं तु-भोजनमात्रं, प्रतिचारककर्म-प्रतिचारकत्वं, 'अलंकारियसहं'ति-नापितकर्मशालां, 'विसज्जिए'त्यादि, त्रिसूष्टस्वे-दजल्लमलपरिश्रमनिद्राक्षुत्पिपासाः, तत्र जल्लोऽस्थिरो मालिन्यहेतुर्मलस्तु स एव कठिनीभूत इति, 'रायगिहे'त्यादि, राज-गृहनिर्गतोऽपि चात्र बहुजनः, 'किं ते'त्ति-किं तद् यत्करोति ?, उच्यते-जलरमणैः-जलक्रीडाभिः विविधमज्जनैः-बहुप्र-कारस्नानैः कदलीनां च लतानां च गृहकैः कुसुमस्रस्तरैः अनेकशकुनिगणरुतैश्च रिभितैः-स्वरघोलनावद्भिर्मधुरैरित्यर्थः, सङ्कुलानि यानि तानि तथा तेषु पुष्करणीवनखण्डलक्षणेषु पञ्चसु वस्तुष्विति प्रक्रमः, 'संतुयट्टो य'त्ति-शयितः, 'साहेमा-णो य'त्ति प्रतिपादयन्, 'गमय'त्ति पूर्वोक्तः पाठः, 'सायासोक्खं'ति सातात्-सातवेदनीयोदयात् सौख्यं-सुखं ॥ १०० ॥

तते णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाइं सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तं०-"सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदरे ६। अरिसा अजीरए दिट्ठिमुद्धसूले अगारए ॥ १ ॥ अच्छि-वेयणा कन्नवेयणा कंडू दउदरे कोढे १६।" तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा० !, रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २, एवं व०-एवं खलु देवाणु० !, णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूता, तं०-'सासे जाव कोढे' तं जो णं इच्छति देवाणुप्पिया !, वेज्जो वा, वेज्जपुत्तो वा, जाणुओ वा २, कुसलो वा २, नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं

वारा-अन्तर्गुप्तेत्यर्थः, अथवा-गुप्ता गुप्तद्वारा द्वाराणां केषांचित् स्थगितत्वात् केषांचिच्चास्थगितत्वादिति; 'निवाया'-वायोरप्रवेशात्, 'निवायगंभीरा'-किल महद् गृहं निवातं प्रायो न भवतीत्यत आह-निवातगम्भीरा निवातविशालेत्यर्थः; 'तीसे णं कूडागारसालाए अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे जणसमूहे चिट्ठइ, तए णं से जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलयं वा, वासवद्दलयं वा, महावायं वा एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुपविसित्ताणं चिट्ठइ; से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ सरीरगं गया सरीरगं अणुपविट्ठे'त्ति, 'असाधुदर्शनेने'ति-साधूनामदर्शनेनात एव, 'अपर्युपासनया'-असेवनया, 'अननुशासनया'-शिक्षाया अभावेन, 'अशुश्रूषणया'-श्रवणेच्छाया अभावेन, 'सम्यक्त्वपर्यवैः'-सम्यक्त्वरूपपरिणामविशेषैरेवं, मिथ्यात्वपर्यवैरपि मिथ्यात्वं विशेषेण प्रतिपन्नो विप्रतिपन्नः, काष्ठकर्माणि-दारुमयपुत्रिकादिनिर्मापणानि एवं सर्वत्र, नवरं; पुस्तं-वस्त्रं, चित्रं लेप्यं च प्रसिद्धं, ग्रन्थिमानि-यानि सूत्रेण ग्रथ्यन्ते मालावत्, वेष्टिमानि-यानि वेष्टनतो निष्पाद्यन्ते, पुष्पमालालम्बूसकवत्, पूरिमाणि-यानि पूरणतो भवन्ति, कनकादिप्रतिमावत्; सङ्घातिमानि-सङ्घातनिष्पाद्यानि रथादिवत्, उपदर्श्यमानानि लोकैरन्योऽन्यमित्यर्थः; 'तालायरकम्मं'ति-प्रेक्षणककर्मविशेषः, 'तेगिच्छियसालं'-ति-चिकित्साशालं अरोगशालां, वैद्याः-भिषग्वराः, आयुर्वेदपाठकाः, वैद्यपुत्राः-तत्पुत्रा एव; 'जाणुय'त्ति-ज्ञायकाः शास्त्रानध्यायिनोऽपि शास्त्रज्ञप्रवृत्तिदर्शनेन रोगस्वरूपतः चिकित्सावेदिनः, कुशलाः-स्ववितर्काच्चिकित्सादिप्रवीणाः; 'वाहियाणं'ति-व्याधितानां विशिष्टचित्तपीडावतां शोकादिविप्लुतचित्तानामित्यर्थः अथवा-विशिष्टा आधिर्यस्मात् स व्याधिः-स्थिररोगः कुष्ठादिस्तद्वतां ग्लानानां-क्षीणहर्षाणामशक्तानामित्यर्थः, रोगितानां-सञ्जातज्वरकुष्ठादिरोगाणामाशुघातिरोगाणां

वा, 'ओसह'मित्यादि, औषधं-एकद्रव्यरूपं, भैषजं-द्रव्यसंयोगरूपं; अथवा-औषधं-एकानेकद्रव्यरूपं भैषजं तु-पथ्यं, भक्तं तु-भोजनमात्रं, प्रतिचारककर्म-प्रतिचारकत्वं, 'अलंकारियसह'ति-नापितकर्मशालां, 'विसज्जिए'त्यादि, विसृष्टस्वेदजल्लमलपरिश्रमनिद्राक्षुत्पिपासाः, तत्र जल्लोऽस्थिरो मालिन्यहेतुर्मलस्तु स एव कठिनीभूत इति, 'रायगिहे'त्यादि, राजगृहविनिर्गतोऽपि चात्र बहुजनः, 'किं ते'त्ति-किं तद् यत्करोति ?, उच्यते-जलरमणैः-जलक्रीडाभिः विविधमज्जनैः-बहुप्रकारस्नानैः कदलीनां च लतानां च गृहकैः कुसुमस्रस्तरैः अनेकशकुनिगणरुतैश्च रिभितैः-स्वरघोलनावद्भिर्मधुरैरित्यर्थः, संकुलानि यानि तानि तथा तेषु पुष्करणीवनखण्डलक्षणेषु पञ्चसु वस्तुष्विति प्रक्रमः, 'संतुयट्टो य'त्ति-शयितः, 'साहेमाणो य'त्ति प्रतिपादयन्, 'गमय'त्ति पूर्वोक्तः पाठः, 'सायासोक्खं'ति सातात्-सातवेदनीयोदयात् सौख्यं-सुखं ॥ १०० ॥

तते णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तं०-"सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदरे ६। अरिसा अजीरए दिट्ठिमुद्धसूले अगारए ॥ १ ॥ अच्छिवेयणा कन्नवेयणा कंडू दउदरे कोढे १६।" तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा०!, रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २, एवं व०-एवं खलु देवाणु०!, णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूता, तं०-'सासे जाव कोढे' तं जो णं इच्छति देवाणुप्पिया!, वेज्जो वा, वेज्जपुत्तो वा, जाणुओ वा २, कुसलो वा २, नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं

वारा-अन्तर्गुप्तेत्यर्थः, अथवा-गुप्ता गुप्तद्वारा द्वाराणां केषांचित् स्थगितत्वात् केषांचिचास्थगितत्वादिति; 'निवाया'-वायोरप्रवेशात्, 'निवायगंभीरा'-किल महद् गृहं निवातं प्रायो न भवतीत्यत आह-निवातगम्भीरा निवातविशालेत्यर्थः; 'तीसे णं कूडागारसालाए अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे जणसमूहे चिट्ठइ, तए णं से जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलयं वा, वासवद्दलयं वा, महावायं वा एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुपविसित्ताणं चिट्ठइ; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सरीरगं गया सरीरगं अणुपविट्ठ'त्ति, 'असाधुदर्शनेने'ति-साधूनामदर्शनेनात एव, 'अपर्युपासनया'-असेवनया, 'अननुशासनया'-शिक्षाया अभावेन, 'अशुश्रूषणया'-श्रवणेच्छाया अभावेन, 'सम्यक्त्वपर्यवैः'-सम्यक्त्वरूपपरिणामविशेषैरेवं, मिथ्यात्वपर्यवैरपि मिथ्यात्वं विशेषेण प्रतिपन्नो विप्रतिपन्नः, काष्ठकर्माणि-दारुमयपुत्रिकादिनिर्मापणानि एवं सर्वत्र, नवरं; पुस्तं-वस्त्रं, चित्रं लेप्यं च प्रसिद्धं, ग्रन्थिमानि-यानि सूत्रेण ग्रथ्यन्ते मालावत्, वेष्टिमानि-यानि वेष्टनतो निष्पाद्यन्ते, पुष्पमालालम्बूसकवत्, पूरिमाणि-यानि पूरणतो भवन्ति, कनकादिप्रतिमावत्; सङ्घातिमानि-सङ्घातनिष्पाद्यानि रथादिवत्, उपदर्श्यमानानि लोकैरन्योऽन्यमित्यर्थः; 'तालायरकम्मं'ति-प्रेक्षणककर्मविशेषः, 'तेगिच्छियसालं'-ति-चिकित्साशालं अरोगशालां, वैद्याः-भिषग्वराः, आयुर्वेदपाठकाः, वैद्यपुत्राः-तत्पुत्रा एव; 'जाणुय'त्ति-ज्ञायकाः शास्त्रानध्यायिनोऽपि शास्त्रज्ञप्रवृत्तिदर्शनेन रोगस्वरूपतः चिकित्सावेदिनः, कुशलाः-स्ववितर्काच्चिकित्सादिप्रवीणाः; 'वाहियाणं'ति-व्याधितानां विशिष्टचित्तपीडावतां शोकादिविप्लुतचित्तानामित्यर्थः अथवा-विशिष्टा आधिर्यस्मात् स व्याधिः-स्थिररोगः कुष्ठादिस्तद्वतां ग्लानानां-क्षीणहर्षाणामशक्तानामित्यर्थः, रोगितानां-सञ्जातज्वरकुष्ठादिरोगाणामाशुघातिरोगाणां

औषधं-एकानेकद्रव्यरूपं भैषज्ञं तु-पथ्यं, वा, 'ओसह'मित्यादि, औषधं-एकद्रव्यरूपं, भैषज्ञं-द्रव्यसंयोगरूपं; अथवा-औषधं-एकानेकद्रव्यरूपं भैषज्ञं तु-पथ्यं,
मक्तं तु-भोजनमात्रं, प्रतिचारककर्म-प्रतिचारकत्वं, 'अलंकारियसहं'ति-नापितकर्मशालां, 'विसज्जिए'त्यादि, विछुट्टस्वे-
दजल्लमलपरिश्रमनिद्राक्षुत्पिपासाः, तत्र जल्लोऽस्थिरो मालिन्यहेतुर्मलस्तु स एव कठिनीभूत इति, 'रायगिहे'त्यादि, राज-
गृहविनिर्गतोऽपि चात्र बहुजनः, 'किं ते'त्ति-किं तद् यत्करोति ?, उच्यते-जलरमणैः-जलक्रीडाभिः विविधमज्जनैः-बहुप्र-
कारस्नानैः कदलीनां च लतानां च गृहकैः कुसुमसस्तरैः अनेकशकुनिगणरुतैश्च रिभितैः-स्वरघोलनावद्भिर्मधुरैरित्यर्थः,
सङ्कुलानि यानि तानि तथा तेषु पुष्करणीवनखण्डलक्षणेषु पञ्चसु वस्तुष्विति प्रक्रमः, 'संतुयट्टो य'त्ति-शयितः, 'साहेमा-
णो य'त्ति प्रतिपादयन्, 'गमय'त्ति पूर्वोक्तः पाठः, 'सायासोक्खं'ति सातात्-सातवेदनीयोदयात् सौख्यं-सुखं ॥ १०० ॥

तते णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तं०-
"सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदरे ६। अरिसा अजीरए दिट्ठिमुद्धसूले अगारए ॥ १ ॥ अच्छि-
वेयणा कन्नवेयणा कंडू दउदरे कोढे १६।" तते णं से णंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूते
समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा० !, रायगिहे सिंघाडग जाव पहेसु
महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २, एवं व०-एवं खलु देवाणु० !, णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरगंसि सोलस
रोयायंका पाउब्भूता, तं०-'सासे जाव कोढे' तं जो णं इच्छति देवाणुप्पिया !, वेज्जो वा, वेज्जपुत्तो वा,
जाणुओ वा २, कुसलो वा २, नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं

उवसामेत्तए तस्स णं दे० ! मणियारे विउलं अत्थसंपदाणं दलयति, त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेह २, पच्चप्पिणह, तेवि तहेव पच्चप्पिणंति; तते णं रायगिहे इमेयारूवं घोसणं सोचा णिसम्म बहवे वेज्जा य, वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य, सत्थकोसहत्थगया य, कोसगपायहत्थगया य, सिलियाहत्थगया य, गुलिया० य ओसहभेसज्जहत्थगया य सएहिं २, गिहेहिंतो निक्खमंति २, रायगिहं मज्झंमज्झेणं जेणेव णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवा० २, णंदस्स सरीरं पासंति, तेसिं रोयायंकाणं णियाणं पुच्छंति, णंदस्स मणियार० बहूहिं उव्वलणेहि य, उवट्टणेहि य, सिणेहपाणेहि य, वमणेहि य, विरेयणेहि य, सेयणेहि य, अवदहणेहि य, अवण्हाणेहि य, अणुवासणेहि य, वत्थिकम्मेहि य, निरूहेहि य, सिरावेहेहि य, तच्छणाहि, य, पच्छणाहि य, सिरावेढेहि य, तप्पणाहि य, पुढवाएहि य, छल्लीहि य, वल्लीहि य, मूलेहि य, कंदेहि य, पत्तेहिं य, पुप्फेहि य, फलेहि य, बीएहि य, सिलियाहि य, गुलियाहि य, ओसहेहि य, भेसज्जेहि य, इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोयायंकाणं एगमवि रोयायंकं उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएति उवसामेत्तए, तते णं ते बहवे वेज्जा य ६ जाहे नो संचाएंति, तेसिं सोलसण्हं रोगाणं एगमवि रोगा० उव० ताहे संता तंता जाव पडिगया । तते णं नंदे तेहिं सोलसेहिं रोयायंकेहिं अभिभूते समाणे णंदापोक्खरणीए मुच्छिए ४ तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउते बद्धपएसिए अट्टदुहट्टवसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरणीए दद्दुरीए कुच्छिंसि दद्दुरत्ताए उववन्ने । तए णं णंदे दद्दुरे गब्भाओ विणिम्मुक्के

नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विह-
समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरणीए अभिरममाणे २ विह-
रति, तते णं णंदाए पोक्खरणीए बहू जणे ण्हायमाणो य पियइ य पाणियं च संवहमाणो अन्नमन्नस्स
एवमातिक्खति ४ धन्ने णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे जस्स णं इमेयारूवा णंदा पुक्खरणी चाउक्कोणा
जाव पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ० तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजी-
वियफले, तते णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं २ बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे
अब्भत्थिए ६-से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसंतपुव्वे त्तिकट्टु सुभेणं परिणामेणं जाव जाइसरणे
समुप्पन्ने, पुव्वजातिं सम्मं समागच्छति, तते णं तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए ५-एवं खलु अहं
इहेव रायगिहे नगरे णंदे णामं मणियारे अड्ढे। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं म० समोसढे,
तए णं समणस्स भगवओ० अंतिए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए जाव पडिवन्ने, तए णं अहं अन्नया
कयाइं असाहुदंसणेण य जाव मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने, तए णं अहं अन्नया कयाई गिम्हे कालसमयंसि जाव
उवसंपज्जित्ता णं विहरामि, एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदापुक्ख० वणसंडा सहाओ तं चेव सव्वं जाव
नंदाए पु० दद्दुरत्ताए उववन्ने, तं अहो णं अहं अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे
परिब्भट्ठे तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवन्नातिं पंचाणुव्वयातिं० उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं
संपेहेति २ पुव्वपडिवन्नातिं पंचाणुव्वयाइं० आरुहेति २ इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति-कप्पइ मे

जावजीवं छट्ठंछट्ठेणं अणि० अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्सविय णं पारणगंसि कप्पइ मे णंदाए पोक्खरणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्दणोलोलियाहि य वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए, इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हंति, जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरति; तेणं कालेणं २, अहं गो० !, गुणसिलए समोसढे, परिसा निग्गया; तए णं नंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हाय० ३ अन्नमन्नं०, जाव समणे ३ इहेव गुणसिलए०, तं गच्छामो णं देवाणु० समणं भगवं० वंदामो जाव पज्जुवासामो एयं मे इह भवे परभवे य हियाए जाव अणुगामियत्ताए भविस्सइ, तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म० अयमेयारूवे अब्भत्थिए ५ समुप्पज्जित्था-एवं खलु समणे० तं गच्छामि णं वंदामि०, एवं संपेहेति २, णंदाओ पुक्खरणीओ सणियं २, उत्तरइ; जेणेव रायमग्गे तेणेव उवा० २, ताए उक्किट्ठाए ५, दद्दुरगईए वीतिवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, इमं च णं सेणिए राया भंभसारे ण्हाए कयकोउय० जाव सव्वालंकारविभूसिए, हत्थिखंधवरगए, सकोरंटमल्लदामेणं, छत्तेणं०, सेयवरचामरा०, हयगयरह०, महया भडचडगर०, चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे, मम पायवंदते हव्वमागच्छति; तते णं से दद्दुरे सेणियस्स रन्नो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समणे अंत· निग्घातिए कते यावि होत्था, तते णं से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे आधारणि·

१ °ति२त्ता,जा० अ।

ज्ञमि तिकट्टु एगंतमवक्कमति० करयलपरिग्गहियं० नमोऽत्थु णं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउकामस्स पुव्विंपिय णं मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए थूलए पाणातिवाए पच्चक्खाए जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, तं इयाणिंपि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परि० पच्च० जावजीवं सव्वं असण ४, पच्च० जावजीवं जंपिय इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव मा फुसंतु एयंपि णं चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्तिकट्टु, तए णं से ददुरे कालमासे कालं किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे, ददुरवडिंसए विमाणे, उववायसभाए, ददुरदेवत्ताए उववन्ने; एवं खलु गो० !, ददुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा ३। ददुरस्स णं भंते ! देवस्स केवतिकालं ठिई पण्णत्ता ?, गो० !, चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पं०, से णं ददुरे देवे० महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, बुज्झि० जाव अंतं करेहिइ य। एवं खलु समणेणं भग० महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्-१०१ ॥ तेरसमं णायज्झयणं समत्तं ॥ १३ ॥

'सासे'त्यादि श्लोकः प्रतीतार्थः, नवरं 'अजीरए'त्ति-आहारापरिणतिः, 'दिट्ठीमुद्धसूले'त्ति-दृष्टिशूलं-नेत्रशूलं, मूर्द्धशूलं-मस्तकशूलं, 'अकारए'त्ति-भक्तद्वेषः, 'अच्छिवेयणे'त्यादि, श्लोकातिरिक्तं, 'कंडु'त्ति-खर्जुः, 'दउदरे'त्ति-दकोदरं-जलोदरमित्यर्थः, 'सत्थकोसे'त्यादि, शस्त्रकोशः-क्षुरनखरदनादिभाजनं [redacted] हस्ते गतः-स्थितो येषां ते तथा, एवं सर्वत्र, नवरं शिलिकाः-किराततिक्तकादितृणरूपाः प्रतलपाषाणरूपा [redacted] शस्त्रतीक्ष्णीकरणार्थाः, तथा गुटिका-द्रव्यसंयोगनि-

स्पादितगोलिकाः ओषधमेषजे तथैव 'उज्वलणेही'त्यादि, उद्वेलनानि-देहोपलेपनविशेषाः यानि देहाद्धस्तामर्शनेनापनीयमानानि मलादिकमादायोद्वलंतीति उद्वर्त्तनानि-तान्येव विशेषस्तु लोकरूढिसमवसेय इति, स्नेहपानानि-द्रव्यविशेषपक्वघृतादिपानानि वमनानि च प्रसिद्धानि विरेचनानि-अधोविरेकाः स्वेदनानि-सप्तधान्यकादिभिः अवदहनानि-दम्भनानि अपस्नानानि-स्नेहापनयनहेतुद्रव्यसंस्कृतजलेन स्नानानि अनुवासनाः-चर्मयन्त्रप्रयोगेणापानेन जठरे तैलविशेषप्रवेशनानि वस्तिकर्माणि-चर्मवेष्टनप्रयोगेण शिरःप्रभृतीनां स्नेहपूरणानि गुदे वा वर्त्त्यादिक्षेपणानि निरूहा-अनुवासना एव केवलं द्रव्यकृतो विशेषः शिरोवेधा-नाडीवेधनानि रुधिरमोक्षणानीत्यर्थः तक्षणानि-त्वचः क्षुरप्रादिना तनूकरणानि प्रक्षणानि-ह्रस्वानि त्वचो विदारणानि शिरोवस्तयः-शिरसि बद्धस्य चर्मकोशस्य संस्कृततैलापूरलक्षणाः, प्रागुक्तानि बस्तिकर्माणि सामान्यानि अनुवासनानिरूहशिरोवस्तयस्तु तद्भेदाः, तर्प्पणानि-स्नेहद्रव्यविशेषैर्बृंहणानि, पुटपाकाः-कुष्ठिकानां कणिकावेष्टितानामग्निना पचनानि, अथवा-पुटपाकाः-पाकविशेषनिष्पन्ना औषधविशेषाः, छल्ल्यो-रोहिणीप्रभृतयः, वल्ल्यो-गुडूचीप्रभृतयः, कन्दादीनि प्रसिद्धानि एवमिच्छन्ति एकमपि रोगमुपशमयितुमिति, 'निबद्धाउए'त्ति-प्रकृतिस्थित्यनुभागबन्धापेक्षया, 'बंधपएसिए'त्ति-प्रदेशबन्धापेक्षयेति, 'अंतनिग्घाइए'त्ति-निर्घातितान्तः, 'सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि' इत्यनेन यद्यपि सर्वग्रहणं तथापि तिरश्चां देशविरतिरेव, इहार्थे गाथे-"तिरियाणं चारित्तं निवारियं अह य तो पुणो तेसिं। सुव्वइ बहुयाणंपि हु महव्वयारोहणं समए ॥१॥ न महव्वयसब्भावेवि चरणपरिणामसम्भवो तेसिं। न बहुगुणाणंपि जओ केवलसंभूइपरिणामो ॥२॥" इति

गा० १ तिरश्चां चारित्रं निवारितं अथ च तदा पुनस्तेषां श्रूयते बहूनामपि महाव्रतारोपणं समये ॥ १ ॥ न महाव्रतसद्भावेऽपि चरणपरिणामसंभवस्तेषां । बहुगुणानामपि न यतः केवलसंभूतिपरिणामः ॥२॥

इह यद्यपि सूत्रे उपनयो नोक्तः तथाऽप्येवं द्रष्टव्यः–"संपन्नगुणोवि जओ सुसाहुसंसग्गिवज्जिओ पायं। पावइ गुणपरिहाणिं दद्दुरजीवोव्व मणियारो ॥ १ ॥" त्ति, अथवा–तित्थयरवंदणत्थं चलिओ भावेण पावइ सग्गं। जह दद्दुरदेवेणं पत्तं वेमाणियसुरत्तं ॥ २ ॥" त्ति समाप्तमिदं त्रयोदशज्ञाताध्ययनविवरणम् ॥ १३ ॥

॥ १४-श्रीतेतलिपुत्रज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ चतुर्दशज्ञातं विव्रियते–अस्य चायं पूर्वेण सहाभिसम्बन्धः–पूर्वस्मिन् सतां गुणानां सामग्र्यभावे हानिरुक्ता, इह तु तथाविधसामग्रीसद्भावे गुणसम्पदुपजायते इत्यभिधीयते, इत्येवं सम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते !, तेरसमस्स ना० अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं २, तेयलिपुरं नाम नगरं, पमयवणे उज्जाणे, कणगरहे राया, तस्स णं कणगरहस्स पउमावती देवी, तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णामं अमच्चे, सामदंड०; तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूते, तस्स णं भद्दा नामं भारिया, तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स

सा० १ संपन्नगुणोऽपि यतः सुसाधुसंसर्गवर्जितः प्रायः। प्राप्नोति गुणपरिहाणिं दर्दुरजीव इव मणिकारः ॥ १ ॥ तीर्थंकरवन्दनार्थं चलितो भावेन प्राप्नोति स्वर्गम्। यथा दर्दुरदेवेन प्राप्तं वैमानिकसुरत्वम् ॥ १ ॥

धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया होत्था, रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण उक्किट्ठा२, तते णं पोट्टिला दारिया, अन्नदा कदाइ ण्हाता सव्वालंकारविभूसिया चेडियाचक्कवालसंपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी २ विहरति, इमं च णं तेयलिपत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचडगरआसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीतिवयति, तते णं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगगिहस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयमाणे २, पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणीं पासति २, पोट्टिलाए दारियाए रूवे य ३ जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति२, एवं व०–एस णं देवा० !, कस्स दारिया किंनामधेज्जा ?, तते णं कोडुंबियपुरिसे तेयलिपुत्तं एवं वदासी–एस णं सामी !, कलायस्स मूसियारदारयस्स धूता, भद्दाए अत्तया, पोट्टिला नामं दारिया रूवेण य जाव सरीरा; तते णं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेति२, एवं व०–गच्छह णे तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलादस्स मूसियार० धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह, तते णं ते अब्भंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ० करय० तहत्ति जेणेव कालयस्स मूसि० गिहे तेणेव उवागया, तते णं से कलाए मूमियारदारते पुरिसे एज्जमाणे पासति२, हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेति २, सत्तट्ठपदातिं अणुगच्छति २, आसणेणं उवणिमंतेति २, आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं व०–संदिसंतु णं देवाणु० !,

किमागमणपओयणं ?; तते णं ते अब्भितरट्ठाणिज्जा पुरिसा कलायमूसिय० एवं व०-अम्हे णं देवाणु० !, तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, तं जति णं जाणसि देवाणु० जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, ता भण देवाणु० !, किं दलामो सुकं ?, तते णं कलाए मूसियारदारए ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वदासी-एस चेव णं दे० !, मम सुंके जन्नं तेतलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेणं अणुग्गहं करेति, ते ठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असण४, पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेणं सकारेइ स० २, पडिविसज्जेइ; तए णं कलायस्सवि मूसि० गिहाओ पडिनि० २, जेणेव तेयलिपुत्ते अ० तेणेव एवा०, तेयलिपु० एयमट्ठं निवेयंति; तते णं कलादे मूसियदारए अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकारभूसियं सीयं दुरूहइ२त्ता मित्तणाइसंपरिवुडे सातो गिहातो पडिनिक्खमति २, सव्विड्ढीए तेयलीपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेतलिस्स गिहे तेणेव उवा०, पोट्टिलं दारियं तेतलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयति; तते णं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासति२, पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरूहति २, सेतापीतएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेति २, अग्गिहोमं करेति २, पाणिग्गहणं करेति २, पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाति जाव परिजणं विपुलेणं असणपाणखातिमसातिमेणं पुप्फ जाव पडिविसज्जेति; तते

1 पुप्फवत्थ जा० अ।

णं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरति ॥ सूत्रम्-१०२ ॥ तते णं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिते ४, जाते २, पुत्ते वियंगेति, अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदति, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदति, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठएवि कन्नसक्कुलीएवि नासापुडाइं फालेति, अंगमंगाति वियंगेति; तते णं तीसे पउमावतीए देवीए अन्नया पुव्वरत्ताव० अयमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था ४-एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेति जाव अंगमंगाइं वियंगेति, तं जति अहं दारयं पयायामि सेयं खलु ममं तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए, त्तिकट्टु एवं संपेहेति २, तेयलिपुत्तं अमच्चं सद्दावेति२, एवं व०-एवं खलु देवा० !, कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेति तं जति णं अहं देवाणु० !, दारगं पयायामि; तते णं तुमं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि, तते णं से दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणे भविस्सति, तते णं से तेयलिपुत्ते पउमावतीए एयमट्ठं पडिसुणेति२ पडिगए, तते णं पउमावतीय देवीए पोट्टिलाय अमच्चीए सयमेव गब्भं गेण्हति सयमेव परिवहति, तते णं सा पउमावती नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया, जं रयणिं च णं पउमावती दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिलावि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं

१ मम अ ।

दारियं पयाया, तते णं सा पउमावती देवी अम्मधाइं सद्दावेति २, एवं व०-गच्छह-णं तुमे अम्मो !
तेयलिगिहे तेयलिपु० रहस्सिययं चेव सद्दावेह; तते णं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेति२, अंतेउरस्स
अवदारेणं निग्गच्छति२, जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवा०२, करयल जाव एवं
वदासी-एवं खलु देवा० !, पउमावती देवी सद्दावेति; तते णं तेयलिपुत्ते अम्मधातीए अंतिए एयमट्ठं
सोच्चा हट्ठ२, अम्मधातीए सद्धिं सातो गिहाओ णिग्गच्छति२, अंतेउरस्स अवदारेणं रहस्सियं चेव अणु-
पविसति२, जेणेव पउमावती तेणेव उवाग० करयल० एवं व०-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जं मए कायव्वं?,
तते णं पउमावती तेयलीपुत्तं एवं व०-एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगेति अहं च णं देवा० ! दारगं
पयाया तं तुमं णं देवाणु० !, तं दारगं गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सति त्तिकट्टु तेय-
लिपुत्तं दलयति; तते णं तेयलिपुत्ते पउमावतीए हत्थातो दारगं गेण्हति, उत्तरिज्जेणं पिहेति २, अंतेउरस्स
रहस्सियं अवदारेणं निग्गच्छति२, जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवा० २, पोट्टिलं एवं
व०-एवं खलु देवाणु० !, कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेति अयं च णं दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमा-
वईए अत्तए तेणं तुमं देवा० !, इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य, संगोवेहि
य, संवड्ढेहि य; तते णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावतीए य आहारे भविस्सति
त्तिकट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवति पोट्टिलाओ पासाओ तं विणिहायमावन्नियं दारियं गेण्हति २, उत्तरि-

ज्ञेणं पिहेति२, अंतेउरस्स अवदारेणं अणुपविसति २, जेणेव पउमावती देवी तेणेव उवा०२, पउमावतीए देवीए पासे ठावेति२, जाव पडिनिग्गते। तते णं तीसे पउमावतीए अंगपडियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नियं च दारियं पयायं पासंति २ त्ता, जेणेव कणगरहे राया तेणेव० २ त्ता करयल०, एवं व०–एवं खलु सामी !, पउमावती देवी मइल्लियं दारियं पयाया, तते णं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेति बहूणि लोइयाइं मयकिचाइं० कालेणं विगयसोए जाते; तते णं से तेतलिपुत्ते कल्ले कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–खिप्पामेव चारगसो० जाव ठितिपडियं जम्हा णं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउ णं दारए नामेणं कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाते ॥ सूत्रम्–१०२ ॥

तते णं सा पोट्टिला अन्नया कयाई तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५, जाया यावि होत्था णेच्छइ य तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोत्तमवि सवणयाए, किं पुण दरिसणं वा परिभोगं वा ?, तते णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्त इमेयारूवे ५ जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५, आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया, नेच्छइ य तेयलिपुत्ते मम नामं जाव परिभोगं वा ओहयमणसंकप्पा जाव झियायति; तए णं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासति २, एवं व–मा णं तुमं दे० !, ओहयमणसं० तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असण ४, उवक्खडावेहि २, बहूणं समणमाहण जाव वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि, तते णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ०

तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेति२, कल्लाकल्लं महाणसंसि विपुलं असण४, जाव दवावेमाणी विहरति ॥सूत्रम्-१०४॥ तेणं कालेणं२, सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरियासमिताओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवा० २, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति२, संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति; तते णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति जाव अडमाणीओ तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठाओ, तते णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासति२ हट्ठ० आसणाओ अब्भुट्ठेति२, वंदति नमंसति२, विपुलं असण४, पडिलाभेति२, एवं व०-एवं खलु अहं अज्जाओ!, तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५, आसी इयाणिं अणिट्ठा५, जाव दंसणं वा परिभोगं वा०; तं तुब्भे णं अज्जातो सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव आहिंडह बहूणं राईसर जाव गिहाति[1] अणुपविसह तं अत्थि याइं भे अज्जाओ!, केइ कहंचि चुन्नजोए वा, मंतजोगे वा, कम्मणजोए वा, हियउड्डावणे वा, काउड्डावणे वा, आभिओगिए वा, वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइ०, मूले, कंदे, छल्ली, वल्ली, सिलिया वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा, उवलद्धपुव्वे जेणाहं तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि, तते णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दोवि कन्ने ठाइंति २, पोट्टिलं एवं वदासी-अम्हे णं देवा० ! समणीओ

1 गिहति अ ।

निग्गंथीओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पयारं कन्नेहिवि णिसामेत्तए, किमंग पुण उवदिसित्तए वा आयरित्तए? वा ?, अम्हे णं तव देवा० ! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो; तते णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं व०-इच्छामि णं अज्जाओ !, तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए; तते णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं धम्मं परिकहेंति, तते णं सा पोट्टिला धम्मं सोचा निसम्म हट्ठ०, एवं व०-सद्दहामि णं अज्जाओ !, निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वयाइं जाव धम्मं पडिवज्जित्तए, अहासुहं; तए णं सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव धम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदति, नमंसति२, पडिविसज्जेति; तए णं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ सूत्रम्-१०५ ॥

सर्वं सुगमं, नवरं 'कलाए'त्ति-कलादो नाम्ना मूषिकारदारक इति पितृव्यपदेशेनेति 'अब्भितरठाणिज्जे'त्ति-आभ्यन्तरानास्थानिलयर्थः, 'वियंगेइ'त्ति-व्यङ्गयति विगतकर्णनासाहस्ताद्यङ्गान् करोतीत्यर्थः; 'विइंतेति'त्ति-विकृन्तति छिनत्तीत्यर्थः; 'संरक्खमाणीय'त्ति-संरक्षन्त्याः आपदः सङ्गोपयन्त्याः प्रच्छादनतः, 'भिक्खाभायणे'त्ति-भिक्षाभाजनमिव भिक्षाभाजनं तदसाकं भिक्षोरिव निर्वाहकारणमित्यर्थः, 'पढमाए पोरुसीए सज्झाय'मित्यादौ यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं-'बीयाए पोरिसीए झाणं झियायइ, तईयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, भायणवत्थाणि पडिलेहेइ, भायणाणि पमज्जइ, भायणाणि उग्गाहेइ२, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छन्ति२, सुव्वयाओ अज्जाओ वंदन्ति, नमं-

सन्ति२, एवं वयासी इच्छामो ण तुम्भेहिं अब्भणुन्नाए तेयलिपुरे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुयाणस्स भिक्खाय-
रियाए अडित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया !, मा पडिबंध, तए णं ताओ अज्जयाओ सुव्वयाहिं अज्जाहिं अब्भणुण्णायाओ समा-
णीओ सुव्वयाणं अज्जाण अंतियाओ पडिस्सयाओ पडिनिक्खमिंति अतुरियमचवलमसंभंताए गतीए जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए
पुरओ रियं सोहेमाणीओ तेयलिपुरे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुयाणस्स भिक्खायरियं अडमाणीउ'त्तिं गृहेषु
समुदानं-भिक्षा गृहसमुदानं तस्मै गृहसमुदानाय भिक्षाचर्यां-भिक्षानिमित्तं विचरणं अटन्त्यः-कुर्वाणाः, 'अत्थि याइं मे'त्ति
आइंति-देशभाषायां मेत्ति-मरतीनां, 'चुण्णजोए'त्ति-द्रव्यचूर्णानां योगः स्तम्भनादिकर्मकारी, 'कम्मणजोए'त्ति-कुष्ठा-
दिरोगहेतुः, 'कम्माजोए'त्ति-काम्ययोगः-कमनीयताहेतुः, 'हियउड्डावणे'त्ति-हृदयोड्डापनं चित्ताकर्षणहेतुः, 'काउड्डा-
यणे'त्ति-कायाकर्षणहेतु', 'आभिओगिए'त्ति-पराभिभवनहेतुः, 'वसीकरणे'त्ति-वश्यताहेतुः, 'कोउयकम्मे'त्ति-सौभाग्य-
निमित्तं स्नपनादि; 'भूइकम्मे'त्ति मन्त्राभिसंस्कृतभूतिदानं ॥ १०५ ॥

तते णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालस० कुडुंबजागरियं० अयमेयारूवे अब्भ-
त्थिते० एवं खलु अहं तेतलि० पुव्विं इट्ठा[१], आसि इयाणिं अणिट्ठा० जाव परिभोगं वा तं सेयं खलु
मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वतित्तए, एवं संपेहेति२ कल्लं पाउ० जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा०२
करयलपरि० एवं व०-एवं खलु देवाणुप्पिया !, मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भ-

१ ०त्ति, तत्रयु० अ।

णुन्नाया पव्वइत्तए, तते णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं व॰-खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जति णं तुमं देवा॰, ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहिहि तोऽहं विसज्जेमि, अह णं तुमं ममं ण संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि; तते णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं तेयलिपुत्ते विपुलं असण४, उवक्खडावेति२, मित्तणातिजावआमंतेइ२ जाव सम्माणेइ२ पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहणीयं सिअं दुरूहित्ता मित्तणाति जाव परिवुडे सव्विड्डिए जाव रवेणं तेतलीपुत्तस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवा॰ सीयाओ पच्चोरुहति २ पोट्टिलं पुरतो कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छति२, वंदति-नमंसति२, एवं व॰-एवं खलु देवा॰!, मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एस णं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वतित्तए पडिच्छंतु णं देवा॰! सिस्सिणिभिक्खं दलयामि, अहासुहं मा॰ प॰, तते णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ॰ उत्तरपुर॰ सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति२ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ२, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ२, वंदति-नमंसति२, एवं व॰-आलित्ते णं भंते!, लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारस अंगाइं बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ२, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अण॰ आलोइयपडि॰ समाहिं पत्ता

१ मुंडे भवित्ता प॰ अ।

कालमासे कालं किचा अन्नतरेसु देवलोएसु देवदत्ताए उववन्ना ॥ सूत्रम्-१०६ ॥ तते णं से कणगरहे रायां अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तते णं राईसर जाव णीहरणं करेंति २ अन्नमन्नं एवं व०-एवं खलु देवाणु० ! कणगरहे राया रज्जे जाव पुत्ते वियंगित्था, अम्हे णं देवा० ! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेतली अमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवट्ठावए यावि होत्था, तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जातित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति२, जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवा०२, तेयलिपुत्तं एवं व०-एवं खलु देवाणु० ! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ, अम्हे य णं देवाणु० ! रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवा० ! कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए, तं जइ णं देवाणु० ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे तण्णं तुमं अम्हं दलाहि, जा णं अम्हे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो, तए णं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर० एतमट्ठं पडिसुणेति२, कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ २ त्ता, तेसिं ईसर जाव उवणेति२, एवं व०-एस णं देवा० !, कणगरहस्स रन्नो पुत्ते पउमावतीए देवीए अत्तए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्नो रहसिययं संवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचह, सव्वं च तेसिं उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ । तते णं ते ईसर० कणगज्झयं कुमारं महया २ अभिसिंचंति । तते णं से कणगज्झए कुमारे

राया जाए महया हिमवंतमलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ । तते णं सा पउमावती देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेति २ एवं व०-एस णं पुत्ता ! तव० रज्जे जाव अंतेउरे य० तुमं च तेतलिपुत्तस्स पहावेणं, तं तुमं णं तेतलिपुत्तं अमच्चं आढाहि, परिजाणाहि, सक्कारेहि, सम्माणेहि इंतं अब्भुट्ठेहि ठियं पज्जुवासाहि वयंतं पडिसंसाहेहि अद्धासणेणं उवणिमंतेहि भोगं च से अणुवड्ढेहि, तते णं से कणगज्झए पउमावतीए तहत्ति पडि० जाव भोगं च से वड्ढेति ॥ सूत्रम्-१०७ ॥

'रायाहीणा'इत्यादि, राजाधीनाः राज्ञो दूरेऽपि वर्त्तमाना राजवशवर्त्तिन इत्यर्थः, राजाधिष्ठितास्तेन स्वयमध्यासिताः, राजाधीनानि-राजायत्तानि कार्याणि येषां ते तथं राजाधीनकार्याः, 'सव्वं च से उट्ठाणपरियावणियं'ति-सर्वं च से-तस्य उत्थानं च-उत्पत्ति परिथापनिका च-कालान्तरं यावत् स्थितिरित्युत्थानपरियापनिकं तत्परिकथयतीति, 'वयंतं पडिसंसाहेहि'त्ति विनयप्रस्तावात् व्रजन्तं प्रतिसंसाधय-अनुव्रज, अथवा वदन्तं प्रति संश्लाघय-साधूक्तं साध्वित्येवं प्रशंसां कुर्वित्यर्थः, भोगं-वर्त्तनं ॥ १०७ ॥

तते णं से पोट्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं२, केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेति, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झति, तते णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अब्भत्थिते५, एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाति जाव भोगं च संवड्ढेति, तते णं से तेतली अभिक्खणं२, संबोहिज्जमाणेवि धम्मे नो संबुज्झति, तं सेयं खलु कणगज्झयं तेतलिपुत्तातो विप्परिणामेत्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेति२त्ता, कणगज्झयं तेत-

लिपुत्तातो विप्परिणामेइ। तते णं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाते जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं
संपरिवुडे सातो गिहातो निग्गच्छति२, जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं तेतलि-
पुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियओ पासंति ते तहेव आढायंति, परिजाणंति,
अब्भुट्ठेंति२, अंजलिपरिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य, संलवेमाणा य, पुरतो य,
पिट्ठतो य, पासतो य, मग्गतो य, समणुगच्छंति, तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवा-
गच्छति, तते णं कणगज्झए तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासति२, नो आढाति, नो परियाणाति, नो अब्भुट्ठेति;
अणाढायमाणे ३, परम्मुहे संचिट्ठति; तते णं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स रन्नो अंजलिं करेइ, तते णं से
कणगज्झए राया अणाढायमाणे, तुसिणीए, परम्मुहे संचिट्ठति; तते णं तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं
जाणित्ता भीते जाव संजातभए, एवं व०–रुट्ठे णं ममं कणगज्झए राया हीणे णं मम कणगज्झए राया
अवज्झाए णं कणगज्झए, तं ण नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण मारेहिति त्तिकट्टु भीते तत्थे य जाव सणियं
२, पच्चोसक्कोति२, तमेव आसखंधं दुरूहेति२, तेतलिपुरं मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ
गमणाए; तते णं तेयलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव पासंति ते तहा नो आढायंति, नो परियाणंति, नो
अब्भुट्ठेंति, नो अंजलि०, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति नो पुरओ य, पिट्ठओ य, पासओ य, (मग्गतो य),
समणुगच्छंति; तते णं तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा

भवति, त०-दासेति वा, पेसेति वा, भाइल्लएति वा, सावि य णं नो आढाइ २, जाविय से अब्भिंतरिया परिसा भवति, तंजहा-पियाइ वा, मातात्ति वा, जाव सुण्हाति वा, साविय णं वा नो आढाइ२; तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति२, सयणिज्जंसि णिसीयति२, एवं व०-एवं खलु अहं सयातो गिहातो निग्गच्छामि, तं चेव जाव अब्भिंतरिया परिसा नो आढाति, नो परियाणाति, नो अब्भुट्ठेति, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियातो ववरोवित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेति२, तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवति, से य विसे णो संकमति; तते णं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधे ओहरति, तत्थवि य से धारा ओपल्ला; तते णं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छति२, पासगं गीवाए बंधति२, रुक्खं दुरूहति२, पासं रुक्खे बंधति२, अप्पाणं मुयति, तत्थवि य से रज्जू छिन्ना; तते णं से तेतलिपुत्ते महतिमहालयं सिलं गीवाए बंधति२, अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयति, तत्थवि य से अगणिकाए विज्झाए; तते णं से तेतली एवं व०-सद्धेयं खलु, भो समणा वयंति सद्धेयं खलु, भो माहणा वयंति सद्धेयं खलु, भो समणा माहणा वयंति; अहं एगो असद्धेयं वयामि, एवं खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते को मेदं सद्दहिस्सति ?, सह मित्तेहिं अमित्ते को मेदं सद्दहिस्सति ?, एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं परिजणेणं, एवं खलु तेयलिपुत्ते णं अ० कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेयलिपुत्ते तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते सेविय णो कमति को मेयं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्ते नीलुप्पल

तेतलिपुत्तस्स पासगं गीवाए बंधेत्ता जाव खंधंसि ओहरिए तत्थविय से धारा ओपल्ला को मेदं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्ते महासिलयं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि जाव रज्जू छिन्ना को मेदं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडे, अग्गी विज्झाए, अप्पा मुक्के तत्थविय णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सति ?, तेतलिपुत्ते पोट्टिलारूवं विउव्वति२, को मेदं सद्दहिस्सति ?; ओहतमणसंकप्पे जाव झियाइ। तते णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वति२, तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं व०-हं भो। तेतलिपुत्ता !, पुरतो पवाए, पिट्ठओ हत्थिभयं दुहओ अचक्खुफासे मज्झे सराणि वरिसयंति, गामे पलित्ते, रन्ने झियाति, रन्ने पलित्ते गामे झियाति; आउसो !, तेतलिपुत्ता !, कओ वयामो ?; तते णं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-भीयस्स खलु भो !, पव्वज्जा सरणं, उक्कंठियस्स सदेसगमणं, छुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणं; किच्चं परं अभिओजितुकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स जितिंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवति, तते णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं व०-सुट्ठु णं तुमं तेतलिपुत्ता ! एयमट्ठं आयाणिहि त्तिकट्टु दोच्चंपि एवं वयइ२, जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सूत्रम्-१०८ ॥ तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाइसरणे समुप्पन्ने, तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिते ५, समु०-एवं खलु अहं इहेव जंबुद्दीवे२, महाविदेहे वासे पोक्खलावतीविजये पोंडरीगिणीते रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था;

तते णं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दस पुव्वातिं०, बहूणि वासाणि सामन्नपरियाए०, मासियाए०, संलेहणाए, महासुक्के कप्पे देवे; तते णं अहं ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाते; तं सेयं खलु मम पुव्वदिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, एवं संपेहेति२ सयमेव महव्वयाइं आरुहेति२, जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवा०२, असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयातिं सामाइयमातियाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं, तते णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने ॥सूत्रम्-१०९॥ तए णं तेतलिपुरे नगरे अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुंदुभीओ समाहयाओ दसद्धवन्ने कुसुमे निवाइए, दिव्वे गीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था, तते णं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे, एवं व०-एवं खलु तेतलिं मए अवज्झाते मुंडे भवित्ता पव्वतिते तं गच्छामि णं तेयलिपुत्तं अणगारं वंदामि-नमंसामि २, एयमट्ठं विणएणं भुज्जो२, खामेमि; एवं संपेहेति२, ण्हाए चाउरंगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति२, तेतलिपुत्तं अणगारं वंदति-नमंसति२, एयमट्ठं च विणएणं भुज्जो२ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ; तते णं से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइ० धम्मं परिकहेइ,

ततेणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोचा णिसम्म पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ२, समणोवासिए जाते जाव अहिगयजीवाजीवे । तते णं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाणि केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, त्तिबेमि ॥ सूत्रम्-११०॥ चउदसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १४ ॥

ममेति-ममोपरि कनकध्वजः, पाठान्तरेण 'रुट्ठे ण'मित्यादौ, हीनोऽयं मम प्रीत्येति गम्यते, अपध्यातो-दुष्टचिन्तावान् मारयिष्य दुर्ध्यातोऽहं-दुष्टचिन्ताविषयीकृतोऽहं कनकध्वजेन राज्ञा, तत्-तस्मान्न ज्ञायते केनापि कुमारेण-विरूपमारणप्रकारेण 'धारा ओपल्ल'त्ति-अपदीर्णा कुण्ठीभूतेत्यर्थः; 'अत्थाहं'ति-तीति 'खंधंसि उवहरइ' इति-स्कन्धे उपहरति विनाशयतीति, अतार यस्य तरण अस्तं-निरस्तमविद्यमानमधस्तलं प्रतिष्ठानं यस्य तदस्ताधं स्ताधो वा-प्रतिष्ठानं तदभावादस्ताघ, अतस्तत्र, मकारौ च प्राकृतत्वात्; नास्ति पुरुषः परिमाणं यस्य तत्पौरुषेयं तन्निषेधादपौरुषेयं ततः पदत्रयस्य कर्मधारयो, 'सद्धेय'मित्यादि, श्रद्धेयं श्रमणा वदन्ति आत्मपरलोकपुण्यपापादिकमर्थजातं, अतीन्द्रियस्यापि तस्य प्रमाणाबाधितत्वेन श्रद्धानगोचरत्वात्, अहं पुनरेकोऽश्रद्धेयं वदामि पुत्रादिपरिवारयुक्तस्यात्यर्थं राजसम्मतस्य च अपुत्रादित्वमराजसम्मतत्वं च त्रिपखड्गपाशकजलाग्निभिरहिंस्यत्वं चात्मनः प्रतिपादयतो मम युक्तिबाधितत्वेन जनप्रतीतेरविषयत्वेनाश्रद्धेयत्वादिति प्रस्तुतसूत्रभावना, 'तए ण'मित्यादि, हं भो !, इत्यामन्त्रणे, पुरतः-अग्रतः, प्रपातो-गर्त्तः पृष्ठतो हस्तिभय, 'दुहओ'त्ति-उभयतः अचक्षुःस्पर्शः-अन्धकार मध्ये-मध्यभागे यत्र वयमास्महे तत्र शरा-बाणा निपतन्ति, ततश्च सर्वतो भयं वर्त्तते इत्यर्थः,

तथा ग्रामः प्रदीप्तोऽग्निना ज्वलति, अरण्यं तु ध्मायतेऽनुपशान्तदाहं वर्त्तते, अथवा-ध्यायतीव-ध्यायति, अग्नेरविध्यानेन जागर्त्तीत्यर्थः; अथवा-अरण्यं प्रदीप्तं ग्रामो ध्मायते न विध्यायति, एवं सर्वस्यापि भयानकत्वात् स्थानान्तरस्य चाभावादायुष्मंस्तेतलिपुत्र !, 'कउ'त्ति-क्व व्रजामः ?, भीतैर्गन्तव्यमस्माभिरिवान्येनापि भवतीति प्रश्नः; उत्तरं च भीतस्य प्रव्रज्या शरणं भवतीति गम्यते, यथोत्कण्ठितादीनां स्वदेशगमनादीनि, तत्र 'छुहियस्स'त्ति-बुभुक्षितस्य मायिनो-वंचकस्य रहस्यं-गुप्तत्वं शरणमिति सर्वत्र गमनीयं, अभियुक्तस्य-सम्पादितदूषणस्य प्रत्ययकरणं-दूषणापोहेन प्रतीत्युत्पादनं अध्वानं अरियतो (अध्वपरिश्रान्तस्य)-गन्तुमशक्तस्य वाहनगमनं-शकटाद्यारोहणं तरीतुकामस्य नद्यादिकं प्लवनं-तरणं कृत्यं-कार्यं यस्य तत् प्लवनकृत्यं-तरकाण्डं परमभियोक्तुकामस्य-अभिभवितुकामस्य सहायकृत्यं-मित्रादिकृतं सहायकर्मेति, अथ कथं भीतस्य प्रव्रज्या शरणं भवति, अत उच्यते-'खंते'त्यादि, क्षान्तस्य क्रोधनिग्रहेण, दान्तस्येन्द्रियनोइन्द्रियदमेन, जितेन्द्रियस्य विषयेषु रागादिनिरोद्धुः, 'एत्तो'त्ति-एतेभ्योऽनन्तरोदितेभ्योऽग्रतः प्रपातादिभ्यो भयेभ्यः एकमपि भयं न भवति, प्रव्रजितस्य सामायिकपरिणत्या शरीरादिषु निरभिष्वङ्गत्वात् मरणादिभयाभावादिति, एवं देवेनामात्यः स्ववाचा भीतस्य प्रव्रज्या श्रेयसीत्यभ्युपगमं कारयित्वा एवमुक्तः; 'सुट्ठु'इत्यादि, अयमर्थो-भीतस्य प्रव्रज्या शरणमिति, यदि प्रतिज्ञायते तदा सुष्ठु ते मतं, भयाभिभूतस्त्वमिदानीमसीति एतमर्थमाजानीहि-अनुष्ठानद्वारेणावबुध्यस्व प्रव्रज्यां विधेहीति यावत् । इह च यद्यपि सूत्रे उपनयो नोक्तः तथाप्येवं द्रष्टव्यः,-जाव न दुक्खं पत्ता माणब्भंसं च पाणिणो पायं । ताव न धम्मं गेण्हंति भावओ तेयलीसुउव्व ॥ १ ॥

समाप्तमिदं चतुर्दशज्ञाताध्ययनविवरणम् ॥ १४ ॥

सा०—प्र णिनः प्रायेण तावन्न धर्मं गृह्णन्ति भावतः, यावद् दुःखं न प्राप्ता मानभ्रंशं च तेतलिसुतवत् ॥ १ ॥

॥ १५-श्रीनन्दीफलाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अधुना पञ्चदशं विव्रियते, अस्य चैवं पूर्वेण सह सम्बन्धः-पूर्वस्मिन्नपमानाद्विपपत्यागः प्रतिपादितः, इह तु जिनोपदे-
शात्, तत्र च मत्यर्थप्राप्तिस्तदभावे त्वनर्थप्राप्तिरभिधीयत इत्येवंसम्बद्धमिदम्—
जति णं भंते !, चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पन्नरसमस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?; एवं खलु
जंबु !, तेणं कालेणं२, चंपा नाम नयरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए, जियसत्तू राया; तत्थ णं चंपाए नयरीए धण्णे
णामं सत्थवाहे होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए; तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए अहि-
च्छत्ता नाम नयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा वन्नओ; तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं
राया होत्था, महया वन्नओ, तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमे-
यारूवे अब्भत्थिते चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमा-
याए अहिच्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तए, एवं संपेहेतिर, गणिमं च ४ चउव्विहं भंडं गेण्हइ२, सगडी-
सागडं सज्जेइ२, सगडीसागडं भरेति२, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति२, एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा० !
चंपाए नगरीए सिंघाडग जाव पहेसु एवं खलु देवाणु० ! धण्णो सत्थवाहे विपुले पणिय० इच्छति, अहि-
च्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तते, तं जो णं देवाणु० !, चरए वा चीरिए वा, चम्मखंडिए वा, भिच्छुंडे वा
पंडुरगे वा, गोतमे वा, गोवतीते वा, गिहिधम्मे वा, गिहिधम्मचिंतए वा, अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपड-

निग्गंथप्पभितिपासंडत्थे वा, गिहत्थे वा, तस्स णं धण्णेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नगरिं गच्छइ; तस्स णं धण्णे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाउ दलयइ, अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ, अपत्थयण-गस्स पत्थयणं दलयइ, अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ, अंतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गसाहेज्जं दलयति, सुहंसुहेण य णं अहिच्छत्तं संपावेति त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसेह२, मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह; तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव एवं व०-हंदि सुणंतु भगवंतो चंपानगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से कोडुंबियघोसणं सुच्चा चंपाए णयरीए बहवे चरगा य जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छन्ति, तते णं धण्णे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव पत्थयणं दलाति, गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया!, चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा चिट्ठह, तते णं चरगा य० धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति, तते णं धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ२ त्ता, मित्तनाई आमंतेति२, भोयणं भोयावेति२, आपुच्छति२, सगडीसागडं जोयावेति२, चंपानगरीओ निग्गच्छति; णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे२ सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छति२, सगडीसागडं मोयावेति२, सत्थणिवेसं करेति२, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति; एवं व-तुब्भे णं देवा०

१ ०ति २ त्ता ए० अ।

मम सत्थनिवेसंसि महयार, सद्देणं उग्घोसेमाणा२, एवं वदह–एवं खलु देवाणु० ! इमीसे आगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णंदिफला नामं रुक्खा पन्नत्ता, किण्हा जाव पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अतीव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, मणुण्णा वन्नेणं ४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए, तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेति छायाए वा वीसमति, तस्स णं आवाए भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणा२, अकाले चेव जीवियातो ववरोवेंति, तं मा णं देवाणुप्पिया ! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ, मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियातो ववरोविज्जिस्सति; तुब्भे णं देवाणु० ! अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेण छायासु वीसमहत्ति घोसणं घोसेह जाव पच्चप्पिणंति, तते णं धण्णे सत्थवाहे सगडीसागडं जोएति२, जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छति२, तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थणिवेसं करेति२, दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दा वेति२, एवं व०–तुब्भे णं देवाणु० !, मम सत्थनिवेसंसि महता सद्देणं उग्घोसेमाणा२, एवं वयह–एए णं देवाणु० ! ते णंदिफला किण्हा जाव मणुन्ना छायाए तं जो णं देवाणु० ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद० पुप्फ० तय० फल० जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति, तं मा णं तुब्भे जाव दूरं दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा णं अकाले जीवितातो ववरोविस्संति, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव

वीसमइ त्ति कट्टु घोसणं पच्चप्पिणंति, तत्थ णं अत्थेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति जाव रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणा तेसिं नंदिफलाणं दूरं दूरेण परिहरमाणा२, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए नो भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणा२, सुहरूवत्ताए ५ भुज्जो२, परिणमंति; एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा२ जाव पंचसु कामगुणेसु नो सज्जेति, नो रज्जेति; से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ अचणिज्जे परलोए नो आगच्छति जाव वीतीवतिस्सति; तत्थ णं जे से अप्पेगतिया पुरिसा धण्णस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति२, धण्णस्स एतमट्ठं असद्दहमाणा२, जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति२, तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए पंचसु कामगुणेसु सज्जेति२ जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व ते पुरिसा, तते णं से धण्णे सगडीसागडं जोयावेति२ जेणेव अहिच्छत्ता नगरी तेणेव उवागच्छति२, अहिच्छत्ताए णयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेति२, सगडीसागडं मोयावेइ; तए णं से धण्णे सत्थवाहे महत्थं३, रायरिहं पाहुडं गेण्हइ२, बहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति, करयल जाव वद्धावेइ, तं महत्थं३, पाहुडं उवणेइ; तए णं से कणगकेऊ राया हट्ठतुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं३, जाव पडिच्छइ२, धण्णं सत्थवाहं सक्कारेइ, सम्माणेइ२, उस्सुक्कं वियरति २, पडिविसं-

ज्जेइ; भंडविणिमयं करेइ२, पडिभंडं गेण्हतिर, सुहंसुहेणं जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छतिर, मित्त-नाति० अभिसमन्नागते विपुलाइं माणुस्सगाइं जाव विहरति; तेणं कालेणं २ थेरागमणं धण्णे धम्मं सोचा, जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए एक्कारस सामाइयातिं अंगातिं बहूणि वासाणि जाव मासियाए सं० अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं करेति। एवं खलु जंबू!, समणेणं भगवया महावीरेणं पन्नरसस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ सूत्रम्-१११ ॥

पन्नरसमं नायज्झयणं समत्तं।

सर्वं सुगमं नवरं 'चरए वे' त्यादि, तत्र चरको-धाटिभिक्षाचरः, चीरिको-रथ्यापतितचीवरपरिधानः, चीरोपकरण इत्यन्ये; चर्मखण्डकः-चर्मपरिधानः, चर्मोपकरण इति चान्ये; भिक्षाण्डो-भिक्षाभोजी सुगतशासनस्थ इत्यन्ये, पाण्डुरागः-शैवः, गौतमः-लघुतराक्षमालाचर्चितविचित्रपादपतनादिशिक्षाकलापवद्वृषभकोपायतः कणभिक्षाग्राही गोव्रतिकः-गोश्चर्यानुकारी, उक्तं च-"गावीहिं समं निग्गमपवेसठाणासणाइ पकरेंति भुंजंति। जहा गावी तिरिक्खवासं विभावेंता ॥१॥ गृहिधर्मा-गृहस्थ-धर्म एव श्रेयानित्यभिसन्धाय तद्यथोक्तकारी धर्मचिन्तको-धर्मसंहितापरिज्ञानवान् सभासदः अविरुद्धो-वैनयिकः, उक्तं च-"अविरुद्धो विणयकारी देवाईणं पराए भत्तीए। जह वेसियायणसुओ एवं अन्नेवि नायव्वा ॥ २ ॥" विरुद्धो-अक्रियावादी

सा० १ गोभि. समं प्रवेशनिर्गमस्थानासनादि प्रकुर्वन्ति। भुञ्जन्ति यथा गावस्तिर्यग्वासं विभावयन्तः ॥ १ ॥
२ अविरुद्धो विनयकारी देवादीनां परया भक्त्या। यथा वैश्यायनसुत एवमन्येऽपि ज्ञातव्याः ॥ २ ॥

परलोकानभ्युपगमात् सर्ववादिभ्यो विरुद्धः, एवं वृद्धः-तापस प्रथममुत्पन्नत्वात् प्रायो वृद्धकाले च दीक्षाप्रतिपत्तेः श्रावको-ब्राह्मणः, अन्ये तु वृद्धश्रावक इति व्याचक्षते, स च ब्राह्मण एव, रक्तपटः-परिव्राजको निर्ग्रन्थः-साधु प्रभृतिग्रहणात् कापिलादिपरिग्रह इति, 'पत्थयणं'ति पथ्यदनं-शम्बलं 'पक्खिवं' ति अर्द्धपथे त्रुटितशम्बलस्य शम्बलपूरणं द्रव्यं प्रक्षेपकः, 'पडियस्स' त्ति वाहनात्पतितस्य रोगे वा पतितस्य, 'भग्गरुग्गस्स' त्ति वाहनात् स्खलनाद्वा पतने भग्नस्य रुग्णस्य च जीर्णतां गतस्येत्यर्थः, 'हंदि'त्ति-आमन्त्रणे, 'नाइविगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं'ति-नातिविप्रकृष्टेषु-नातिदीर्घेष्वध्वसु-प्रयाणकमार्गेषु वसन् शुभैरनुकूलैः 'वसतिपातरासेहिं'-आवासस्थानैः प्रातर्भोजनकालैश्चेत्यर्थः, 'देसग्गं'ति-देशान्तं । इहोपनयः सूत्राभिहित एव, विशेषतः पुनरेवं तं प्रतिपादयन्ति-" चंपा इव मणुयगती धणोव भयवं जिणो दएंकरसो । अहिछत्तानयरिसमं इह निव्वाणं मुणेयव्वं ॥ १ ॥ घोसणया इव तित्थंकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्घं । चरगाइणोव इत्थं सिव-सुहकामा जिया बहवे ॥ २ ॥ नंदिफलाइ व्व इहं सिवपहपडिवण्णगाण विसया उ । तब्भक्खणाओ मरणं जह तह विसएहिं संसारो ॥ ३ ॥ तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तहा । परमानंदनिबंधणसिवपुरगमणं मुणेयव्वं ॥ ४ ॥

समाप्तमिदं पञ्चदशज्ञातविवरणम् ॥ १५ ॥

सा० चम्पेव मनुष्यगतिर्धन इव भगवान् जिनो दयैकरसः अहिच्छत्रानगरीसममिह निर्वाणं ज्ञातव्य ॥ १ ॥ घोषणमिव तीर्थकरस्य शिवमार्गदेशन-महर्घं । चरकादिवदत्र शिवसुखकामा जीवा बहवः ॥ २ ॥ नन्दीफलानीवेह शिवपथप्रतिपन्नानां विषयाः । तद्भक्षणात् मरणं यथा तथेह विषयैः संसारः ॥ ३ ॥ तद्वर्जनेनेष्टपुरगमो यथा विषयवर्जनेन तथा । परमानन्दनिबन्धनशिवपुरगमनं ज्ञातव्यं ॥ ४ ॥

॥ १६–श्रीअपरकङ्काख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ षोडशं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–पूर्वत्र विषयाभिष्वङ्गस्यानर्थफलतोक्ता, इह तु तद्विषयनिदानस्य सोच्यते इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते ! स० भ० म० पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे प० सोलसमस्स णं णायज्झयणस्स णं सम० भग० महा० के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ चंपा नाम नयरी होत्था, तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भातरो परिवसंति, तंजहा–सोमे, सोमदत्ते, सोमभूती; अड्ढा जाव रिउव्वेद ४ जाव सुपरिनिट्ठिया, तेसि णं माहणाणं तओ भारियातो होत्था, तं०–नागसिरी, भूयसिरी, जक्खसिरी; सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ विपुले माणुस्सए जाव विहरंति। तते णं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था, एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विपुले धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाए० तं सेयं खलु अम्हं देवाणु० अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विपुलं असणं ४ उवक्खडेउं २ परिभुंजमाणाणं विहरित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुलं असणं ४ उवक्खडावेंति

२ परिभुंजमाणा विहरंति, तते णं तीसे नागसिरिए माहणीए अन्नदा भोयणवारए जाते यावि होत्था, तते णं सा नागसिरी विपुलं असणं ४, उवक्खडेति २; एगं महं सालतियं तित्तालाउअं बहुसंभारसंजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडावेति, एगं बिंदुयं करयलंसि आसाएइ तं खारं कडुयं अक्खज्जं अभोज्जं विसब्भूयं जाणित्ता एवं व०-धिरत्थु णं मम नागसिरीए अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिंबोलियाए जीए णं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए सुबहुदव्वक्खएणं, नेहक्खए य कए, तं जति णं ममं जाउयाओ जाणिस्संति, तो णं मम खिंसिस्संति, तं जाव ताव ममं जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेयं एयं सालतियं तित्तालाउं बहुसंभारणेहकयं एगंते गोवेत्तए, अन्नं सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए, एवं संपेहेति २ तं सालतियं जाव गोवेइ, अन्नं सालतियं महुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासणवरगयाणं तं विपुलं असण ४, परिवेसेति; तते णं ते माहणा जिमितभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था, तते णं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असण ४, आहारेंति २; जेणेव सयाइं २ गेहाइं तेणेव उवा० २ सककम्मसंपउत्तातो जायातो सूत्रम्-११२ ॥ तेणं कालेणं २, धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा, जेणेव चंपा नामं नगरी, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे, तेणेव उवा० २ अहापडिरूवं जाव विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया; तए णं

१६-श्री-
अपर०
ज्ञाताध्य०
ब्राह्मण-
भोजनादि-
वर्णन-
सूत्रम् ।

तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरति, तते णं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, २ बीयाए पोरसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेति २ तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे, जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे; तते णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासति २ त्ता, तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहु० णेहा० निसिरणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठेति २ जेणेव भत्तघरे तेणेव उवा० २ तं सालतियं तित्तकडुयं च बहुनेहं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ, तते णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमिति कट्टु णागसिरीए माहणीए गिहातो पडिनिक्खमति २ चंपाए नगरीए मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमति २, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाणं पडिदंसेइ २, अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेति; तते णं ते धम्मघोसा थेरा तस्स सालइतस्स नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा, ततो सालइयातो नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसादेति तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वदासी-जति णं तुमं देवाणु० ! एयं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवितातो ववरोविज्जसि, तं मा णं तुमं देवाणु० ! इमं सालतियं जाव आहारेसि, मा णं तुमं अकाले चेव जीविताओ ववरोविज्जसि, तं गच्छ णं तुमं देवाणु० !

इमं सालतियं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले परिट्ठवेहि २, अन्नं फासुयं एसणिज्जं असण ४, पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि; तते णं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमति २, सुभूमिभागउज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्लं पडिलेहेति २; ततो सालइयातो एगं बिंदुगं गहेइ २, थंडिलंसि निसिरति; तते णं तस्स सालतियस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउ॰ जा जहा य णं पिपीलिका आहारेति सा तहा अकाले चेव जीवितातो ववरोविज्जति, तते णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए ५-जइ ताव इमस्स सालतियस्स जाव एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाति पिपीलिकासहस्साइं ववरोविज्जंति, तं जति णं अहं एयं सालइयं थंडिल्लंसि सव्वं निसिरामि, तते णं बहूणं पाणाणं ४ वहकरणं भविस्सति; तं सेयं खलु ममेयं सालइयं जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए, मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउ त्तिकट्टु एवं संपेहेति २, मुहपोत्तियं २, पडिलेहेति २, ससीसोवरियं कायं पमज्जेति २, तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूतेणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवति; तते णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा, तते णं से धम्मरुची अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमितिकट्टु आयारभंडगं एगं ते ठवेइ२ थंडिल्लं पडिलेहेति २ दब्भसंथारगं संथारेइ२ दब्भसंथारगं दुरूहति२

पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं एवं व०–नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं, पुव्विंपि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे; इयाणिंपि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाति० पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जावजीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्तिकट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए, तते णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरं गयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति२ एवं व०, एवं खलु देवाणु० ! धम्मरुइस्स अणगारस्स मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गते चिराति तं गच्छह णं तुब्भे देवाणु० ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेह, तते णं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति२ धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति२, धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति२, धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निचेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति२, हा हा अहो अकज्जमितिकट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, धम्मरुइस्स आयारभंडगं गेण्हंति२, जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति२, गमणागमणं पडिक्कमंति२, एवं व०–एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो२ सुभूमिभागस्स उ० परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वं जाव करेमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवा०२ जाव इहं

हव्वमागया, तं कालगए णं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए, तते णं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति२, समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति२ एवं व०-एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तए णं सा नागसिरी माहणी जाव निसिरइ, तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु जाव कालं अणवकंखेमाणे विहरति, से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किचा उड्ढं सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता, से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ॥ सूत्रम्-११३ ॥ तं धिरत्थु णं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चेवे जीवितातो ववरोविए, तते णं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एतमट्ठं सोचा णिसम्म चंपाए सिंघाडगतिगजाव बहुजणस्स एवमातिक्खंति-धिरत्थु णं देवा० ! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालतिएणं जीवियाओ ववरोवेइ, तए णं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमा-

तिक्खति एवं भासति–धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविते, ततेणं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोचा निसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति२, णागसिरीं माहणीं एवं वदासी–हं भो ! नागसिरी ! अपत्थियपत्थिए दुरंतपंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाते जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहुरूवे मासखमणपारणगंसि सालतिएणं जाव ववरोविते, उच्चावएहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति, उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडेंति तज्जेंति तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयातो गिहातो निच्छुभंति; ततेणं सा नागसिरी सयातो गिहातो निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडगतियचउक्कचचरचउम्मुह० बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी २ दंडीखंडनिवसणा खंडमल्लयखंडघडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेहंगेहेणं देहंबलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरति, ततेणं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तंजहा–"सासे कासे जोणिसूले जाव कोढे," तए णं सा नागसिरी माहणी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूता समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किचा, छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु नरएसु नेरइयत्ताते उववन्ना; सा णं तओऽणं-

नरंसि उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववन्ना, तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतिए कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तित्तीसंसागरोवमट्ठितीएसु नेरइएसु उववन्ना, सा णं ततोऽणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उववज्जति, तत्थविय णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीस-सागरोवमट्ठितीएसु नेरइएसु उववज्जति, सा णं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववन्ना, तत्थविय णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं० तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता नरएसु एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाए सत्तसु उववन्ना, ततो उव्वट्टित्ता जाव इमाइं खहयरविहाणाइं जाव अदुत्तरं च णं खरबायरपुढविकाइयत्ताते तेसु अणेगसतसहस्स खुत्तो ॥सूत्रम्-११४॥

सर्वं सुगमं, नवरं 'सालइयं'ति-शारदिकं सारेण वा-रसेन चितं-युक्तं सारचितं, 'तित्तालाउयं'ति-कटुकतुम्बकं 'बहुसंभारसंजुत्तं'-बहुभिः सम्भारद्रव्यैः-उपरि प्रक्षेपद्रव्यैस्त्वगेलाप्रभृतिभिः संयुक्तं यत्तथा 'स्नेहावगाढं'-स्नेहव्याप्तं 'दूभगसत्ताए'त्ति-दुर्भगः सत्त्वः-प्राणी यस्याः सा तथा, 'दूभगनिंबोलियाए'त्ति-निम्बगुलिकेव-निम्बफलमिव अत्य-नादेयत्वसाधर्म्यात् दुर्भगाणां मध्ये निम्बगुलिका दुर्भगनिम्बगुलिका, अथवा-दुर्भगानां मध्ये निबोलिता-निमज्जिता-दुर्भ-गनिबोलिता, 'जाउयाउ'त्ति-देवराणां जाया भार्या इत्यर्थः; 'बिलमिवे'त्यादि, बिले इव-रन्ध्रे इव पन्नगभूतेन-सर्पकल्पेन आत्मना करणभूतेन सर्वं तदलाबु शरीरकोष्ठके प्रक्षिपति, यथा किल बिले सर्प्प आत्मानं प्रक्षिपति पार्श्वान् असंस्पृशन् एवमसौ वदनकन्दरपार्श्वान् असंस्पृशन् आहारेण तदसञ्चारणतस्तदलाबु जठरबिले प्रवेशितवानिति भाव 'गमणागमणाए

पडिक्कमंति'त्ति-गमनागमनं-ईर्यापथिकीं, 'उच्चावयाहिं'ति-असमञ्जसाभिः, 'अक्कोसणाहिं'ति-मृताऽसि त्वमित्यादिभिर्वचनैः, 'उद्धंसणाहिं'ति-दुष्कुलीनेत्यादिभिः कुलाद्यभिमानपातनार्थैः, 'निच्छुहणाहिं'ति-निःसरास्मद्गेहादित्यादिभिः, 'निच्छोडणाहिं'ति-त्यजास्मदीयं वस्त्रादीत्यादिभिः, 'तज्जेंति'त्ति-ज्ञास्यसि पापे ! इत्यादिभणनतः, 'तालिंति'त्ति-चपेटादिभिः, हीलयमाना-जात्याद्युद्घट्टनेन, खिंस्यमाना-परोक्षकुत्सनेन, निन्द्यमाना-मनसा जनेन, गर्ह्यमाणा-तत्समक्षमेव तर्ज्यमाना-अङ्गुलीचालनेन ज्ञास्यसि पापे इत्यादिभणनतः प्रव्यथ्यमाना-यष्ट्यादिताडनेन धिक्क्रियमाणा-धिक्शब्दविषयीक्रियमाणा, एवं थूत्क्रियमाणा, दण्डी-कृतसन्धानं जीर्णवस्त्रं तस्य खण्डं निवसनं-परिधानं यस्याः सा तथा, खण्डमल्लकं-खण्डशरावं भिक्षाभाजनं खण्डघटकश्च-पानीयभाजनं ते हस्तयोर्गते यस्याः सा तथा, 'फुट्ट'त्ति-स्फुटितया स्फुटितकेशसञ्चयत्वेन विकीर्णकेशं, 'हडाहडं'ति अत्यर्थं-'शीर्षं' शिरो यस्याः सा तथा, मक्षिकाचटकरेण-मक्षिकासमुदायेन अन्वीयमानमार्गा-अनुगम्यमानमार्गा मलाविलं हि वस्तु मक्षिकाभिर्वेष्ट्यते एवेति, देह बलिमित्येतस्याख्यानं देहबलिका तया, अनुस्वारो नैपातिकः, 'सत्थवज्झ'त्ति-शस्त्रवध्या जातेति गम्यते, 'दाहवक्कंतिए'त्ति-दाहव्युत्क्रान्त्या-दाहोत्पत्त्या 'स्वहयरविहाणाइं जाव अदुत्तरं चे'त्यत्र गोशालकाध्ययनसमानं सूत्रं तत एव दृश्यं, बहुत्वात्तु न लिखितं ॥११४॥

सा णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया, तते णं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं दारियं पयाया सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं तीसे दारियाए निव्वत्ते बारसाहियाए अम्मापियरो

इमं एतारूवं गोत्तं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति-जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया, तते णं तीसे दारियाए अम्मापितरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति, तए णं सा सूमालिया दा० पंचधाईपरिग्गहिया तंजहा-खीरधाईए जाव गिरिकंदर-मल्लीणा इव चंपकलया निव्वाए निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ, तते णं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबाल-भावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाता यावि होत्था ॥ सूत्रम्-११५ ॥

तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे०, तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरति, तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए सुकुमाले जाव सुरूवे, तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नदा कदाई सातो गिहातो पडिनिक्खमति२, सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीतीवयइ इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासंघपरिवुडा उप्पिं आगासतलगंसि कणगतेंदूसएणं कीलमाणी२ विहरति, तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासति२, सूमालियाए दारियाए रूवे य ३ जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति२, एवं व०-एस णं देवा० ! कस्स दारिया ?, किं वा णामधेज्जं से ?, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी-एस णं देवाणु० ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया, भद्दाए अत्तया, सूमालिया नाम दारिया, सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठा; तते णं से जिण-

दत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २ ण्हाए जाव मित्त-नाइपरिवुडे चंपाए जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तए णं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, एज्जमाणं पासइत्ता, आसणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता, आसणेणं उवणिमंतेति २, आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ?, तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवा० !, तव धूयं, भद्दाए अत्तियं, सूमालियं, सागरस्स भारियत्ताए वरेमि, जति णं जाणाह देवा० ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरस्स, तते णं देवा० ! किं दलयामो सुंकं सूमालियाए ?, तए णं से सागरदत्ते तं जिणदत्तं एवं वयासी—एवं खलु देवा० ! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमंग पुण पासणयाए तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं, तं जति णं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवति, तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि; तते णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ सागरदारगं सद्दावेति २ एवं व०—एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते स० मम एवं वयासी—एवं खलु देवा० ! सूमालिया दारिया इट्ठा तं चेव तं जति णं सागरदारए मम घरजामाउए भवइ, ता दलयामि;-तते णं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए, तते णं जिणदत्ते स० अन्नदा कदाइ

सोहणंसि तिहिकरणे विउलं असण ४ उवक्खडावेति २, मित्तणाई आमंतेइ जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ २ पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेति२, मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए सातो गिहाओ निग्गच्छति २ चंपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छति २, सीयाओ पचोरुहति २, सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेति; तते णं सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असण ४ उवक्खडावेइ २ जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरूहावेइ २ सेयापीतएहिं कलसेहिं मज्जावेति २, होमं करावेति २, सागरं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गेण्हावेति ॥ सूत्रम् ११६ ॥ तते णं सागरदारए सूमालियाए दारि० इमं एयारूवं पाणिफासं पडिसंवेदेति से जहा नाम ए असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा इतो अणिट्ठतराए चेव पाणिफासं पडिसंवेदेति, तते णं से सागरए अकामए अवसव्वसे तं मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति, तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ विउलं असण ४ पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति, तते णं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवा० २ सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तते णं ते सागरए दा० सूमालियाए दा० इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति, से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरति, तते णं से सागरए अंगफासं असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति, तते णं से

सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेति२, जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवा० २ सयणीयंसि निवज्जइ, तते णं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिवुद्धा समाणी पतिवया पइमणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेति२ जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छति२ सागरस्स पासे णुवज्जइ, तते णं से सागरदारए सूमालियाए दारि० दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठति, तते णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ२ वासघरस्स दारं विहाडेति२ मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥सूत्रम्-११७॥ तते णं सूमालिया दारिया ततो मुहुत्तंतरस्स पडिवुद्धा पतिवया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेति सागरस्स दा० सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी २ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ २ एवं व०-गए से सागरे त्तिकट्टु ओहयमसंकप्पा जाव झियायइ, तते णं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ० दासचेडियं सद्दावेति २ एवं व०-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! वहुवरस्स मुहसोहणियं उवणेहि, तते णं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणंति, मुहधोवणियं गेण्हति २ जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छति २ सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासति२ एवं व०-किन्नं तुमं देवाणु० ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ?, तते णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडियं एवं व० एवं खलु देवा० ! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेति २

वासघरदुवारं अवगुण्डति जाव पडिगए, तते णं ततो अहं मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि, गंए णं से सागरए त्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायामि, तते णं सा दासचेडी सूमालियाए दारि० एयमट्ठं सोचा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ, तते मं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तसत्थवाहगिहे तेणेव उवा० २ जिणद० एवं व०-किण्णं देवाणुप्पिया! एवं जुत्तं वा, पत्तं वा, कुलाणुरूवं वा, कुलसरिसं वा, जन्नं सागरदारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसं पइवयं विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभति, तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोचा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवा० २ सागरयं दारयं एवं व०-दुट्ठु णं पुत्ता! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमवि गते सागरदत्तस्स गिहे, तते णं से सागरए जिणदत्तं एवं व०-अवि यातिं अहं ताओ! गिरिपडणं वा, तरुपडणं वा, मरुप्पवायं वा, जलप्पवेसं वा, विसभक्खणं वा, वेहाणसं वा, सत्थोवाडणं वा, गिद्धापिट्ठं वा, पव्वज्जं वा, विदेसगमणं वा, अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामति २ लज्जिए विलीए विड्ढे जिणदत्तस्स गिहातो पडिनिक्खमइ जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २ सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ २, अंके निवेसेइ २, एवं व०-किण्णं तव पुत्ता! सागरएणं

१ तए अ। १ ०इ त्ता अ।

सुमालियं दारियं दारएणं मुक्का ?, अहं णं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सुमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ २ पडिविसज्जेइ । तए णं से सागरदत्ते सत्थ० अन्नया उप्पिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे रायमग्गं ओलोएमाणे २ चिट्ठति, तते णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडगहत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्गं तते णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०—तुब्भे णं देवा० ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असण ४ पलोभेहि २, गिहं अणुप्पवेसेह २, खंडगमल्लगं खंडघडगं ते एगंते एडेह २, अलंकारियकम्मं कारेह २, ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह २ मणुण्णं असण ४ भोयावेह २ मम अंतियं उवणेह; तए णं कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति २ जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवा० २ त्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंति २ त्ता सयं गिहं अणुपवेसिंति २ तं खंडगमल्लगं खंडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडंति, तते णं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसति, तए णं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया २ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं व०—किण्णं देवाणु० ! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसति ?, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा एवं व०—एस णं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ, तते णं से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुंबियपुरिसे एवं व०—मा णं तुब्भे देवा० ! एयस्स दमगस्स तं खंड जाव एडेह पासे ठवेह जहा णं पत्तियं

भवति, तेवि तहेव ठवेंति; तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति २ सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भंगेंति अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्वट्टणेणं गायं उव्वट्टिंति २ उसिणोदगगंधोदएणं सीतोदगेणं ण्हाणेंति, पम्हलसुकुमालगंधकासाईए गायाइं लूहंति २ हंसलक्खणं पट्टसाडगं परिहंति २, सव्वालंकारविभूसियं करेंति २, विउलं असण ४ भोयावेंति २ सागरदत्तस्स उवणेन्ति, तए णं सागरदत्ते सूमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकारभूसियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं व०-एस णं देवा० मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि भद्दियाए भद्दतो भविज्जासि, तते णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसति सूमालियाए दा० सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तते णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेति, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति २ वासघराओ निग्गच्छति२, खंडमल्लगं खंडघडं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए, तते णं सा सूमालिया जाव गए णं से दमगपुरिसे त्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायति ॥सूत्रम्-११८॥ तते णं सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं सद्दावेति २ एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेति, तते णं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवा० २सूमालियं दारियं अंके निवेसेति२ एवं व-अहो णं तुमं पुत्ता!

१ ०तिर त्ता प० श।

पुरापोराणेणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं [illegible] णं तुमं पुत्ता! ओहयमण जाव झियाहि तुमं णं पुत्ता, मम महाणसंसि विपुलं असणं ४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि; तते णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेति २ महाणसंसि विपुलं असण जाव दलमाणी विहरइ। तेणं कालेणं २ गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढ्ढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एवं वदासी-एवं खलु अज्जाओ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा नेच्छइ णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोगं वा, जस्स २ विय णं दिज्जामि तस्स २ विय णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ! बहुनायाओ एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे जे णं अहं सागरस्स दार० इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छति जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया तते, णं सा सूमालिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव बंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरति, तते णं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवा० २ वंदति नमंसति २ एवं व०-इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए, तते णं ताओ

---

१ ०वगुत्तवं० [illegible] ।

गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एवं व०-अम्हे णं अज्जे ! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु अम्हं कप्पति बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं २ जाव विहरित्तए, कप्पति णं अम्हं अंतो उवस्सयस्स वतिपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतलपतियाए आयावित्तए, तते णं सा सूमालिया गोवालिया एयमट्ठं नो सद्दहति, नो पत्तियइ, नो रोएति, एयमट्ठं अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरति ॥ सूत्रम्-११९ ॥

सुकुमालकोमलिकां-अत्यर्थं सुकुमारां, गजतालुसमानां, गजतालुकं ह्यत्यर्थं सुकुमालं भवतीति, 'जुत्तं वा' इत्यादि युक्तं-सङ्गतं, 'पत्तं'ति प्राप्तं प्राप्तकालं पात्रं वा गुणानामेष पुत्रः, श्लाघनीयं वा सदृशो वा संयोगो निवाहयोरिति, 'से जहा नामए असिपत्तेइ वा' इत्यत्र यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं। 'करपत्तेइ वा, खुरपत्तेइ वा, कलंबचीरिगापत्तेइ वा, सत्तिअग्गेति वा, कोतग्गेति वा, तोमरग्गेति वा, भिंडिमालग्गेइ वा, सूचिकलावएति वा, विच्छुयडंकेइ वा, कविकच्छूइ वा, इंगालेइति वा, मुम्मुरेति वा, अच्चीइ वा, जालेइ वा, अलाएति वा, सुद्धागणीइ वा; भवेतारूवे ?, नो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो अणिट्ठतराए चेव, अकंततराए चेव, अप्पियतराए चेव, अमणुन्नतराए चेव, अमणामतराए चेव 'त्ति; तत्रासिपत्रं-खड्गः, करपत्रं-क्रकचं, क्षुरपत्रं-क्षुरः, कदम्बचीरिकादीनि लोकरूढ्याऽवसेयानि, वृश्चिकडङ्कः-वृश्चिककण्टकः, कपिकच्छु-खर्जुकारी वनस्पतिविशेषः, अङ्गारो-निर्ज्वालोऽग्निकणः, मुर्मुरः-अग्निकणामिश्रं भस्म, अर्चिः-इन्धनप्रतिबद्धा ज्वाला ज्वाला तु-इन्धनच्छिन्ना अलातं-उल्मुकं, शुद्धाग्निः-अयस्पिण्डान्तर्गतोऽग्निरिति 'अकामए'त्ति अकामको-निरभिलाषः, 'अवस्सवसे'त्ति अपस्ववशः,

अपगतारमतन्त्रस्त्र इत्यर्थः, ‘ तलियंसि निवज्जइ ’त्ति तल्पे–शयनीये निपद्यते–शेते ‘ पइंवय ’त्ति पतिं–भर्त्तारं व्रतयति–तमेवाभिगच्छामीत्येवं नियमं करोतीति पतिव्रता, पतिमनुरक्ता–भर्त्तारं प्रति रागवतीति, ‘ मारामुक्केविव काए’ त्ति मार्यन्ते प्राणिनो यस्यां शालायां सा मारा–शूला तस्या मुक्तो यः स मारामुक्तो माराद्वा–मरणान्मारकपुरुषाद्वा मुक्तो–विच्छुटितः काको–वायसः, ‘ वहुधरस्स ’त्ति वधूश्च वरश्च वधूवरं तस्य, ‘ कुलाणुरूवं ’ति कुलोचितं वणिज्जां वाणिज्यमिव ‘ कुलसरिसं ’ति श्रीमद्वणिज्जां रत्नवाणिज्यमिव ‘ अदिट्ठदोसवडियं ’ति न दृष्टे–उपलब्धस्वरूपे दोषे–दूषणे पतिता–समापन्ना अदृष्टदोषपतिता तां, ‘ खिज्जणियाहिं ’ति खेदक्रियाभिः रुण्टनकादिभिः–रुदितक्रियाभिः, ‘ मरुप्पवायं व ’त्ति निर्जलदेशप्रपातं ‘ सत्थोवाडणं ’ति शस्त्रेणावपाटनं–विदारणमात्मन इत्यर्थः, ‘ गिद्धपट्ठं ’ति गृध्रस्पृष्टं–गृध्रैः स्पर्शनं कडेवराणां मध्ये निपत्य गृध्रैरात्मनो भक्षणमित्यर्थः, ‘ अब्भुवेज्जामि ’त्ति अभ्युपैमि, ‘ पुरा पोराणाण ’ मित्यत्र यावत्करणादेवं द्रष्टव्यं ‘ दुच्चिण्णाणं दुप्परकंताणं कडाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं ’ति अयमर्थः–
‘पुरा पोराणाण’ मित्यत्र यावत्करणादेवं द्रष्टव्यं ‘दुच्चिण्णाणं दुप्परकंताणं कडाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं’ति
अयमर्थः–पुरा–पूर्वभवेषु, पुराणानां–अतीतकालभाविनां तथा दुश्चीर्णं–दुश्चरितं मृषावादनपारदार्यादि तद्धेतुकानि कर्माण्यपि दुश्चीर्णानि व्यपदिश्यन्ते अतस्तेषामेव दुष्पराक्रान्तानां नवरं दुष्पराक्रान्तं–प्राणिघातादत्तापहारादिकृतानां प्रकृत्यादिभेदेन, पुराशब्दस्येह सम्बन्धः, पापानां–अपुण्यरूपाणां, ‘ कर्मणां ’ ज्ञानावरणादीनां, पापकं–अशुभं ‘ फलवृत्तिविशेषं ’ उदयवर्त्तनभेदं, ‘ प्रत्यनुभवन्ती ’–वेदयन्ती, ‘ विहरसि ’–वर्त्तसे, ‘ कप्पइ णं अम्हं ’ इत्यादि ‘ अम्हं ’ति अस्माकं मते

प्रव्रजिताया इति गम्यते, अन्तः-मध्ये 'उपाश्रयस्य' वसतेर्वृत्तिपरिक्षिप्तस्य परेषामनालोकवत इत्यर्थः, 'संघाटी' निर्ग्रन्थिकाप्रच्छदविशेषः सा बद्धा-निवेशिता काये इति गम्यते यया सा संघाटीबद्धिका तस्याः, णमित्यलङ्कारे समतले द्वयोरपि भुवि विन्यस्तत्वात् पदे-पादौ यस्याः सा समतलपदिका तस्या :'आतापयितुं' आतापनां कर्त्तुं कल्पते इति योगः ॥११९॥

तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसति, नरवइदिण्णवि(प)यारा अम्मापिइनिययनिप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्ढा जाव अपरिभूया, तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था, सुकुमाला जहा अंडणाए; तते णं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरति, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरयं रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेवं करेइ; तते णं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीं पासति २ इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ, तं जति णं केइ इमस्स सुचरियस्स तवनियमबंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्ति विसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि त्तिकट्टु नियाणं करेति २ आयावणभूमिओ पच्चोरुहति ॥ सूत्रम्-१२० ॥ तते णं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणं-

तराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ, गोज्झंतराइं धोवेइ; जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएति तत्थवि
य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता ततो पच्छा ठाणं वा ३ चेएति, तते णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ
सूमालियं अज्जं एवं व०-एवं खलु देवा० ! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभ-
चेरधारिणीओ, नो खलु कप्पति अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे ! सरीरबाउसिया अभि-
क्खणं २ हत्थे धोवसि जाव चेदेसि, तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि,
तते णं सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणति अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी
विहरति, तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं २ अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभि-
क्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तते णं तीए सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-
माणीए इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जया णं अहं अगारवासमज्झे वसामि तया णं अहं
अप्पवसा, जया णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तया णं अहं परवसा, पुव्विं च णं ममं समणीओ आढा-
यंति २ इयाणिं नो आढंति २ तं सेयं खलु मम कल्लं पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता
पाडिएक्कं उवस्सगं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्तिकट्टु, एवं संपेहेति २ कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंति-
याओ पडिनिक्खमति २ त्ता पाडिएक्कं उवस्सगं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तते णं सा सूमालिया अज्जा
अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं २, हत्थे धोवेइ जाव चेएति; तत्थविय णं पासत्था पास-

त्थविहारी, ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला २ संसत्ता २ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणति अद्धमासियाए संलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगतियाणं देवीणं नव पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, तत्थ णं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता ॥ सूत्रम्-१२१ ॥

'ललिय'त्ति क्रीडाप्रधाना, 'गोट्ठि'त्ति जनसमुदायविशेषः, 'नरवइदिन्नपयार'त्ति-नृपानुज्ञातकामचारा 'अम्मापिइनियगनिप्पिवास'त्ति मात्रादिनिरपेक्षा 'वेसविहारकयनिकेय'त्ति वेश्याविहारेषु-वेश्यामन्दिरेषु कृतो निकेतो-निवासो यया सा तथा, 'नाणाविहअविणयप्पहाणा' कण्ठ्यं 'पुप्फपूरयं रएइ'त्ति पुष्पशेखरं करोति, 'पाए रएइ' पादावलक्तादिना रञ्जयति, पाठान्तरे-'राचेइ'त्ति घृतजलाभ्यामार्द्रयति, 'सरीरबाउसियं'ति बकुशः-शबलचरित्रः स च शरीरत उपकरणतश्चेत्युक्तं शरीरबकुशा-तद्विभूषानुवर्तिनीति, 'ठाणं'ति कायोत्सर्गस्थानं निषदनस्थानं वा 'शय्यां'-त्वग्वर्तनं, 'नैषेधिकीं'-स्वाध्यायभूमिं चेतयति-करोति, 'आलोएहि जाव'त्यत्र यावत्करणात् 'निन्दाहि गरिहाहि पडिक्कमाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठेहि अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जाहि'त्ति दृश्यमिति, तत्रालोचनं-गुरोर्निवेदनं निन्दनं-पश्चात्तापो गर्हणं-गुरुसमक्षं निन्दनमेव प्रतिक्रमणं-मिथ्यादुष्कृतदानलक्षणं अकृत्यान्निवर्तनं वा त्रिोटनं-अनुबन्धच्छेदनं विशोधनं-व्रतानां पुनर्नवीकरणं शेषं कण्ठ्यमिति, 'पडिएक्कं'ति-पृथक्, 'अणोहट्टिय'त्ति-अविद्यमानोऽपघट्टको-

१ ०ति २ ता अ० अ।

यदृच्छया प्रवर्त्तमानायाः हस्तग्राहादिना निवर्त्तको यस्या [redacted] तथा, तथा नास्ति निवारको-मैवं कार्पीरित्येवं निषेधको यस्याः सा तथा ॥ १२०-१२१ ॥

तेणं कालेणं २ इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नगरे होत्था, वन्नओ, तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था, वन्नओ; तस्स णं चुलणी देवी धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया, तए णं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबूद्दीवे २ भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुपयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया, तते णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया, तते णं तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एया-रूवं० नामं० जम्हा णं एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तिया तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई, तए णं तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गुण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करिंति दोवती, तते णं सा दोवई दारिया पंचधाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्लीण इव चंपगलया निवायनि-व्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ। तते णं सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तते णं तं दोवतिं रायवरकन्नं अण्णया कयाइं अंतेउरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति २ दुवयस्स रण्णो पायवंदिउं पेसंति, तते णं सा दोवती राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवाग-च्छइ २ दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेति, तए णं से दुवए राया दोवतिं दारियं अंके निवेसेइ २ दोवईए

रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं रायवरकन्नं एवं व०-जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि, तते णं ममं जावजीवाए हिययडाहे भविस्सइ, तं णं अहं तव पुत्ता ! अज्जयाए सयंवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्णं सयंवरा जेणं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्तिकट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ २ पडिविसज्जेइ ॥ सूत्रम्-१२२ ॥ तते णं से दुवए राया दूयं सद्दावेति २ एवं व०-गच्छह णं तुमं देवा० ! बारवइं नगरिं तत्थ णं तुमं कण्हं वसुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे, बलदेवपामुक्खे पंच महावीरे, उग्गसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से, पज्जुण्णपामुक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ, संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंतसाहस्सीओ, वीरसेणपामुक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ, महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ, अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसिट्ठिसेणावइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि २ एवं वयाहि-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, तं णं तुब्भे देवा० ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह; तए णं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति २ जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २

चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेवं उवट्ठवेह कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं व०-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ २, बहूहिं पुरिसेहिं जाव उवट्ठवेंति, तए णं से दूए ण्हाते जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ २, बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव बारवती नगरी तेणेव उवागच्छइ २, बारवइं नगरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ २, जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २त्ता, चाउग्घंटं आसरहं ठवेइ २, रहाओ पच्चोरुहति २, मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायचारविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा० २, कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह । तते णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ २ पडिविसज्जेइ । तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसं सद्दावेइ एवं व०-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि, तए णं से कोडुंबियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २, जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ २, सामुदाइयं भेरिं महया २, सद्देणं तालेइ; तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामुक्खाओ छप्पण्णं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभवइड्ढिसक्कार·

समुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति २ करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेंति, तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०–खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह हयगय जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवाग० २ समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे, तते णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणापामुक्खेहिं, अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपुरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइनयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ २, पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थगमणाए। तए णं से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ २ एवं व०–गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नगरं तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं, भीमसेणं, अज्जुणं, नउलं, सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणीं कीवं आसत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह, तए णं से दूए एवं व०–जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २। एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्हं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमगं दूयं हत्थीसीसनयरं

तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूयं रायगिहं नगरं तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिंधुसुयं करयल जाव समोसरह। अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं तत्थ णं तुमं रूप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह। नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कियगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूयं अवसेसेसु य गामागरनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह। तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर जाव समोसरह। तए णं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठ० तं दूयं सक्कारेंति २, सम्माणेंति २, पडिविसज्जिंति; तए णं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं २ ण्हाया सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया भडचडगररहपहकर० सएहिं २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति २ जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सूत्रम्-१२३ ॥ तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं व०-गच्छह णं तुमं देवाणु०! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति, तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह, तेवि करेत्ता पच्चप्पिणंति; तए णं दुवए वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं २ हत्थिखंधजावपरिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय

सन्निविट्ठिए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ २ जेणेव ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ २, ताइं वासुदेवपामुक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेति सम्माणेइ २ तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २; आवासे वियरति, तए णं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवा० २ हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरुहंति २ पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति २ सए २ आवासे अणुपविसंति २, सएसु २, आवासेसु आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति, तते णं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नगरं अणुपविसति २ विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! विउलं असणं ४ सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह, तेवि साहरंति, तते णं ते वासुदेवपामुक्खा तं विपुलं असणं ४ जाव पसन्नं च-आसाएमाणा ४ विहरंति, जिमियभुत्तुत्तरागयावि य णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहिं जाव विहरंति, तते णं से दुवए राया पुव्वावरण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता, एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे संघाडग जाव पहे वासुदेवपामुक्खाण य रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया २, सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा २, एवं वदह-एवं खलु देवाणु० कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ,

तं तुब्भे णं देवा० ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामर० हयगयरह० महया भडचडगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवा० २ पत्तेयं नामंकेसु आसणेसु निसीयह २ दोवइं रायकण्णं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह, घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तए णं से दुवए राया कोडुंबिय-पुरिसे सद्दा० २ एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवाणु० ! सयंवरमंडपं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कजाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं करेह २ वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं २ नामंकाइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तेवि जाव पच्चप्पिणंति, तते णं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामराहिं हयगय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवा० २ अणुपविसंति २ पत्तेयं २ नामंकेसु निसीयंति दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा चिट्ठंति, तए णं से पंडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति जेणेव सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवा० २ तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल० वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठति ॥ सूत्रम्-१२४ ॥ तए णं सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवा-

गच्छइ २ ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ २ जिणघरं अणुपविसइ २ जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ २ लोमहत्थयं परामुसइ एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ २ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ २ वामं जाणुं अञ्चेति दाहिणं जाणुं धरणियलंसि णिवेसेति २ तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि नमेइ २ ईसिं पच्चुण्णमति करयल जाव कट्टु एवं वयासी–नमोऽत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमंसइ २ जिणघराओ पडिनिक्खमति २ जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सूत्रम्-१२५ ॥

'अज्जयाए'त्ति अद्यप्रभृति, 'अग्घं च'त्ति अर्घं पुष्पादीनि पूजाद्रव्याणि, 'पज्जं च'त्ति पादहितं पाद्यं–पादप्रक्षालनस्नेहनोद्वर्त्तनादि, मद्यसीधुप्रसन्नाख्याः सुराभेदा एव, 'जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ'त्ति एकस्यां वाचनायामेतावदेव दृश्यते, वाचनान्तरे तु 'ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छति २ जिणघरं अणुपविसइ २ जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ २ लोमहत्थयं परामुसइ २ एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेति तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ'त्ति इह यावत्करणात् अर्थत इदं दृश्य–लोमहस्तकेन जिनप्रतिमाः प्रमार्ष्टि सुरभिणा गन्धोदकेन स्नपयति गोशीर्षचन्दनेनानुलिम्पति वस्त्राणि निवासयति, ततः पुष्पाणां माल्यानां–ग्रथितानामित्यर्थः, गन्धानां चूर्णानां वस्त्राणामाभरणानां चारोपणं करोति स्म, मालाकलापावलम्बनं पुष्पप्रकरं तन्दुलैर्दर्पणाद्यष्टमङ्ग-

लालेखनं च करोति, 'वामं जाणुं अञ्चेइ'त्ति उत्क्षिपतीत्यर्थः, दाहिणं जाणुं धरणीतलंमि निहट्टु-निहत्य स्थापयित्वेत्यर्थः, 'तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणीतलंसि निवेसेइ-निवेशयतीत्यर्थः, 'ईसिं पच्चुन्नमति २ करतलपरिग्गहियं अंजलिं मत्थए कट्टु एवं वयासी-नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं वंदति नमंसति २ जिणघराओ पडिनिक्खमइ'त्ति तत्र वन्दते चैत्यवन्दनविधिना प्रसिद्धेन नमस्यति पश्चात् प्रणिधानादियोगेनेति वृद्धाः, न च द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्रं चैत्यवन्दनमभिहितं सूत्रे इति सूत्रमात्रप्रामाण्यादन्यस्यापि श्रावकादेस्तावदेव तदिति मन्तव्यं, चरितानुवादरूपत्वादस्य, न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति, अन्यथा सूरिकामादिदेवक्तव्यतायां बहूनां शस्त्रादिवस्तूनामर्चनं श्रूयते इति तदपि विधेयं स्यात्, किञ्च-अविरतानां प्रणिपातदण्डकमात्रमपि चैत्यवन्दनं सम्भाव्यते, यतो वन्दते नमस्यतीति पदद्वयस्य वृद्धान्तरव्याख्यानमेवमुपदर्शितं जीवाभिगमवृत्तिकृता-"विरतिमतामेव प्रसिद्धचैत्यवन्दनविधिर्भवति, अन्येषां तथाऽभ्युपगमपुरस्सरकायोत्सर्गासिद्धेः, ततो वन्दते सामान्येन नमस्करोति आशयवृद्धेः प्रीत्युत्थानरूपनमस्कारेणे'ति किञ्च-"समणेण सावएण य अवस्स कायव्वयं हवइ जम्हा। अंतो अहो निसिस्स य तम्हा आवस्सयं नाम ॥ ॥ १ ॥" तथा "जण्णं समणो वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तल्लेसे तम्मणे उभओ कालं आवस्सए चिट्ठति तन्न लोउत्तरिए भावावस्सए" [श्रमणेन श्रावकेण चावश्यं कर्तव्यं भवति यस्मात्। अन्तरह्नो निशायाश्च तस्मादावश्यकं नाम ॥ १ ॥ यत् श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा तच्चित्तः तन्मनाः तल्लेश्यः उभयस्मिन् काले आवश्यकाय तिष्ठति तत् लोकोत्तरिकं भावावश्यकं] इत्यादेरनुयोगद्वारवचनात्, तथा 'सम्यग्दर्शन-

म्पन्नः प्रवचनभक्तिमान् षड्विधावश्यकनिरतः षट्स्थानयुक्तश्च श्रावको भवती'त्युमास्वातिवाचकवचनाच्च श्रावकस्य षड्विधावश्यकस्य सिद्धावावश्यकान्तर्गतं प्रसिद्धं चैत्यवन्दनं सिद्धमेव भवतीति ॥ १२५ ॥

तते णं से दोवइं रायवरकन्नं अंतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसियं करेंति किं ते ? वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ पडिणिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवा० २ किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दूरूहति, तते णं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवतीए कण्णाए सारत्थं करेति, तते णं सा दोवती रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवा० २ रहं ठवेति रहाओ पच्चोरुहति २ किड्डावियाए लेहियाए य सद्धिं सयंवरं मंडपं अणुपविसति करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेति, तते णं सा दोवती रायवर० एगं महं सिरिदामगंडं किं ते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धणिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गिण्हति, तते णं सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लगदप्पणं गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंबं संदंसिए य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसिए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊणं वंससत्तसामत्थगोत्तविक्कंतिकंतिबहुविहआगममाहप्परूवजोव्वणगुणलावण्णकुलसीलजाणिया कित्तणं करेइ, पढमं ताव वण्हिपुंगवाणं दसदसारवीरपुरिसाणं तेलोक्कबलवगाणं सत्तुसयसहस्समाणावमद्दगाणं भव-

सिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्ललगाणं यलवीरियरूवजोव्वणगुणलावन्नकित्तिया कित्तणं करेति, ततो पुणो उग्गसेणमाईणं जायवाणं, भणाति य-सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगंधहत्थीणं। जो हु ते होइ हिययदइओ, तते णं सा दोवई रायवरकन्नगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झंमज्झेणं समतिच्छमाणी २ पुव्वकयणियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवा० २ ते पंचपंडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदाणेणं आवेढियपरिवेढियं करेति २ त्ता एवं वयासी-एए णं मए पंच पंडवा वरिया, तते णं तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणि रायसहस्साणि महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयंति-सुवरियं खलु भो! दोवइए रायवरकन्नाए २ त्तिकट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति २, जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवा०, तते णं धट्ठज्जुण्णे कुमारे पंच पंडवे दोवतिं रायवरकण्णं चाउग्घंटं आसरहं दूरूहति २ त्ता कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं जाव सयं भवणं अणुपविसति, तते णं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकण्णं पट्टयं दुरूहेति २ सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेति २ अग्गिहोमं कारवेति पंचण्हं पंडवाणं दोवतीए य पाणिग्गहणं करावेइ, तते णं से दुवए राया दोवतीए रायवरकण्णयाए इमं एयारूवं पीतिदाणं दलयती, तंजहा-अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विपुलं धणकणग जाव दलयति तते णं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइं विपुलेणं असण ४ वत्थगंध जाव पडिविसज्जेति ॥सूत्रम्-१२६॥ तते णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रा० करयल एवं व०-एवं खलु देवा० !

हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवतीए य देवीए कल्लाणकरे भविस्सति तं तुब्भे णं देवा०! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह, तते णं वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं २ जाव-पहारेत्थ गमणाए। तते णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दा० एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा०! हत्थिणाउरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ जाव पडिरूवे, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव करावेंति$, तते णं से पंडुए पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हयगयसंपरिवुडे कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए, तते णं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबि० सद्दावेइ २ एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे कारेह अणेगखंभसय तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तते णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छति, तते णं से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलि० जहा दुपए जाव जहारिहं आवासे दलयति, तते णं ते वासुदेवपा० बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइं २ आवासाइं तेणेव उवा० तहेव जाव विहरंति, तते णं से पंडुराया हत्थिणाउरं णयरं अणुपविसति २ कोडुंबिय० सद्दावेति २ एवं व०-तुब्भे णं देवा०! विउलं असण ४ तहेव जाव उवणेंति, तते णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया

($ $ एतदन्तर्गत. पाठ. अ प्रतौ नास्ति। 1 उवा० २,-त्ता त० अ।

ण्हाया कयवलिकम्मा तं विपुलं असणं ४ तहेव जाव विहरंति, तते णं से पंडुराया पंच पंडवे दोवतिं च देविं पट्टयं दुरूहेति २ सीयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति २ कल्लाणकारं करेति २ ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विपुलेणं असण ४ पुप्फवत्थेणं सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति, तते णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूहिं जाव पडिगयाति ॥ सूत्रम्–१२७॥ तते णं ते पंच पंडवा दोवतीए देवीए सद्धिं अंतो अंतेउरपरियाल सद्धिं कल्लाकल्लिं वारंवारेणं ओरालाति भोगभोगाइं जाव विहरति. तते णं से पंडू राया अन्नया कयाइं पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवतीए देवीए य सद्धिं अंतो अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगते यावि विहरति, इमं च णं कच्छुल्लणारए दंसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो २ य कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य अल्लीणसोमपियदंसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए कालमियचम्मउत्तरासंगरइयवत्थे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे हत्थकयकच्छभीए पियगंधव्वे धरणिगोयरप्पहाणे संवरणावरणओवयणउप्पयणिलेसणीसु य संकामणिअभिओगपण्णत्तिगमणीथंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धणिसढउम्मुयसारणगयसुमुहदुम्मुहातीण जायवाणं अद्धुट्ठाण कुमारकोडीणं हिययदइए संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भंडणाभिलासी बहुसु य समरसयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोकबलवगाणं आमंतेऊण तं भगवतीं एक्क-

मणिं गगणगमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागरनगरखेडकव्वडमडंबदोणमुहपट्टणसंवाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीतलं वसुहं ओलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि अइवेगेण समोवइए, तते णं से पंडुराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासति २ पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए य देवीए सद्धिं आसणातो अब्भुट्ठेति २ कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ २ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति णमंसति महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेति, तते णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति २ पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तते णं से पंडुराया कोंतीदेवी पंच य पंडवा कच्छुल्लणारयं आढंति जाव पज्जुवासंति, तए णं सा दोवई कच्छुल्लनारयं अस्संजयं अविरयं अपडिहयपच्चक्खायपावकम्मंतिकट्टु नो आढाति नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेति नो पज्जुवासति ॥ सूत्रम्-१२८ ॥ तते णं तस्स कच्छुल्लणारयस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था अहो णं दोवती देवी रूवेणं जाव लावण्णेण य पंचहिं पंडवेहिं अणुबद्धा समाणी ममं णो आढाति जाव नो पज्जुवासइ तं सेयं खलु मम दोवतीए देवीए विप्पियं करित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति २ पंडुयरायं आपुच्छइ २ उप्पयणिं विज्जं आवाहेति २ ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवतिउं पयत्ते यावि होत्था । तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहवासे अवरकंका णाम रायहाणी होत्था, तते णं अमरकंकाए रायहाणीए पउ-

मणामे णामं राया होत्था महया हिमवंत० वण्णओ, तस्स णं पउमनाभस्स रन्नो सत्त देवीसयातिं ओरोहे होत्था, तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवरायायावि होत्था, तते णं से पउमणामे राया अंतो अंतेउरंसि ओरोहसंपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरति, तए णं से कच्छुल्लणारए जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाहस्स भवणे तेणेव उवागच्छति २ पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि झत्तिं वेगेणं समोवइए, तते णं से पउमनामे राया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासति २ आसणातो अब्भुट्ठेति २ अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमंतेति, तए णं से कच्छुल्लनारए उदयपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाते भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ, तते णं से पउमनाभे राया णिअगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं व०-तुब्भं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहातिं अणुपविससि, तं अत्थियाइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं मम ओरोहे ?, तते णं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ २ एवं व०-सरिसे णं तुमं पउमणाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स, के णं देवाणुप्पिया से अगडदद्दुरे ?, एवं जहा मल्लिणाए एवं खलु देवा० ! जंबूद्दीवे २ भारहे वासे हत्थिणाउरे दुपयस्स रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवती देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा दोवईए णं देवीए छिन्नस्सवि पायंगुट्ठयस्स अयं तव ओरोहे सतिमंपि कलं ण अग्घतित्तिकट्टु, पउमणाभं आपुच्छति २ जाव पडिगए २, तते णं से पउम-

नामे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म दोवतीए देवीए रूवे य ३ मुच्छिए ४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उव० २ पोसहसालं जाव पुव्वसंगतियं देवं एवं व०-एवं खलु देवा० ! जंबुद्दीवे २ भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा तं इच्छामि णं देवा० ! दोवतीं देवीं इहमाणियं, तते णं पुव्वसंगतिए देवे पउमनाभं एवं व०-नो खलु देवा० ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवती देवी पंच पंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धिं ओरालातिं-जाव विहरिस्सति,-तहाविय णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवतीं देविं इहं हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ २ ताए-उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।-तेणं-कालेणं २ हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवतीए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि-सुहपसुत्ते यावि होत्था, तए णं से पुव्वसंगतिए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवती देवी तेणेव उवाग० २ दोवतीए-देवीए ओसोवणियं-दलयइ २ दोवतिं देविं गिण्हइ २ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव-उवा० २ पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवतिं देविं ठावेइ २ ओसोवणिं अवहरति २ जेणेव-पउमणाभे तेणेव उ० २ एवं व०-एस णं देवा० ! मए हत्थिणाउराओ दोवती इह हव्वमाणीया तव-असोगवणियाए चिट्ठति, अतो परं तुमं जाणसि त्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए । तते णं सा दोवई देवी ततो मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं व०-नो

१६ अपरकङ्का ज्ञाताध्य० पद्मनाभसमीपे नारदागमनादि वर्णनसूत्रम् ।

खलु अम्हं एसे सए भवणे णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं-ण णज्जति णं अहं केणई देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरिय त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायति, तते णं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकारभूसिए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवती देवी तेणेव उवा० २ दोवतीं देवीं ओहय० जाव झियायमाणीं पासति २ त्ता एवं व०-किण्णं तुमं देवा० ! ओहय जाव झियाहि ?, एवं खलु तुमं देवा० ! मम पुव्वसंगतिएणं देवेणं जंबुद्दीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया तं मा णं तुमं देवा० ! ओहय० जाव झियाहि, तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि, तते णं सा दोवती देवी पउमणाभं एवं व०-एवं खलु देवा० ! जंबूदीवे २ भारहे वासे बारवतिए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसति, तं जति णं से छण्हं मासाणं ममं कूवं नो हव्वमागच्छइ तते णं अहं देवा० ! जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि, तते णं से पउमे दोवतीए एयमट्ठं पडिसुणेत्ता २ दोवतिं देविं कण्णंतेउरे ठवेति, तते णं सा दोवती देवी छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणी विहरति ॥सूत्रम्-१२९॥ तते णं से जुहुट्ठिले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवतिं देविं पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ २ त्ता दोवतीए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ २-त्ता दोवतीए देवीए

कत्थए सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया तेणेव उवा० २ त्ता पंडुरायं एवं व०-एवं खलु ताओ! ममं आगासतलगंसि पसुत्तस्स पासातो दोवती देवी ण णज्जति केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा?, इच्छामि णं ताओ! दोवतीए देवीए सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं कयं, तते णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा०! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसे-माणा२ एवं व०-एवं खलु देवा०! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासातो दोवती देवी ण णज्जति केणइ देवेण वा दाणवेण वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा, तं जो णं देवाणुप्पिया! दोवतीए देवीए सुतिं वा जाव पवित्तिं वा परिकहेति तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयति त्तिकट्टु घोसणं घोसावेह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति तते णं से पंडू राया दोवतीए देवीए कत्थति सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेति २ एवं व०-गच्छह णं तुमं देवाणु०! बारवतिं णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स णयमट्ठं णिवेदेहि, कण्हे णं परं वासुदेवे दोवतीए मग्गणगवेसणं करेज्जा, अन्नहा न नज्जइ दोवतीए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा, तते णं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ २ ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ २ कुरु-

जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठजणवए, जेणेव वारवती णयरी, जेणेव अग्गुज्जाणे, तेणेव उवा० २ हत्थि·
खंधाओ पचोरुहति २ कोडुंबियपुरिसे सद्दा० २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! जेणेव बारवई णयरिं
बारवतिं णयरिं अणुपविसह२, कण्हं वासुदेवं करयल एवं वयह–एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती
देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखति, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव
कहेंति, तते णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए सोचा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय बार·
वतीए य मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उ० २, हत्थिखंधातो पचोरुहति २, कोंतीए देवीए पाय·
ग्गहणं करेति २, कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरूहति २, बारवतीए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए
गिहे तेणेव उवा० २, सयं गिहं अणुपविसति । तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंती देविं ण्हायं कयबलिकम्मं
जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं व०–संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?, तते णं
सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं व०–एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स आगासतले सुह·
पसुत्तस्स दोवती देवी पासाओ ण णज्जति केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, तं इच्छामि णं पुत्ता !
दोवतीए देवीए मग्गणगवेसणं कयं, तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंती पिउच्छिं एवं व०–जं णवरं पिउच्छा !
दोवतीए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ वा अद्धभरहाओ वा

१ °रिं ××××××× भ' श। २ म० हद्ध० ह० अ.।

१८

१६ अपरकङ्काज्ञाताध्य० वासुदेवस्य कुन्त्या सह वार्तालापादिवृत्तम्।

समंतओ दोवतिं साहत्थिं उवणेमि त्तिकट्टु कोंतीं पिउत्थिं सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति, ततेणं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडि० । ततेणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दा० २ एवं व०–गच्छह णं तुब्भे देवा० ! बारवतिं एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति, पंडुस्स जहा, ततेणं से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरति, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोवइए जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ, ततेणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं व०–तुमं णं देवा० ! बहूणि गामा जाव अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिंचि दोवतीए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा ?, ततेणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं व०–एवं खलु देवा० ! अन्नया धायतीसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढभरहवासं अवरकंकारायहाणिं गए, तत्थ णं मए पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि दोवती देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था, ततेणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं व०–तुब्भं चेव णं देवाणु० ! एवं पुव्वकम्मं, ततेणं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेति २, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, ततेणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ २, एवं व०–गच्छह णं तुमं देवा० ! हत्थिणाउरं पंडुस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेहि–एवं खलु देवाणु० ! धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवतीए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा

पुरत्थिमवेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु, तते णं से दूए जाव भणाति, पडिवालेमाणा चिट्ठह, तेवि जाव चिट्ठंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता, एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा० ! सन्नाहियं मेरिं ताडेह, तेवि तालेंति, तते णं तीसे सण्णाहियाए भेरीए सद्दं सोचा समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पण्णं बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगतिया हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुधम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेवं २, करयल जाव वद्धावेंति, तते णं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय० महया भडचडगरपहकरेणं बारवती णयरी मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवा० २, पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ २, खंधावारणिवेसं करेति २, पोसहसालं अणुपविसति २, सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे २, चिट्ठति, तते णं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगतो, भण देवा० ! जं मए कायव्वं, तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं एवं व०-एवं खलु देवा० ! दोवती देवी जाव पउमनाभस्स भवणंसि साहरिया तण्णं तुमं देवा० ! मम पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जण्णं अहं अमरकंकारायहाणीं दोवतीए कूवं गच्छामि, तते णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-किण्हं देवा० ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगतिएणं

1 °ब उवा° अ।

देवेणं दोवती जाव संहरिया तहा चेव दोवतिं देविं धायतीसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?, तते णं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं व०-मा णं तुमं देवा० ! जाव साहराहि तुमं णं देवा० ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं मग्गं वियराहि, सयमेव णं अहं दोवतीए कूवं गच्छामि, तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं होउ, पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वितरति, तते णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीसेणं पडिविसज्जेति २, पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति २, जेणेव अमरकंका रायहाणी जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २, रहं ठवेइ २, दारुयं सारहिं सद्दावेति एवं व०-गच्छह णं तुमं देवा० ! अमरकंकारायहाणीं अणुपविसाहि २, पउमणाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एवं व०-हं भो पउमणाहा ! अपत्थियपत्थिया दुरंतपंतलक्खणा हीणपुन्नचाउद्दसा सिरीहिरिधीपरिवज्जिया अज्ज ण भवसि किन्नं तुमं ण याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवतिं देविं इहं हव्वं आणमाणे, तं एयमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवतिं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि, एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवतीदेवीए कूवं हव्वमागए, तते णं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ २, अमरकंका-

१६
अपरकङ्का-
ज्ञाताध्य०
वासुदेवस्य
लवणं प्रति
गमनादि-
वर्णन-
सूत्रम् ।

रायहाणिं अणुपविसति २, जेणेव पउमनाहे तेणेव उवा० २, करयल जाव वद्धावेत्ता एवं व०–एस णं सामी! मम विणयपडिवित्ती इमा अच्चा मम सामिस्स समुहाणत्ति त्तिकट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं अणुक्कमति २, कोंतग्गेणं लेहं पणामति २ त्ता, जाव कूवं हव्वमागए, तते णं से पउमणाभे दारुणेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं व०–णो अप्पिणामि णं अहं देवा० ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवतिं, एस णं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामि त्तिकट्टु दारुयं सारहिं एवं व०–केवलं भो! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्तिकट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेति, तते णं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उ० २, करयल० कण्हं जाव एवं व०–एवं खलु अहं सामी ! तुब्भं वयणेणं जाव णिच्छुभावेति, तते णं से पउमणाभे बलवाउयं सद्दावेति २ एवं व०–खिप्पामेव भो देवाणु० ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, तयाणंतरं च णं छेया- यरियउवदेसमइविकप्पणाविगप्पेहिं जाव उवणेति, तते णं से पउमनाहे सन्नद्ध० अभिसेयं० दूरूहति २, हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं रायाणं एज्जमाणं पासति २, ते पंच पंडवे एवं व०–हं भो दारगा ! किन्नं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ?, तते णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं व०–अम्हे णं सामी ! जुज्झामो तुब्भे पेच्छह, तते णं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति २ जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उ० २, एवं

व०-अम्हे पउमणाभे वा राय त्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तते णं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहियपवरविवडियचिन्धद्धयपडागा जाव दिसोदिसिं पडिसेहेतित्ति, तते णं ते पंच पंडवा पउमनाभेणं रन्ना हयमहियपवरविवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव अधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तते णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं व०-कहण्णं तुब्भे देवाणु० ! पउमणाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा !, तते णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं व०-एवं खलु देवा० ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरूहामो २, जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेति, तते णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं व०-जति णं तुब्भे देवा० ! एवं वयंता अम्हे णो पउमनाभे राय त्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गंता तो णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहियपवर जाव पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुब्भे देवा० ! अहं नो पउमणाभे राय त्तिकट्टु पउमनाभेणं रन्ना सद्धिं जुज्झामि रहं दुरूहति २ जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवाग० २ सेयं गोखीरहारधवलं तणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुसन्निगासं नियथबलस्स हरिसजणणं रिउसेण्णविणासकरं पंचयण्णं संखं परामुसति २, मुहवायपूरियं करेति; तते णं तस्स पउमणाहस्स तेणं संखसद्देणं बलतिभाए हते जाव पडिसेहिए, तते णं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसति वेढो धणुं पूरेति २, धणुसद्दं करेति; तते णं तस्स पउमनाभस्स दोचे बलतिभाए तेणं धणुसद्देणं हयमहिय जाव पडिसेहिए, तते णं से पउमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले

अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्ज त्तिकट्टु सिग्घं तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उ० २, अमरकंकं रायहाणिं अणुपविसति २, दारातिं पिहेति २, रोहसज्जे चिट्ठति; तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उ० २ रहं ठवेति २, रहातो पचोरूहति २, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति; एगं महं णरसीहरूवं चिउव्वति २, महया २, सद्देणं पाददद्दरियं करेति; तते णं से कण्हेणं वासुदेवेणं महया २, सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरणपल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया, तते णं से पउमणाभे राया अमरकंकं रायहाणिं संभग्ग जाव पासित्ता भीए दोवतिं देविं सरणं उवेति, तते णं सा दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं व०–किण्णं तुमं देवा० ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इह हव्वमाणेसि, तं एवमवि गए गच्छह णं तुमं देवा० ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय ममं पुरतो काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि, पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा, तते णं से पउमनाभे दोवतीए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेति २, ण्हाए जाव सरणं उवेति २, करयल० एवं व०–दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! जाव खमंतु णं जाव णाहं भुज्जो २ एवंकरणयाए त्तिकट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवतिं देविं साहत्थिं उवणेति, तते णं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं व०–हं भो पउमणाभा !

अप्पतियपत्थिया ४ किण्णं तुमं ण जाणसि मम भगिणिं दोवतीं देवीं इह हव्वमाणमाणे तं एवमवि गए णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्तिकट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेति, दोवतिं देविं गिण्हति २, रहं दुरूहेति २, जेणेव पंच पंडवे तेणेव उवा० २, पंचण्हं पंडवाणं दोवतिं देविं साहत्थिं उवणेति; तते णं से कण्हे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे २, जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सूत्रम्-१३० ॥

'सारत्थं'ति सारथ्यं सारथिकर्म, 'तए णं सा किड्डाविए'त्यादौ यावत्करणादेवं दृश्यं-'साभावियहंसा चोद्दहजणस्स उस्सुयकरं विचित्तमणिरयणबद्धच्छरुहं'ति, तत्र क्रीडापिका-क्रीडनधात्री 'साभावियहंस'त्ति स्वाभाविकः-अकैतवकृतो घर्पोघर्पणं यस्य स तथा तं दर्पणमिति योगः, 'चोद्दहजणस्स ऊसुयकरे'ति तरुणलोकस्य औत्सुक्यकरं-प्रेक्षणलम्पटत्वकरं 'विचित्तमणिरयणबद्धच्छरुहं'ति विचित्रमणिरत्नैर्बद्धः छरुको-मुष्टिग्रहणस्थानं यस्य स तथा तं 'चिल्लगं'-दीप्यमानं दर्पणम्-आदर्शम्, 'दप्पणसंकंतबिंबसंदंसिए य से'त्ति-दर्पणे सङ्क्रान्तानि यानि राज्ञां बिम्बानि-प्रतिबिम्बानि तैः संदर्शिताः-उपलम्भिता ये ते तथा तांश्च से-तस्या दक्षिणहस्तेन दर्शयति स्म द्रौपद्या इति प्रक्रमः प्रवरराजसिंहान्, स्फुटमर्थतो विशदं वर्णतः विशुद्धं शब्दार्थदोषरहितं रिभितं-स्वरघोलनाप्रकारोपेतं गम्भीरं-मेघशब्दवत् मधुरं-कर्णसुखकरं भणितं-भाषितं यस्याः क्रीडापिकायाः सा तथा तां, मातापितरौ वंशं-हरिवंशादिकं सत्त्वं-आपत्स्ववैक्लव्यकरमध्यवसानकरं च सामर्थ्यं-बलं, गोत्रं-गौतमगोत्रादि, विक्रान्ति-विक्रमं, कान्ति-प्रभां, पाठान्तरेण कीर्तिं वा-प्रख्यातिं बहुविधागमं-नानाविधशास्त्रवि-

१६ अपरकङ्का-ज्ञाताध्य० दौपद्या सह स्वदेशगमनम्।

शारदमित्यर्थः; माहात्म्यं-महानुभावतां, कुलं-वंशस्यावान्तरभेदं शीलं च-स्वभावं जानाति या सा तथा कीर्त्तनं करोति स्मेति, वृष्णिपुङ्गवानां-यदुपुङ्गवानां यदुप्रधानानां दशाराणां-समुद्रविजयादीनां दशारस्य वा-वासुदेवस्य ये वरा वीराश्च पुरुषास्ते तथा ते च ते त्रैलोक्येऽपि बलवन्तश्चेति विग्रहस्ततस्तेषां, शत्रुशतसहस्राणां-रिपुलक्षाणां मानमवमृद्नन्ति ये ते तथा तेषां, तथा भविष्यतीति भवा-भाविनी सा सिद्धिर्येषां ते भवसिद्धिकास्तेषां मध्ये वरपुण्डरीकाणीव वरपुण्डरीकाणि ये ते तथा तेषां 'चिल्लगाणं'ति-दीप्यमानानां तेजसा तथा बलं-शारीरं, वीर्यं-जीवप्रभवं, रूपं-शरीरसौन्दर्यं, यौवनं-तारुण्यं, गुणान्-सौन्दर्यादीन्, लावण्यं च-स्पृहणीयतां कीर्त्तयति या सा तथा, क्रीडापिका कीर्त्तनं करोति स्म, पूर्वोक्तमपि किञ्चिद्विशेषाभिधानाद्याभिहितमिति न दुष्टं, 'समइच्छमाणी'ति समतिक्रामन्ती, 'दसद्धवण्णेणं'तीह श्रीदामगण्डेन पूर्वगृहीतेनेति सम्बन्धनीयं २९ 'कण्हुल्लानारए'त्ति-एतन्नामा तापसः, 'कल्लाणकारे'त्ति-कल्याणकरणं मङ्गलकरणमित्यर्थः; 'इमं च णं'ति इतश्च 'विणीए अंतो अंतो य कलुसहियए' अन्तरान्तरा क्वचिद्यावरकरणादिदं हृदयं, 'दंसणेणं अइभद्दए' भद्रदर्शन इत्यर्थः, 'मज्झत्थउवत्थिए य' माध्यस्थ्यं-समतामभ्युपगतो व्रतग्रहणत इति भावः, 'अल्लीणदुष्टचित्तः केलीप्रियत्वादित्यर्थः, 'अमइलसगलपरिहिए' सोमपियदंसणे सुरूवे' आलीनानां-आश्रितानां सौम्यं-अरौद्रं प्रियं च दर्शनं यस्य स तथा 'कालमियचम्मउत्तरा- अमलिनं सकलं-अखण्डं शकलं वा खण्डं वल्कवास इति गम्यते परिहितं-निवसितं येन स तथा, 'दंडकमंडलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए संगरइयवत्थे' कालमृगचर्म उत्तरासङ्गेन रचितं वक्षसि येन स तथा 'जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलावागलधरे' गणेत्रिका-रुद्राक्षकृतं कलाचिकाभरणं मुञ्जमेखला-मुञ्जमयः कटीदवरकः

वल्कलं-तरुत्वक्, 'हत्थकयकच्छभीए'-कच्छपिका तदुपकरणविशेषः, 'पियगंधव्वे'-गीतप्रियः, 'धरणिगोयरप्पहाणे'-आकाशगामित्वात्, 'संचरणावरणउवयणिलेसणीसु य संकामणिअभिओगपण्णत्तिगमणीथंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे' इह मन्त्ररण्यादिविधानामर्थः शब्दानुसारतो वाच्यः, 'विज्जाहरिसु'त्ति-विद्याधरसम्बन्धिनीषु विश्रुतयशाः-ख्यातकीर्तिः, 'इट्ठे रामस्स केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धनिसढउम्मुयसारणगयसुमुहदुम्मुहाईणं जायवाणं अद्धट्ठाणं कुमारकोडीणं हिययदइए' वल्लभ इत्यर्थः, 'संथवे' एतेषां संस्तावकः, 'कलहजुद्धकोलाहलप्पिए' कलहो-वाग्युद्धं युद्धं तु-आयुधयुद्धं कोलाहलो-बहुजनमहाध्वनिः; 'भंडणाभिलासी'-भंडनं पिष्टातकादिभिः 'बहुसु य समरसंपराएसु'-समरसङ्ग्रामेष्वित्यर्थः, 'दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं' सदानमित्यर्थः, 'अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाणं आमंतेऊणं तं भगवतिं एक्कमणिं गमणत्थं उप्पइओ गगणतलमभिलंघयंतो गामागरनगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणसंबाहसहस्समंडियं थिमियमेइणीयं णिब्भरजनपदं वसुहं ओलोयंतो रम्मं हत्थिणपुरं उवागए' 'असंजयअविरयअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मेत्तिकट्टु' असंयतः संयमरहितत्वात् अविरतो विशेषतस्तपस्यरतत्वात् न प्रतिहतानि-न प्रतिषेधितानि अतीतकालकृतानि निन्दनतः न प्रत्याख्यातानि च भविष्यत्कालभावीनि पापकर्माणि-प्राणातिपातादिक्रिया येन अथवा न प्रतिहतानि सागरोपमकोटीकोट्यन्तःप्रवेशनेन सम्यक्त्वलाभतः न च प्रत्याख्यातानि सागरोपमकोटीकोट्याः सङ्ख्यातसागरोपमैर्न्यूनताकरणेन सर्वविरतिलाभतः पापकर्माणि-ज्ञानावरणादीनि येन स तथेति पदत्रयस्य कर्मधारयः, 'कूवं'ति-

कूजकं व्यावर्त्तकत्वलमिति भावः, 'सुइं व 'त्ति-श्रूयते इति श्रुतिः-शब्दः तां, 'खुतिं व 'त्ति क्षुतिः छीत्कारादि- शब्दविशेष एव तां प्रयुक्ति-वार्त्तां, वार्त्तापर्यायाश्चैते इति, 'हिया व 'त्ति-हृता प्रदेशान्तरे स्थापिता, 'नीता' नेत्रा स्वस्थानं प्रापिता 'आक्षिपिता' आकृष्टेवेति, 'इमा अण्णे'त्यादि, इयमन्या अपरा मदीयस्वामिनः सम्बन्धिनी विनयप्रतिपत्तिरिति वर्त्तते, 'समुहाणत्ति त्तिकट्टु' स्वमुखेन स्वकीयवदनेन भणिता आज्ञप्तिः-आदेशः स्वमुखाज्ञप्ति- रितिकृत्वा-एवमभिधाय, 'आसुरुत्ते 'त्ति क्रुद्धः, 'बलवाउए 'त्ति-बलव्यापृतः सैन्यव्यापारवान्, 'अभिसेक्क 'न्ति- अभिषेकमर्हतीत्याभिषेक्यं मूर्द्धाभिषिक्तमित्यर्थः, 'छेयायरियउवएसमइविगप्पणाविगप्पेहिं 'ति-छेको-निपुणो य आचार्यः-कलाचार्यः तस्योपदेशात्-तत्पूर्विकाया मतेः-बुद्धेर्याः कल्पनाः-विकल्पाः क्लृप्तिभेदास्ते तथा तैरिति, इह यावत्करणादिदं दृश्यं 'सुनिउणेहिं 'ति-सुनिपुणैर्नरैः, 'उज्जलनेवत्थहव्वपरिवच्छियं 'ति उज्ज्वलनेपथ्येन- निर्मलवेषेण 'हव्व 'न्ति-शीघ्रं परिक्षिप्तः-परिगृहीतः परिवृतो यः स तथा तं 'सुसज्जं '-सुष्ठु प्रगुणं, 'वम्मिय- सन्नद्धबद्धकवचियउप्पीलियकच्छवच्छबद्धगेवज्जगलयवरभूसणविरायंतं '-वर्म्मणि नियुक्ता वार्मिकास्तैः सन्नद्धः- कृतसन्नाहो यः स वार्मिकसन्नद्धः बद्धं कवचं-सन्नाहविशेषो यस्य स बद्धकवचः, स एव बद्धकवचिकः, अथवा वर्मितः सन्नद्धः बद्धस्त्वक्त्राणबन्धनात् कवचितश्च यः स तथा, भेदश्चैतेषां लोकतोऽवसेयः, एकार्थाश्चैते शब्दाः सन्नद्धता- प्रकर्षाभिधानायोक्ता इति, तथा उत्पीडिता-गाढीकृता कक्षा-हृदयरज्जुर्वक्षसि यस्य स तथा ग्रैवेयकं-ग्रीवाभरणं बद्धं गले- कण्ठे यस्य स तथा वरभूषणैर्विराजमानो यः स तथा, ततो वर्मितादिपदानां कर्मधारयोऽतस्तं, 'अहियतेयजुत्तं सललि-

तवरकणणपूरविराजितं पलंबओचूलमहुयरकयंधगारं' प्रलम्बानि अवचूलानि-करक(ट)न्यस्ताऽधोमुखकूर्चकाः यस्य सः प्रलम्बावचूलः मधुकरैः-भ्रमरैर्मदजलगन्धाकृष्टैः कृतमन्धकारं येन स तथा, ततः कर्मधारयोऽतस्तं, चित्तपरिच्छेयपच्छदं' चित्रो-विचित्रः परिच्छेको-लघुः प्रच्छदो-वस्त्रविशेषो यस्य स तथा तं, 'पहरणावरभरियजुद्धसज्जं' प्रहरणानां-कुन्तादीनामावरणाना च-कङ्कटानां भृतो यः स तथा स च युद्धसज्जश्चेति कर्मधारयः अतस्तं 'सच्छत्तं सज्झयं सघंटं पंचामेलयपरिमंडिययाभिरामं' पञ्चभिरापीडैः-शेखरैः परिमण्डितोऽत एवाभिरामश्च-रम्यो यः, 'ओसारियजमलजुयलघंटं'-अवसारित-अवलम्बितं यमलं-समं युगलं-द्वयं घण्टयोर्यत्र स तथा तं, 'विज्जुप्पणिद्धं व कालमेहं' घण्टा प्रहरणादीनामुज्ज्वलत्वेन विद्युत्कल्पत्वात् हस्तिदेहस्य कालत्वेन महत्त्वेन वा मेघकल्पत्वादिति, 'उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं' चङ्क्रममाणमिवौत्पातिकपर्वतं, पाठान्तरेण ओत्पातिकं पर्वतमिव, 'सक्खं'ति साक्षात्, 'मत्तं'ति-मदवन्तं 'गुलु २ गुलंतं' 'मणपवणजइणवेगं' मनःपवनजयी वेगो यस्य स तथा तं, 'भीमं संगामियाजोग्गं' साङ्ग्रामिक आयोगः परिकरो यस्य स तथा तं, 'अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पंति २ उवणेंति'त्ति 'हयमहियपवरविवडियचिंधधयपडागे' हतमथिता-अत्यर्थं हताः अथवा हताः प्रहरतो मथिताः मानमथनात् हतमथिताः तथा प्रवरा विपतिताश्चिन्हध्वजादयः पताकाश्च तदन्या येषां ते तथा ततः कर्मधारयोऽतस्तान्, यावत्करणात् 'किच्छोवगयप्पाणे'ति दृश्यं कष्टगतजीवितव्यानित्यर्थः, 'अम्हे वा पउमनाभे वा राय त्तिकट्टु' इति अस्माकं पद्मनाभस्य च बलवत्त्वादिह सङ्ग्रामे वयं वा भवामः पद्मनाभो वा, नोभयेषामपीह संयुगे त्राणमस्तीतिकृत्वा-इति निश्चयं विधाय सम्प्रलग्नाः योद्धुमिति शेषः, 'अम्हे नो

पउमनाभे राय त्तिकट्टु' वयमेवेह रणे जयामो न पद्मनाभो राजेति, यदि स्वविषये विजयनिश्चयं कृत्वा पद्मनाभेन सार्द्धं
योद्धुं सम्प्रालगिष्यथ ततो न पराजयं प्राप्स्यथ, निश्चयसारत्वात् फलप्राप्तेः, आह च-"शुभाशुभानि सर्वाणि, निमित्तानि
स्युरेकतः। एकतस्तु मनो याति, तद्विशुद्धं जयावहम् ॥ १ ॥ तथा-स्यान्निश्चयैकनिष्ठानां, कार्यसिद्धिः परा नृणाम्। संश-
यक्षुण्णचित्तानां, कार्ये संशीतिरेव हि ॥ २ ॥" शङ्खविशेषणानि क्वचिद् दृश्यन्ते-'सेयं गोक्खीरहारधवलं तणसोल्लिय-
सिंदुवारकुंदेंदुसन्निगासं' 'तणसोल्लिय'न्ति मल्लिका सिंदुवारो-निर्गुण्डिः, 'निययस्स चलस्स हरिसजणणं
रिउसेण्णविणासकरं पंचजण्ण'न्ति-पाञ्चजन्याभिधानं, 'वेढो'त्ति-वेष्टकः एकवस्तुविषया पदपद्धतिः, स चेह धनुर्विषयो
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रसिद्धोऽध्येतव्यः, तद्यथा-'अइरुग्गयबालचंदइंदधणुसन्निकासं' अचिरोद्गतो यो बालचन्द्रः-शुक्लपक्षद्वि-
तीयाचन्द्रः तेनेन्द्रधनुषा च वक्रतया सन्निकाशं-सदृशं यत्तत्तथा 'वरमहिसदरियदप्पियदढघणसिंगग्गरइयसारं' वरमहिषस्य
दृप्तदर्पितस्य-सञ्जातदर्पातिशयस्य यानि दृढानि घनानि च शृङ्गाग्राणि तै रचितं सारं यत्तत्तथा, 'उरगवरपवरगवलपवर
परहुयभमरकुलनीलधंतधोयपट्टं' उरगवरो-नागवरः प्रवरगवलं-वरमहिषशृङ्गं प्रवरपरभृतो-वरकोकिलो भ्रमरकुलं-मधुकरनिकरो
नीली-गुलिका एतानीव स्निग्धं कालकान्तिमत् ध्मातमिव ध्मातं च-तेजसा ज्वलत् धौतमिव धौतं च-निर्मलं पृष्ठं यस्य
तत्तथा, 'निउणोवियमिसिमिसिंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं' निपुणेन शिल्पिना ओपितानां-उज्ज्वलितानां मणिरत्न-
घण्टिकानां यज्जालं तेन परिक्षिप्तं-वेष्टितं यत्तत्तथा 'तडितरुणकिरणतवणिज्जबद्धचिंधं' तडिदिव-विद्युदिव तरुणाः-

१ ०ट्टु त्ति व० अ।

प्रत्यग्राः किरणा यस्य तत्तथा तस्य तपनीयस्य सम्बन्धीनि बद्धानि चिन्हानि-लाञ्छनानि यत्र तत्तथा 'दद्दरमलयगिरिसिहरकेसरचामरवालयद्धचंदचिंधं' दर्दरमलयाभिधानौ यौ गिरी तयोर्यानि शिखराणि तत्सम्बन्धिनो ये केसरचामरवालाः-सिंहस्कन्धचमरपुच्छकेशाः अर्द्धचन्द्राश्च तल्लक्षणानि चिह्नानि यत्र तत्तथा, 'कालहरियरत्तपीयसुक्किल्लबहुण्हारुणिसंपिनद्धजीयं' कालादिवर्णाः या स्नायवः-शरीरान्तर्वर्ध्रास्ताभिः सम्पिनद्धा-बद्धा जीवा-प्रत्यञ्चा यस्य तत्तथा 'जीवियान्तकरं'ति शत्रूणामिति गम्यते, 'संभग्गे'त्यादि, सम्भग्नानि प्राकारो गोपुराणि च-प्रतोल्यः अट्टालकाश्च-प्राकारोपरिस्थानविशेषाः चरिका च-नगरप्राकारान्तरेऽष्टहस्तो मार्गः तोरणानि च यस्यां सा तथा, पर्यस्तितानि-पर्यस्तीकृतानि सर्वतः क्षिप्तानि इत्यर्थः प्रवरभवनानि श्रीगृहाणि च-भाण्डागाराणि यस्यां सा तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, 'सरसरस्स'त्ति-अनुकरणशब्दोऽयमिति, 'उल्लपडसाडए'त्ति सद्यः स्नानेन आर्द्रौ-पट्टशाटकौ उत्तरीयपरिधाने यस्य स तथा, 'अवचूलगवत्थनियत्थे'त्ति अवचूलं-अधोमुखचूलं मुत्कलाञ्चलं यथा भवतीत्येवं वस्त्रं निवसितं येन स तथा, 'तं एवमवि गए नत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि'त्ति तत-तस्मादित्थमपि गते अस्मिन् कार्ये नास्ति अयं पक्षो यदुत ते-तव मत्तो भयमस्ति-भवति।

तेणं कालेणं २ धायतिसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेतिए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवंत० वण्णओ; तेणं कालेणं २ मुणिसुव्वए अरहा चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्मं सुणेति, तते णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहतो धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेति, तते णं तस्स कविलस्स

वासुदेवस्स इमेयारूवे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था-किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोचे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स णं अयं संखसद्दे ममंपिव मुहवायपूरिते वियंभति, कविले वासु० सद्दातिं सुणेइ, मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं व०-से णूणं ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं णिसामे-माणस्स संखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अब्भत्थिए-किं मन्ने जाव वियंभइ, से णूणं कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ?, हंता ! अत्थि, नो खलु कविला ! एवं भूयं वा ३ जन्नं एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु उप्पज्जिंति उप्पज्जिस्संति वा, एवं खलु वासुदेवा ! जंबुद्दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पंडुस्स रण्णो सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवती देवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगतिएणं देवेणं अमरकंकाणयरिं साहरिया, तते णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकंकं रायहाणिं दोवतीए देवीए कूवं हव्वमागए, तते णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धिं संगामं, संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव मुहवाया० इव इट्ठे कंते इहेव वियंभति, तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदति २ एवं व०-गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं पासामि, तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं व०-नो खलु देवा० ! एवं भूयं वा ३ जण्णं अरहंता वा अरहंतं पासंति, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासंति, बलदेवा वा बलदेवं पासंति, वासुदेवा वा वासुदेवं पासंति; तहविय णं तुमं कण्हस्स

वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गातिं पासिहिसि, तते णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदति २, हत्थिखंधं दुरूहति २, सिग्घं २, जेणेव वेलाउले तेणेव उ० २, कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयमाणस्स सेयापियाहिं धयग्गातिं पासति २, एवं वयइ-एस णं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतीवयति त्तिकट्टु पंचयन्नं संखं परामुसति मुहवायपूरियं करेति, तते णं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं आयन्नेति २, पंचयन्नं जाव पूरियं करेति, तते णं दोवि वासुदेवा संखसद्दसामायारिं करेति, तते णं से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उ० २ अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासति २, पउमणाभं एवं व०-किन्नं देवाणुप्पिया! एसा अमरकंका संभग्ग जाव सन्निवइया?, तते णं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं व०-एवं खलु सामी! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूय अमरकंका जाव सन्निवाडिया, तते णं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा पउमणाहं एवं व०-हं भो! पउमणाभा! अपत्थियपत्थिया किन्नं तुमं न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेति, पउमणाहस्स पुत्तं अमरकंकारायहाणीए महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचति जाव पडिगते ॥ सूत्रम्-१३१ ॥ तते णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीतिवयति, ते पंच पडवे एवं व०-गच्छह णं

तुब्भे देवा० ! गंगामहानदिं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि, तते णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगामहानदी तेणेव उ० २ एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति २ एगट्ठियाए नावाए गंगामहानदिं उत्तरंति २ अण्णमण्णं एवं वयन्ति-पहू णं देवा० ! कण्हे वासुदेवे गंगामहाणदिं बाहाहिं उत्तरित्तए उदाहु णो पभू उत्तरित्तए त्तिकट्टु एगट्ठियाओ नावाओ णूमेंति २ कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा २ चिट्ठंति, तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासति २ जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उ० २, एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेति २, एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ एगाए बाहाए गंगं महाणदिं बासट्ठिं जोयणाति अद्धजोयणं च वित्थिन्नं उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था, तते णं से कण्हे वासुदेवे गंगामहाणदीए बहुमज्झदेसभागं संपत्ते समाणे संते तंते परितंते बद्धसेए जाए यावि होत्था, तते णं कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अहो णं पंच पंडवा महाबलवगा जेहिं गंगामहाणदी बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा, इच्छंतएहिं णं पंचहिं पंडवेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए, तते णं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारूवं अब्भत्थियं जाव जाणित्ता थाहं वितरति, तते णं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंतरं समासासति २, गंगामहाणदिं बावट्ठिं जाव उत्तरति २, जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवा० पंच पंडवे एवं व०-अहो णं तुब्भे देवा० ! महाबलवगा जेणं तुब्भेहिं गंगामहाणदी बासट्ठिं जाव

उत्तिण्णा, इच्छंतएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तते णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं व०-एवं खलु देवा० ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवा० २ एगट्ठियाए मग्गणगवेसणं तं चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो, तते णं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठं सोचा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं व०-अहो णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्णं वीतीवइत्ता पउमणाभं हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्ग० दोवती साहत्थिं उवणीया तया णं तुब्भेहिं मम माहप्पं ण विण्णायं इयाणिं जाणिस्सह त्तिकट्टु लोहदंडं परामुसति, पंचण्हं पंडवाणं रहे चूरेति २, णिव्विसए आणवेति २, तत्थ णं रहमद्दणे णामं कोट्टे णिविट्ठे, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव वा सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ २, सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, तते णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवा० २ अणुपविसति ॥ सूत्रम्-१३२ ॥ तते णं से पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छन्ति २ जेणेव पंडू तेणेव उ० २ करयल एवं व०-एवं खलु ताओ ! अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता, तते णं पंडुराया ते पंच पंडवे एवं व०-कहण्णं पुत्ता ! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता ?, तते णं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं व०-एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकातो पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीतिवतित्ता(त्था) तए णं से कण्हे अम्हे एवं वयासि-गच्छह णं तुब्भे देवा० ! गंगामहाणदिं उत्तरह जाव चिट्ठह

ताव अहं एवं तहेव जाव चिट्ठामो, तते णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण तं चेव सव्वं
नयरं कण्हस्स चिंता ण जुज्ज (वुच)ति जाव अम्हे णिव्विसए आणवेति, तए णं मे पंडुराया ते पंच पंडवे
एवं व०-वुट्ठु णं पुत्ता! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं, तते णं से पंडू राया कोंतिं देविं
सद्दावेति २ एवं व०-गच्छ णं तुमं देवा०! बारवतिं कण्हस्स वासु० णिवेदेहि-एवं खलु देवा०! तुम्हे
पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुमं च णं देवा०! दाहिणड्ढभरहस्स सामी तं संदिसंतु णं देवा०! ते
पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु?, तते णं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं
दुरूहति २ जहा हेट्ठा जाव संदिसंतु णं पिउत्था! किमागमणपओयणं?, तते णं सा कोंती कण्हं वासु-
देवं एवं व०-एवं खलु पुत्ता! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुमं च णं दाहिणड्ढभरह जाव वि-
दिसं वा० गच्छंतु?, तते णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं एवं व०-अपूईवयणा णं पिउत्था! उत्तमपुरिसा
वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणु०! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेयालिं तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु
ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु त्तिकट्टु कोंतिं देविं सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति; तते णं सा कोंती
देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं णिवेदेति, तते णं पंडू पंच पंडवे सद्दावेति २ एवं व०-गच्छह णं तुब्भे पुत्ता!
दाहिणिल्लं वेयालिं तत्थ णं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह, तते णं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडि-
सुणेंति सबलवाहणा हयगय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति २, जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव

उवा० २ पंडुमहुरं नगरिं निवेसेति २ तत्थ णं ते विपुलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था ॥ सूत्रम्-१३३ ॥ ततै णं सा दोवई देवी अन्नया कयाइं आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था, तते णं सा दोवती देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया सूमालं णिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं जम्हा णं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवतीए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं पंडुसेणे, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेइ पंडुसेणत्ति, बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरति, थेरा समोसढा परिसा निग्गया पंडवा निग्गया धम्मं सोचा एवं व०-जं णवरं देवा० ! दोवतिं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो ततो पच्छा देवा० ! अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुहं देवा० !, तते णं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २ दोवतिं देविं सद्दावेंति २ एवं व०-एवं खलु देवा० ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?, तते णं सा दोवती देवी ते पंच पंडवे एवं व०-जति णं तुब्भे देवा० ! संसारभउव्विगा पव्वयह ममं के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सति ?, अहंपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वतिस्सामि, तते णं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरति, तते णं ते पंच पंडवा दोवती य देवी अन्नया कयाइं पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति तते णं से पंडुसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं वयासी-खिप्पामेव भो ! देवाणु० ! निक्ख-

मणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहणीओ सिवियाओ उवट्ठवेह जाव पचोरुहंति जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोद्दस्स पुव्वाइं अहिज्जंति २ बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ॥ सूत्रम्-१३४ ॥ तते णं सा दोवती देवी सीयातो पचोरूहति जाव पव्वतिया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयति, इक्कारस्स अंगाइं अहिज्जइ बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरति ॥ सूत्रम्-१३५ ॥ तते णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पंडुमहुरातो णयरीतो सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति २, बहिया जणवयविहारं विहरंति, तेणं कालेणं २, अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवा० २, सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति तते णं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमातिक्खइ०-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि०, तते णं से जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा अन्नमन्नं सद्दावेंति २, एवं व०-एवं खलु देवाणु० ! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणु० जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरा आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० २, थेरे भगवंते वंदंति णमंसंति २ त्ता, एवं व०-इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए, अहासुहं देवा० !, तते णं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते वंदति णमंसति २

थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूइज्जमाणा जाव जेणेव हत्थकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति, तते णं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेंति बीयाए एवं जहा गोयमसामी णवरं जुहिट्ठिल्लं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति, एवं खलु देवा० ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जिंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तते णं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थकप्पाओ पडिणिक्खमंति २, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवा० २, भत्तपाणं पच्चुवेक्खंति २, गमणागमणस्स पडिक्कमंति २, एसणमणेसणं आलोएंति २, भत्तपाणं पडिदंसेंति २, एवं व०-एवं खलु देवाणुप्पिया ! जाव कालगए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुञ्जं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्तए संलेहणाए झूसणा सियाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तएत्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २, तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति २, जेणेव सेत्तुञ्जे पव्वए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, सेत्तुञ्जं पव्वयं दुरूहंति २, जाव कालं अणवकंखमाणा विहरंति। तते णं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमातियाति चोद्दस पुव्वाइं बहूणि वासाणि दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरति णग्गभावे जाव तमट्ठमाराहेंति २

अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा ॥ सूत्रम्-१३६ ॥ तते णं सा दोवती अज्ञा सुव्वयाणं अज्ञियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाति अहिज्जति २ बहूणि वासाणि मासियाए संलेहणाए० आलोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती प० तत्थ णं दुवतिस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, से णं भंते ! दुवए देवे ततो जाव महाविदेहे वासे जाव अंतं काहिति । एवं खलु जंबू ! समणेणं सोलसस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्-१३७ ॥ सोलसमं नायज्झयणं समत्तं ॥ १६ ॥

'एगट्ठिय'त्ति नौः 'नूमंति'त्ति-गोपयन्ति, श्रान्तः-खिन्नः तान्तः-तरकाण्डकाङ्क्षावान् जातः परितान्तः-सर्वथा खिन्नः एकार्थिका वैते, 'इच्छंतएहिं'ति इच्छया कयाचिदित्यर्थः, 'वेयालीए'त्ति वेलातटे इति । इहापि सूत्रे उपनयो न दृश्यते, एवं चासौ द्रष्टव्यः-"सुबहुंपि तवकिलेसो नियाणदोसेण दूसिओ संतो । न सिवाय दोवतिए जह किल सुकुमालियाजम्मे ॥१॥" अथवा-"अमणुन्नमभत्तीए पत्ते दाणं भवे अणत्थाय । जह कडुयतुंबदाणं नागसिरिभवंमि दोवइए ॥२॥" त्ति [सुबहुरपि तपःक्लेशो निदानदोषेण दूषितः सन् । न शिवाय द्रौपद्या यथा सुकुमारिकाजन्मनि ॥ १ ॥ अमनोज्ञमभक्त्या पात्रे दानं भवेदनर्थाय । यथा कटुतुम्बदानं नागश्रीभवे द्रौपद्या अपि ॥२॥] समाप्तं षोडशज्ञाताध्ययनविवरणम् ॥ १६ ॥

१७-श्रीअश्वाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ।

अथ सप्तदशाध्ययनविवरणम् ॥ १७ ॥

अथ सप्तदशं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः-इहानन्तराध्ययने निदानात् कुत्सितदानाद्वा अनर्थ उक्त इह त्विन्द्रियेभ्योऽनियन्त्रितेभ्यः स उच्यते, इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तरसमस्स णं णायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ णं कणगकेऊ णामं राया होत्था, वण्णओ; तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजुत्ताणावावाणियगा परिवसंति अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था, तते णं तेसिं संजुत्ताणावावाणियगाणं अन्नया एगयओ जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था, तते णं तेसिं जाव बहूणि उप्पातियसयाति जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ समुत्थिए तते णं सा णावा तेणं कालियवाएणं आघोलिज्जमाणी २, संचालिज्जमाणी २, संखोहिज्जमाणी २, तत्थेव परिभमति; तते णं से णिज्जामए णट्ठमतीते णट्ठसुतीते णट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए

पोयवहणे अवहित त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पे याचि होत्था, ण जाणइ कयरं देसं वा, दिसं वा, विदिसं वा; संजुत्ताणावावाणियगा य; जाव झियायति, तते णं ते बहवे कुच्छिधारा य, कण्णधारा य, गब्भिल्लगा य, जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवा० २, एवं व०-किन्नं तुमं देवा० ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह ?, तते णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४, एवं व०-एवं खलु देवा० ! णट्ठमतीते जाव अवहिए त्तिकट्टु ततो ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि, तते णं ते कण्णधारा, तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा णिसम्म भीया ५, ण्हाया कयबलिकम्मा करयल बहूणं इंदाण य खंधाण य जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा २, चिट्ठंति, तते णं से णिज्जामए ततो मुहुत्तंतरस्स लद्धमतीते२, अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तते णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४, एवं व०-एवं खलु अहं देवा० ! लद्धमतीए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे णं देवा० ! कालियदीवंतेणं संवूढा, एस णं कालियदीवे आलोकति, तते णं ते कुच्छिधारा य ४ तस्स णिज्जागमस्स अंतिए सोचा हट्ठतुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालीयदीवे तेणेव उवागच्छंति २ पोयवहणं लंबेंति २ एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आईणवेढो, तते णं ते आसा ते वाणियए पासंति तेसिं गंधं अग्घायंति २, भीया तत्था उव्विग्गा, उव्विग्गमणा; ततो अणेगाइं जोइणातिं उब्भमंति, ते णं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा

सुहं सुहेणं विहरंति, तए णं संजुत्तानावावाणियगा अण्णमण्णं एवं व०-किण्हं अम्हे देवा० ! आसेहिं ?, इमे णं बहवे हिरण्णागरा य, सुवण्णागरा य, रयणागरा य, वइरागरा य; तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य, सुवण्णस्स य, रयणस्स य, वइरस्स य, पोयवहणं भरित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २, हिरण्णस्स य, सुवण्णस्स य, रयणस्स य, वइरस्स य, तणस्स य, अण्णस्स य, कट्ठस्स य, पाणियस्स य पोयवहणं भरेंति २, पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयवहणपट्टणे तेणेव उ० २, पोयवहणं लंबेंति २, सगडीसागडं सज्जेंति २, तं हिरण्णं जाव वइरं च एगट्ठियाहिं पोयवहणाओ संचारेंति २, सगडीसागडं संजोइंति २, जेणेव हत्थिसीसए नयरे तेणेव उवा० २, हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थणिवेसं करेंति २, सगडीसागडं मोएंति २; महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति २, हत्थिसीसं च नगरं अणुपविसंति २, जेणेव कणगकेऊ तेणेव उ० २, जाव उवणेंति, तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजुत्ताणावावाणियगाणं तं महत्थं जाव पडिच्छति ॥ सूत्रम्-१३८॥ ते संजुत्ताणावावाणियगा एवं व०-तुब्भे णं देवा० ! गामागर जाव आहिंडह लवणसमुद्दं च अभिक्खणं २, पोयवहणेणं ओगाहह तं अत्थि याइं केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?, तते णं ते संजुत्ताणावावाणियगा कणगकेउं एवं व०-एवं खलु अम्हे देवा० ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव कालियदीवंतेणं संवूढा, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसे, किं ते ?, हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति, तते णं सामी ! अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए

दिट्ठपुव्वे, तते णं से कणगकेऊ तेसिं संजत्तगाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा ते संजुत्तए एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा० ! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तते णं से संजुत्ता० कणगकेउं एवं व०-एवं सामि त्तिकट्टु आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, तते णं कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ एवं व०-गच्छह णं तुब्भे देवा० ! संजुत्तएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, तेवि पडिसुणेंति, तते णं ते कोडुंबिय० सगडीसागडं सज्जेंति २, तत्थ णं बहूणं वीणाण य, वल्लकीण य, भामरीण य, कच्छभीण य, भंभाण य, छब्भामरीण य, विचित्तवीणाण य; अन्नेसिं च बहूणं सोतिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २, बहूणं किण्हाण य जाव सुकिलाण य कट्ठकम्माण य ४, गंथिमाण य ४, जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २, बहूणं कोट्ठपुडाण य केयइपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति २, बहुस्स खंडस्स य, गुलस्स य, सक्कराए य, मच्छंडियाए य, पुप्फुत्तरपउमुत्तर० अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं भरेंति २, बहूणं कोयवयाण य, कंबलाण य, पावरणाण य, नवतयाण य, मलयाण य, मसूराण य, सिलावट्टाण जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं जाव भरेंति २, सगडीसागडं जोएंति २, जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवा० २, सगडीसागडं मोएंति २, पोयवहणं सज्जेंति २, तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य, तणस्स य, पाणियस्स य, तंदुलाण य, समियस्स य,

गोरमस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति २, दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवा० २, पोयवहणं लंबेंति २, ताइं उक्किट्ठाइं सद्दफरिसरसरूवगंधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तारेंति २, जहिं २, च णं ते आसा आसयंति वा, सयंति वा, चिट्ठंति वा, तुयट्टंति वा; तहिं २ च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव विचित्तवीणातो य अन्नाणि बहूणि सोइंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति, तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति २, णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुंबिय० बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य जाव संघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदियपाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति २, णिचला णिप्फंदा० चिट्ठति जत्थ २, ते आसा आसयंति ४, तत्थ २, णं तेसिं बहूणं कोट्ठपुडाण य अन्नेसिं च घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेंति २, तेसिं परिपेरंते जाव चिट्ठंति जत्थ २, णं ते आसा आसयंति ४, तत्थ २, गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य निकरे य करेंति २, वियरए खणंति २, गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स पारपाणगस्स अन्नेसिं च बहूणि पाणगाणं वियरे भरेंति २, तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति; जहिं २, च णं ते आसा आस० तहिं २, च ते बहवे कोयवया य जाव सिलावट्टया अण्णाणि य फासिंदियापाउग्गाइं अत्थुयपचत्थुयाइं ठवेंति २, तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति; तते णं आसा जेणेव एते उक्किट्ठा

सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवा० २, तत्थ णं अत्थेगतिया आसा अपुव्वा णं इमे सद्दफरिसरसरूवगंधा इतिकट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४, तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरंदूरेणं अवक्कमंति, ते णं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं णिग्गंथो वा २, सद्दफरिसरसरूवगंधा णो सज्जति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४ अच्चणिज्जे जाव वीतिवयति ॥ सूत्रम्-१३९॥ तत्थ णं अत्थेगतिया आसा जेणेव उक्किट्ठसद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवा० २ तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिस ५, मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ते यावि होत्था, तते णं ते आसा एए उक्किट्ठे सद्द ५, आसेवमाणा तेहिं बहूहिं कूडेहि य पासेहि य गलएसु य बज्झंति, तते णं ते कोडुंबिया एए आसे गिण्हंति २ एगट्ठियाहिं पोयवहणे संचारेंति २, तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तते णं ते संजुत्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरपोयपट्टणे तेणेव उवा० २, पोयवहणं लंबेंति २, ते आसे उत्तारेंति २, जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छन्ति २ त्ता करयल जाव वद्धावेंति २, ते आसे उवणेंति; तते णं से तेसिं संजुत्तावाणियगाणं उस्सुक्कं वियरति २ सक्कारेति संमाणेति २ त्ता, पडिविसज्जेति, तते णं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २, सक्कारेति० पडिविसज्जेति, तते णं से कणगकेऊ आसमद्दए सद्दावेति २ एवं व०-तुब्भे णं देवा०! मम आसे विणएह, तते णं ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणंति २, ते आसे बहूहिं मुहबंधेहि य कण्णबंधेहि य

पासाबंधेहि य वालबंधेहि य सुरबंधेहि य कडगबंधेहि य खलिणबंधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहि य अंकणाहि य वेलप्पहारेहि य चितप्पहारेहि य लयप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति २, कणगकेउस्स रन्नो उवणेंति २; तते णं से कणगकेऊ ते आसमद्दए सक्कारेति २, पडिविसज्जेति, तते णं ते आसा बहूहिं मुहबंधेहि य जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमाणसाणि दुक्खाति पावेंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं णिग्गंथो वा २, पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिस जाव गंधेसु य सज्जंति रज्जंति गिज्झंति मुज्झंति अज्झोववज्जंति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाण य जाव सावियाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सति ॥ सूत्रम्-१४० ॥

सर्वं सुगमं, नवरं नट्ठमतीएत्ति-चक्षुर्ज्ञानस्य विषयानिश्चायकत्वात् नष्टश्रुतिको-निर्यामकशास्त्रेण दिगादिविवेचनस्य करणे अशक्तत्वात्, नष्टसंज्ञो मनसो भ्रान्तत्वात्, किमुक्तं भवति ?-मूढः-अविनिश्चितो दिशां भागो-विभागो यस्य स मूढदिग्भागः, कुक्षिधारादयो यानपात्रव्यापारविशेषनियोगिनः, 'हिरण्णागरे'त्यादि, हिरण्याकरांश्च सुवर्णाकरांश्च रत्नाकरांश्च वैराकरांश्च तदुत्पत्तिभूमिरित्यर्थः, बहूंश्चात्राश्वान्-घोटकान् पश्यन्ति स्म, 'किंते'त्ति किंभूतान् ? अत्रोच्यते-'हरी'त्यादि, 'आइन्नवेढो'त्ति-आकीर्णा-जात्याः अश्वाः तेषां 'वेढो'त्ति-वर्णनार्था वाक्यपद्धतिराकीर्णवेष्टकः, स चायं-"हरिरेणुसोणिसुत्तग सकविलमज्जारपायकुक्कडवोंडसमुग्गयसामवन्ना । गोहुमगोरंगगोरीपाडलगोरा पवालवण्णा य धूमवण्णा य केइ ॥१॥ तलपत्तरिट्ठवण्णा सालीवन्ना य भासवन्ना य । केई जंपियतिलकीडगा य सोलोयरिट्ठगा य पुंडपइया य कणगपट्ठा य केइ ॥२॥

चक्कागपिट्ठवण्णा सारसवण्णा य हंसवण्णा य केई। केइत्थ अब्भवन्ना पक्कतलमेहवन्ना य बहुवन्ना य केइ ॥३॥ संझाणुरागसरिसा सुयमुहगुंजद्धरागसरिसऽत्थ केइ। एलापाडलगोरा सामलयागवलसामला पुणो केइ ॥४॥ बहवे अन्ने अणिद्देसा सामाकासीमरत्तपीया अच्चंतविसुद्धावि य णं आइण्णजाइकुलविणीयगयमच्छरा हयवरा जहोवएसक्कमवाहिणोऽविय णं सिक्खाविणीयविणया लंघणवग्गणधावणधोरणत्तिवईजईणसिक्खियगई, किं ते ?, मणसावि उविहंताइं अणेगाइं आससयाइं पासंति" त्ति तत्र हरिद्रेणवश्च–नीलवर्णपांसवः श्रोणिसूत्रकं च–बालकानां चर्मादिदवरकरूपं कटीसूत्रं, तद्धि प्रायः कालं भवति, सह कपिलेन–पक्षिविशेषेण यो मार्जारो–बिडालः स च तथा पादकुकुटः–कुकुटविशेषः स च तथा वोडं–कर्पासीफलं तस्य समुद्गकं–सम्पुटमभिन्नावस्थं कर्पासीफलमित्यर्थः, तद्वेति द्वन्द्वस्तत एषामिव श्यामो वर्णो येषां ते तथा, इह च सर्वत्र द्वितीयार्थे प्रथमा, अतस्तानिति, तथा गोधूमो–धान्यविशेषः तद्वद् गौरमङ्गं येषां ते तथा गौरी या पाटला–पुष्पजातिविशेषस्तद्वद्ये गौरास्ते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, गोधूमगौराङ्गगौरपाटलागौरास्तान्, तथा प्रवालवर्णाश्च–विद्रुमवर्णान् अभिनवपल्लववर्णान् वा रक्तानित्यर्थः, धूमवर्णांश्च–धूम्रवर्णान् पाण्डुरानित्यर्थः, 'केइ'त्ति–कांश्चिन्न सर्वानित्यर्थः, इदं च हरीत्यत आरभ्य वोण्डशब्दे कलितार्द्धरूपकं भवति। १। तलपत्राणि–तालाभिधानवृक्षपर्णानि रिष्ठा च–मदिरा तद्वद्वर्णो येषां ते तलपत्ररिष्ठावर्णास्तान्, तथा शालिवर्णांश्च शुक्लानित्यर्थः, 'भासवण्णा य'त्ति–भस्मवर्णांश्च भासो वा पक्षिविशेषस्तद्वर्णांश्च कांश्चिदित्यर्थः, 'जंपियतिलकीडगाय'त्ति यापिताः–कालान्तरप्रापिता ये तिलाः–धान्यविशेषास्तेषां ये कीटकाः–जीवविशेषास्तद्वद् ये वर्णसाधर्म्यात् ते तथा तांश्च यापिततिलकीटकांश्च 'सोलोयरिट्ठगा य'त्ति–सावलोकं–सोद्योतं यद्रिष्ठकं–रत्नविशेष-

स्तद्वद्ये वर्णसाधर्म्यात् ते सावलोकरिष्ठास्तांश्च 'पुंडपइया य'त्ति-पुण्डानि-धवलानि पदानि-पादा येषां ते तथा ते एव पुण्डपदिकास्तांश्च, तथा कनकपृष्ठान् कांश्चिदितिरूपकं ।२। 'चक्कागपिट्ठवण्ण'त्ति-चक्रवाकः-पक्षिविशेषस्तत्पृष्ठस्येव वर्णो येषां ते तथा तान् सारसवर्णांश्च हंसवर्णान् कांश्चिद् इति पदार्द्धं, 'केतित्थ अब्भवण्णे'त्ति कांश्चिदभ्राभ्रवर्णान् 'पक्कतलमेहवण्णा य'त्ति-पक्वपत्रो यस्तलः-तालवृक्षः स च मेघश्चेति विग्रहस्तस्येव वर्णो येषां ते तथा तान्, 'पविरलमेहवण्ण'त्ति क्वचित्पाठः, तथा 'बहुवण्णा केइ'त्ति-बभ्रुवर्णान् कांश्चित्पिङ्गानित्यर्थः, बाहुवर्णानिति क्वचित् दृश्यते, रूपकमिदं ३। तथा 'संझाणुरागसरिस'त्ति-सन्ध्यानुरागेण सदृशान् वर्णत इत्यर्थः, 'सुयमुहगुंजद्धरागसरिसत्थ केइ'त्ति-शुकमुखस्य गुञ्जार्द्धस्य च प्रतीतस्य रागेण-सदृशो रागो येषां ते तथा तान्, अत्र-इह कांश्चिदित्यर्थः, 'एलापाडलगोर'त्ति एलापाटला-पाटलाविशेषोऽथवा एला च पाटला च तद्वत् गौरा ये ते तथा तान्, 'सामलयागवलसामला पुणो केइ'त्ति-श्यामलता-प्रियङ्गुलता गवलं च-महिषशृङ्गं तद्वत् श्यामलान्-श्यामान् पुनः कांश्चिदिति रूपकं ।४। 'बहवे अन्ने य निद्देस'त्ति एकवर्णेनाव्यपदेश्यानित्यर्थः, अत एवाह 'सामाकासीसरत्तपिय'त्ति-श्यामकाश्च काशीसं-रागद्रव्यं तद्वद्ये ते कासीमास्ते च रक्ताश्च पीताश्च ये ते तथा तान् शबलानित्यर्थः, 'अच्चंतविसुद्धावि य णं'ति-निर्दोषांश्चेत्यर्थः णमित्यलङ्कारे 'आइण्णजाइकुलविणीयगयमच्छर'त्ति-आकीर्णानां-जवादिगुणयुक्तानां सम्बन्धिनी जातिकुले येषां ते तथा ते च ते विनीताश्च गतमत्सराश्च-परस्परासहनवर्जिता निर्मत्सरा चेति तथा तान्, 'हयवर'त्ति-हयानां-अश्वानां मध्ये वरान् प्रधानानित्यर्थः, 'जहोवदेसकमवाहिणोऽविय णं'ति-यथोपदेशक्रममित्र-उपदिष्टपरिपाट्यनतिक्रमेणेव वोढुं शीलं येषां ते तथा ता-

नपि च णमित्यलङ्कारे, 'सिक्खाविणीयविणय'त्ति-शिक्षयेव-अश्वदमकपुरुषशिक्षाकरणादिव विनीतः--अन्नासः विनयो येस्ते तथा तान्, 'लंघणवग्गणधावणधोरणतिवईजइणसिक्खियगइ'त्ति-लङ्घनं गर्त्तादीनां वग्गनं--कूर्दनं धावनं-वेगवद् गमनं धोरणं--चतुरत्वं गतिविषयं त्रिपदी--मल्लस्येव रङ्गभूम्यां गतिविशेषः एवद्रूपा जयिनी--वेगवती शिक्षितेव शिक्षिता गतिर्येस्ते [redacted] तान्, किं ते इति किमपरं, 'मणसावि उविहंताइं'ति-मनसाऽपि--चेतसाऽपि न केवलं वपुषा 'उविहंताइं'ति उत्पतन्ति, 'अणेगाइं आससयाइं'ति न केवलमश्वानेकैकशः अपि तु अश्वशतानि पश्यन्ति स्मेति, गमनिकामात्रमेतदस्य वर्णकस्य भावार्थस्तु बहुश्रुतबोध्य इति। 'पउरगोयर'त्ति-प्रचुरचरणक्षेत्राः, 'वीणाण य'त्यादि, वीणादीनां तन्त्रीसङ्ख्यादिकृतो विशेषः, भंभा- [redacted] 'कोट्ठपुडे'त्यादि, कोष्ठपुटे ये पच्यन्ते ते कोष्ठपुटाः--वासविशेषाः तेषां च, इह यावत्करणादिदं दृश्यं--'पत्तपुडाण य'--पत्राणि तमालपत्रादीनि 'चोयपुडाण य'; 'चोय'त्ति-त्वक्पुटं--पत्रादिमयं तद्भाजनं 'तगरपुडाण य एलापुडाण य हरियेरपुडाण य चंदणपुडाण य कुंकुमपुडाण य ओसीरपुडाण य चंपगपुडाण य मरुअगपुडाण य दमणगपुडाण य जातिपुडाण य जूहियापुडाण य मल्लियापुडाण य नोमालियापुडाण य वासंतियापुडाण य केयइपुडाण य कप्पूरपुडाण य पाडलपुडाण य'त्ति, इह तगरादीनि गन्धद्रव्याणि गान्धिकप्रसिद्धानि, ह्रिरिवेरं- वालकः उसीरं--वेरणीमूलं, केचित्तु पुष्पजातिविशेषाः लोकप्रसिद्धाः, पुष्पजातयश्च प्रायो यद्यपि बहुदिनक्षमा न भवन्ति तथाऽप्युपायतः कतिपयदिनक्षमाः सम्भाव्यन्ते, न च शुष्कतायामपि तासां सर्वथा सुगन्धाभाव इति तद्ग्रहणमिहादुष्टमिति, तथा 'बहुस्स'त्ति-बहोः खण्डादेः पुष्पोत्तरा पद्मोत्तरा च शर्कराभेदावेव, 'कोय-

वगाण य'त्ति-रूतपूरितपटानां प्रावाराः-प्रावरणविशेषा नवतानि-जीनानि मलयानि मसूरकाणि चासनविशेषाः, अथवा मलयानि-मलयदेशोत्पन्नाः वस्त्रविशेषाः, पाठान्तरेण 'मसगाण य'त्ति मशकाः-कृत्तिमण्डिताः वस्त्रविशेषाः शिलापट्टाः-मसृणशिलाः, 'समियस्स'त्ति-कणिकायाः, 'खलिणवंधेहि य'त्ति-खलिनैः-कविकैः. 'उवीलणेहि य'त्ति-अवपीडनाभिर्बन्धनविशेषैः, पाठान्तरे 'अहिलाणेहिं'-मुखबन्धनविशेषैः 'पडियाणएहि य'त्ति-पटतानकं पर्याणस्याधो यद्दीयते इति शेषं प्रायः प्रसिद्धं। अथेन्द्रियासंवृतानां स्वरूपस्येन्द्रियासंवरदोषस्य चाभिधायकं गाथाकदम्बकं वाचनान्तरेऽधिकमुपलभ्यते, तत्र—

कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु। सद्देसु रज्जमाणा रमंती सोइंदियवसट्टा ॥ १ ॥ सोइंदियदुद्दन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवति दोसो। दीविगरुयमसहंतो वहबंधं तित्तिरो पत्तो ॥ २ ॥ थणजहणवयणकरचरणणयणगव्वियविलासियगतीसु। रूवेसु रज्जमाणा रमंति चक्खिदियवसट्टा ॥ ३ ॥ चक्खिदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ भवति दोसो। जं जलणंमि जलंते पडति पयंगो अबुद्धीओ ॥ ४ ॥ अगुरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा ॥ ५ ॥ घाणिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं ओसहिगंधेणं बिलाओ निद्धावती उरगो ॥ ६ ॥ तित्तकडुयं कसायंब महुरं बहुखज्जपेज्जलेज्झेसु। आसायंमि उ गिद्धा रमंति जिब्भिंदियवसट्टा ॥ ७ ॥ जिब्भिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो। जं गललग्गुक्खित्तो फुरइ थलविरहिओ मच्छो ॥ ८ ॥ उउ-

भयमाणसुहेहि य सविभवहियगमणनिव्वुइकरेसु । फासेसु रज्जमाणा रमंति फासिंदियवसट्टा ॥ ९ ॥
फासिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो । जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ॥ १० ॥
कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसककुहाभिरामेसु । सद्देसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ ११ ॥
थणजहणवयणकरचरणनयणगव्वियविलासियगतीसु । रूवेसु जे न रत्ता वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १२ ॥
अगरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु । गंधेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १३ ॥ तित्त-
कडुयं कसायंब महुरं बहुखज्जपेज्जलेज्झेसु । आसाये जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १४ ॥ उउभ-
यमाणसुहेसु य सविभवहियमणणिव्वुइकरेसु । फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥
सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥ रूवेसु
य भद्दगपावएसु चक्खुविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १७ ॥ गंधेसु य
भद्दयपावएसु घाणविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥ रसेसु य भद्द-
यपावएसु जिब्भविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १९ ॥ फासेसु य भद्द-
गपावएसु कायविसयं उवगएसु । तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥ एवं खलु जंबू !
समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्-
१४१ ॥ सत्तरसमं नायज्झयणं समत्तं ॥ १७ ॥

'कलरिभियमहुरतंतितलतालवंसककुहाभिरामेसु'त्ति-कलाः-अत्यन्तश्रवणहृदयहराः अव्यक्तध्वनिरूपा अथवा कलावन्तः-परिणामवन्त इत्यर्थः रिभिताः-स्वरघोलनाप्रकारवन्तः मधुरा-श्रवणसुखकरा ये तन्त्रीतलतालवंशाः ते तथा, तत्र तन्त्री-वीणा तलतालाः-हस्ततालाः अथवा तलाः-हस्ताः तालाः-कंसिकाः वंशाः-वेणवः, इह च तन्त्र्यादयः कलादिभिः शब्दधर्मैर्विशेषिताः शब्दकारणत्वात्ते च ते ककुदाः-प्रधानाः स्वरूपेणाभिरामाश्च-मनोज्ञा इति कर्मधारयोऽतस्तेषु, रमन्ति-रतिं कुर्वन्तीति इति योगः, 'सद्देसु रज्जमाणा रमंति सोइंदियवसट्ट'त्ति-शब्देषु-मनोज्ञध्वनिषु श्रोतोविषयेषु रज्यमाना-रागवन्तः श्रोत्रेन्द्रियस्य वशेन-बलेन ऋताः-पीडिता इति विग्रहः, ये शब्देषु रज्यन्ते-तत्कारणेषु तन्त्र्यादिषु श्रोत्रेन्द्रियवशाद्रमन्ते इति वाक्यार्थः, अनेन च कार्यतः श्रोत्रेन्द्रियस्वरूपमुक्तं ॥ 'सोइंदियदुद्दंतत्तणस्स अह पत्तिओ हवइ दोसो। दीविपरुयमसहंतो वहबंधं तित्तिरो पत्तो' ॥ २ ॥ कण्ठ्या, नवरं शाकुनिकपुरुषसम्बन्धी पञ्जरस्थतित्तिरो दीपिका उच्यते तस्य यो रवस्तमसहमान, स्वनिलयाभिर्गतो वधं-मरणं बन्धं च-पञ्जरबन्धनं प्राप्त इत्यर्थः। 'थणजघणवयणकरचरणनयणगव्वियविलासियगईसु'त्ति-स्तनादिषु तथा गर्वितानां-सौभाग्यमानवतीनां स्त्रीणां या विलसिता-जातविलासाः सविकारा गतयस्तासु चेत्यर्थः। 'रूवेसु रज्जमाणा रमंति चक्खिदियवसट्टा' प्रतीतमेव, 'चक्खिदियदुद्दंतत्तणस्स अह पत्तिओ हवइ दोसो। जं जलणंमि जलंते पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥ ४ ॥' कण्ठ्या, अगुरुवरपवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा ॥५॥' कण्ठ्याः, नवरं अगुरुवरः-कृष्णागरुः प्रवरधूपनानि-गन्धयुक्तपुपदेशविरचिता धूपविशेषाः, 'उउय'त्ति-ऋतौ २ यान्युपचितानि तानि आर्त्तवानि माल्यानि-

इति ॥' 'घाणिंदियदुद्दन्तत्तणस्स अह
जात्यादिकुसुमानि अनुलेपनानि च-श्रीखण्डकुङ्कुमादीनि विषयः-एतत्प्रकारा
एत्तिओ भवति दोसो । जं ओसहिगंधेणं बिलाओ निद्धावई उलगो' ॥६॥ कण्ठ्या; तित्तकडुअं कसायंबमहुरं
बहुखज्जपेज्जलेज्झेसु । आसायंमि उ गिद्धा रमंति जिब्भिंदियवसट्टा ' ॥७॥ पूर्ववत्, नवरं तिक्तानि-निम्बकटु-
कादीनि कटुकानि-शृङ्गवेरादीनि कषायाणि-मुद्गादीनि अम्लानि-तक्रादिसंस्कृतानि मधुराणि-खण्डादीनि खाद्यानि-
कुरमोदकादीनि पेयानि-जलमद्यदुग्धादीनि लेह्यानि-मधुशिखरिणीप्रभृतीनि आस्वादे-रसे ॥ 'जिब्भिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह
एत्तिओ भवइ दोसो । जं गललग्गुक्खित्तो फुरइ थलविरेल्लिओ मच्छो ॥८॥ कण्ठ्या, नवरं गलं-बिडिशं तत्र लग्नः कण्ठे
विद्धत्वात् उत्क्षिप्तो-जलादुद्धृतस्ततः कर्मधारयः, स्फुरति-स्पन्दते स्थले-भूतले 'विरेल्लिओ'त्ति प्रसारितः क्षिप्त इत्यर्थः
यः स तथा ॥ 'उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियय मणनिव्वुइकरेसु फासेसु रज्जमाणा रमंति फासिंदिय
वसट्टा ' ॥ ९ ॥ कण्ठ्या, नवरं ऋतुषु-हेमन्तादिषु भज्यमानानि-सेव्यमानानि सुखानि-सुखकराणि तानि तथा तेषु;
सविभवानि-समृद्धियुक्तानि महाधनानीत्यर्थः, हितकानि-प्रकृत्यनुकूलानि सविभवानां वा-श्रीमतां हितकानि यानि तानि
तथा मनसो निर्वृतिकराणि यानि तानि तथा ततः पदत्रयस्य तद्द्वयस्य वा कर्मधारयोऽतस्तेषु, स्रक्चन्दनाङ्गनावसन-
तूल्यादिषु द्रव्येष्विति गम्यते, 'फासिंदियदुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो । जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो
तिक्खो ॥ १० ॥' भावना प्रतीतैव, अथेन्द्रियाणां संवरे गुणमाह-'कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसककुहाभिरामेसु । सद्देसु
जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए' ॥११॥ पूर्ववत्, नवरमिह तन्त्र्यादयः शब्दकारणत्वेनोपचाराच्छब्दा एव विवक्षिता

अतः शब्देष्वित्येतस्य विशेषणतया व्याख्येयाः, तथा वशेन-इन्द्रियपारतन्त्र्येण ऋताः-पीडिता वशार्त्ताः वशं वा-विषयपारतन्त्र्यं ऋताः-प्राप्ता वशार्त्ताः, तेषां मरणं वशार्त्तमरणं वशर्त्तमरणं वा न ते 'मरए'त्ति म्रियन्ते छान्दसत्वादेकवचनप्रयोगेऽपि बहुवचनं व्याख्यातमिति, 'थणजघणवयणकरचरणनयणगव्वियविलासियगईसु। रूवेसु जे न रत्ता वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १२ ॥' एवमन्यास्तिस्रो गाथाः पूर्वोक्तार्था वाच्याः, उपदेशमिन्द्रियाश्रितमाह-'सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवगएसु। तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया न होयव्वं ॥१६॥' कण्ठ्या, नवरं भद्रकेषु-मनोज्ञेषु पापकेषु-अमनोज्ञेषु क्रमेण तुष्टेन-रागवता रुष्टेन-रोषवतेति, एवमन्या अपि चतस्रोऽध्येतव्या इति। इह विशेषोपनयमेवमाचक्षते-"जह सो कालियदीवो अणुवमसोक्खो तहेव जइधम्मो। जह आसा तह साहू वणियव्वऽणुकूलकारिजणा ॥ १ ॥ जह सद्दाइअगिद्धा पत्ता नो पासबंधणं आसा। तह विसएसु अगिद्धा वज्झंति न कम्मणा साहू ॥ २ ॥ जह सच्छंदविहारो आसाणं तह य इह वरमुणीणं। जरमरणाइं विवज्जिय संपत्ताणंदनिव्वाणं ॥ ३ ॥ जह सद्दाइसु गिद्धा बद्धा आसा तहेव विसयरया। पावेंति कम्मबंधं परमासुहकारणं घोरं ॥ ४ ॥ जह ते कालियदीवा णीया अन्नत्थ दुहगणं पत्ता। तह धम्मपरिब्भट्ठा अधम्मपत्ता इहं जीवा ॥५॥ पावेंति कम्मनरवइवसया संसारवाहयालीए। आसप्पमद्दएहि व नेरइयाइहिं दुक्खाइं ॥ ६ ॥" [यथा स कालिकद्वीपोऽनुपमसौख्यस्तथा यतिधर्मः। यथाऽश्वास्तथा साधवः वणिज इवानुकूलकारिणो जनाः ॥ १ ॥ यथा शब्दाद्येषु अगृद्धाः प्राप्ता न पाशबन्धनं अश्वाः। तथा विषयेषु अगृद्धा बध्यन्ते न कर्मणा साधवः ॥ २ ॥ यथा स्वच्छन्दविहारोऽश्वानां तथाचेह वरमुनीनां। जरामरणानि विवर्ज्य संप्राप्ताऽऽनन्दं निर्वाणं ॥ ३ ॥ यथा शब्दादिषु गृद्धा बद्धा अश्वास्तथैव विषयरताः।

प्राप्नुवन्ति कर्मबन्धं परमासुखकारणं घोरम् ॥ ४ ॥ यथा ते कालकद्वीपात् नीता अन्यत्र दुःखगणं प्राप्ताः । तथा धर्मपरिभ्रष्टाः
अधर्मप्राप्ता इह जीवाः ॥ ५ ॥ प्राप्नुवन्ति कर्मनरपतिवशगताः संसारवाह्यालौ अश्वप्रमर्दकैरिव नैरयिकादिभिर्दुःखानि ॥६॥]
इति सप्तदशं ज्ञातं विवरणतः समाप्तम् ॥ १७ ॥

१८–श्रीसुसुमाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ।

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य चायं पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–पूर्वस्मिन्निन्द्रियवशवर्त्तिनामितरेषां चानर्थेतरावुक्ताविह तु लोभवशवर्त्तिनामितरेषां च तावेवोच्येते इत्येवंसम्बद्धमिदम्–

जति णं भंते! समणेणं० सत्तरसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे णामं नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ णं धण्णे सत्थवाहे भद्दा भारिया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं०–धणे धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुंसुमाणामं दारिया होत्था सूमालपाणिपाया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं दासचेडे होत्था अहीणपंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था, तते णं से दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था, सुंसुमं दारियं कडीए गिण्हति २, बहूहिं दारएहि य दारियाहि य डिंभ-

एहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं अभिरममाणे २ विहरति, तते णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारियाण य ६ अप्पेगतियाणं खुल्लए अवहरति, एवं वट्टए आडोलियातो तेंदुसए पोतुल्लए साडोल्लए अप्पेगतियाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरति अप्पेगतिया आउस्सति एवं अवहसइ निच्छोडेति निब्भच्छेति तज्जेति अप्पे० तालेति, तते णं ते बहवे दारगा य ६, रोयमाणा ण ५, साणं २, अम्मापिऊणं णिवेदेंति; तते णं तेसिं बहूणं दारगाण य ६, अम्मापियरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवा० धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खेज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खेज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति, तते णं धण्णे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एयमट्ठं भुज्जो २, णिवारेंति णो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमति, ततेणं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६, अप्पेगतियाणं खुल्लए अवहरति जाव तालेति, तते णं ते बहवे दारगा य ६, रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं णिवेदेंति, तते णं ते आसुरुत्ता ५ जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवा० २ त्ता, बहूहिं खिज्ज जाव एयमट्ठं णिवेदेंति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं ६, अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायं दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसति उद्धंसति णिब्भच्छेति निच्छोडेति तज्जेति उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेति सातो गिहातो णिच्छुभति ॥ सूत्रम्–१४२ ॥ तते णं से चिलाए दासचेडे सातो गिहातो निच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिंघाडए जाव पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य

वेसाघरेसु य पाणघरएसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढति, तते णं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जपसंगी चोज्जपसंगी मंसपसंगी जूयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था, तते णं रायगिहस्स नगरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसिभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था विसमगिरिकडगकोडंबसंनिविट्ठा वंसीकलंकपागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफरिहोवगूढा एगदुवारा अणेगखंडी विदितजणणिग्गमपवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्लभजलपेरंता सुबहुस्सवि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था, तत्थ णं सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावती परिवसति अहम्मिए जाव अधम्मे केऊ समुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसीए सद्दवेही, से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं जाव विहरति, तते णं से विजए तक्करे चोरसेणावती बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं च बहूणं छिन्नभिन्नबहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था, तते णं से विजए तक्करे चोरसेणावती रायगिहस्स दाहिणपुरच्छिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकुट्टणेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे २, विद्धंसेमाणे २, णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरति; तते णं से चिलाए दासचेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य धणिएहि य

जइकरेहि य परब्भवमाणे २ रायगिहाओ नगरीओ णिग्गच्छति २ जेणेव सीहगुफा चोरपल्ली तेणेव उवा० २ विजयं चोरसेणावतीं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तते णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था, जाहेविय णं से विजए चोरसेणावती गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चति ताहेविय णं से चिलाए दासचेडे सुबहुंपि हु कूवियबलं हयविमहिय जाव पडिसेहिति, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छति, तते णं से विजए चोरसेणावती चिलायं तक्करं बहूइओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ, तते णं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तते णं ताइं पंचचोरसयाति विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २, इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति २, बहूइं लोइयाति मयकिच्चाइं करेइ २, जाव विगयसोया जाया यावि होत्था, तते णं ताइं पंच चोरसयाति अन्नमन्नं सद्दावेंति २ एवं व०–एवं खलु अम्हं देवा० ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूइओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २, चिलायं तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति, तते णं से चिलाए चोरसेणावती जाए अहम्मिए जाव विहरति,

१ °इ २ ता क्ष।

तए णं से चिलाए चोरसेणावती चोरणायगे जाव कुडंगे यावि होत्था, से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरच्छिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरति ॥सूत्रम्-१४३॥ तते णं से चिलाए चोरसेणावती अन्नया कयाइं विपुलं असणं ४, उवक्खडावेत्ता पंच चोरसए आमंतेइ तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विपुलं असणं ४ सुरं च जाव पसण्णं च आसाएमाणे ४, विहरति; जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विपुलेणं धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति सम्माणेति २, एवं व०-एवं खलु देवा० ! रायगिहे णयरे धण्णे णामं सत्थवाहे अड्ढे, तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजातिया सुंसुमाणामं दारिया यावि होत्था अहीणा जाव सुरूवा, तं गच्छामो णं देवा० ! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो तुब्भं विपुले धणकणग जाव सिलप्पवाले ममं सुंसुमा दारिया, तते णं ते पंच चोरसया चिलायस्स० पडिसुणेंति, तते णं से चिलाए चोरसेणावती तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहति २, पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणा माइयगोमुहिएहिं फलएहिं णिक्कट्ठाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दीहाहिं ओसारियाहिं उरुघंटियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया २ उक्किट्ठसीहणायचोरकलकलरवं जाव समुद्दरवभूयं करेमाणा सीहगुहातो चोरपल्लीओ पडिनि-

क्खमति २, जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवा० २, रायगिहस्स अदूरसामंते एगं महं गहणं अणुपविसति २, दिवसं खवेमाणा चिट्ठति, तते णं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयंसि निसंतपडिनिसंतंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहितेहिं फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघंटियाहिं जेणेव रायगिहे पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवा० २, उदगवत्थि परामुसति आयंते ३ तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ २, रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएणं अच्छोडेति कवाडं विहाडेति २, रायगिहं अणुपविसति २, महया २, सद्देणं उग्घोसेमाणे २, एवं व०-एवं खलु अहं देवा० ! चिलाए णामं चोरसेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहातो चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे तं जो णं णवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे से णं निग्गच्छउ त्ति कट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवा० २, धण्णस्स गिहं विहाडेति, तते णं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावतिणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासति २, भीते तत्थे ४, पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमति, तते णं से चिलाए चोरसेणावती धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएति २ सुबहुं धणकणग जाव सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गेण्हति २ त्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमति २ जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सूत्रम्-१४४ ॥

सर्वं सुगमं नवरं 'खुल्लए'त्ति-कपर्दकविशेषान् 'वर्चकान्'-जत्वादिमयगोलकान् 'आडोलियाउ'त्ति-रुद्रा उभइयां इति वा योच्यते, 'तेंदूसए'त्ति-कन्दुकान्, 'पोत्तुल्लए'त्ति-वस्त्रमयपुत्रिका अथवा परिधानवस्त्राणि, 'साडोल्लए'त्ति-

उत्तरीयवस्त्राणि, 'खेज्जणाहि य'त्ति–खेदनाभिः–खेदसंसूचिकाभिः वाग्भिः, रुदनादिभिः–रुदितप्रायाभिरुपालम्भनाभिः–युक्तमेतद्भवादृशामित्यादिभिरिति 'अणोहट्टए'त्ति–अकार्ये प्रवर्त्तमानं तं हस्ते गृहीत्वा योऽपहरति–व्यावर्त्तयति तदभावादनपहर्त्तृकः अनपघट्टको वा वाचा निवारयितुरभावादनिवारकः, अत एव स्वच्छन्दमतिः–निरर्गलबुद्धिरत एव स्वैरप्रचारी स्वच्छन्दविहारी, 'चोज्जपसंगे'त्ति–चौर्यप्रसक्तः, अथवा 'चोज्ज'त्ति–आश्चर्येषु कुहेटकेषु प्रसक्त इत्यर्थः, 'विसमगिरिकडगकोलंबसन्निविट्ठ'त्ति–विषमो योऽसौ गिरिकटकस्य–पर्वतनितम्बस्य कोलम्बः–प्रान्तस्तत्र सन्निविष्टा–निवेशिता या सा तथा, कोलम्बो हि लोकेऽवनतं वृक्षशाखाग्रमुच्यते इह चोपचारतः कटकाग्रं कोलम्बो व्याख्यातः, 'वंसीकलंकपागारपरिक्खित्त'त्ति वंशीकलङ्का–वंशजालीमयी वृत्तिः सैव प्राकारस्तेन परिक्षिप्ता–वेष्टिता या सा तथा, पाठान्तरे तु वंशीकृतप्राकारेति, 'छिन्नसेलविसमप्पवायपरिहोवगूढ'त्ति–छिन्नो–विभक्तोऽवयवान्तरापेक्षया यः शैलस्तस्य सम्बन्धिनो ये विषमाः प्रपाता–गर्त्ताः त एव परिखा तयोपगूढा–वेष्टिता या सा तथा, एकद्वारा–एकप्रवेशनिर्गममार्गा, 'अणेगखंडि'त्ति–अनेकनश्यन्नरनिर्गमापद्वारा विदितानामेव–प्रतीतानां जनानां निर्गमप्रवेशौ यस्यां हेरिकादिभयात् सा तथा, अभ्यन्तरे पानीयं यस्याः सा तथा, सुदुर्लभं जलं पर्यन्तेषु–बहिःपार्श्वेषु यस्याः सा तथा, सुबहोरपि 'कूवियबलस्स'त्ति–मोषव्यावर्त्तकसैन्यस्यागतस्य दुष्प्रध्वंस्या, वाचनान्तरे पुनरेवं पठ्यते–'जत्थ चउरंगबलनिउत्ताविं कूवियबला हयमहियपवरवीरघाइयनिवडियचिन्धधयवडया कीरंति'त्ति–अत्र चतुर्णामङ्गानां हस्त्यश्वरथपदातिलक्षणानां यद्बलं–सामर्थ्यं तेन नियुक्तानि–नितरां मङ्गतानि यानि तानि तथा, 'कूवियबल'त्ति–निवर्त्तकसैन्यानीति, 'अधम्मिए'त्ति–अधर्मेण चरतीत्य-

धार्मिकः, यावत्करणात् 'अधम्मिट्ठे-' अधर्मिष्ठोऽतिशयेन निर्द्धर्म्मा निस्तूंशकर्मकारित्वात्, 'अधम्मक्खाई'-अधर्ममाख्यातुं शीलं यस्य स तथा, 'अधम्माणुए'-अधर्म्मे कर्त्तव्येऽनुज्ञा-अनुमोदनं यस्य सोऽधर्मानुज्ञः अधर्मानुगो वा 'अधम्मपलोई' अधर्म्ममेव प्रलोकयितुं शीलं यस्यासावधर्म्मप्रलोकी 'अधम्मपलज्जणे'-अधर्मप्रायेषु कर्मसु प्रकर्षेण रज्यते इत्यधर्मप्ररजनः, रलयोरैक्यमितिकृत्वा रस्य स्थाने लकारः, 'अधम्मसीलसमुदायारे'-अधर्म्म एव शीलं-स्वभावः समुदाचारश्च यत्किञ्चनानुष्ठानं यस्य स तथा, 'अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरति'-अधर्मेण-पापेन सावद्यानुष्ठानेनैव दहनाङ्कननिर्लाञ्छनादिना कर्म्मणा वृत्तिं-वर्तनं कल्पयन्-कुर्वाणो विहरति-आस्ते स्म 'हणछिंदभिंदवियत्तए'-हन-विनाशय छिन्द-द्विधा कुरु भिंद-कुंतादिना भेदं विधेहीत्येवं परानपि प्रेरयन् प्राणिनो विकृन्ततीति हनच्छिन्दभिन्दविकर्त्तकः, हनेत्यादयः शब्दाः संस्कृतेऽपि न विरुद्धाः, अनुकरणरूपत्वादेषां, 'लोहियपाणि'-प्राणविकर्त्तनो (नतो) लोहितौ रक्तरक्ततया पाणी-हस्तौ यस्य स तथा, 'चंडे'-चण्डः उत्कटरोषत्वात्, 'रुद्दे'-रौद्रो निस्तूंशत्वात्, क्षुद्रः क्षुद्रकर्म्मकारित्वात्, साहसिकः-असमीक्षितकारित्वात्, 'उक्कंचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसंपओगबहुले' उत्कञ्चनमुत्कोचा, मुग्धं प्रति तत्प्रतिरूपदानादिकमसद्व्यवहारं कर्तुं प्रवृत्तस्य पार्श्ववर्त्तिविचक्षणभयात् क्षणं यत्तदकरणं तदुत्कञ्चनमित्यन्ये, वञ्चनं-प्रतारणं माया-परवञ्चनबुद्धिः निकृतिः-बकवृत्त्या कुर्कुटादिकरणं अधिकोपचारकरणेन परच्छलनमित्यन्ये मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरकरणमित्यन्ये कपटं-वेषादिविपर्ययकरणं कूटं कार्षापणतुलाव्यवस्थापत्रादीनामन्यथाकरणं 'साइ'त्ति-अविश्रम्भः, एषां सम्प्रयोगः-प्रवर्त्तनं तेन बहुलः स वा बहुलो यस्य स तथा, 'निस्सीले'-अपगतशुभ-

स्वभावः 'निव्वए'-अणुव्रतरहितः, 'निग्गुणो'-गुणव्रतरहितः, 'निप्पचक्खाणपोसहोववासे'-अविद्यमानपौरुष्यादि-प्रत्याख्यानोऽष्टम्यादिपर्वदिनोपवासश्चेत्यर्थः, 'बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसिरीसवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए अधम्म-केऊसमुट्ठिए'त्ति प्रतीतं नवरं घातः-प्रहारो वधो-हिंसा व्यत्ययो वा उच्छादना-जातेरपि व्यवच्छेदनं तदर्थं 'अधर्मकेतुः' पापप्रधानः केतुः-ग्रहविशेषः स इव यः स तथा, द्विपदादिसत्त्वानां हि क्षयाय यथा केतुर्ग्रहः समुद्गच्छति तथाऽयं समुत्थित इति भावना, बहुनगरेषु निर्गतं-जनमुखान्निःसृतं यशः-ख्यातिर्यस्य स तथा, शूरो-विक्रमी दृढप्रहारी-गाढप्रहारः, शब्दं लक्षीकृत्य विध्यति यः सः शब्दवेधी, चौरादीन्येकादशपदानि प्रतीतानि, नवरं ग्रन्थिभेदकाः-व्यामकान्यथाकारिणः घुर्घुरकादिना वा ये ग्रन्थीन् छिन्दन्ति, सन्धिच्छेदका ये गृहभित्तिसन्धीन् विदारयन्ति, क्षात्रखानका ये सन्धानवर्जितभित्तीः काणयन्ति, 'अणधारयं'ति ऋणं-व्यवहारकदेयं द्रव्यं तद्ये तेषां धारयन्ति, खंडरक्षा-दण्डपाशिकाः, तथा छिन्ना-हस्तादिषु भिन्ना नासिकादौ बाह्याः देशात् आहता-दण्डादिभिः ततो द्वन्द्वः, कुडंगं-वंशादिगहनं तद्वद्यो दुर्गमत्वेन रक्षार्थमाश्रयणीय-त्वसाधर्म्यात् स तथा, 'नित्थाणं'ति-स्थानभ्रष्टं, 'अग्गअसिलट्ठिगाहि'त्ति-पुरस्तात् खड्गयष्टिग्राहः अथवा अग्र्यः-प्रधानः, 'अल्लचम्मं दुरूहति'त्ति आर्द्रं चर्मारोहति माङ्गल्यार्थमिति, 'माइय'त्ति-ककारस्य स्वार्थिकत्वात्, 'माइ'त्ति-रुक्षादिवाल-युक्तत्वात् पक्ष्मलानि तानि च तानि 'गोमुहीअ'त्ति-गोमुखवदुरःप्रच्छादकत्वेन कृतानि गोमुखितानि चेति कर्मधारय-स्ततस्तैः फलकैः-स्फुरकैः, अत्रार्थे वाचनान्तराण्यपि सन्ति तानि च विमर्शनीयानीति, गमनिकैवेयं, निकृष्टाभिः-कोशा-न्निष्कृष्टाभिरसियष्टिभिः असक्तैः-स्कन्धावस्थितैस्तूणैः-शरभस्त्रादिभिः सजीवैः-कोट्यारोपितप्रत्यञ्चैर्धनुर्भिः समुत्क्षिप्तैः-

निसर्गार्थमाकृष्टैः 'शरवेः सकाशाच्छरैः–बाणैः ' समुल्लासियाहिं'ति–प्रहरणविशेषाः, 'ओसारियाहिं'ति–प्रलम्बीकृताभिः ऊरुघंटाभिः-जङ्घाघण्टाभिः 'छिप्पतूरेणं'ति–क्षिप्तर्येण, द्रुतं वाद्यमानेन तूर्येणेत्यर्थः, प्रतिनिःक्रामन्ति, इह बहुवचनं चौरव्यक्त्यपेक्षया अन्यथा चौरसेनापतिप्रक्रमादेकवचनमेव स्यादिति।

तते णं से धण्णे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवा० २, सुबहुं धणकणगं सुंसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं ३, पाहुडं गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवा० २, तं महत्थं पाहुडं जाव उवणेंति २ एवं व०–एवं खलु देवा०! चिलाए चोरसेणावती सीहगुहातो चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता सुबहुं धणकणगं सुंसुमं च दारियं गहाय जाव पडिगए, तं इच्छामो णं देवा०! सुंसुमादारियाए कूवं गमित्तए, तुब्भे णं देवाणुप्पिया! से विपुले धणकणगे ममं सुंसुमा दारिया, तते णं ते णयरगुत्तिया धण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २, सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया २, उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूयंपिव करेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छंति २, जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवा० २, चिलाएणं चोरसेणावतिणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तते णं णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावतिं हयमहिया जाव पडिसेहेंति, तते णं ते पंच चोरसया णगरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विपुलं धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वतो समंता विप्पलाइत्था, तते णं ते णयरगुत्तिया तं विपुलं धणकणगं गेण्हंति २ जेणेव रायगिहे तेणेव उवा०, तते णं से चिलाए तं चोरसेण्णं

१८ श्री- सुसुमाख्य- ज्ञाताध्य० धन्यसार्थ- वाहस्य- प्रयत्नादि- वर्णन- सूत्रम्।

तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीते तत्थे सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठे, तते णं धण्णे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहिं अवहीरमाणिं पासित्ताणं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्ध० चिलायस्स पदमग्गविहिं अभिगच्छति, अणुगज्जेमाणे हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छति, तते णं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठं सन्नद्धबद्धं समणुगच्छमाणं पासति २, अत्थामे ४, जाहे णो संचाएति सुंसुमं दारयं णिव्वाहित्तए ताहे संते तंते परितंते नीलुप्पलं असिं परामुसति २ सुंसुमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदति २ तं गहाय तं अगामियं अडविं अणुपविट्ठे, तते णं चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाते अभिभूते समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स वण्णहेउं जाव आहारं आहारेति से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं ४, हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व से चिलाए तक्करे। तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं परिधाडेमाणे २, तण्हाए छुहाए य संते तंते परितंते नो संचाएइ चिलातं चोरसेणावतिं साहत्थिं गिण्हित्तए, से णं तओ पडिनियत्तइ २, जेणेव सा सुंसुमा दारिया चिलाएणं जीवियाओ ववरोविल्लिया तेणंतेणेव उवागच्छति २, सुंसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ २, परसुनियंतेव चंपगपायवे, तते णं से धण्णे

सत्थवाहे अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया २, सद्देणं कुहू २, सुपरुन्ने सुचिरं कालं वाहमोक्खं करेति, तते णं से धण्णे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए सव्वतो समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य परिब्भं(रद्धं)ते समाणे तीसे आगामियाए अडवीए सव्वतो समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेंति २, संते तंते परितंते णिव्विन्ने तीसे आगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसादेति, तते णं उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसमा जीवियातो ववरोएल्लिया तेणेव उवा० २, जेट्ठं पुत्तं धण्णे सद्दावेइ २ एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वतो समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे आगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसादेमो, तते णं उदगं अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए, तण्णं तुब्भं ममं देवा० ! जीवियाओ ववरोवेह मंसं च सोणियं च आहारेह २ तेणं आहारेणं अवहिट्ठा समाणा ततो पच्छा इमं आगामियं अडविं णित्थरिहिह रायगिहं च संपाविहिह मित्तणाइय अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तते णं से जेट्ठपुत्ते धण्णेणं एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं एवं व०-तुब्भे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरूजणया देवयभूया ठावका पतिट्ठावका संरक्खागा संगोवगा तं कहण्णं अम्हे तातो ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुब्भे णं तातो ! ममं जीविय

ववरोवेह मंसं च सोणियं च आहारेह आगामियं अडविं णित्थरह तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह, तते णं धण्णं सत्थ० दोचे पुत्ते एवं व०-मा णं ताओ! अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुं देवयं जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भे णं ताओ! मम जीवियाओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह, एवं जाव पंचमे पुत्ते, तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंच पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता ते पंच पुत्ते एवं व०-मा णं अम्हे पुत्ता! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एस णं सुंसुमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे जाव जीवविप्पजढे तं सेयं खलु पुत्ता! अम्हं सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए, तते णं अम्हे तेणं आहारेणं अवत्थद्धा समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो, तते णं ते पंच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति, तते णं धण्णे सत्थ० पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेति २, सरगं च करेति २, सरएणं अरणिं महेति २, अग्गिं पाडेति २, अग्गिं संधुक्खेति २, दारुयाति परिक्खेवेति २, अग्गिं पज्जालेति २, सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेंति, तेणं आहारेणं अवत्थद्धा समाणा रायगिहं नयरिं संपत्ता मित्तणाईअभिसमण्णागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जायाविहोत्था, तते णं से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयातिं जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ सूत्रम्-१४९ ॥ तेणं कालेणं २, समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे; से णं धण्णे सत्थवाहे संपत्ते धम्मं सोचा पव्वतिए

एक्कारसंगवी मासियाए संलेहणाए सोहंमे उववण्णो महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जहाविय णं जंबू! धण्णेणं सत्थवाहेणं णो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा णो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए दारियाए मंससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए, एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा २ इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स वा, नो वण्णहेउं वा, नो रूवहेउं वा, नो बल० विसयहेउं वा, आहारं आहारेति नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं २ बहूणं सावयाणं बहूणं साविगाणं अच्चणिज्जे जाव वीतीवतीस्सति, एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया अट्ठारसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्-१४६॥ अट्ठारसमं णायज्झयणं समत्तं ॥ १८ ॥

'मूइयाहिं'ति-मूकीकृताभिर्निःशब्दीकृताभिरित्यर्थः, 'उदगवत्थि'त्ति-जलभृतदृतिः जलाधारचर्म्ममयभाजनमित्यर्थः, 'जो णं णवियाए'त्यादि, यो हि नविकायाः-अग्रेतनभवभाविन्याः मातुर्दुग्धं पातुकामः स निर्गच्छतु, यो मुमूर्षुरित्यर्थः, 'आगामियं'ति अग्रामिकं 'दीहमद्धं'ति दीर्घमार्गं, 'पथमग्गविहिं'ति-पदमार्गप्रचार, 'पम्हुट्ठदिसाभाए'त्ति-विस्मृतदिग्भागः, 'अंतरा चेव कालगए'त्ति-इह एतावदनोपयोगीति आवश्यकादिप्रसिद्धं तदीयं शेषचरितं साधुदर्शनोपशमाद्युपदेशेन सम्यक्त्वपरिभावनवजतुण्डकीटिकाभक्षणदेवलोकगमनलक्षण नोक्तमिति न विरोधः सम्भावनीयः, उपनयग्रन्थः, पूर्ववत्; 'वाहपामोक्खं'ति-अश्रुविमोचनं; 'पिया'इत्यादौ, पितोपचारतो लोकेऽ-

न्योऽपि रूढो, यदाह-" जनेता चोपनेता च, यस्तु विद्यां प्रयच्छति । अन्नदाता भयत्राता, पञ्चैते पितरः स्मृताः
॥ १ ॥ " इति जनकग्रहणं स्थापकाः-गृहस्थधर्मे दारादिसंग्रहणात् प्रतिष्ठापकाः-राजादिसमक्षं स्वपदनिवेशनेन संरक्षकाः-
नानाव्यसनेभ्यः सङ्गोपकाः-यदृच्छाचारितायां संवरणात्, 'अरणिं 'ति-अरणिरग्नेः उत्पादनार्थं निर्मथ्यते यद्दारु ' सरगं
फरेइ 'त्ति-शरको निर्मथ्यते तयेनेति, 'नो वन्नहेतु 'मित्यादि, अनेन च किमुक्तं भवति ?-' नन्नत्थ 'त्ति एकस्याः सिद्धि-
गमनप्रापणार्थतया अन्यत्र नाहारमाहारयति, तां वर्जयित्वा कारणान्तरेण नाहारयतीत्यर्थः, तत्र सिद्धिगमनस्य-सिद्धि-
गतेर्यः प्रापणलक्षणोऽर्थः प्राप्तिरित्यर्थः तस्य भावस्तत्ता तस्या इति, इह चैवं विशेषोपनयः-" जह सो चिलाइपुत्तो सुंसुम-
गिद्धो अकज्जपडिबद्धो । धणपारद्धो पत्तो महाडविं वसणसयकलियं ॥१॥ तह जीवो विसयसुहे लुद्धो काऊण पावकिरियाओ ।
कम्मवसेणं पावइ भवाडवीए महादुक्खं ॥ २ ॥ धणसेट्ठीविव गुरुणो पुत्ता इव साहवो भवो अडवी । सुयमंसमिवाहारो रायगिहं
सिवं नेयं ॥ ३ ॥ जह अडविनयरनित्थरणपावणत्थं तएहिं सुयमंसं । भुत्तं तहेह साहू गुरुण आणाए आहारं ॥ ४ ॥
भवलंघणसिवपावणहेउं भुंजंति ण उण गेहीए । वण्णबलरूवहेउं च भावियप्पा महासत्ता ॥ ५ ॥ अज्झयणं सम्मत्तं ॥१८॥

[सा० यथा स चिलातिपुत्रः सुसुमागृद्धोऽकार्यप्रतिबद्धः धन्येन प्रारब्धः प्राप्तो महाटवीं व्यसनशतकलिताम् ॥ १ ॥ तथा जीवो विषयसुखे लुब्धः
कृत्वा पापक्रियाः । कर्मवशेन प्राप्नोति भवाटव्यां महादुःखम् ॥ २ ॥ धनश्रेष्ठीव गुरवः पुत्रा इव साधवो भवोऽटवी । सुतामांसमिवाहारो राजगृहं इह
शिवं ज्ञेयम् ॥ ३ ॥ यथाऽटवीनिस्तरणनगरप्रापणार्थं तैः सुतामांसं । भुक्तं तथेह साधवो गुरूणामाज्ञयाऽऽहार ॥ ४ ॥ भवलङ्घनशिवप्रापणहेतोर्भुञ्जन्ति न
पुनर्गृद्धया । वर्णबलरूपहेतोश्च भावितात्मानो महासत्त्वाः ॥ ५ ॥] अष्टादशं ज्ञातविवरणं समाप्तम् ॥ १८ ॥

१९–श्री पुण्डरीकाख्यं ज्ञाताध्ययनम्।

अथैकोनविंशतितमं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः–पूर्वत्रासंवृताश्रवस्येतरस्य चानर्थेतरावुक्ताविह तु चिरं संवृताश्रवो भूत्वाऽपि यः पश्चादन्यथा स्यात्तस्य अल्पकालं संवृताश्रवस्य च तावुच्येते इत्येवंसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते समणेणं भग० म० जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं तेणं कालेणं २ इहेव जंबूद्दीवे दीवे पुव्वविदेहे सीयाए महाणदीए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरिल्लस्स सीतामुहवणसंडस्स पच्छिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णामं विजए पन्नत्ते, तत्थ णं पुंडरिगिणी णामं रायहाणी पन्नत्ता णवजोयणविच्छिण्णा दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्खं देवलोयभूया पासातीया ४। तीसे णं पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए णलिणिवणे णामं उज्जाणे, तत्थ णं पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था, तस्स णं पउमावती णामं देवी होत्था, तस्स णं महापउमस्स रन्नो पुत्ता पउमावतीए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तं०–पुंडरीए य कंडरीए य सुकुमालपाणिपाया०, पुंडरीयए जुवराया तेणं कालेणं २, थेरागमणं महापउमे राया णिग्गए धम्मं सोचा पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वतिए, पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया, महापउमे

अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तते णं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरति, तते णं से महापउमे, बहूणि वासाणि जाव सिद्धे ॥ सूत्रम्-१४७॥ तते णं थेरा अन्नया कयाइं पुणरवि पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए, कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासति, थेरा धम्मं परिकहेंति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगते, तते णं कंडरीए उट्ठाए उट्ठेति उट्ठाए उट्ठेत्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुंडरीयं रायं आपुच्छामि तए णं जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिया !, तए णं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ नमंसइ०, अंतियाओ पडिनिक्खमइ तमेव चाउघंटं आसरहं दुरूहति जाव पच्चोरुहइ जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छति करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी-एवं खलु देवा० ! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे अभिरुइए तए णं देवा० ! जाव पव्वइत्तए, तए णं से पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इदाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि अहं णं तुमं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचयामि, तए णं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाति जाव तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं पुंडरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं व०-जाव तुसिणीए संचिट्ठति, तते णं पुंडरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएति बहूहिं आघवणाहिं पण्णवणाहि य ४, ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचति जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयति, पव्वतिए अणगारे जाए एक्कारसंगविऊ, तते णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरीगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ

पडिणिक्खमंति बहिया जणवयविहारं विहरति ॥ सूत्रम्-१४८ ॥ तते णं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए यावि विहरति, तते णं थेरा अन्नया कयाई जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ २ णलिणिवणे समोसढा, पोंडरीए णिग्गए धम्मं सुणेति, तए णं पोंडरीए राया धम्मं सोचा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवा० कंडरीयं वंदति णमंसति २, कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासति २, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० २, थेरे भगवंते वंदति णमंसइ २ त्ता एवं व०-अहण्णं भंते! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि तं तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह, तते णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स पडिसुणेंति २, जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तते णं पुंडरीए राया जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए, तते णं थेरा भगवंतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति २, बहिया जणवयविहारं विहरंति, तते णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए, तत्थेव ओसण्णे जाए, तते णं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवा० २ कंडरियं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ वंदति णमंसति २ एवं व०-धन्नेसि णं तुमं देवा०! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धे णं देवा०! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले जे णं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं

अंतेउरे य माणुस्सएसु य
च छड्डइत्ता विगोवइत्ता जाव पव्वतिए, अहं णं अहण्णे अकयपुण्णे रज्जे जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य
कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वतित्तए, तं धन्नेऽसि णं तुमं देवा० ! जाव
जीवियफले, तते णं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाति जाव संचिट्ठति, तते णं कंडरीए
पोंडरीएणं दोचंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपु-
च्छति २ थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरति, तते णं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं किंचि कालं उग्गं-
उग्गेणं विहरति, ततो पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तणणिव्विणे समणत्तणणिब्भत्थिए समणगुणमु-
क्कजोगी थेराणं अंतियाओ सणियं २, पच्चोसक्कति २, जेणेव पुंडरिगिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे
तेणेव उवा० असो०वणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि णिसीयति २, ओहयमण-
संकप्पे जाव झियायमाणे संचिट्ठति, तते णं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाती जेणेव असोगवणिया तेणेव
उवा० २, कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियाय-
माणं पासति २, जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवा० २, पोंडरीयं रायं एवं व०-एवं खलु देवा० ! तव पिउ-
भाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे
जाव झियायति, तते णं पोंडरीए अम्मधाइए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए
उट्ठेति २, अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो० एवं व०-धण्णेसि

णं तुमं देवा० ! जाव पव्वतिए, अहण्णं अधण्णे ३ जाव पव्वइत्तएँ, तं धन्नेऽसि णं तुमं देवा० ! जाव जीवियफले, तते णं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति दोचंपि तचंपि जाव चिट्ठति, तते णं पुंडरीए कंडरीयं एवं व०–अट्ठो भंते ! भोगेहिं ?, हंता ! अट्ठो, तते णं से पोंडरीए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २, एवं व०–खिप्पामेव भो देवा० ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचति ॥ सूत्रम्–१४९ ॥ तते णं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति २, कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हति २, इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ–कप्पति मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं ततो पच्छा आहारं आहारित्तए त्तिकट्टु, इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता णं पोंडरिगिणीए पडिनिक्खमति २ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥सूत्रम्–१५०॥ तते णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अइभोयणप्पसंगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ, तते णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरति । तते णं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामते अवसवसे कालमासे कालं किचा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोस-

कालट्ठियंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाइए जाव अणुपरियट्टिस्सति जहा व से कंडरीए राया (सूत्रम्-१५१) तते णं से पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० २, थेरे भगवंते वंदति नमंसति २ थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति २ जाव अडमाणे सीय· लुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेति २, अहापज्जत्तमिति कट्टु पडिणियत्तति, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवा० २, भत्तपाणं पडिदंसेति २, थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिते ४, बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असण ४, सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवति, तते णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमति, तते णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए विहरति, तते णं से पुंडरीए अण· गारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल जाव एवं व०-णमोऽत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोऽत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं पुव्विंपि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते काल· मासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने। ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव

वाङ्गी-
० वृ०
ज्ञाता-
ङ्कियाङ्ग
५२ ॥

सव्वदुक्खाणमंतं काहिति। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वतिए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जति नो रज्जति जाव नो विप्पडिघायमावज्जति से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविगाणं अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जे त्तिकट्टु परलोएऽवि य णं णो आगच्छति बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंतं संसारकंतारं जाव वीतीवइस्सति जहा व से पोंडरीए अणगारे। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि॥ सूत्रम्-१५२॥ तस्स णं सुयक्खंधस्स एगूणवीसं अज्झयणाणि एक्कसरगाणि एगूणवीसाए दिवसेसु समप्पंति॥ सूत्रम्-१५३ ॥ एगुणवीसं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ पढमो सुयक्खंधो समत्तो॥

सर्वं सुगमं, नवरं उपनयविशेषोऽयम्—"वाससहस्संपि जई काऊणं संजमं सुविउलंपि। अंते किलिट्ठभावो न विसुज्झइ कंडरीउव्व ॥१॥ तथा—अप्पेणवि कालेणं केइ जहागहियसीलसामण्णा। साहिंति निययकज्जं पुंडरीयमहारिसिव्व जहा ॥२॥" [वर्षसहस्रमपि यतिः कृत्वा संयमं सुविपुलमपि। अन्ते क्लिष्टभावो न विशुध्यति कण्डरीक इव ॥१॥ अल्पेनापि कालेन केचित् यथागृहीतशीलश्रामण्याः। साधयन्ति निजकार्यं यथैव पुण्डरीकमहर्षिः ॥२॥] इत्येकोनविंशतितमं ज्ञातविवरणतः प्रथमश्रुतस्कन्धः समाप्तः ॥

१९ श्री-
पुण्डरी-
कज्ञाता-
ध्ययनो-
पसंहरणा-
दिवर्णनं
सूत्रम्।

२. श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे-द्वितीयश्रुतस्कन्धविवरणम्।



अथ द्वितीयो व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः-पूर्वत्रासोपालम्भादिभिर्ज्ञातैर्धर्म्मार्थ उपनीयते, इह तु स एव साक्षात्कथाभिरभिधीयते इत्येवंसम्बन्धोऽयम्—

तेणं कालेणं २ रायगिहे नामं नयरे होत्था, वण्णओ, तस्स णं रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए तत्थ णं गुणसीलए णामं चेइए होत्था वण्णओ, तेणं कालेणं २ समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मा णामं थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दुइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसीलए चेइए जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेणं कालेणं २ अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं व०–जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमसुयक्खंधस्स णायसुयाणं अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव

संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पं०, तं०–चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमे वग्गे १ बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीणं बीए वग्गे २ असुरिंदवज्जाणं दाहिणिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीणं तइए वग्गे ३ उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासिइंदाणं अग्गमहिसीणं चउत्थे वग्गे ४ दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं पंचमे वग्गे ५ उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं छट्ठे वग्गे ६ चंदस्स अग्गमहिसीणं सत्तमे वग्गे ७ सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमे वग्गे ८ सक्कस्स अग्गमहिसीणं णवमे वग्गे ९ ईसाणस्स अग्गमहिसीणं दसमे वग्गे १० । जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पं० पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पं० तं०–काली राई रयणी विज्जू मेहा, जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पं० पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पं० ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए सेणिए राया चेलणा देवी सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ काली नामं देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं मयहरियाहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहि य कालवडिंसगभवण-

वासीहिं असुरकुमारेहिं देवीहिं देवेहि य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं २ विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे २ भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीतिमणा जाव हयहियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ पायपीढाओ पच्चोरुहति २ पाउया ओमुयति २ तित्थगराभिमुही सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ वामं जाणुं अंचेति २ दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेति २ ईसिं पच्चुण्णमइ २ कडयतुडियथंभियातो भुयातो साहरति २ करयल जाव कट्टु एवं व०—णमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गए पासउ मे समणे भगवं महावीरे तत्थ गए इह गयं ति कट्टु वंदति २ नमंसति २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तते णं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेति २ आभिओगिए देवे सद्दावेति २ एवं व०—एवं खलु देवा० ! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सुरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेह २ जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयणसहस्सविच्छिण्णं जाणं सेसं तहेव तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया। भंतेत्ति

भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति २ एवं व०-कालिए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्डी ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठंतो, अहो णं भंते ! काली देवी महिड्डिया, कालिए णं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्डी ३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णागया ?, एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं २ इहेव जंबुदीवे २ भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ णं आमलकप्पाए, नयरीए काले नामं गाहावती होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स णं कालगस्स गाहावतिस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था, वड्डा वड्डकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जियावि होत्था, तेणं कालेणं २ पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे परिसा णि० जाव पज्जुवासति, तते णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा० २ करयल जाव एवं व०-एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरति, तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ?, अहासुहं देवा० ! मा पडिबंधं करेहि, तते णं

सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अ०भणुन्नाया समाणी हट्ट जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइं मंगल्लातिं वत्थातिं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा सातो गिहातो पडिणिक्खमति २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवा० २ धम्मियं जाणपवरं दुरूढा, तते णं सा काली दारिया धम्मियं जाण-पवरं एवं जहा दोवती जाव पज्जुवासति, तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महतिमहालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तते णं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोचा णिसम्म हट्ट जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदति नमंसति २ एवं व०–सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवा० ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तते णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवा० !, तते णं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ट जाव हियया पासं अरहं वंदति २ तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहति २ पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियातो अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिणिक्खमति २ जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवा० २ आमलकप्पं णयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवा० २ धम्मियं जाणपवरं ठवेति २ धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति २ जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा० २ करयल एवं व०–एवं खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स

अरह रो अंतिए धम्मे णिसंते सेऽविय धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुतिए, तए णं अहं अम्मयाओ ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहतो अंतिए मुंडा भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वतित्तए, अहासुहं देवा० ! मा पडिबंधं क०, तते णं से काले गाहावई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेति २ ततो पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरतो कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेति २ सव्वालंकारविभूसियं करेति २ पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरुहेति २ मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छति २ जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवा० २ छत्ताइए तित्थगराइसए पासति २ सीयं ठवेइ २ कालियं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवा० २ वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं व०-एवं खलु देवा० ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता जाव किमंग पुण पासणयाए ?, एस णं देवा० ! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ताणं जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं, अहासुहं

१ ° इ २ कालिय दारियं सीयातो पच्चोरुहति २ ततेणं कालिय अ ।

देवाणुप्पिया ! मा पडियंधं, तते णं काली कुमारी पासं अरहं वंदति २ उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक-
मति २ सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयाति २ सयमेव लोयं करेति २ जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए
तेणेव उवा० २ पासं अरहं तिक्खुत्तो वंदति २ एवं व०-आलित्ते णं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा
जाव सयमेव पव्वाविउं, तते णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणि-
यत्ताए दलयति, तते णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं कुमारिं सयमेव पव्वावेति, जाव उवसंपज्जित्ताणं
विहरति, तते णं सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी, तते णं सा काली अज्जा
पुप्फचूलाअज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाति एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूहिं चउत्थ जाव विहरति, तते
णं सा काली अज्जा अन्नया कयातिं सरीरवाउसिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं २ हत्थे धोवइ पाए
धोवइ सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ कक्खंतराणि धोवति गुज्झंतराइं धोवइ जत्थ २ विय णं
ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेइ तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता ततो पच्छा आसयति वा सयइ वा, तते
णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं व०-नो खलु कप्पति देवा० ! समणीणं णिग्गंथीणं सरीरवाउ-
सियाणं होत्तए तुमं च णं देवाणुप्पिया ! सरीरवाउसिया जाया अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि जाव
आसयाहि वा सयाहि वा तं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि,
तते णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाति जाव तुसिणीया संचिट्ठति,

तते णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं २ हीलेंति णिंदंति खिंसंति गरिहंति अवमण्णंति अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तते णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्थाजया णं अहं आगारवासं मज्झे वसित्था तया णं अहं सयंवसा जप्पिभिइं च णं अहं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वतिया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते पाडिक्कियं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हति, तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमती अभिक्खणं २ हत्थे धोवेति जाव आसयइ वा सयइ वा, तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णाविहारी कुसीला २ अहाछंदा २ संसत्ता २ बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ २ अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेति २ तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ २ तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जाइभागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उववण्णा, तते णं सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए, तते णं सा काली देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसगभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य

आहेवच्चं जाव विहरति, एवं खलु गो० !.कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी २ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए णं भंते.! देवीए केवतियं कालं ठिती पन्नत्ता ?, गो० ! अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, काली णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उववट्टित्ता कहिं गच्छिहिति कहं उववज्जिहिति ?, गो० ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमवग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि । धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्तं ॥ सूत्रम्–१५४ ॥

सर्वः सुगमः, नवरं 'किण्णा लद्ध'त्ति प्राकृतत्वात् केन हेतुना लब्धा–भवान्तरे उपार्जिता प्राप्ता–देवभवे उपनीता अभिसमन्वागता–परिभोगतः उपयोगं प्राप्तेति, 'वड्डु'त्ति बृहती वयसा सैव बृहत्त्वादपरिणीतत्वाच्च बृहत्कुमारी जीर्णा शरीर-जरणावृद्धेत्यर्थः सैव जीर्णत्वापरिणतत्वाभ्यां जीर्णकुमारी जीर्णशरीरत्वादेव पतितपुतस्तनी–अवनतिगतनितम्बदेशवक्षोजा निर्विण्णाश्च वराः–परिणेतारो यस्याः सा निर्विण्णवरा अत एव वरपरिवर्जितेति शेषं सूत्रसिद्धम् ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे प० बितियस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे नगरे गुणसीलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव आगया णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, भंतेत्ति भगवं गो० ! पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु गो० ! तेणं कालेणं २ आमलकप्पा

णयरी अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावती राईसिरी भारिया राई दारिया पासस्स समोसरणं राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिति। एवं खलु जंबू! बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ २। जति णं भंते! तइयज्झयणस्स उक्खेवतो, एवं खलु जंबू! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राती तहेव रयणीवि, णवरं आमलकप्पा नयरी रयणी गाहावती रयणसिरी भारिया रयणी दारिया सेसं तहेव जाव अंतं काहिति ३। एवं विज्जूवि आमलकप्पा नयरी विज्जुगाहावती विज्जुसिरिभारिया विज्जुदारिया सेसं तहेव ४। एवं मेहावि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावती मेहसिरि भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ५। एवं खलु जंबू समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सूत्रम्–१५५ ॥ जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पं०, तं०–सुंभा निसुंभा रंभा निरंभा मदणा, जति णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पं०, दोच्चस्स णं भंते! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के० अट्ठे पं० ? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं २ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए सामी समोसढो परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ सुंभा देवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया सुंभे

गाहावती सुंभसिरी भारिया सुंभा दारिया सेसं जहा कालिया णवरं अद्धुट्ठातिं पलिओवमाइं ठिती, एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसावि चत्तारि अज्झयणा, सावत्थीए नवरं माया पिया सरिसनामया, एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ बितीयवग्गस्स २ ॥सूत्रम्-१५६॥ उक्खेवओ तइयवग्गस्स एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पन्नत्ता, तं०-पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णतिमे अज्झयणे, जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउप्पन्नज्झयणा पं० पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे णयरे गुणसीलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ इला देवी धरणीए रायहाणीए इलावडंसए भवणे इलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसीए णयरे काममहावणे चेइए इले गाहावती इलसिरी भारिया इला दारिया सेसं जहा कालीए णवरं धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ सातिरेगअद्धपलिओवमठिती सेसं तहेव, एवं खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं कमा सतेरा सोयामणी इंदा घणा विज्जुयावि, सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ एव, एते छ अज्झयणा वेणुदेवस्सवि अविसेसिया भाणियव्वा एवं जाव घोसस्सवि एए चेव छ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाणं इंदाणं चउप्पण्णं अज्झयणा भवंति,सव्वाओवि वाणारसीए काममहावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ॥सूत्रम्-

१५७॥ चउत्थस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पं०, तं०–पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ गो० ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ रूया देवी रूयाणंदा रायहाणी रूयगवडिंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेतिए रूयगगाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया सेसं तहेव, णवरं भूयाणंदअग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवमं ठिई णिक्खेवओ, एवं खलु सुरूयावि रूयंसावि रूयगावतीवि रूयकंतावि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स, णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ सूत्रम्–१५८ ॥ पंचमवग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव बत्तीसं अज्झयणा पं०, तं–कमला कमलप्पभा चेव, उप्पला य सुदंसणा । रूववती बहुरूवा, सुरूवा सुभगावि य ॥ १ ॥ पुण्णा बहुपुत्तिया चेव, उत्तमा भारियावि य । पउमा वसुमती चेव, कणगा कणगप्पभा ॥ २ ॥ वडेंसा केउमती चेव, वइरसेणा रयिप्पिया । रोहिणी नमिया चेव, हिरी पुप्फवतीति य ॥ ३ ॥ भुयगा भुयगवती चेव, महाकच्छाऽपराइया । सुघोसा विमला चेव, सुस्सरा य सरस्सती ॥ ४ ॥ उक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे

नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावतिस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारेया पासस्स० अंतिए निक्खंता कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमं ठिती, एवं सेसावि अज्झ-यणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं, भाणियव्वाओ सव्वाओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे माया पिया धूया सरिसनामया, ठिती अद्धपलिओवमं । पंचमो वग्गो समत्तो ॥ सूत्रम्-१५९ ॥ छट्ठोवि वग्गो पंचम-वग्गसरिसो, णवरं महाकालिंदाणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरु-उज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव । छट्ठो वग्गो समत्तो ॥ सूत्रम्-१६० ॥ सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पं०, तं०-सूरप्पभा आयवा अच्चिमाली पभंकरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं २ सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा णवरं पुव्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिती अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसा-ओवि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए । सत्तमो वग्गो समत्तो ॥ सूत्रम्-१६१ ॥ अट्ठमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पं०, तं०-चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २ रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति,

तेणं कालेणं २ चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडिवडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावती चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया चंदस्स अग्गमहिसी ठिती अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसाओवि महुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरिसणामा, अट्ठमो वग्गो समत्तो। ॥ सूत्रम्-१६२ ॥ णवमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पं०, तं०-पउमा सिवा सती अंजू रोहिणी णवमिया अचला अच्छरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं २ पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं नायव्वा, णवरं सावत्थीए दो जणीओ हत्थिणाउरे दो जणीओ कंपिल्लपुरे दो जणीओ सागेयनयरे दो जणीओ पउमे पियरो विजया मायराओ सव्वाओऽवि पासस्स अंतिए पव्वतियाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्त पलिओवमाइं महाविदेहे वासे अंतं काहिंति। णवमो वग्गो समत्तो ॥ सूत्रम् १६३ ॥ दसमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पं०, तं०-कण्हा य कण्हराती रामा तह रामरक्खिया वसू या। वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चेव ईसाणे ॥ १ ॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ कण्हा देवी

ईसाणे कप्पे कणगवडंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कणगंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ सावत्थीए नयरीए दो जणीओ कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वाओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिती णव पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिंति। एवं खलु जंबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स। दसमो वग्गो समत्तो ॥ सूत्रम् १५४ ॥ एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं०। धम्मकहा सुयक्खंधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥ सूत्रम्-१५५ ॥ समाप्तोऽयं द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ॥

नमः श्रीवर्द्धमानाय, श्रीपार्श्वप्रभवे नमः। नमः श्रीमत्सरस्वत्यै, सहायेभ्यो नमो नमः ॥ १ ॥ इह हि गमनिकार्थं यन्मया व्यूहयोक्तं, किमपि समयहीनं तद्विशोध्यं सुधीभिः। नहि भवति विधेया सर्वथाऽस्मिन्नुपेक्षा, दयितजिनमतानां वाग्मिनां चाक्रियर्गे ॥२॥ परेषां दुर्लक्षा भवति हि विपक्षाः स्फुटमिदं, विशेषाद् वृद्धानामतुलवचनज्ञानमहसाम्। निराम्नायाधीभिः पुनरतितरां मादृशजनैस्ततः शास्त्रार्थे मे वचनमनघं दुर्लभमिह ॥३॥ ततः सिद्धान्ततत्त्वज्ञैः, स्वयमूह्यः प्रयत्नतः। न पुनरस्मदाख्यात, एव ग्राह्यो नियोगतः ॥४॥ तथापि माऽस्तु मे पापं, सङ्घभक्त्युपजीवनात्। वृद्धन्यायानुसारित्वाद्धितार्थं न प्रवृत्तितः ॥ ५ ॥ तथाहि–किमपि स्फुटीकृतमिह स्फुटेऽप्यर्थतः, सकष्टमविदेशतो विविधवाचनातोऽपि यत्। समर्थपदसंश्रयादिगुण·

तेणं कालेणं २ चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडिवडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावती चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया चंदस्स अग्गमहिसी ठिती अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसाओवि महुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरिसणामा, अट्ठमो वग्गो समत्तो। ॥ सूत्रम्-१६२ ॥ णवमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पं०, तं०-पउमा सिवा सती अंजू रोहिणी णवमिया अचला अच्छरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं २ पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं नायव्वा, णवरं सावत्थीए दो जणीओ हत्थिणाउरे दो जणीओ कंपिल्लपुरे दो जणीओ सागेयनयरे दो जणीओ पउमे पियरो विजया मायराओ सव्वाओऽवि पासस्स अंतिए पव्वतियाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्त पालिओवमाइं महाविदेहे वासे अंतं काहिंति। णवमो वग्गो समत्तो ॥ सूत्रम् १६३ ॥ दसमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पं०, तं०-कण्हा य कण्हराती रामा तह रामरक्खिया वसू या। वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुंधरा चेव ईसाणे ॥ १ ॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासति, तेणं कालेणं २ कण्हा देवी

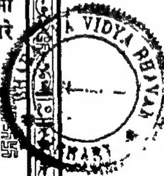
ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए एवं अट्ठवि
अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो
जणीओ सावत्थीए नयरीए दो जणीओ कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वाओऽवि
पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिती
णव पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति मुच्चिहिंति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिंति। एवं
खलु जंबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स। दसमो वग्गो समत्तो ॥ सूत्रम् १६४ ॥ एवं खलु जंबू! समणेणं
भगवया महावीरेणं आदिगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव संपत्तेणं०। धम्मकहा सुयक्खंधो
समत्तो दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥ सूत्रम्-१६५ ॥ समाप्तोऽयं द्वितीयः श्रुतस्कन्धः ॥

नमः श्रीवर्द्धमानाय, श्रीपार्श्वप्रभवे नमः। नमः श्रीमत्सरस्वत्यै, सहायेभ्यो नमो नमः ॥ १ ॥ इह हि गमनिकार्थं
यन्मया व्यूहयोक्तं, किमपि समयहीनं तद्विशोध्यं सुधीभिः। नहि भवति विधेया सर्वथाऽस्मिन्नुपेक्षा, दयितजिनमतानां
तायिनां चाद्रिवर्गे॥२॥ परेषां दुर्लक्षा भवति हि विपक्षाः स्फुटमिदं, विशेषाद् वृद्धानामतुलवचनज्ञानमहसाम्। निराम्नायाधीभिः
पुनरवितरां मादृशजनैस्ततः शास्त्रार्थे मे वचनमनघं दुर्लभमिह ॥३॥ ततः सिद्धान्ततत्त्वज्ञैः, स्वयमूह्यः प्रयत्नः। न पुनरस्म-
दाख्यात, एव ग्राह्यो नियोगतः ॥४॥ तथापि माऽस्तु मे पापं, सङ्घमत्युपजीवनात्। वृद्धन्यायानुसारित्वाद्धितार्थं च प्रवृत्तितः
॥ ५ ॥ तथाहि-किमपि स्फुटीकृतमिह स्फुटेऽप्यर्थतः, सकष्टमतिदेशतो विविधवाचनातोऽपि यत्। समर्थपदसंश्रयाद्विगुण-

पुस्तकेभ्योऽपि यत्, परात्महितहेतवेऽनभिनिवेशिना चेतसा ॥ ६ ॥ यो जैनाभिमतं प्रमाणमनघं व्युत्पादयाञ्चासिवान्, प्रस्थानैर्विविधैर्निरस्य निखिलं बौद्धादि सम्बन्धि तत् । नानावृत्तिकथाकथापथमतिक्रान्तं चक्रे तपो, निःसम्बन्धविहारम-प्रतिहतं शास्त्रानुसाराच्चथा ॥ ७ ॥ तस्याचार्यजिनेश्वरस्य मदवद्वादिप्रतिस्पर्द्धिनः, तद्बन्धोरपि बुद्धिसागर इति ख्यातस्य सूरेर्भुवि । छन्दोबन्धनिबद्धबन्धुरवचःशब्दादिसल्लक्ष्मणः, श्रीसंविग्नविहारिणः श्रुतनिधेश्चारित्रचूडामणेः ॥ ८ ॥ शिष्येणाभय-देवाख्यसूरिणा विवृतिः कृता । ज्ञाताधर्मकथाङ्गस्य, श्रुतभक्त्या समासतः ॥ ९ ॥ निर्वृतककुलनभस्तलचन्द्रद्रोणाख्यसूरि-मुख्येन । पण्डितगुणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम् ॥ १० ॥ प्रत्यक्षरं गणनया, ग्रन्थमानं विनिश्चितम् । अनुष्टुभां सहस्राणि, त्रीण्येवाष्टशतानि च ॥ ११ ॥ एकादशसु शतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानाम् । अणहिलपाटकनगरे विजयदशम्यां च सिद्धेयम् ॥ १२ ॥ समाप्ता चेयं ज्ञाताधर्मकथाप्रदेशटीकेति ॥

॥ समाप्तमिदं चन्द्रकुलनभस्तलोडुपतिप्रभश्रीमदभयदेवसूरिविवृतविवरणयुतं श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम् ॥





पुस्तकेभ्योऽपि गत्, परात्महितहेतवेऽनभिनिवेशिना चेतसा ॥ ६ ॥ यो जैनाभिमतं प्रमाणमनघं व्युत्पादयमासिवान्, प्रस्थानैर्विविधैर्निरस्य निखिलं बौद्धादि सम्बन्धि तत् । नानावृत्तिकथाकथापथमतिक्रान्तं चक्रे तपो, निःसम्बन्धविहारम-प्रतिहतं शास्त्रानुसारात्तथा ॥ ७ ॥ तस्याचार्यजिनेश्वरस्य मदवद्वादिप्रतिस्पर्द्धिनः, तद्बन्धोरपि बुद्धिसागर इति ख्यातस्य सूरेर्भुवि । छन्दोबन्धनिबद्धबन्धुरवचःशब्दादिसल्लक्ष्मणः, श्रीसंविग्नविहारिणः श्रुतनिधेश्चारित्रचूडामणेः ॥ ८ ॥ शिष्येणाभय-देवाख्यसूरिणा विवृतिः कृता । ज्ञाताधर्मकथाङ्गस्य, श्रुतभक्त्या समासतः ॥ ९ ॥ निर्वृतककुलनभस्तलचन्द्रद्रोणाख्यसूरि-मुख्येन । पण्डितगुणेन गुणवत्प्रियेण संशोधिता चेयम् ॥ १० ॥ प्रत्यक्षरं गणनया, ग्रन्थमानं विनिश्चितम् । अनुष्टुभां सहस्राणि, त्रीण्येवाष्टशतानि च ॥ ११ ॥ एकादशसु शतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानाम् । अणहिलपाटकनगरे विजयदशम्यां च सिद्धेयम् ॥ १२ ॥ समाप्ता चेयं ज्ञाताधर्मकथाप्रदेशटीकेति ॥

॥ समाप्तमिदं चन्द्रकुलनभस्तलोडुपतिमभश्रीमदभयदेवसूरिविघृतविवरणयुतं श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम् ॥

